

विषय

मुलिकर्मदा
 आत्मकारका संबंध
 राजल तथा शुक्रप्रदमंता
 परकारका
 कारकांश लग्नवि०
 बालाद्यवस्थापदाणां
 पूर्णकल ग्रहसंज्ञा
 षष्ठविचार
 महापत्नीग्रह
 शुभफलशानाग्रह
 शयनादिभस्त्राग्निरार
 दीप्त स्वस्थ दास्यपुनादि-
 ग्रहोक्तसंज्ञा
 इतिसंज्ञातत्त्व प्रथमम् ।

अथसूतिकातत्त्व २

पिताके परोक्ष जन्मयोग २०
 सपे वेष्टित जन्मयोग
 नाल वेष्टित भंगविचार
 यमल जन्मयोग
 जन्म समये पिता बंधनयोग
 नौकामध्ये जन्म योग
 जलसमीपे जन्म योग
 कारागारे जन्म योग
 गर्ते जन्मयोग
 देवालय क्रीडालय और रेतीकी
 जमीनमें जन्मयोग २२

पण्ड, भग्निशाला,
 तेजपण्ड २२

निर्णय

१० । मांसे जन्म योग
 ११ । भस्त्राग्निये जन्मयोग
 १२ । वृद्धीग्रहे जन्मयोग
 १३ । तेजपनि दीगज्ञान
 १४ । मरुगकर्म वा पापमें जन्म
 १५ । कष्टयोग
 १६ । मुनिका गृहदिशाज्ञान
 १७ । मुनिका गृहमरुग
 १८ । शाके किम भागमें जन्म
 १९ । पलेगका गिराण्या और वा
 २० । का विचार
 २१ । उपसूतिकाज्ञान
 २२ । पट्टरुदितयोग
 निर्भनेमसवयोग
 मुत्र तथा कष्टसे मसवयोग
 जन्मसे पूर्ववित्तमरणयोग
 माताके साथमेंही बालक
 मरणयोग
 २३ । महाकष्टयोग
 २४ । सद्यमृत्यु होनेकेयोग
 २५ । दश ग्यारा सोला दिनमें
 मृत्यु योग
 २६ । भेकमासमें शिशुमरणयोग
 २७ । तीनपक्षसे एकवर्षपर्यंत बालक
 की मृत्युका योग
 २८ । एकवर्षसे २५ वर्षपर्यंतके
 आयु योग
 २९ । सर्वरिष्टभंगयोग

विषय	पृ०	विषय	पृ०
सत्त्वादिगुणप्रकृतिविचार	४४	कामीयोग	"
अथप्रकीर्णतत्त्व ।		अतिकामीयोग	"
मंगला चरण	४५	भक्तकाम वा भक्तवीर्ययोग	६१
भाव विचार	४५	नपुंसकयोग	"
अंगविचार (देहसुखा सुखयोग)	४६	वीर्यच्युतियोग	६३
देहकाश्य योग	४७	उन्मादयोग	६३
देहपुष्ट योग	४८	शीघ्रवार्धक्यचिन्होदययोग	६४
दार्ढ्य इत्य अंगविचार	४९	प्रकृतिवृद्धयोग	६४
दार्ढ्य दहयोग	"	नातिवृद्धनपुष्ययोग	६५
धामन (ठगना) योग	५०	वृद्धभीतरुण समानदिखने-	
विकलांग योग	५०	वाला	६५
रक्तपित्तयोग	५१	रसायन व्यवसनीयोग	"
देहदुर्गंध योग	५२	बहुभोजनकर्ता योग	"
उकड़ी के सहारेसे चलने		सुखसेभोजनकरनेवाला योग	"
रायोग	५२	आद्य-त्रभोजन कर्तायोग	६६
बेलजनयोग	५२	भरूपभोजन करनेवाला	"
उलजंयोग	५३	शीघ्रभोजन कर्तायोग	"
पट्टीयोग	५३	चिरभुक् (देरसेभोजनकर्ता)	"
रक्तपट्टीयोग	५३	योग	६७
वेरूपट्टी योग	५४	कदन्नभोजन कर्तायोग	"
शूरयोग	५५	भोजनशूरयोग	"
कातरयोग	"	धीरयोग	"
क्रोधीयोग	५६	विशुनयोग	६८
कलहप्रिययोग	५६	चांढालयोग	६८
क्षमावाक् योग	५७	शिल्पीयोग	६८
हाम्यासक्तयोग	५७	क्षारादिपदार्थ प्रिययोग	६९
द्रोहीयोग	"	मधुरादिपदार्थ प्रिययोग	६९
गुरुद्रोहीयोग	५८	मधुरेभक्तचिह्नभलपदार्थच	
चोरयोग	"	रुचियोग	६९
व्यसनीयोग	"	नीचकर्मा नीचपथगम्लेच्छ-	
निर्व्यसनीयोग	५९	योग	७०
गोपालयोग	६०	नातिपीडायोग	"
आविश्वासीयोग	"	नातिच्युतियोग	७१
		जातिपौष्ययोग	७१

विषय	पृ०	विषय	पृ०
कौतुकियोग	७१	दंतविकार योग	८७
आलसीयोग	७१	हस्तनाश हस्तपीडायोग	८७
कृषिकर्तायोग	७२	कुब्जयोग [लुब्धा]	८८
स्रक्वाटयोग	७२	काठिनचित्तयोग	८८
शोभननेत्रयोग	"	विरुद्धचित्तयोग	"
बृद्धबृद्ध लोचनयोग	"	अंदवृद्धयोग	"
मिलिताक्षयोग	७३	जंघाक्षतियोग	८९
विकलनयनयोग	"	पंगुयोग	"
मंदलोचनयोग	"	इनसेविशेष क्यादेखना	९०
वक्रनेत्रयोग	"	शरीरलक्षणपरसे लग्नचंद्र	"
नेत्ररोगी	"	और ग्रहोकीपरिक्षा	९०
अंधयोग	"	मेघराशी वर्णन	९१
निशायोग	"	शुभभाशी "	९३
नेत्रनाशयोग	"	मिथुनराशी "	९३
वामनेत्रेष्टातयोग	७८	कर्कराशी "	९३
दक्षनेत्रेष्टातयोग	७८	सिंहराशी "	९४
नृपकोपसेनेत्रोत्पादनयोग	७८	कन्या राशी "	९५
नेत्रममादयोग	७८	तुला राशी "	९५
काणयोग	७९	वृद्धिक राशी "	९५
दंपतिकागयोग	"	धनराशी "	९६
यधिरयोग	८०	मकरराशी "	९६
कगेच्छुदयोग	८१	कुंभराशी "	९७
नाशाछेदयोग	८२	मीनराशी "	९७
सुखदुःखयोग	८२	ग्रहपरिक्षा	पृष्ठ ९७ से १०६
मूकयोग (गुंगा)	"		
शृंगस्वर योग	८३		
प्रदुषितमुखयोग	८४		
हृमन्त्र योग	"	धनियोग	१०७
दीर्घमन्त्रयोग	"	स्वल्पाधनीयोग	१०८
निच्छादोषयोग	८५	पटुधन वा महाधनीयोग	"
अस्पृशोक्तियोग	८६	गदग्रनिष्प्रेक्ष योग	११०
गदगदवाक्ययोग	८६	द्विसदग्र निष्प्रेक्षयोग	११०
रट्टेरोक्तियोग	"	अधुननिष्प्रेक्ष योग	११०
परदवाक्ययोग	८७	अधुनाधिक निष्प्रेक्षयोग	११०

अथधनविवेक.

विषय	पृ०	विषय	पृ०
अथषष्ठविधैकः ।		पोतसरोगयोग	२०९
निशत्रुयो०	१९८	विस्तारशीट्टाये ग	"
तःशत्रुयोग	"	चान्द्रियकजारयोग	"
तृथैरयोग	"	देहवैकल्ययोग	"
ताशत्रुयोग	"	तनुशोष. गुल्म, संग्रहणी	"
चुरीट्टायोग	१९९	और अनिमारयोग	२१०
शत्रुयोग	"	अग्निविषादिन तथा शीत	"
रिहंता तथा शचनाशयो०	"	रक्तयोग	"
गपीठकादिपीडायो०	२००	प्रमेहरोगयोग	"
पगंडयोग	२०२	वातरोगयोग	२११
लजगंडयो०	"	मूत्ररुद्धरोगयोग	"
त्तरीगीयोग	"	कुष्ठरोगयोग	"
मरोगी "	२०३	शूलरोगयोग	२१४
यरीगी "	"	पामान (स्त्राजरोग) योग	"
रांत्यनजनितरोगयोग	२०४	अर्शरोगयोग	"
द्रोमीयोग	"	फकुरोगयोग	२१५
राधियुत नित्यरोगी तथा-		प्लीहरोगयोग	"
नारोगवाद् योग	"	दृष्टरोगयोग	२१६
री रोग "	"	जलभययोग	"
धिरीग "	"	सर्पभययोग	"
दररीगीयोग	२०५	चौर तथा अग्निभययोग	"
उररीगीयोग	"	फोडा, अग्नि तथा खलभय	"
मररीगीयोग	"	योग.	२१७
भिरोगीयोग	"	श्वानभययोग	२१८
दररीगीयोग	"	शगलादिभययोग	"
दररीगी वा गुह्यरोगीयोग	२०६	चतुष्पदभययोग	"
छादिपीडायोग	"	मृगभययोग	"
पस्मारीयोग	"	गजभययोग	२१९
	२०७	अश्वभययोग	"
योग	"	मेहशैथिल्यभययोग	"
गयोग	२०८	क्षेत्रचिंतायोग	"
योग	"	सौख्यचिंतायोग	२१९
योग	"	वाहनाभरणवस्त्रचिंतायोग	"

विषय	पृ०	विषय	पृ०
हज्जामरचित्तायोग	"	बहुदारायोग	२३
पुनर्चित्तायोग	"	शनस्त्रीगामीयोग	२३
धीचिन्तायोग	२२०	सुन्दरस्त्रीयोग	२३
तातबंधचित्तायोग	२२०	वयोधिकस्त्रीयोग	"
यात्राचित्तायोग	"	विकलांगीस्त्रीयोग	"
मातुलसुखाभावयोग	"	कलावतीस्त्रीयोग	"
मातुलसुखयोग	"	रोगार्तस्त्रीयोग	२३
इतिषष्ठिविवेकः	२२०	पुनर्भूभार्यायोग	२३
अथसप्तमविवेक ।		पतिव्रतास्त्रीयोग	"
पुद्गारंभात्पुर्वधृष्टयोग	२२१	सुदारयोग	२३
पुद्गनाङ्गयोग	"	विधवास्त्रीलाभयोग	"
पुद्गपराजययोग	"	जातिणीस्त्रीयोग	"
पुद्गोत्साही पुद्गकुशलयोग	२२२	कुदारायोग	"
सेनापतियोग	"	दाशोत्तमास्त्रीयोग	२३
व्यभिचारीयोग	"	बन्धवास्त्रीयोग	"
दंपतिजारयोग	२२४	पण्डास्त्रीयोग	"
नानास्त्रीगामीयोग	२२५	स्वदाररतयोग	२३
मातृगमनकर्तायोग	"	कलात्रांतरभागीयोग	"
भगिनीगमनयोग	"	वात्सेयविवाहयोग	"
बंध्या तथा राजस्वलासे	"	विवाहवर्षप्रमाणयोग	२३
संगकायोग	२२६	दुरदेशोविवाहयोग	२३
वैश्यासंगयोग	"	स्थूलस्तनीभार्यायोग	"
ब्राह्मणीसंगयोग	"	दीर्घ तथा ह्रस्वभगवतियोग	"
भूमिणीसंगयोग	"	गुह्याद्रोस्त्रीयोग	"
कृष्णवर्ण पुद्गलासंगयोग	"	जापानाशयोग	२३९
गुरुतल्पगयोग	२२७	जायाहिनयोग	२४१
वयोधिकस्त्रीगमनयोग	२२७	लोकापवादाद्भार्यास्यागयोग	२४२
पशुगामीयोग	"	भार्यायाभग्नितदाङ्गयोग	२४२
भगचुम्बनशीलयोग	२२८	स्त्रीशरीरपिशाचपीडायोग	"
विवाह संख्यायोग	"	दारहनायोग	"
एक विवाहयोग	२२९	कलत्रसंपन्न (स्त्रीसुख) योग	"
द्विभार्ययोग	"	कामिनीतोषकृतयोग	२४२
त्रिभार्यायोग	२३०	वाणिज्यवान्योग	२४३
		इति सप्तमविवेकः ।	

विषय	पृ०	विषय	पृ०
वाहनव्यूहनाथ योग	३१३	रवि शनि	" "
वाहन सुख योग	"	चंद्र मंगल	" "
अथद्वादशमविवेकः ।		चंद्र बुध	" "
ज्ञानयोग	३१५	चंद्र गुरु	" "
त्यागीयोग	"	चंद्र शुक्र	" "
दंभाद्धर्मपरिग्रहयोग	"	चंद्र शनि	" "
दानशील योग	"	बुध शनि	" "
दानप्राप्तीयोग	३१६	शुक्र गुरु	" "
धर्मे दृढबुद्धि योग	"	बुध शुक्र	" "
भद्रदाता योग	३१७	बुध गुरु	" "
सदऽसद्व्यय योग	"	शनि मंगल	" "
धनसंचय कर्ता योग	"	शनि शुक्र	" "
वृत्तप्रस्तयोग	३१८	शुक्र मंगल	" "
वृत्तदातायोग	३१९	मंगल गुरु योग फल	३२७
बंधन योग	३१९	परगृहवासी योग	३२८
योगानां फलपरिपाकसमय	३२०	मातृ पितृ घातीयोग	"
अथमिश्रविवेकः ।		निर्धनी लोभी योग	"
यन्त्रिणीविषय	३२१	जन्मावसरे पितु मातु पां	"
पाण्डित्या ईनयोग	"	मरणयोग	"
विरक्त योग	"	भ्रातृधनक्षेत्रादि लाभ योग	"
लग्नेशन द्वादशमविशयोः		कपटन विषमक्षण योग	३२९
शंखफल	३२१	धैर्यान्वित युद्धवदुयोग	३२९
मिथफल	३२३	सत्यवादी योग	"
जगन्पान ममाधियान योग	३२४	मृदुप्रियादि योग	३२९
धर्मनिरतयोग	"	दंष्ट्र कंडु पीडायोग	३३०
पत्नी कुलग्र मनाही योग	३२५	पदशनि भ्रातृहीनयोग	३३०
बलघ्न तथा बहुस्त्री रतयोग	"	कलह शिष्टादि योग	"
द्विपदयोग	३२६	आविषोग	३३२
रवि चंद्र योग फल	"	अन्धा लक्षण	३३२
चंद्र योग फल	"	मृगका "	"
शुक्र योग फल	"	दुर्भरा "	"
गुरु योग फल	३२६	कमदुम लक्षण	"

विषय	पृ०	विषय	पृ०
मुनका योग फल	३३३	विषकन्याभंगयोग	३४४
भनुकायोग फल	"	काकवन्ध्यायोग	"
दुरुधरायोग फल	"	बन्ध्यायोग	"
केमट्टम योग फल	"	इतिस्त्रीजातकतत्वं ।	
केमट्टम भंगयोग	"	अथदशातत्त्वम् ।	
प्रचुरधन तथा सिद्धयोग	३३४	दशाविचार	३४५
देवताऽतिथि पुनक योग	"	पूर्णादशाफल	"
इतिप्रकीर्णः खम् ।		रिकादशाफल	"
अथस्त्रीजातकतत्वं		भनिष्टादशाफल	३४६
पुनतात्कोनफलस्त्रीणां विलोम्यं ३३५		भवरोहिणीदशाफल	"
स्त्रीणां भर्तृभवं पतिपुत्रेण ३३५		भारोहिणीदशाफल	"
शील भूषण गुणवतीयीयो०	"	पूर्वादिशुभासतरादिनिष्ठा	"
पुरुषा कृति स्त्री योग	"	शुभदशा	३४७
मयेक राशीके त्रिंशत्शकाफल	"	कष्टादशा	३४७
स्त्रीतः स्वकामशमनकलायोग ३३७		लग्नदशाफल	३४८
कुभर्तृका योग	३३८	यकगतिस्वयन्दशाफल	"
पत्नीयवर्तान्वितायोग	"	अभीष्टसिद्धिदादशा	"
प्रवासीवति योग	"	रानभयदा तथा रिष्टदादशा	"
भर्ताप्ययते योग	"	अतिपीडादादशा	"
अविवाहयोग	"	मदाप्रतिष्ठादादशा	"
पुनर्भूयोग	"	लग्नादिदादश भविष्य	
अन्यसङ्का योग	"	दशाफलम्	३४९
सयोगभगा वा सद्गमायोग	३३९	भतरदशाफलम्	३५०
पतिवृक्षग	"	दशानन्दशामनेश समय	
सुखपुता योग	३४०	दशाशुभाशुभदशाफलं	३५२
भरपुना योग	३४१	महचारवशेन अष्टवर्ग	
भनपत्यायोग	"	शुभाशुफलविचार	३५४
मृत्यावाप्यायोग	"	इतिदशान्त्यम् पंचमं ।	
पुनर्दृष्टायोग	"	पंचकतोकानिवासस्थानव	
दुःखतातथा कुलदमघ्नी योग ३४२		पंचसमाप्तिमय वर्गन	३५५
बाळ विधवायोग	"	टीकाकारकावशेषवर्गन	३५६
विधवायोग	"	ग्रंथसुमामी :	
विषकन्यायोग	३४३		

श्रीभुवनेश्वरी प्रिंटिंगप्रेस, मे छापी हुई पुस्तकें
विषयार्थ तयार हैं.



❀ छपुपूजाअनुष्ठान पद्धति ❀

पूजा तथा अनुष्ठान संबंधी भैरवीपुस्तक भागतक कड़ी भी छपीनहीं
इस १ पुस्तक के पढ़नेसे होकर बाळक पूजा और कर्मकांड में निपुण
हो जाता है और पूजा अनुष्ठान संबंधी कामके लिये दूसरी कोई पुस्तक
पढ़नेकी गरूरत नहीं रहती है पुस्तक परमोपयोगी पास रखने योग्य
है मूल्य. 1/-)

❀ ग्रह आणि ग्रहाचा परिणाम मराठी ❀

इसमें ग्रहव्यापदार्थों और ग्रहोंका असर मनुष्या दिकार क्यों और
फयोकरहोता है योगरा ५ विषय के पत्रोंके उत्तर भति उत्तम प्रकारसे
लिखेगये है जिसके पढ़नेसे सर्व साधारण भी फलित के नमानने
वाले नास्तिकों को उत्तर देके परास्वकारसनेहै पुस्तक अवश्य देखने-
योग्य है. जरूरीकरी पुस्तके बहुत कमरहगई है मूल्य 11)

परिक्षा विचार ।

मैं इस साल परिक्षामें पास होवंगा के नहीं इसप्रश्न का उत्तर सोच
पत्तिक शास्त्रानुसार जाननाहो तो इसपुस्तककी अवश्य देखिये विचार
हिन्दी भाषा में किया गया कीमत 2/-) मात्र

नाडीमानविवाहपटल.

इसमें विवाहमहूर्त विषय विवेचन के ६० श्लोकहैं येप्रत्येक श्लोक
नक २ पलके बराबरकेहैं इसलिये इनसाठही श्लोकोंका १ पाठ पूरा
होयाके १ घड़ी याने २४मिनिटहोजाते हैं अतः इसग्रंथके द्वारा विवाह
महूर्त का निर्णय और सरीसोटी घड़ीकी पहचानये दोनूकाम एकसा
होसकेहैं पुस्तक बढेकामकी देखनेयोग्यहै मूल्य -11) मात्र

अध्यक्ष श्रीभुवनेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस
ज्योतिषकर्तापाठय-रतलाम.

भाषाटिकासहित.

जातकतत्त्व प्रारम्भः ।

साम्बंसदाशिवं विष्णुं गणेशं च गुरुंतथा ।

नत्वाजातक तत्त्वस्य भाषा टीकां करोम्यहं ॥ १ ॥

टीकाकार ग्रन्थादिमें विघ्नविघातार्थ स्वेष्टदेवकों प्रणामरूप में चरण करताहैं, साम्बसदाशिव एवं विष्णुभगवान और गणेशजी निजगुरु पूज्यपादमहादेवजी महाराज कों नमस्कार करके मैं श्रीरामों जातकतत्त्व की भाषाटीका करताहू ॥ १ ॥

श्रीगुरुगणेशाम्बा चरणान्नत्वाभ्राचीनार्वाचीन होरात

न्वसारमुद्धृत्य महादेवोजातक तत्त्वं कुरुते ॥ १ ॥

टीका-श्रीगुरु गणेश और जगद्म्बाके चरणोंको नमस्कार प्राचीन और नवीन फलितशास्त्र के ग्रन्थोंका सारलेके महादेव जातकतत्त्व ग्रंथ करते हैं ॥ १ ॥ इस प्रकार निर्विघ्नसे ग्रंथ परिसर ग्रंथ कार स्वेष्टदेव और निजगुरु गणेशकों नमस्कार करके ग्रंथ करते हैं ॥

मस्तकमुखोरो हटुदरकटिधरितिलिङ्गोरुजानुजङ्घां

भेषादितः कालाङ्गम् ॥ २ ॥

टीका-राशियो के भंग विभाग-मस्तक १ मुख २ स्तनमध्यः ४ उदर ५ कटि ६ वास्ति [नाभिके नीचिका भाग "पेटू"] ७ जंघा ८ गुटना ९ चिडली १० पाँव [पैर] ११ इनस्थानोंमें प्रत्येक राशीको भादिले बागादि गङ्गीकालपुरुष के भंगमें जानना । राः

के विभाग में जिस राशीका जिस स्थान पर अमल कहा है जैसे मेषका मस्तकपर सिंहका पेटपर इत्यादि उनसर्व १२ वाराहिस्थानों में से जिस विभाग की राशीदीर्घहो वह अंग लंबा ह्रस्वराशी हो तो ह्रस्व अथवा जिस राशी को पापग्रह पीडित करते हों वह राशी जिसस्थानपर अमल रखती होगी उस अंगमें कष्ट जानना जैसे कर्क या सिंह पर पापग्रह हैं इनको पापग्रह देखते हैं इनका स्वामि पापग्रह से युक्तदृष्ट है तो पेटमें वा इदममें पीडा कहना एवं सर्व अंगोंका विचार काल पुरुषों अंगविभागसे जानना ॥ २ ॥

म, शु, बु, च, र, बु, शु, म, गु, श, रागवो मेपादीशाः ॥ ३ ॥

टीका-मंगल १ शुक २ बुध ३ चंद्र ४ राव ५ बुध ६ शुक ७ मंगल ८ गुरु ९ शनि १० शनि ११ गुरु १२ मेपादि राशियों के क्रमसे स्वार्थ कहे हैं ॥ ३ ॥ इस मूत्रमें ग्रंथकर्ताने नामकेदेशनामनिर्देशान्याय से १ राशियों के स्वामियों के नाम एक २ अक्षरमें कहें ॥ ३ ॥

क्रूरसौम्योऽनृत्तियो चरस्त्रिरद्विस्वभांशश्चमेपादेः ॥ ४ ॥

सिंहादिचतुष्कयुग्मं कुंभाः शीर्षोदयाः मीन उभयोदयः शे-

पापृष्टोदयाः ॥ ५ ॥

टीका-राशियोंके क्रूरसौम्य, क्रूर और सौम्य, पुरुष स्त्री, चरस्त्रिरद्विस्वभांश, इस क्रममें मेपादि १२ राशियों के संज्ञाजाननाः ॥ ४ ॥ सिंह ५ कन्या ६ मृग ७ मृ. धरु ८ मिथुन ९ और कुम्भ ११ शीर्षोदय राशी मीन १२ उभयोदय और मेष १ मृग २ कर्क ४ धन ९ मकर १० पृष्टोदय राशी जानना ॥ ५ ॥

विमिथुनशीर्षोदयां दिने शेपारात्रौ घटिनः ॥ ६ ॥

टीका-विमिथुनशीर्षोदय ५।६।७।८।११ राशिदिनमें घटिया शेष पृष्टोदय उभयोदय १।२।३।४।९।१०।१२ राशि में घटबाद जानना ॥ ६ ॥

२ होरा—समराशी में १५ अंशतक चंद्र और १५ से ३० अंशतक रवीकीहोरा जानना विषम राशीमें इसमें टुल्ट अर्थात् १५ अंशतक रवीकी १५ से ३० अंशतक चंद्र की होरा जानना ॥ ९ ॥

३ ट्रेफ्काग—राशीके प्रथम ट्रेफ्काग (० से १० अंशतक) में उसी राशीका स्वामी दूसरे ट्रेफ्काग (१० से २० अंशतक) में अपनी राशीसे पांचमी राशीका स्वामी तीसरे ट्रेफ्काग (२० से ३० अंशतक) में अपनी राशीसे नवमी राशीका स्वामी ट्रेफ्काग का स्वामी होना है १०

४ नवांश—चरराशी में अपनी राशीमेंहि म्पिरराशी में अपनी राशीसे जो नवमीराशी हो उसको आदिले टिम्यनाव राशीमें अपनी राशीसे जो पांचवी राशी हो उसको आदिले नवांश के स्वामी जानना राशीके नवमें भागको नवांश कहने है एक नवमांश ३।२० (तीनअंश बीसकला) का होता है ॥ ११ ॥

५ द्वादशांश—द्वादशांश के स्वामी अपनी राशीसे ही जानना एक द्वादशांश ठाई अंशका होता है ॥ १२ ॥

६ त्रिंशांश—समराशी में शुक्र बुध गुरु शनि मंगल ५।७।८।५।५ इन अंशोंके क्रमसे त्रिंशांश के स्वामी कहे हैं विषम राशी में व्युत्क्रम [उलटे] अर्थात् ५।५।८।७।५ इन अंशों के क्रम से मंगल शनि गुरु बुध शुक्र त्रिंशांश के स्वामी जानना ॥ १३ ॥

षड्वर्गा एव सप्तमांशसहिताः सप्तवर्गाः १४

विषमे स्वस्मात्समे सप्तमात्सप्तमांशः १५

सप्तवर्ग चक्र । उपरोक्त षड्वर्गों में सप्तमांश मिलाने से सप्तवर्ग होते हैं ॥ १४ ॥ ७ सप्तमांश—विषम राशीमें अपनी राशी से ही और सम राशीमें अपनी राशीसे जो सातमी राशी होव उससे गिननेसे जो राशी आवे उसका स्वामी सप्तमांशका स्वामी होता है एक सप्तमांश ४ अंश १७ कलाका होता है ॥ १५ ॥

सप्तवर्गा दशांश षोडशांशपष्टचंशयुता दशवर्गाः १६

दशवर्ग—सप्तवर्ग में दशांश षोडशांश और पष्टचंश ये तीनवर्ग

र भी मिला देने से दशवर्ग होते हैं ॥ १६ ॥

ओजेस्वस्मात्समे नवमादशमांशः ॥ १७ ॥

चरेजायाः स्थिरेसिंहाया द्विस्वभावे चापायाः षोडशांशः १८

स्वभात्पट्यंशः ॥ १९ ॥

टीका—दशांश षोडशांश और षष्ठ्यंश लाने की विधि—विषम राशी : अपनी राशी से ही समराशी में अपनी राशीसे जो ९ नवमी राशी हो उससे दशमांश के स्वामी समझना (एक दशमांश ३ तीन अंश का होता है) ॥ १८ ॥

टीका—चर राशी में मेष राशीको आदिले स्थिर राशीमें सिंह राशीको आदिले द्विस्वभाव राशी में धन राशी को आदिले ग्रह षोडशांश के मितनी संख्या के विभाग में होवे उतनी संख्या पर्यंत गिनने से जो राशी आये उसका स्वामी षोडशांश का स्वामी जानना । एक षोडशांश १ अंश ५२ कला १६ विकला का होता है ॥ १८ ॥

टीका—षष्ठ्यंश के स्वामी अपनी राशी से ही जानना । अर्थात् मितनी संख्या के षष्ठ्यंश विभागमें ग्रह होवे उतनी ही संख्या पर्यंत उस राशी से गिनने से जो राशी आवे वह राशी और उसका स्वामी षष्ठ्यंश का स्वामी जानना । एक षष्ठ्यंश ० अंश ३० कला का होता है । दूसरी रीति यह है कि अंशोंको द्विगुण करना निचोटी कला ३० तीससे कम होती उनमें १ शुक्ल करना और ३० तीस से अधिक होते २ दोपुनः करने से जो आवे उतनीही संख्या का षष्ठ्यंश विभाग जानना यह विभाग बारासे अधिक होता १२ बार का भाग देना । उदाहरण ॥ जैसे लग्न ५। १५। ५५। ७ है इसके अंश १५ को द्विगुण करके ३० हुवे, अंशोंके नीचे कला तीससे अधिक है इसलिये २ मिलाये ३२ हुवे अतः वत्तीस में विभाग में लग्न है यह १२ से अधिक है बारहका भाग दिया शेष ८ रहे लग्न कन्या अतः कन्या राशी से ८ भाग पर्यंत गिनने से १ मेष राशी आई यह षष्ठ्यंश लग्न आपा इसका स्वामी भाग में षष्ठ्यंशपनिहुआ इसी प्रकार सर्वत्र जानना ॥ १९ ॥

द्वयादिस्वोच्चाधिमित्रवर्गः पारिजातोत्तम गोपुर सिंहासन पा
रावतेदवलोक देवलोकैरावतवैशेषिकसंज्ञः क्रमात् ॥ २० ॥

- ७७ टीका-पारिजातादि वर्ग संज्ञा लांनकीविधि-उपरोक्तरीतीसे दशवर्ग
साधन करना और उसमें जितने स्व. उच्च अधिमित्र. ग्रहके वर्ग होवे उन
पणोंकि संख्या का योग करना वह योग यदि २ होवतो वहग्रह पारिजात
२ वर्ग मेंहै एवं ३ उत्तम. ४ गोपुर ५ सिंहासन. ६ पारावत. ७ देवलोक
८ देवलोक. ९ एरावत १० वैशेषिकांश वर्ग संज्ञा जानना. उदाहरण ॥ जैसे
सूर्यके दशवर्गमें स्व. २ उच्च १ अधिमित्र ग्रहका वर्ग ३ है इनका योग
६ हुआ तो सूर्य ६ छठे पारावतांशसंज्ञ कवर्गमें है ऐसेहि सर्वत्र जानना ॥ २० ॥

दृचरोशास्त्वयुग्मघोर १ राक्षस २ देव ३ कुबेर ४
रक्षोगैर्ग ५ किन्नर ६ भ्रष्ट ७ कुल्लभ ८ विषा ९ शत्रु
१० माया ११ प्रेतापुत्री १२ वरुण १३ द्र १४ कल
१५ शत्रु १६ चंद्र १७ चंद्र १८ मृदु १९ मृदु २० पर्व
२१ विष्णु २२ योगेश २३ दिगम्बर २४ देवी २५ उद्ध
२६ कलिनाश २७ शिवा २८ कमलाकर २९ मंदारंग
३० मृत्यु ३१ काल ३२ दोगाशि ३३ घोर ३४
यनकटक ३५ सुधा ३६ अमृत ३७ पूर्णदु ३८ विष-
दिग्धि ३९ कुलनाश ४० मुख्य ४१ वंशसंघो ४२
नाश ४३ कालक्षय ४४ मार्य ४५ मृदु ४६
गोतल ४७ दंष्ट्राकरोल ४८ नृमुख ४९ प्रवीण ५० क
लाग्नि ५१ दंष्ट्रायुध ५२ निर्मल ५३ शुभा ५४
शुभा ५५ निर्गोतल ५६ सुधा ५७ पयोधि ५८ भ-

मंजं ५९ दुरेखा ६० गुमेतु व्यत्ययः ॥ २१ ॥

टी० विषमराशीमषष्ट्यंशेष क्रमसे धोर १ राक्षस २ इत्यादि क्रमसे जानना और समराशी में उलटे जानना । अर्थात् विषम राशीका गृह नितनी राश्याके षष्ट्यंश विभागमें होवे उतनीही संख्या पर्यंत क्रमसे धोर १ राक्षसादि गिननेसे षष्ट्यंश होवेगा. और समराशीमें उतनेही षष्ट्यंश विभाग पर्यंत उलटा इंदुरेखा १ भ्रमणादि २ क्रमसे गिननेसे षष्ट्यंश होता है ॥ २१ ॥

षष्ट्यंशेश चक्रम् ।

धोर १-६० राक्षस २-५९ देव ३-५८ कुबेर ४-५७ रक्षोगण ५-५६ किन्नर ६-५५ अष्ट ७-५४ कुलध ८-५३ विष ९-५२ अग्नि १०-५१ माया ११-५० प्रेतपुरीष १२-४९ यक्ष १३-४८ इंद्र १४-४७ कला १५-४६ अहि १६-४५ चंद्र १७-४४ चंद्र १८-४३ मृदु १९-४२ मृदु २०-४१ पद्म २१-४० विष्णु २२-३९ बागीश २३-३८ दिगम्बर २४-३७ देव २५-३६ अर्द्ध २६-३५ कलिनाश २७-३४ क्षितीश २८-३३ कमलाकर २९-३२ भंदात्मज ३०-३१ मृत्यु ३१-३० काल ३२-२९ दावाग्नि ३३-२८ धोर ३४-२७ यमकंटक ३५-२६ सुधा ३६-२५ भमृत ३७-२४ पूर्णेंद्र ३८-२३ विषदिग्ध ३९-२२ कुलनाश ४०-२१ मुख्य ४१-२० वंशक्षय ४२-१९ उत्पात ४३-१८ कालरूप ४४-१७ सौम्य ४५-१६ मृदु ४६-१५ शीतल ४७-१४ दृष्टाकाल ४८-१३ इंदुमुख ४९-१२ प्रवीण ५०-११ कालाग्नि ५१-१० दंढायुध ५२-९ निर्मल ५३-८ शुभ ५४-७ अशुभ ५५-६ अतिशीतल ५६-५ सुधा ५७-४ पयोधि ५८-३ भ्रमण ५९-२ इंदुरेखा ६० १-१.
इन ६० में २६ दुरेखा १ मध्यम ३३ देव भाग के अष्ट (शुभ) फल देने वाले हैं ॥

लग्नान्ध्वस्तदशमानिकेंद्राणि ॥ २२ ॥

टीका—लग्न १ चतुर्थ ४ सप्तम ७ और दशम १० (१-४-७-१०) इन चार स्थानोंकी केंद्र संज्ञा है ॥ २३ ॥

स्वायाष्टमात्मजाः फणफराः ॥ २३ ॥

टीका—दूसरा ३ ग्यारवां ११ आठवां ८वां नवां ५ (२—५—८—११)
इनचारस्थानोंके फगफग संज्ञाहै ॥ २४ ॥

ॐ अरि धर्मान्त्या आपोहिमाः ॥ २४ ॥

टीका—तिसरा ३ छठा ६ नवमा ९ बारवा १२ (३—६—९—१२)
इनचार स्थानोंके आपो क्लिप्त संज्ञाहै ॥ २४ ॥

इयाय खारयाः उपचयाः ॥ २५ ॥

टीका—तीसरा ३ छठा ६ दूसरा १० ग्यारवां ११ स्थानकी उपचय संज्ञाहै २५
धर्मात्मजौ त्रिकोगौ ॥ २६ ॥

टीका— नवम ९ और पंचम ५ स्थानकी त्रिकोग संज्ञाहै ॥ २६ ॥

तुर्याष्टमौ चतुरस्तौ ॥ २७ ॥

टीका—चौथ और आठम स्थान कों चतुरस्त कहते हैं ॥ २७ ॥

स्वास्तौ मारकौ ॥ २८ ॥

टीका—दूसरा २ और सातमा ७ येदोनो स्थान मारक संज्ञाहै ॥ २८ ॥

स्वांत्यौ नेत्र संज्ञौ ॥ २९ ॥

टीका—दूसरा २ बारवा १२ स्थान नेत्र संज्ञाहै ॥ २९ ॥

पष्टाष्टमांत्यात्रिकादुष्टाश्च ॥ ३० ॥

टीका—छठा ६ आठमा ८ बारवा १२ इन ३ तीन स्थानोंका त्रिक-
स्थान कहते हैं और दुष्टस्थानभी कहते हैं ॥ ३० ॥

कर्कालिङ्गपान्त्य भागा क्रससंध्यः ॥ ३१ ॥

टीका—कर्क ४ वृश्चिक ८ मीन १२ राशियोंका अंत्य भाग (२९ अंश.)
क्रस संधी कहाता है ॥ ३१ ॥

सिंहादि चतुष्कं दीर्घ कुंभादि चतुष्कं नृस्व शेपाः समाः ३२

टीका—सिंह ५ कन्या तुल ७ वृश्चिक ८ राशी दीर्घ संज्ञक और
३ मीन १२ मेष १ वृषभ २ राशी ह्रस्व (छोटी) शेप मिथुन ३
४ धन ९ मकर १० राशी सम संज्ञक (नहिदीर्घ और नहि
... अर्थात् दोनोंके मध्यकी) ॥ ३२ ॥

अर्को १ जीवः २ कुज ३ भद्रज्ञौ ४ गुरु ५
 मंदारौ ६ शुक्र ७ शनिः ८ सूर्यज्यौ ९ जार्केज्य-
 मन्दा १० जीवः ११ शनि १२ रितिक्रमात्तन्वादि
 कारकाः ॥ ३३ ॥

टीका—लाग्नादि चाराहिभावो के स्थिर कारक ॥ लग्नका १ रवि, धन
 भावका २ गुरु, सहनका ३ मंगल, चतुर्थका ४ चंद्र बुध, पंचम ५ का गुरु,
 षष्ठि ६ का शनि, मंगल, सप्तम ७ का शुक्र, अष्टम का ८ शनि,
 नवम ९ का रवि गुरु, दसम १० का बुध सूर्य गुरु शनि, लाभका ११
 गुरु, व्यय १२ भावका शनि। भाव कारक जानना ॥ ३३ ॥

कर्क घटैणझपालितुलाः सजलाः शेषाशुष्काः ॥ ३४ ॥

टीका—कर्क ४ कुंभ ११ मकर १० मीन १२ वृश्चिक ८ तुल ७ राशि
 सजल (जलराशी) है शेष मेव १ वृषभ २ मिथुन ३ सिंह ५ कन्या
 ६ धन ९ शुष्क राशी है ॥ ३४ ॥

क्षीणे न्द्वर्क यमारराहुशिखिनः पापा स्तन्मात्र युतो-
 बुधश्च ॥ ३५ ॥

टीका—क्षीणचंद्र सूर्य शनि मंगल राहु केतु ये पापग्रह हैं और बुध
 पापग्रह से युक्त होवे तो वह भी पाप होता है। पाश्चात्य विद्वानगण
 दर्शाते हैं कि बुध को भी पापमानते हैं इनके आतिरिक्त शेष ग्रह [पूर्ण
 चंद्रमा शुभपुत्र बुध गुरु शुक्र] शुभ ग्रह जानना ॥ ३५ ॥

मंदज्ञौ क्लीबौ चंद्राच्छौ स्त्रियौ शेषानराः ॥ ३६ ॥

टीका—शनि बुध नपुंसक चंद्र शुक्र स्त्री सूर्य मंगल गुरु पुरुष सज्ञक
 ग्रह जानना ॥ ३६ ॥

चंद्राकज्याः सात्विका ज्ञाच्छौ राजसौ शेषा स्तामसाः ३७

टीका—चंद्र सूर्य गुरु सात्विक (सतो गुणी) बुध शुक्र रासस (रजोगुणी)
मंगल शनि राहु केतु तामस (तमोगुणी) ग्रहजानना ॥ ३७ ॥

मेपगो मृग कन्या कर्कान्त्य तुलाः सूर्याद्युच्च भानि
तत्सतमानि नीचभानि दशमतृतीयाष्टाविंश पंचदश
पंचम सप्त विंश विंशांशा अर्का दीनांपरमोच्चनीचभागाः
॥ ३८ ॥

टीका—मेप १ (मृ) वृषभ २ (चं) मकर १० [मं] कन्या ६ [उ.]
कर्क ४ [शु.] मीन १२ (शु.) तुल ७ (श.) धराशी क्रमसे इति
दि ग्रहोंकि उच्च राशी कहीहै इनसे सातमी २ राशी [तुल] (१)
बुधिक (चं) कर्क (मं) मीन (बु) मकर (गु) कन्या [शु]
मेप [शनि] सूर्यादियहो किनीच राशि जानना और इनही राशीय
क्रमसे: १० । ३ । २८ । १५ । ५ । २७ । २० । ये अंश परमोच्च
परम नीच के अंश जानना ॥ ३८ ॥

सिंहगोजांगनाचापतुलघटाः सूर्यादिनां मूलत्रिकोण-
भानि ॥ ३९ ॥

स्व. उच्च. नीच. मूलत्रिकोण राशि चक्रं.

बी	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
५	४	१ ८	३ ६	९ १२	२ ७	१० ११			स्वराशी.
१५	वृषभ	मकर	कन	कर्क	मीन	तुला	वृषभ	वृश्चि	उच्चराशी परमोच्चमं
०	३	२८	१५	५	२७	२०			
३१	वृश्चि	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मे	वृश्चि	वृषभ	नीचराशिप- रम नचिंश
०	३	२८	१५	५	२७	२०			
१६	वृषभ	मेष	कन्या	धन	तुल	कुंभ	कुंभ	सिंह	मूल त्रिको- ण राशी
१	२	१	६	९	७	११	११	७	
१०	व. ३	मू२०	व. १५	म२०	मू१५	मू२०	मित्र	मित्र	उच्चमूल जी
१०	मू२०	स्व१०	मू५	स्व२०	स्व१०	स्व१०	भेमष	मत्तल	कोण स्व रा शि के भंश

पेंगलनेत्रो रक्तश्याम वर्णः पित्तप्रकृतिः समगात्रः प्रतापीः

रत्नरोमवागर्कः ॥ ४१ ॥

ता-ग्रहके स्वरूप ॥ जोग्रह बलवान् हो उसके अनुरूप गुण
रादि स्वरूप जन्मतया प्रश्न में कहेजातेहैं ॥

पिंगल नेत्र, (नेत्रकांति पिली) रक्तश्यामरंग, पित्तप्रकृति, सम
प्रतापी, भस्मकेश कमबोलनेवाला सूर्य हैं ॥ ४१ ॥

कृशो वर्तुलाङ्गो मेधावी मृदुवाक् शुभदागिवेकी
तं कफात्मा चंद्रः ॥ ४२ ॥

चंद्र-भेतरंग, दुर्बल, गोलाकारशरीर, बुद्धिवाक्, मधुरभाषी,
द्वे, विचारवान्, वातकफ, प्रकृतियुक्त चंद्र है ॥ ४२ ॥

दृक्तरुणः रुशमध्यो रक्तसिताङ्गः पौतिकश्चंचलधी
र प्रताप्यारः ॥ ४३ ॥

भौम-दृष्टदृष्टि (खराबनजर) वाला, तरुण (जवान) भ-

चंद्राकन्याः मातिका ज्ञाच्छौ राजसौ गेया स्तामनाः ॥

टीका-चंद्र मृगशिरा सान्निह (सनांगुनी) बुध शुक्र गतस (गंगु)
मंगल शनि राहु केतु नामग (तमोगुनी) ग्रहगानना ॥ ३७ ॥

मेपगो मृग कन्या कर्कान्त्य तुलाः सूर्यामुच्च भाति

तत्सप्तमानि नीचमानि दशमवृत्तीयाष्टाविंश पंचदश

पंचमसप्त विंश विंशांशा अर्कादीनां परमोच्चनीचमानाः

॥ ३८ ॥

टीका-मेप १ (म) वृषभ २ (च) मकर १० [मं] कन्या ६ [मं]
कर्क ४ [शु.] मीन १२ (शु.) तुल ७ (ज.) धराशी अनसं ह
दि ग्रहोकि उच्च राशी कहीहै इनसं सातमी २ राशी [तुल] (शु.)
पृथ्विक (चं) कर्क (मं) मीन (शु) मकर (गु) कन्या [शु.]
मेप [शनि] सूर्यादिग्रहो किनीच राशि जानना और इनही राशि
क्रमसे: १० । ३ । २८ । १५ । ५ । २७ । २० । ये अंश परमोच्च
परम नीच के अंश जानना ॥ ३८ ॥

सिंहगोजांगनाचापतुलघटाः सूर्यादीनां मूलत्रिकोण
भानि ॥ ३९ ॥

स्व. उच्च. नीच. मूलत्रिकोण राशि चक्रं.

रवी	चंद्र	मंगल	बुध	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
५	४	१	३	९	२	१०		स्वराशी.
		८	६	१२	७	११		
मेष	वृषभ	मकर	कन	कर्क	मीन	तुला	वृषभ	उच्चराशी
१०	३	२८	१५	५	२७	२०		परमोच्चभं
तुला	वृषभ	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मे	वृषभ	नीचराशिप-
१०	३	२८	१५	५	२७	२०		रम नचांश
सिंह	वृषभ	मेष	कन्या	धन	तुल	कुंभ	कुंभ	मूल त्रिको-
५	२	१	६	९	७	११	११	ण राशी
मृ२०	उ. ३	मृ१२	उ. १५	म१०	मृ१५	मृ२०	मि३	उच्चमूल नी
स्व१०	मृ२७	स्व१८	मृ५	स्व२०	स्व१०	स्व१०	मि३	कोण स्व रा
							भेमप.	शि के भंश
							भेतुल	

पिंगलनेत्रो रक्तश्याम वर्णः पित्तप्रकृतिः समगात्रः प्रतापीः

अल्परोमवागर्कः ॥ ४१ ॥

टीका-ग्रहेके स्वरूप ॥ जोग्रह बलवान् हो उसके अनुरूप गुण भावारादि स्वरूप जन्मतथा प्रश्न में कहेंगेतेह ॥

सूर्य=पिंगल नेत्र, (नेत्रकांति पिली) रक्तश्यामरंग, पित्तप्रकृति, सम शरीर, प्रतापी, अल्पकेश कमबोलनेवाला सूर्य हैं ॥ ४१ ॥

शुक्रःरुशो वर्तुलाङ्गो मेषावी मृदुवाक् शुभदायिवेकी वात'कफात्मा चंद्रः ॥ ४२ ॥

टीका-चंद्र=भेतरंग, दुर्बल, गोलाकारशरीर, बुद्धिवाक्, मधुरभाषी, शुभदायि, विचारवान्, वातकफ, प्रकृतियुक्त चंद्र हैं ॥ ४२ ॥

दुष्टदृक्तरुणः रुशमध्यो रक्तसिताङ्गः पेटिकभंचलधी

रुदार प्रताप्यारः ॥ ४३ ॥

टीका-भौम-दुष्टदृष्टि (सराबनजर) वाला, उरुण (नरान) भ-

वस्था, पतलीकमर लाल और श्वेत रंग का शरीर (गौर) पित्तप्रकृति चंचलबुद्धी, उदार स्वभाव प्रतापि, भौम है ॥ ४३ ॥

गद्गदवाग्धास्यशीलः सुधीर्दूर्वाश्यामाङ्गस्त्रिधातुः पुंश्च
लोज्ञः ॥ ४४ ॥

टीका-बुध-गद्गदवचन बोलनेवाला हास्यशील (हसनेवाला) श्रेष्ठ बुद्धि, दूर्वा के रंगसमान : श्यामरंग का भंग. वातपित्तकफ प्रकृति, व्यभिचारी बुध है ॥ ४४ ॥

स्थूलोगौराङ्गः कफात्मापिङ्गलश्च मूर्धन्यकचाभियुक्तो
विद्वान् गुरुः ॥ ४५ ॥

टीका-गुरु पुष्टशरीर गौररंग कफ प्रकृति पीलीनेत्रकांति और पीलेहि मस्तक के केशोत्से युक्त विद्वान् गुरु है ॥ ४५ ॥

सुखीचली दर्शनीवपुः सुलोचनः कृष्णकुटिल केशः
कामीवातकफात्मा श्यामः शुक्रः ॥ ४६ ॥

टीका-शुक्र-सुखी बलवान् दिखनोटे शरीरवाला मुहायने नेत्र का और टेंद (घुघुहाले) केश अधिककामी, वात कफ प्रकृति श्यामरंग के शरीरवाला शुक्र है ॥ ४६ ॥

क्रियास्वपदुः कातराक्षः कृष्णः कृशदीर्घाङ्गो बृहदन्तो-
न्मत्तनूरुहो वातात्मा कठिनवाग् निन्योमन्दः ॥ ४७ ॥

टीका-शनि-मर्वकामो क्रि क्रिया में अचतुर दुराचने नेत्रोपाद कालारंग, दुर्बल, दीर्घदेह बड़े दांतोवाला कृष्णशरीर और केश वात प्रकृति कठोरशब्द बोलनेवाला तथा निन्यक्रमे करनेवाला शनि है ॥ ४७ ॥

अस्तिपरन्मग्जान्त्वग्मागुक्रस्नायूनिमूर्यादीनां धातवः
॥ ४७ ॥

टीका-मूर्यादियहो क्रि वातु । मूर्यभस्वि (हृदि) का मंद अस्तिपर मूर्धन्य (मीनरस्त्री पतलीकमरी) का बुध समरी का

चर्वीका, शुक दीपिका, शनि नशोका, अचिपति है, इनको ग्रहोंके धातु
हते हैं । जो ग्रह अष्टम में हैं वा मृत्यु कारक हैं उसके धातुके कोष
। भंगमें रोगादिपीड़ा तथा मरण भी होता है ॥ ४८ ॥

सूर्यस्यमन्दाच्छौरिषू ज्ञःसमः शेषाः सुहृदः ॥ ४९ ॥

चंद्रस्यज्ञार्को सुहृदौ शेषाः समाः ॥ ५० ॥

भौमस्य शुक्रार्कि समौ ज्ञोरिः शेषाः सुहृदः ॥ ५१ ॥

जस्येन्दुः शत्रुः शुक्रार्को मित्रे शेषाः समाः ॥ ५२ ॥

जीवस्य ज्ञाच्छावरी समोर्कजः शेषा मित्राणि ॥ ५३ ॥

शुक्रस्य ज्ञार्कजौ मित्रे कुजेज्यौ समौ शेषावरी ॥ ५४ ॥

मन्दस्य ज्ञाच्छौ सुहृदौ जीवः समः शेषाः शत्रवः ॥ ५५ ॥

टीका—नैसर्ग मैत्रिचक्र । सूर्य के—शनि शुक्र शत्रु बुधसम चंद्रभौम
गुरु मित्र हैं ॥ ४९ ॥ चंद्रके—बुधमूर्यमित्र शेष, (मंगल गुरु शुक्र
शनि) सम है ॥ ५० ॥ मंगलके—शुक्र शनि सम बुध शत्रु शेष (रवि
चंद्र-गुरु) मित्र है ॥ ५१ ॥ बुधके—चंद्रशत्रु शुक्र सूर्य मित्र शेष
(मंगल गुरु शनि) सम है ॥ ५२ ॥ गुरुके—बुध शुक्र शत्रु शनि सम
शेष (रवि चंद्र मंगल) मित्र है ॥ ५३ ॥ शुक्रके—बुधशनि मित्र मंगल
गुरु सम शेष [रविचंद्र भौम शत्रु है ॥ ५४ ॥ शनि के बुध शुक्र मित्र
गुरुसम शेष रविचंद्र मंगल शत्रु है ॥ ५५ ॥

अन्योन्यस्य पार्वत्रयगास्तत्काले मित्राणिशेषाः शत्रवः ५६

। टीका—तात्कालिकमै त्रिसाधन ॥ जिस ग्रहसे जो ग्रह अपने समीप के
। तीन तीन स्थानमें अर्थात् २ । ३ । ४ और १२ । ११ । १० होते वह
। उस ग्रहका तात्कालिक मित्र जानना । और शेष स्थान ५ । ६ । ७
८ । ९ में हो वह उस ग्रहका शत्रु जानना ॥ ५७ ॥

उभयथामित्राण्य मिमित्राणि शत्रवस्त्वपिशत्रवो मित्रा

शत्रवः समा मित्रसमा मित्राणि शत्रुसमाः शत्रवः ॥ ५७ ॥

नैसर्गिकमैत्रि चक्रम्.

र	चं	मं	बु	गु	शु	श	
चं मं गु	बु सू	र चं गु	शु सू	र चं मं	बु श	बु शु	मिष.
बु	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु	सम.
श गु	०	बु	चं	बु शु	र चं	र चं मं	शमु.

टीका—पंचधामैत्रिचक्र साधन । उपरोक्त नैसर्गिक और तात्कालिक मैत्रिसाधन फर्के देखना उनदोनो मैत्रिमें जो ग्रह मित्रका होवे व अधिमित्र (मित्र मित्र अधिमित्र) दोनो मैत्रिमें जो ग्रह शत्रु होवे व अधिशत्रु (शत्रु शत्रु अधिशत्रु) एक मैत्रिमें मित्र और दुसरीमें शत्रु हो तो समहोता है (मित्रशत्रु-सम) ऐसेहि मित्र और समहोवे तो मि (सममित्र-मित्र) सम और शत्रु होवे तो (समशत्रु-शत्रु) श होता है ॥ ५७ ॥

तृतीयदशमौ नवमपंचमौ चतुर्थाष्टमौ सप्तमपादार्द्धितो
ग्रहाः पश्यन्ति ॥ ५८ ॥

टीका—तीसरे ३ दशमे १० एकपाद । नवमे पांचवें ५ द्विपा चोथे ४ भाठवे ८ त्रिपाद और सातवें ७ स्थानमे ग्रह पूर्ण दृष्टी देखते है ॥ ५८ ॥

तृतीय दशमौ शनि स्रिकोणं गुरु श्वतुरस्रं भौमश्च
विशेषतः पूर्ण पश्यति ॥ ५९ ॥

टीका—ग्रहो किं विशेष दृष्टि । तीसरे ३ दशमे १० शनि । नवमे पांचवें ५ गुरु । चोथे ४ भाठवे ८ स्थानमे मंगल विशेष फर्के पूर्ण द्रा

से देखते हैं अर्थात् सर्वग्रहों कि पूर्ण दृष्टि ७ सप्तमस्थान की कही है
 मो सातमे तो ये शनि गुरु भौम पूर्ण दृष्टी से देखतेहि हैं विशेष कर
 [३।१०] [९।५] [४।८] इन स्थानों में भी पूर्ण दृष्टी
 से देखते हैं यह इन ३ ग्रहों कि विशेष दृष्टी कही है ॥ ६० ॥

दिनेवारारंभादस्तकालो निश्चस्ततो वारप्रवेश कालांतः

स्ववारस्वडेनहतोष्ट भक्तो लब्धं गुलिकेष्टकालः ॥ ६० ॥

टीका—गुलिक साधनो पयोगि गुलिकेष्टकाल साधन की रीति ।
 दिन के समयका जन्म होवेतो वार प्रवेश कालके आरंभ समय से
 सूर्यास्त कालपर्यंत की घट्यादिकों और रात्रिका जन्महोवे तो
 सूर्यास्त समय से वार प्रवेशकाल पर्यंत जितनी घट्यादिक होवे उनको
 अपने वर्तमान वार के खंडेसे अर्थात् आगेके सूच ६२ में वारों के दिन
 रात्रि के खंडे कहें हैं उनमें से जो वार अपना हो उसका दिनका जन्म
 हो तो दिनके खंडे से और रात्रिका हो तो जो रात्रिका खंडा होवे
 उससे गुगन करना भाटका भाग देना लब्ध भावे वही गुलिकका इष्ट
 काल होता है ॥ ६० ॥ वार प्रवेश काल सुहृत् चिंतामणी में कहा है उ
 सकी रीति यह है कि ॥ श्लोक—पादेनरेखा परपूर्व योजन पल्लयुत्तना स्ति
 पयोदिनार्द्धतः । उनाधिकास्तद्विवरो ज्वैरलं ऊर्द्ध तथा धो दिनप्रवे-
 शनं ॥ जिस ग्राम का वार प्रवेश काल देखना हो उस ग्राम में जिस
 ग्राम की मध्यरेखा लगती हो उस मध्यरेखा और अपने ग्राम के
 बीचके जितने पश्चिम भयवा पूर्वयोजन का अंतरहोवे उतनीही सख्या
 में से चतुर्यास घटाना शेष रहे उतने ही पलोंको पंद्रा घटीमें रेखा से
 पश्चिम में ग्राम होतो मिलाना और पूर्व में अपना ग्राम होतो घटाना
 शेष रहे वह उस ग्रामका वार प्रवेश कालका भुव होता है । इसभुवसे
 जिस दिनका वार प्रवेशकाल देखना हो उसी दिन के दिनार्द्ध के
 साथ अंतर करना शेष जितनी पले बचे उतनीही पल दिनार्द्ध से भुव
 भरप होवे तो दिन चढ़े और दिनार्द्ध से भुव जादा होवे तो उत-
 नीही पल रात्रि शेष रहते वार प्रवेश होता है ॥ इस प्रकार
 वार प्रवेश काल लाना यदि दिनचढ़े वार प्रवेश हुआ होवे
 तो जितने पल दिनचढ़े हुए उतनीही पल दिनमान में से

नैसर्गिकमैत्रि चक्रम्.

र	चं	मं	षु	गु	शु	श	
चं मं गु	षु मू	र चं गु	शु मू	र मं मं	षु श	षु शु	मिष.
षु	मं गु शु श	शु श	मं गु अ	श	मं गु	गु	सम.
श शु	०	षु	चं	षु शु	र चं	र चं मं	शषु.

टीका-पंचधामैत्रिचक्र साधन । उपरोक्त नैसर्गिक और तात्कालिक
मैत्रि साधन कर्के देखना उन दोनों मैत्रिमें जो ग्रह मित्रका होंवे
अधिमित्र (मित्र मित्र अधिमित्र) दोनों मैत्रिमें जो ग्रह शत्रु होंवे
अधिशत्रु (शत्रु शत्रु अधिशत्रु) एक मैत्रिमें मित्र और दुसरीमें शत्रु
तो सम होता है (मित्रशत्रु-सम) ऐसेहि मित्र और सम होंवे तो मि
(सममित्र-मित्र) सम और शत्रु होंवे तो (समशत्रु-शत्रु) श
होता है ॥ ५७ ॥

तृतीयदशमौ नवमपंचमौ चतुर्थाष्टमौ सप्तमंषादर्द्धितो
ग्रहाः पश्यन्ति ॥ ५८ ॥

टीका-तीसरे ३ दशमे १० एकपाद । नवमे पांचवें ५ द्विपा
चौथे ४ आठवे ८ त्रिपाद और सातमें ७ स्थानमें ग्रह पूर्ण दृष्टी
देखते हैं ॥ ५८ ॥

तृतीय दशमौ शनि त्रिकोणं गुरु अतुरस्त्रं भौमध
विरोधतः पूर्ण पश्यति ॥ ५९ ॥

टीका-ग्रहो कि विशेष दृष्टि । तीसरे ३ दशमे १० शनि । नवमे
पांचवें ५ गुरु । चौथे ४ आठवे ८ स्थानमें मंगल विशेष कर्के पूर्ण

से देखते हैं अर्थात् संवत् ७ सप्तमस्थान की कही है
तो सातमे तो ये शनि गुरु भौम पूर्ण दृष्टी से देखते हैं विशेष कर
[३।१०] [९।५] [४।८] इन स्थानों में भी पूर्ण दृष्टी
से देखते हैं यह इन ३ ग्रहों की विशेष दृष्टी कही है ॥ ६० ॥

दिनेवारारंभादस्तकालो निश्चयस्ततो वारप्रवेश कालांतः

स्ववारस्वडेनहतोष्ट भक्तो लब्धं गुलिकेष्टकालः ॥ ६० ॥

टीका-गुलिक साधनो पयोगि गुलिकेष्टकाल साधन की रीति ।
दिन के समयका जन्म होयेतो वार प्रवेश कालके आरंभ समय से
सूर्यास्त कालपर्यंत की घट्यादिकों और रात्रिका जन्महोवे तो
सूर्यास्त समय से वार प्रवेशकाल पर्यंत जितनी घट्यादिक होवे उनको
अपने वर्तमान वार के खंडेसे अर्थात् भागेके मूल ६२ में वारों के दिन
रात्रि के खंडे कहें हैं उनमें से जो वार अपना हो उसका दिनका जन्म
। तो दिनके खंडे से और रात्रिका हो तो जो रात्रिका खंडा होवे
ससे गुगन करना आठका भागदेना लब्ध आवे वही गुलिकका इष्ट
काल होता है ॥ ६० ॥ वार प्रवेश काल मुहूर्त चिंतामणी में कहा है उ
की रीति यह है कि ॥ श्लोक-पादोनरेखा परपूर्व योजन पल्युतोनास्ति
। योदिनार्द्धतः । ऊनाधिकास्तद्विबरो द्वैपलं ऊर्द्ध तथा धो दिनप्रवे-
र्तनं ॥ जिस ग्राम का वार प्रवेश काल देखना हो उस ग्राम में जिस
गम की मध्यरेखा लगती हो उस मध्यरेखा और अपने ग्राम के
तिचके जितने पश्चिम अथवा पूर्वयोजन का अंतरहोवे उतनीही सख्या
में से चतुर्थास घटाना शेष रहे उतने ही पलोंको पंद्ररा घटीमें रेखा से
पश्चिम में घाम होता मिलाना और पूर्व में अपना घाम होता घटाना
शेष रहे वह उस ग्रामका वार प्रवेश कालका ध्रुव होता है । इसध्रुवसे
जिस दिनका वार प्रवेशकाल देखना हो उसी दिन के दिनार्द्ध के
साथ अंतर करना शेष जितनी पले बचे उतनीही पल दिनार्द्ध से ध्रुव
अक्ष होवे तो दिन चंदे और दिनार्द्ध में ध्रुव ज्ञात ॥ ६० ॥

घटादेना एवं रात्रिशेषरहते वारप्रवेश हुआ होता जितने पल शेष रात्रि रहते प्रवेशहुया उतनेहि पल दिनमानमें अधिक मिलादेना सो वार प्रवेशकाल से सूर्यास्तकाल पर्यंतका काल होता है। ऐसे हि सूर्यास्तकाल से वार प्रवेश पर्यंत के कालकों जानना। उदाहरण। जैसे किसी का जन्म सम्वत् १९५३ कार्तिककृष्ण ६ भौमवार को इष्ट. ३९। ३ मू. ६। १२ पर रात्रिका जन्म है इसलिये सूर्यास्त से बुधवारके प्रवेश का कालपर्यंत समय निश्चय करने के लिये बुधवार का प्रवेशज्ञान प्रथम किया रतलाम-और मध्यरणा उज्जयनी के बीच के अंतरकी योजना संख्या ६ है इसमें से इसी संख्या का चतुर्थांश. १। ३० घटाया ४। ३० शेष रहे यह पल रेखा से पश्चिम में रतलाम होने में १५ घटी में युक्त की १५। ४। ३० यह रतलाम का वार प्रवेश भुवक हुया इसके और बुधवार के दिन के दिनार्द्ध. १४। २। ० के अंतरकिया १। २। ३० शेष यव्यादि अंतर रहा इसदिन दिनार्द्ध से भुव अधिक है इसलिये १ घटी २ पल ३० विवल रात्रिरहते बुधवार प्रवेशहुआ. अतएव मंगलवार के सूर्यास्त समय २८। ५ से सूर्योदय पर्यंत रात्रिमान ३१। ५५ है इस में से वारप्रवेशकाल १। २। ३० घटाया शेष. ३०। ५२। ३० यह सूर्यास्त से वार प्रवेश कालान्त-समय हुआ इसको मंगलवार के रात्र का जन्म है समय मंगलवार के रात्री के मंड १ जो भागे मू ६२ में कहाँ उस १ से गुणन किये ३०। ५२ ३० हुआ इस के ८ का भागदिया लग्न ३। ५१। ३३ यह गुलिक का इष्टकाल हुआ. इस इष्टपर लग्नस्वष्ट की रीति से स्वष्ट लग्न लाये. ७। २ यह गुलिक लग्न स्वष्ट हुआ ॥ ६० ॥

तत्काल लग्नतुल्यो गुलिकः ॥ ६१ ॥

दिनेर्काश्यां ज्ञानगाङ्ग पंचाग्निनेत्रेदुमिता गुलि-

क मंडाः ॥ ६२ ॥

टीका-आग्नेय गुलिकेष्ट पर लग्न की रीति में जो लग्न माथनको यह गुलिक होमाना है ॥ ६२ ॥

दिने, सूर्यसे रात्रिमें सुषते ७।६।५।४।३।२।१ क्रमसे गुलिक के संडे जानना ॥ ६२ ॥

र रं मं तु शु शु शु

७ ६ ५ ४ ३ २ १ दिनमें गुलिक संडा

३ २ १ ७ ६ ५ ४ रात्रिमें गुं सं०

अन्योन्यदृष्टौ एकतरदृष्टौ अन्योन्यस्थानस्थितावेकं

अस्थितौ वा संबन्धोवगंतव्यः ॥ ६३ ॥

टीका—संबन्ध=ग्रह आपसमें परस्पर देखते होवें उसको प्रथम दृष्टि संबन्ध जानना ॥ एक ग्रहदेखताहोवे दूसरा उसको नहीदेखता होवे परंतु जो देखता है उसकी राशी में गयाहो तो उसको एकतर दृष्टि संबन्ध २ रा० जानना ॥ दोनो परस्पर स्थान में स्थित होवे अर्थात् एककी राशीमें दूसरा और दूसरे की राशी में पहला होवे उसको अन्योन्य स्थान सम्बंध ३ राजानना ॥ दोनो ग्रह एकस्थानमें स्थितहोवे उसको एकज स्थित सम्बंध ४ था जानना ॥ ऐसे चारप्रकार के सम्बंध होते है ॥ ६३ ॥

मंदार्कराः शुष्का अंध्राच्छौ सजलौ जलक्षगौक्षेज्योच ६४

टीका—शनी सूर्य मंगल शुष्क और चंद्र शुक्ल सजल ग्रह जानना शुभ गुरु जलराशीमें जायतो सजल शुष्कराशीमें स्थितहोवे तो शुष्कजानना ॥ ६४ ॥

सर्व ग्रहेभ्योभिकांशादिनात्मकारक स्ततःक्रमेण न्यूनंशा

अमात्य भ्रातृ मातृ पितृ पुत्र ज्ञाति दारा कारकाः ६५

टीका—सूर्यादि राहु पर्यंत सर्व ग्रहोमें से जोग्रह अधिक अंशादिक का हो वही आत्मकारक होताहै फेर उससे न्यूनन्यून अंशादिकके ग्रह क्रमसे अमात्य भ्रातृ मातृ पितृ पुत्र ज्ञातिदारा कारक जानना ॥ ६५ ॥

अंशशब्देनात्मकारकनवांशः ॥ ६६ ॥

टीका—इसप्रथमें जहां अंश शब्दभावे वहां आत्मकारक ग्रहके नवांश लगकी कुंडली जानना इसीको कारकांश कुंडली कहतेहैं ॥ ६६ ॥

ओजर्षे क्रमाद्बाल कुमार युवा वृद्धामृताख्या अवस्थाः
समर्धे व्यत्ययः ॥ ६७ ॥

टीका—विषम राशीमे क्रमसे छठ भंशोके विभागसे बाल १ कुमार २ युवा ३ वृद्धा ४ मृता ५ अवस्था जानना और समराशीमे विरती जानना अर्थात् छ भंशका ग्रहहोवेतो मृता १ छ से १२ तक वृद्धा २ बीससे १८ तक युवा ३ अठारसे २४ भंशतक कुमार २४ चौबीससे ३० भंशपर्यंत बाल ५ अवस्था जानना ॥ ६७ ॥

द्वादशांशादंशषट्केवस्थितः पूर्णरुद्धः ॥ ६८ ॥

टीका—बह जिस राशीमे होवे उस राशीके बारा भंशको आदिहें ६ छभंशके भीतर स्थित हो (अर्थात् १२ । १३ । १४ । १५ । १६ । १७ । १८ भंशका हो) तो वह पूर्ण फलदेता है ॥ ६८ ॥

बलंपदव्युक्तम् ॥ ६९ ॥

टीका—इस ग्रंथमे जहा बल शब्द आवे वहा केरावीका पहल समझना ॥ ६९ ॥

वक्रग उच्चगोवा महाबली ॥ ७० ॥

टीका—जो ग्रह वक्रगती होवे वा अपनी उच्चराशीमे स्थितहोवे वह महाबलवान समझना ॥ ७० ॥

स्वर्तुङ्ग मूलत्रिकोणगा नानिष्ट फलदाः ॥ ७१ ॥

टीका—स्वराशी उच्चराशी मूलत्रिकोणराशीमे जो ग्रहस्थितहोते है वे नेष्टफलनहीदेते है (अष्टमीफलदेवेहै) ॥ ७१ ॥

गुरुपूर्ण दृष्टोयहो नानिष्टफलदः ॥ ७२ ॥

टीका—जिसग्रहको गुरु पूर्णदृष्टीसे देखताहोवेवह नेष्टफलनही देताहै ॥ ७२ ॥
ग्रहर्षसंख्यां ग्रहसंख्यां हता पुनः ग्रहांशसंख्यां हता इष्टजन्म
नक्षत्रलभ संख्याभिर्युतार्कनष्टा शेषावस्थाः ॥ ७३ ॥

शयनो १ पयसान २ नेत्रपाणी ३ प्रकारा ४ गमना ५
५ गमन ६ सभा ७ गम ८ भोजन ९ नृत्यलिप्ता १०

कौतुक ११ निद्रा १२ अवस्थाः ॥ ७४ ॥

टीका-जिसनक्षत्र का ग्रहहोवे उसनक्षत्र की संख्या को ग्रहकी संख्यासे (सूर्यहोतो १ से चंद्रहोतो २ से इसक्रम से संख्याग्रह की होतीहै) गुणन करना फिर उसको ग्रह जितने अंशका होवे उतनीही अंशसंख्यासे गुणन करना और उसमें इष्टघटी जन्मनक्षत्र की संख्या और जन्म के लग्न की संख्या मिलना १२ वाराइका भागदेना देश १ बचेनो शयन २ उपवेशन ३ नेत्रपाणी ४ प्रकाश ५ गमन ६ आगमन ७ सभा ८ गम ९ भोजन १० नृत्यलिप्ता ११ कौतुक १२ निद्रा अवस्था जानना ७३-७४ उदाहरण । सूर्य ६ । १२ । २२ यह स्वातिनक्षत्र के द्वितीयचरणमेंहै अभिन्यादि क्रमसे स्वातिनक्षत्र १५ पंद्रहवाहै इसलिये ग्रहसंख्या १५ हुई इसको ग्रहसंख्या १ से गुणनकिये १५ हुए फिर सूर्य १२ अंश फाई इसकरण ग्रहांश संख्या १२ वारासे गुणनकिये १८० भाये इसमें जन्म समय की इष्टघटी ३९ और मिथुन लग्न के ३ जन्म नक्षत्र पुनर्वसुके ७ मिलानेसे आषाढभा योग ४९ मिलाया २२९ हुए इसमें १२ वाराका भागदिया देश १ बचाभतएव सूर्य शयना अवस्थाने है ऐसेहि सर्वग्रहोकि अवस्था जानना ॥ ७४ ॥

स्वोच्च गोदीप्त स्वभगः स्वस्थो हितभगो हास्ययुक्तः शुभ
वर्गः शांतः स्फुरद्रश्मिः शक्तो मूढोलुप्तोर्नाचगोदीनः पाप
शत्रुभगः पीडितः ॥ ७५ ॥

टीका-अपनी दशराशीमें जो ग्रह स्थितहोवे वह दीप्त १ जानना । औरजो स्वराशी का हो वह स्वस्थ २ मित्रराशी में स्थितहो वह हास्ययुक्तः ३ एवं शुभग्रहों के वर्ग में (अर्थात् दशवर्ग में जिस ग्रहमें अधिक शुभ ग्रहकावर्ग) हो शांत ४ और जोबलवान हो वहशक्त ५ अस्तका हो वहलुप्त ६ नीचराशीमें स्थितहो वहदीन ७ औरपाप ग्रहकी अपवा अपने शत्रुग्रह कीराशी में स्थितहो वहग्रह पीडितसत्तक ८ जानना ॥ ७५ ॥

इति महादेशकृत जातकतत्वे संज्ञातत्वं प्रथमम् ॥ १ ॥

इतिथी जगत्कर्तृ भीमन्महादेशकृत जातकतत्वाख्यजातक प्रमेतगम्नु
भीमिवाक रचित तत्त्वमर्हतिनि भाषाटीकायां संज्ञातत्वं प्रथमम् ॥ १ ॥

॥ अथ सूतिका तत्त्वम् ॥

अथ सूतिका [प्रभृति समयका] विचार गर्जन करते हैं ।

(पिताके परोक्ष जन्मयोग)

चंद्रेणादष्टेष्टेपितुः परोक्षं जन्म ॥ १ ॥

स्थिरकेंद्रमांकायांत्ये चंद्रेण चादष्टेष्टे स्वदेशस्यापितुः

परोक्षं जन्म ॥ २ ॥

चरेकेंतु प्राग्वज्जातस्यापितुः विदेशं गतेजन्म ॥ ३ ॥

मन्देष्टे वास्तेभोमे पितुः परोक्षं जन्म ॥ ४ ॥

ज्ञाच्छांतरे चंद्रे पितुः परोक्षं जन्म ॥ ५ ॥

टीका-पिताके परोक्षमें बालकका जन्मयोग-चन्द्रमालग्नको नहि देखता होतो पिताके परोक्ष में जन्म जानना ॥ १॥ स्थिराशी । २ । ५ । ८ । ११ । का सूर्य । भाठमें ८ नवमें ९ गारवे ११ गारवे । १२ । स्थानमें स्थित होवे, और चन्द्रमा लग्नको नहि देखता होतो पित स्वदेश में रहते हुवे भि पिताके परोक्ष में जन्म होवे [जन्म समयमें पिता घरके बाहर कही होवे] ॥ २॥ चरराशि [मेष तुल मकर कर्क] का सूर्य ८ । ९ । ११ । १२ । स्थान में स्थित होवे और चन्द्रमा लग्न को नहि देखता होतो पिता विदेश में गयाया और पीछे से जन्म हुआ ॥ ३ ॥ शनि लग्न में होवे अथवा सातमें स्थान में मंगल होवे तो पिताके परोक्षमें जन्म जानना, [इससूत्र में दो योग कहे हैं १ शनी लग्न में होतो, २ रा मंगल सात में होतो] ॥ ४ ॥ बुध और शुकके बीच में चन्द्रमा स्थित होवेतो पिताके परोक्ष में जन्म जानना ॥ ५॥

सर्व वेष्टित योग.

भौमव्यंशेचन्द्रे पापलग्ने शुभाःस्वायगाःसर्ववेष्टितो

जातः ॥ ६ ॥

टीका-राशी-१-४-८ । केन्द्रेष्वाणमें चन्द्र होवे और पापग्रह । राशी [१-४-८-१०-११-] का लग्न होवे सर्व शुभ ग्रह दुसरे २

ग्यारह ११ स्थानमें जायतो सर्प वेष्टित जन्म होता है सर्प वेष्टित का तात्पर्य—सर्पाकार नशासे वा तदाकार नालसे भी है ॥६॥ औरभी सर्वार्थमें सर्पवेष्टितके योगकहे है वे प्रसंगसे बताते है । यदि अष्टमेश लग्नमें राहु सहित होवेतो बालक सर्प वेष्टित होवे १ अथवा केंद्रमें राहु और गुलिकसे लग्नेश्वर युतहोवे २ अथवा लग्नेश अष्टमेशकेंद्रमें युतहो ३ तथा लग्न में पापग्रहका द्रेष्काणहोतो बालक सर्प वेष्टित होवे ४ और लग्नमें सर्प वा भंडज द्रेष्काण होवे ५ तथा द्रेष्काण तत्स्वामि युक्तहो और शुभदृष्टिरहितहोतो सर्पवेष्टित जन्महोवे ॥६॥

वृषाजसिंहगे मन्दे वा भोमै भांशतुल्येवयये नालवेष्टितः ॥७॥

टीका—मेष वृष सह राशिके लग्नमें शनि अथवा मंगल स्थित होता उस राशि और नवांशके राशि विभागके समान भंगमें बालक नालवेष्टित होता है अर्थात् वह राशि वा उसका नवांश कालपुरुषके भंगमें जिसस्थान में होवे उस स्थानमें नाला लिपटा हुवा होता है ॥ ७॥

यमल जन्म योगः

चतुष्पदेकं शेषेषुसबलेषु दृश्यद्वन्गेषु यमलजन्मः ॥८॥

टीका—चतुष्पदराशि (मेष वृष सिंह मकर पूर्वाह्न धनका उत्तराह्न) का सूर्य होवे और शेषग्रह बलवान होकर द्विस्वभान राशिके लग्न में स्थित होवेतो यमल जन्म—(जोड़लेजन्म) होवे ८ ग्रंथांतरोंमें लिखा है कि भाधानलग्नका स्वामी और तृतीय स्थानका स्वामी लग्नमें होतो यमल (दो बालक) उत्पन्न होवेंगे । अथवा भाधान लग्नेश तृतीय येशसे युक्तहोकर तीसरे स्थानमें होतोभी वही फल जानना [दो बालक होवेंगे] ॥ ८॥

जन्म समये पिता बंधनयोग—

सूर्यात्रिकोणास्तगौ मन्दारौपापभगौ जन्मनि पिताबद्धः ॥९॥

टीका—सूर्यसे ९।९।७। नवमे पांचवें अथवा सातवे स्थानमें शनि मंगल दोनोही पापग्रहकी राशि में एकत्र स्थित होवेतो जन्म समयमें पिता वैधाहुभा कहना ॥ ९॥

नौकामध्ये जन्मयोग—

पूण्ण्दौ कर्के शेलग्ने जीवेतुयै नौकां जन्म ॥ १० ॥

टीका-पूर्णचन्द्रमा कर्कराशीका होवे और बुध लग्नमें गुरु चतुर्थस्था
नमें स्थित होतो नावमें जन्म हाता है ॥ १० ॥

जलासत्र जन्मयोगाः

जलभोगेऽष्टपुर्णेन्दौ जलासत्रे जन्म ॥ ११ ॥

जलभगावंगचन्द्रौ जलासत्रे जन्मः ॥ १२ ॥

जलभगे चन्द्रे स्वाम्बुस्थे जलासत्रे जन्म ॥ १३ ॥

टीका-जलराशी [४ । ११ । १० । १२ । ८ । ७ ।] का लग्न होवे
और सातमें स्थानमें पूर्ण चन्द्रमा स्थित होवेतो जलके निकट स्था
नमें जन्म होता है ॥ ११ ॥ जल राशीके लग्न और चन्द्रमा दोनों
होवेतो जलके समीप जन्म होवे ॥ १२ ॥ जलराशीका चन्द्रमा दशम
१० अथवा चतुर्थे ४ स्थानमें स्थित होवे तो जलके समीपमें जन्म
मानना ॥ १३ ॥

कारागारे जन्मयोगः

चन्द्रेऽङ्गे मन्देन्त्ये पापदृष्टे कारागारेजन्मः ॥ १४ ॥

टीका-लग्नमें चन्द्रमा और धारद्वयें स्थानमें शनि पापग्रहसे दृष्टहोवेतो
जेलखानेमें जन्म कहना ॥ १४ ॥

[गर्त में जन्मयोगः]

कर्काल्पंगेर्कजे चन्द्रदृष्टे गर्तेजन्मः ॥ १५ ॥

टीका-कर्क अथवा वृश्चिक राशीके लग्नमें शनि स्थित होवे और उस
को चन्द्रमा देखता होवेतो गर्त [खड्डे] में जन्म होता है ॥ १५ ॥

[क्रीडालय देवालय और रेतोकी जमीनमें जन्मयोग]

जलभे मन्देऽङ्गे दृष्टे क्रीडालये कन्द्रे देवालये चन्द्रदृष्टे सरार्क
रावण्यां जन्म ॥ १६ ॥

टीका-जलराशी [४ । १० । ११ । १२ । ८ । ७ ।] का शनि लग्नमें
होवे और उसको बुधदेखता होतो क्रीडालय (आनन्दकी जगह) में
जन्म होवे मृग देखता होवेतो देवालयमें और चन्द्रदेखता होवेतो रेतो
खिड़ी हुई जमीन में जन्म कहना ॥ १६ ॥

(भाषा टीकासहित)

इमशान, रमणीयग्रह, अग्निशाला, राजमंदिर,
शिल्पालयमें, जन्म योग ।

नृलम्बेनन्देकुजदृष्टे श्मशाने सितेन्दुदृष्टेरमणीयग्रहे गुरुदृष्टे
ग्निशालायां रविदृष्टे नरेन्द्रामरालयगोकलान्यतमे दृष्टे
शिल्पालये जन्मः ॥ १७ ॥

टीका-नर राशी (१ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११) के लग्नमें शनी स्थित
होवे और वरुकों मंगल देखताहोतो इमशानमें जन्म जानना । शुक्र
चन्द्र देखते होवेतो रमणीय स्थानमें जन्म होवे । गुरु देखता हावेता
अग्निशाला भयवा रसोई घरमें जन्म कहना । सूर्य देखता हावेतो
राजमहलमें तथा देवालयमें तथा गौशालामें जन्म होवे । और बुध जो
देखता हावेतो शिल्पालय (कलाभवन सिलावटी सुधारी लुहारी सुनारी
बिचकारी काम जिसमकानमें होतेहोवे उसमकान)में जन्मजानना ॥ १७ ॥

माताछोडदे और दीर्घायु हावे ।

मन्दाराभ्यां पञ्चमे स्तेङ्गे चन्द्रे मातात्पज्यते गुरुदृष्टेतु
चन्द्रे दीर्घायुः ॥ १८ ॥

टीका-शनि मंगलसे ५ । ७ । ९ । पांचवे सातवे तथा नवमें स्थानमें
चन्द्रमा होवेतो मातावस बालकको छोडदेवे यदि उस चन्द्रको गुरु
देखता होवेतो माता छोडदेवे तोभी दीर्घायु होताहै ॥ १८ ॥

माता त्याग करे और मरमाने के योग.

पापदृष्टे चन्द्रे गे ऽस्ते भौमे मातृत्यक्तो विनश्यति ॥ १९ ॥

पापदृष्टे चन्द्रे मंदारौलाभे मातृत्यक्तो विनश्यति ॥ २० ॥

टीका-पापग्रहे देखे हुआ चन्द्रमा लग्नमें होवे और सातमें मंगल
होवेतो माताके छोड देनेसे मरजाता है ॥ १९ ॥ पापग्रहने देखा
हुआ चन्द्रमा लग्न में होवे शनि मंगल दोनो ग्यावने स्थानमें स्थित
होवेतो माताके त्यागकर देनेसे मरजाता है ॥ २० ॥

विना मात्र संबंधी ग्रहमें जन्म योग

मातापितृग्रहयोर्बली तत्संबंधीग्रहे जन्मः ॥ २१ ॥

टीका-माता पिता ग्रहमस नोग्रह बलवान होवे उसके संबंधी घरमें जन्म जानना अर्थात् माताग्रह बलवान होवेतो माता संबंधी नाना मामा मासी के घरमें जन्म होवे और पितृग्रहबलवान होतो पितृ संबंधी पिता काका भादिके घरमें जन्म होता है ॥ वृहज्ज्ञानकमें "दियाकं शुक्रो पितृ मातृ संज्ञितौ शनैश्चरन्दू निशितद्विपर्यान् । पितृव्य मातृप्यसृ संज्ञितौचता ययौन युग्मक्षं गनौ तयोः शुभौ " । अर्थात् दिनमें जन्म होवे उसजीवके सूर्यपिता और शुक्रमाता संज्ञित ग्रह होता है एव रात्र में जन्म होवे उसके शनैश्चर पितृ संज्ञक और चन्द्रमा मातृ संज्ञक होता है येही उलट अर्थात् दिनमें जन्म होवे उसके शनैश्चर पितृव्य (काका) और चन्द्रमा मातृप्यसृ (मासी) संज्ञक और रातमें जन्म हो तो सूर्य काका और शुक्र मातृप्यसृ (मासी) संज्ञक जानना । इसप्रकार पितृ मातृ संज्ञक ग्रह कहे है इनहीके बलके अनुसार जन्म स्थान कहना ॥ २१ ॥

वृक्षनदी प्राकारादिमें जन्म यागः ।

सौम्याः सर्वे नीचगा वृक्षनदी प्रकारादिषु जन्म ॥ २२ ॥

टीका-सर्व शुभग्रह नीचराशिमें गये होवेतो वृक्षके नीचे तथा नदीमें बा, किलेके भीतर अथवा कोइ प्राकार (परकोटे) के भीतर जन्म होता है ॥ २२ ॥

मार्गमें जन्म योगः

नीचगेपशुभेषुचंद्रेके ग्रहमात्रादृष्टे द्रव्यांजन्म ॥ २३ ॥

टीका-शुभग्रह नीचराशिमें स्थित होवे और लग्नमें गयेहुवे चंद्रको कोईभी ग्रह देखता नहीं होवेतो मार्गमें जन्म ॥ २३ ॥

अंधकारे जन्म योगः

चंद्रे तुर्ये वा मंदयुतदृष्टे वा जलभांशेन्धकारे जन्म ॥ २४ ॥

टीका-इस सूत्रमें तीनयोग है । १ चंद्रमा चोयेस्थानमें स्थित होवे तो अंधकारमें जन्म होवे २ अथवा चंद्रमा शनीसे युक्त दृष्टहोवेतो अंधकारमें जन्महो अथवा चंद्रमा जलराशि [४ । १० । ११ । १२ । ८ । ७] में तथा जलराशिके नवमांशमें होवेतो अंधकार (अंधरेमें) जन्म ॥ २४ ॥

बहुदीप गृहे जन्म योग,

सबलेके भौमदृष्टे बहुदीपगृहे जन्मः ॥ २५ ॥

टीका-बलवान सूर्यको भंगल देखता होवेतो बहुत दीपकवाले घरमें जन्म कहना ॥ २५ ॥

तैल, वर्ति, दीपज्ञान योग

चन्द्रात्तैल ज्ञानम् ॥ २६ ॥

लग्नादीपवर्ति ज्ञानं ॥ २७ ॥

चरेकेचर स्थिरेके स्थिरो द्विस्वभावे खंडवदीपः ॥ २८ ॥

टीका-मृतिका घरमें-दीपकमें तैल चन्द्रके अनुरूप [क्षीण , पूर्ण, सपाप, जैसा चंद्रहो वैसा अरूप अधिक मध्यम] जानना ॥ २६ ॥ और ऐसेहि लग्नके अनुरूपवत्ती कहना ॥ २७ ॥ जन्मसमयमें चर राशीका सूर्य होवेतो खंचलदीप(हातमें चलता फिरता होगा) स्थिर राशीका सूर्य होतो स्थिरदीप (एकस्थानमें रखा हुआ) और द्विस्वभाव राशीका सूर्य होतो खंडवदीप(देहलीमें रखा हुआ दीपक) जानना ॥ २८ ॥
मस्तकसे वा पांवसे जन्म ज्ञान ।

शीपादयोरिगे र्द्धतः प्रसव उभयोदयोरिहस्ततो

न्यथापादतः ॥ २९ ॥

टीका-जन्म लग्नमें शीर्षोदय राशी (३ । ५ । ६ । ७ । ८ । ११)

नवांशहो तो मस्तककी तरफसे जन्म कहना । उभयोदय (१२) का नवांशहो तो हातसे जन्म अर्थात् प्रथम हस्त निकला । और पृष्ठोदय राशी का नवांश होवेतो पांवकी औरसे जन्म जान कष्ट योग-

लग्नचंद्रान्यतरतो धंघस्तगेपुकूरेपुमातुः कष्टम् ॥ ३० ॥

टीका-लग्न तथा चंद्रासे चोखे सातमे स्थानमें क्रूरग्रहहोवेतो मा विशेष कष्टहुआ जानना (क्रूरग्रह-सू. मं. श. रा.) ॥ ३० ॥

मृतिका गृह द्वारज्ञानं ।

केंद्रगस्य वा बालिनो ग्रहस्य दिशिगृहद्वारम् ॥ ३१ ॥

टीका-केंद्र १।४।७।१०। स्थानमें जोग्रह स्थितहोवे तथा जोग्रह सर्वग्रहोंसे अधिकबलीहोवे उसकी दिशामें सूतिकाग्रहका द्य जानना ॥ ३१ ॥ ग्रहोंकीदिशा बृहज्जातक मे इसप्रकार कही है "प्राग्याराविशुक लोहित तमः शौरेन्दु वित सूरयः" अर्थात् पूर्वका स्वामि राशि १ अग्निका शुक्र २ दक्षिणका मंगल ३ नैऋतकाराहु ४ पश्चिम शनि ५ वायव्यका चंद्र ६ उत्तरका बुध ७ ईशानका गुरु ८ स्वाति जानना ॥ ३१ ॥

गृहज्ञान ।

काष्ठाढ्यं नद्यं दग्धं चित्रं हृदं रम्यं जीर्णं क्रमादर्कादिपुष्यो बली तदनुसारी गृहम् ॥ ३२ ॥

टीका-जन्म समयमें सूर्यादि ग्रहोंमेंसे जोग्रह अधिक बलीहोवे तदनुसार बालकका जन्म गृह (मकान) जानना । यदि सूर्य घलयान होवेंतो काष्ठगृह ऐसेहि चंद्रबलवान होतो नयामकान मंगल० जला हुवा० बुध० चित्र विचित्र गुरु ममवृत्त, शुक्र० सुंदर शनि० पुराना [जीर्ण] मकान जन्म का कहना ॥ ३२ ॥

गृहके किसभागमें जन्म हुआ ।

वृषाजयो रुदये गृहस्य पूर्वभागे युग्मस्याग्नेयां कर्क सिंह योर्याम्ये कन्यायां नैऋते तुलावृश्चिकयोः पश्चिमे धनुषो वायो मंदमयो रुतरे शपस्थेरान्यां जन्म ॥ ३३ ॥

एवं शय्या शानम् ॥ ३४ ॥

टीका-जन्म समयमें मेघ या वृषभ लग्न होतो घरके पूर्वभागमें और मिथुन होतो घरके अग्निकोणमें कर्क सिंह राशिका लग्न होतो घरके दक्षिण भागमें कन्या लग्न होतो घरके नैऋत कोणमें तुला वृश्चिक लग्न होतो घरके पश्चिम भागमें धनराशिका लग्न होतो घरके वायु कोणमें मकर कुंभ लग्न होतो घरके उत्तर भागमें मीनराशिका लग्न होतो घरके ईशान भागमें जन्म कहना ॥ ३३ ॥ इसीप्रकार शय्या (सुतिका का पलंग) का विचार जानना ॥ ३४ ॥

शय्या तिर वा पाद विचारः ।

लग्नदिशि शय्याशिर विपटंकान्त्येषु पादाः ॥ ३५ ॥

यत्र पाप स्तत्रो त्याटः ॥ ३६ ॥

टीका-उपरोक लग्नकी दिशाके तरफ पलंग का शिर (शिराध्या) कहना अर्थात् मेष वृष लग्न में पूर्वकी तरफ मियुन में अग्नि कोणमें ॥ १४ ॥ १५ ॥ कर्क सिंह में दक्षिणमें इसी प्रकार बाराहि लग्न में जानना और लग्न से ३।६।९।१२। तीसरा छठा नवा बारावा स्थान पलंग के पाये जानना ॥ ३५ ॥ इन स्थानों में से जिस स्थानमें पाप ग्रह युक्त होवे वह पलंग का पाया फटाहुवा समझना ॥ ३६ ॥

उपसूति का ज्ञान ।

लग्न चन्द्रान्तरग्रह संख्या उपसूतिका उदगर्द्धोत्थन्तर
गा दक्षिणार्द्धे बाह्याः ॥ ३७ ॥

टीका-लग्न और चन्द्रके बीचमें जितने ग्रह स्थितहों उतनीही संख्या उपसूतिका जानना ग्रह उत्तरार्द्ध [लग्नसे सप्तमभावपर्यंत] में होवेतो भीतर (सूतिका के समीप में) और दक्षिणार्द्ध (सप्तम से लग्न पर्यंत) में होवेतो बाहर कहना ॥ ३७ ॥

वक्रोच्चसंस्थे त्रिगुणाः स्वर्क्षं व्यंशानवां शोस्थितै द्विगुणा
नीचास्तगैरर्द्धमिता उपसूतिकाः ॥ ३८ ॥

मीनाजङ्घिन्दे गोघटाङ्गे चतस्र कर्कहयांगेपंच शेषे
तिस्रउपसूतिका ॥ ३९ ॥

टीका-लग्न चन्द्रके बीचमें जितने ग्रह स्थितहो उतनी उपसूतिका फहीहै उस्मेभि यदि वक्र राशिका अथवा उच्च राशिका ग्रह स्थित होवेतो उनकी संख्या की तीन गुनी उपसूतिका कहना और स्वराशी स्वद्रेष्काण स्वनवांशके ग्रह होतो उनकी संख्यासे द्विगुण संख्या उपसूतिका जानना ॥ ऐसेहि जितनेग्रह नीचराशी के भस्तके होवे उतनी संख्या कि भाषि उपसूति का समझना ॥ ३८ ॥ तथा मीन मेष लग्न में जन्म होतो दो २ वृष कुम्ब लग्न होतो ४ बार कर्क सिंह होतो पांच ५ शेष ३।६।७।८।९।१०। लग्न होतो ३ उपसूतिका जानना ॥ ९ ॥ इनमें भी सर्वाधिक लिखाहै कि चन्द्र वृष

गुरु शुक्रादि शुभ ग्रह हीनो सुन्दर सौभाग्यवती और शनि र
योग होतो विधवा कृष्ण वर्णा कृष्ण वस्त्रा उपमुनिका जान
बहुरुदितयोगः ॥

गोजात्रि युग्म सिंहंगे बहुरुदितो जातो न्ययान ॥

टीका-वृषभ मेष धन मिथुन सिंह राशिका लग्न होतो जन्म
में बालक बहुत रोया और शेष लग्न में होतो रुदन नहीं
जानना ॥ ४० ॥

निर्जने प्रसव योगः ॥

अंगे चंद्रे ग्रहमात्रादृष्टे निर्जने प्रसवः ॥ ४१ ॥

टीका-लग्नमें चंद्रमा स्थितहोवे और उसको कोईभी ग्रहनहीं
होवेतो निर्जन (शून्य) स्थान में जन्म कहना ॥ ४१ ॥

सुख तथा कष्टसे प्रसव योग ॥

स्वांशुगे शुभेषु सुखेन प्रसव त्रिकोणास्तंगेषु

कष्टतः ॥ ४२ ॥

टीका-दशमें १० और ४ चोथे स्थानमें शुभग्रह स्थित हों
हुवा और त्रिकोण ९।५। सप्तम ७ मस्थानमें पापग्रह
कष्टसे प्रसवहुवा कहना ॥ ४२ ॥

जन्मसे पूर्व पितृ मरण योगः ॥

तुर्येखेवा मन्शारक योगे जन्मतः प्राक्पितृ

टीका-चतुर्थ ४ भयवा १० दशम स्थानमें शनि मंगल
नो ग्रहोंका योग होवेतो जन्म के पहले पिता मरण क
मानाके साथ बालक का मृत्यु योग ।

लग्नं पष्टास्ताष्टमगाः पापमात्रासह बालस्य

ग्रन्ते चंद्रे सर्मदे लग्नाष्टमे भौमे मात्रासह बालस्य

ग्रस्ते केर्मदजा न्यतमपुते रंध्राङ्गे कुजे मा

ति. ४६ ॥

का- लग्न में छठे सातमें भाठमें स्थान में सर्व पापग्रह स्थितहोंवे
माता के साथ में बालक की मृत्यु होवे ॥ ४४ ॥
ग दिनका चंद्रमा शनिसे युक्त होवे और लग्नमें भयवा भांठमें
ग होवेतो माताके साथ बालक की मृत्यु होवे ॥ ४५ ॥
ग समय का रात्रि, शनि भयवा बुध से युक्त होवे और लग्नमें
ग भाठमें मंगलहोवे तो माता के साथ बालक की मृत्यु होवे ॥ ४६ ॥

महाकष्ट योग.

भौमभेकरिमंदेन्दुदृष्टेष्टमेचेज्ये बालस्थ महाकष्टम् ॥ ४७ ॥
त-मंगल की १ । ८ राशी के सूर्य मंगल शनि होवे और चंद्र दे-
१ होवे ८ भाठमें स्थानमें गुरु स्थित हो तो बालक को महाकष्ट
है ॥ ४७ ॥

सद्यमृत्यु होनेके योग.

पपारि पापयुतौ बालमृतिः ॥ ४८ ॥
शनेशेसाकेनीचगेरन्ध्रे बालस्थ सद्यमृतिः ॥ ४९ ॥
हौकेष्टेपापनाशयुतदृष्टे बाल ० ॥ ५० ॥
नेकेष्टेमन्दे एमभौमे बाल ० ॥ ५१ ॥
शरभेस्वेके पापेष्टे बाल ० ॥ ५२ ॥
गृष्टेचंद्रे पापेष्टेबाल ० ॥ ५३ ॥
सांयेचंद्रे शुभेष्टेकेणरापा या ० ॥ ५४ ॥
शकेन्द्राराग्ययांकाङ्गाष्टमगास्तबलागुर्वदृष्टाबाल ० ५५ ॥
गांत्यास्तागिपुगापयुतभदो बलिशुभायुतदृष्टेया ० ५६ ॥
त्रिस्तेवापावा ० ॥ ५७ ॥
द्रन्ध्रे बलिनः पापाबाल ० ॥ ५८ ॥
इन्द्रावद्रेकेन्द्राष्टमगाः पापाबाल ० ॥ ५९ ॥

कर्काल्यंगे खलाःपूर्वाब्दे सौम्याःपराब्दे वा लग्नास्तादात्ये-
सपापेदौशुभादृष्टे शुभायुतेषुकेंद्रेषुबाल० ॥ ६० ॥

त्रिकेतौम्याःकेंद्रकोणेपापा लग्नेर्केशाल० ॥ ६१ ॥

चन्द्रपापयुतेषु सर्वकेंद्रेषुबा० ॥ ६२ ॥

लग्नास्तगौपापो चंद्रो मिश्रदृष्टोबाल० ॥ ६३ ॥

क्षीर्णेदायंत्येपापेषुलग्नाष्टमगेषु केंद्रतरगेषु शुभेषुबाल० ६४

पापांनरेचंद्रे रंध्राग्न्युत्तमगे बाल० ॥ ६५ ॥

संध्यापांभांत्यगाः पापाइन्दुहोरायां बाल० ॥ ६६ ॥

रंध्रास्तगौपापोपापमात्र दृष्टोबाल० ॥ ६७ ॥

लग्नान्त्याष्टाङ्केकमाच्चंद्रारार्कमन्दा बाल० ॥ ६८ ॥

पष्ठपांजातस्य भौमार्कविभेमृतिः० ॥ ६९ ॥

पट्टाष्टमगेचंद्रे पापवर्गस्थे तुर्यराहौशिशुमरणं ॥ ७० ॥

टीका-घारमे और छठे स्थानमे पापग्रह युक्तहोवे तो बालककी सद्य मृत्यु कहना ॥ ४८ ॥ लग्न का स्वामी सूर्ययुक्त होवे और नीचराशी

मे स्थित होकर आठमे स्थान मे जाय तो बालक की सद्य मृत्यु कहना ॥ ४९ ॥ राहु केंद्र १।४।७।१०। में स्थितहोवे और पाप

ग्रह मात्र से युक्त तथा दृष्टहोवे तो बालक की सद्य मृत्यु होतीहै ॥ ५० ॥

सातमें सूर्य लग्नमें शनि आठ में मंगल होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होतीहै ॥ ५१ ॥ शनि तथा मंगल की १०।११।१।८ राशिका

सूर्य १० दशम स्थान मे स्थितहोवे और पापग्रहो से दृष्टहो तो बालक की शीघ्र मृत्यु होतीहै ॥ ५२ ॥ चंद्रमा छठे आठ में स्थान मे

पापग्रहो से दृष्टहोवे तो बालक की शीघ्रमृत्यु जानना ॥ ५३ ॥

के अंग अंश (२९ अंश) में स्थित चंद्रमा शुभ ग्रहो से दृष्ट होवे और ९।५ नवमे पांचमे स्थान मे दो से अधिक पाप ग्रह होवे तो शीघ्र मृत्यु कहना ॥ ५४ ॥ शनि सूर्य चंद्र मंगल

ये ग्रह बलवान होकर क्रमसे १२।१।१।८। बारमे नवमे लग्न मे आठमे स्थान मे जाय और गुरु इनको नही देखता होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु कहना ॥ ५५ ॥ नवमे पांचवे बारमे सातमे ९।५।१२।७ तथा लग्न मे पापग्रह युक्त चंद्रमा स्थितहोवे और बलवान शुभग्रह से युक्त तथा दृष्ट नही होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु कहना ॥ ५६ ॥ लग्नमे चंद्रमा और सातमे २।३ पापग्रह होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु जानना ॥ ५७ ॥ शनी से ८ आठ मे स्थान मे बलवान ३ पाप ग्रहगये होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु जानना ॥ ५८ ॥ क्षीण चंद्रमा लग्न मे स्थित होवे केंद्र १।४।७।१० और अष्टम स्थान मे पापग्रह युक्त होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होति है ॥ ५९ ॥ कर्क और वृश्चिक राशि के लग्नमे जन्म होवे पुष्यार्द्ध (लग्नसे सप्तम भावपर्यंत) में पापग्रह स्थितहोवे और उत्तरार्द्ध (सप्तमसे लग्न पर्यंत) में शुभग्रह स्थित होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होवे, अथवा लग्न सप्तम अष्टम और बारमे स्थानमे पापग्रह युक्त चंद्रमा स्थितहोके शुभग्रहों से दृष्ट नही होवे और केंद्रस्थान में शुभग्रह युक्त नही होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होति है ॥ ६० ॥ शिक स्थान ६।८।१२ मे शुभग्रह, केंद्र १।४।७।१० कोण (९।५) स्थानमे पापग्रह और लग्नमे सूर्य स्थित होवे तो बालक की जल्दी मृत्यु जानना ॥ ६१ ॥ वारोहि केंद्र १।४।७।१० स्थानमे पाप ग्रह और चंद्रमा स्थितहोवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होवे ॥ ६२ ॥ लग्न और सप्तम स्थानमे दो पापग्रह स्थितहोवे और चंद्रमा मिश्रग्रह (शुभ पाप दोनु) से दृष्टहोवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होवे ॥ ६३ ॥ बारमे स्थानमे क्षीणचंद्रमा, लग्न १ और अष्टम ८ स्थान मे पापग्रह, और केंद्रस्थान के शिवाय अन्य पगकर तथा भावो विलस स्थान में शुभग्रह स्थित होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु जानना ॥ ६४ ॥ पापग्रहों के बीचमें चंद्रमा ८ । ४ । ७ भाव में गयाहोवे तो बालककी शीघ्र मृत्यु होवे ॥ ६५ ॥ संघा समय मे जन्म होवे और राशी के अंत्य भंडामे अर्थात् २९ में भंडामे पाप ग्रह गयेहुवे चंद्रकी-हारा मे स्थित होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होति है ॥ ६६ ॥ आठमे और सातमे स्थानमे पापग्रह स्थित होवे और पापग्रह मान देखते होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु जानना ॥ ६७ ॥

चंद्र १ मंगल १२ सूर्य ८ शनि १ स्थानमे क्रमसे गयेहोवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु कहना ॥ ६८ ॥

छठके दिन जन्म होवे मंगल और सूर्य लग्नमे स्थितहोवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होतिह ॥ ६९ ॥

छठे भाट मे स्थान मे चंद्रमा पापवर्ग मे गया हुआ स्थितहोवे और चौथे स्थान मे राहुहो तो बालक का शीघ्र मरण होवे ॥ ७० ॥

दश ग्यारा सोला दिन मे मृत्यु योग.

चंद्रा दस्ते भौमाकौ दशाहे शिशु मरणं ॥ ७१ ॥

मंद भगे जीवेष्टे पापे दृष्टे एकादशाहे शिशुमरणं ॥ ७२ ॥

मन्दे ज्ञे पातनात्र दृष्टे षोडशाहे शिशु मरणं ॥ ७३ ॥

टीका—चंद्रमा से सातमे स्थानमे मंगल और सूर्य दोनो स्थितहोवे तो दशमे दिन बालककी मृत्यु होवे ॥७१॥ शनी कीराशि १०।११ का गुरु ८ भट्टम स्थान मे स्थितहोवे और पापग्रहों से होवे तो ११ ग्यार में दिन बालक की मृत्यु जानना ॥७२॥ शनि लग्न में होवे सब पापग्रह देखते होवे तो १६ सोलमे दिन बालककी मृत्युजानना ॥७३॥

लग्नांशे शे षष्ठे षष्ठभुतुल्यं दिनेशिशु मरणं ॥ ७४ ॥

टीका—जन्मलग्न जिस राशिके नवमांश मे हो उसका स्वामी छठे स्थान में गयाहोवे तो छठे स्थान मे जो राशि होवे उतने दिन में बालक मरता है ॥ ७४ ॥

अक मास मे शिशु मरण योग.

षष्ठाष्टमगाः साम्या वक्रग पापदृष्टा मासे शिशुमरणं ॥ ७५ ॥

सपापे ज्ञे शे द्यूने मासे शिशुमरणं ॥ ७६ ॥

कुर्जेगे जीवेत्ये शुभेषष्ठे मासे शिशुमरणं ॥ ७७ ॥

सपाप जन्मेशे रंध्रे मासेशिशुमरणं ॥ ७८ ॥

लग्नांशे स्वलविजिते मासे शिशुमरणं ॥ ७९ ॥

मंदार्कां रंध्रे षाषष्ठे मासे शिशुमरणं ॥ ८० ॥

टीका-छठे आठवें स्थान में शुभ ग्रहण होवे वक्रगती में गये हुवे पापग्रह देखते होवे तो १ मास में बालक की मृत्यु कहना ॥ ७५ ॥

पापग्रह से युक्त लग्न का स्वामी ७ सातवें स्थान में स्थित होवे तो १ एकमास में बालक की मृत्यु होवे ॥ ७६ ॥

लग्न में भौव बार में स्थान में गुरु, भार शुभ ग्रह छठे स्थान में बैठे होवे तो १ अकमास में बालक की मृत्यु जानना ॥ ७७ ॥

जन्म राशी का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ८ आठ में स्थान में गया होवे तो १ मास में बालक का मृत्यु जानना ॥ ७८ ॥

लग्न का स्वामी ७ सातवें स्थान में पापग्रह से पराजित (हारा) हुवा होवे तो १ मास की आयु जानना ॥ ७९ ॥

शनी सूर्य मंगल ८ आठ में भयवा छठे स्थान में जाय तो बालक की १ एकमास की आयु कहना ॥ ८० ॥

तीन पक्ष से अकवर्ष पर्यंत की आयु के योग.

ग्रहणेङ्गेशे ऽवले सपापे पक्षत्रयं वा नासत्रयं जीवति ॥ ८१ ॥

रंभ्रेङ्गेशे पापयुत दृष्टे सूर्यमासायुः ॥ ८२ ॥

सर्व आपोऽङ्गिमा विधलाः पण्मासायुः ॥ ८३ ॥

पापक्षे सुते इन्द्रकाराः पण्मासायुः ॥ ८४ ॥

टीका-लग्न का स्वामी ग्रहण समय का होवे और निर्बली होकर पापग्रह से युक्त होवे तो पक्षत्रय (देढ महिना) भयवा तीन महिना बालक जीवित रहेगा ॥ ८१ ॥

लग्नका स्वामी ८ आठ में स्थान में पापग्रह से युक्त दृष्ट होवे तो ४ चार मास की आयु बालक की जानना ॥ ८२ ॥

शुभ तथा पाप सर्व ग्रह आपोऽङ्गिमा (३।६।९।१२) स्थान में जाय और निर्बली होवे तो बालक की ६ छेमास की आयु कहना ॥ ८३ ॥

पापग्रह की राशी (१।८।१।१०।११) में गये हुवे चंद्र सूर्य मंगल पंचमस्थान में स्थित होवे तो ६ छे महिने की आयु जानना ॥ ८४ ॥

भूतान्तराणां वा न्यायान्तराणां वा रंभ्रेङ्गेशे वा स्वामं कर्माः पापः

ष्टष्टमे वा मासि मृतिः ॥ ८५ ॥

लग्नद्रेष्काणेशे षष्ठे भृत्ये मासि मृतिः ॥ ८६ ॥

टीका—दुसरे और बारमे स्थान में १ अथवा १२ बारमे और छठे स्थान मे २ वा आठमें और छठे स्थानमें ३ अथवा ८ आठमे और नवमे स्थानमे ४ सर्व पापग्रह स्थितहोवे तो छठे तथा ८ आठ मे महिने मे मृत्यु कहना ॥ इस सूचमे चारयोगकहेहे इनमे से कोईभी योग हो तो ६ तथा ८ महिने मे बालक की मृत्यु जानना ॥ ८५ ॥

लग्न द्रेष्काण का स्वामी ६ छठे स्थान मे स्थितहोवे तो छठे स्थान मे जो राशी होवे वतनेहि संख्या के मासमे बालक की मृत्यु जानना ॥ ८६ ॥

भेक वर्ष से २४ वर्ष पर्यंतके आयु योग.

षष्ठाष्टमयोः पाप दृष्टयोः पापयो र्षर्पांतरे मृतिः ॥ ८७ ॥

चंद्रशौ केंद्रे मूढमंदारदृष्टौ र्षर्पांतरेमृतिः ॥ ८८ ॥

लग्नपा० चंद्रशेष्टमे पापमात्रदृष्टे वर्षत्रयायुः ॥ ८९ ॥

केन्द्रापष्टयक्रमेग्रहेकुजमे सयलारदृष्टे वर्षत्रयायुः ॥ ९० ॥

टीका—पापग्रह से दशे दूवे पापग्रह छठे आठमे स्थान मे गयेहोवे तो एक वर्षके बाद बालक की मृत्यु जानना ॥ ८७ ॥

चंद्रबुध शौच केंद्रमे स्थितहोवे और भस्त्रके शनि मंगल वनको देखते होवे तो बालक की एक वर्ष के पश्चात् मृत्यु जानना ॥ ८८ ॥

लग्न के स्वामी से चंद्रमा की राशी का स्वामी ८ आठवेस्थान मे स्थितहोवे और पापग्रह माघ देखते होवे तो २ दो वर्ष की आयु जानना ॥ ८९ ॥

चंद्र और छठे आठमें १।४।७।१०।१६।८ स्थान मे य क्रमान्वय छठेवर्ष अथवा बुधिका राशीका भाग और उरुको बलवान मंगल देखावा होवे तो ३ तीन वर्ष की आयु जानना ॥ ९० ॥

मौन्ये पाशांगना पापदृष्टौ पुण्यवन्तो वर्ष त्रयायुः ॥ ९० ॥

शिवनेष्टमे शीवे मन्देन्द्रके दृष्टे भूगदृष्टे वर्षत्रयायुः ॥ ९१ ॥

पञ्चाष्टमे कर्कगेत्रे चंद्रदृष्टे तुर्येन्द्रे मृतिः ॥ ९३ ॥

टीका—पापग्रह के नवमांशमे गये हुवे सूर्य चंद्रमा तीसरे स्थानमे स्थित होवे और पापग्रह उनको देखते होवे तो ३ वर्ष की आयु जानना ॥ ९१ ॥

मेघ वृश्चिक शराशी का गुरु भाठमे स्थान मे जाय और डस्को शनि चंद्र सूर्य देखते होवे शुक्र की दृष्टि नहि होवे तो ३ वर्ष की आयु जानना ॥ ९२ ॥

छठे भाठमे स्थान मे कर्कराशी का बुध होवे और चंद्रमा डस्को देखता होवे तो ४ वर्ष की आयु जानना ॥ ९३ ॥

सैद्वर्केज्यौ वा सैद्वर्काक्र्यारा वा समन्देन्द्रच्छाराः पञ्चमाब्दे मृतिः ॥ ९४ ॥

लग्नेराहौ पापमात्रदृष्ट युते पञ्चमाब्दे मृतिः ॥ ९५ ॥

सुर्येन्वृभेत्रिकेशुके पापदृष्टे षष्ठेन्द्रे मृतिः ॥ ९६ ॥

लग्नेर्कमन्दाराः क्षीणेन्दावस्ते षष्ठे सप्तमेवाब्दे मृतिः ९७ ॥

क्षीणेदावस्ते लग्नेमंदाराच्छा गुर्वदृष्टाः सप्तमेब्दे मृ० ९८ ॥

पञ्चाष्टमगाः सीम्पाः कोणेपापा अष्टमेब्दे मृतिः ॥ ९९ ॥

क्षीणेदावस्तेयुक्ते लग्नेमंदाराकार्गुर्वदृष्टासप्तमेब्दे मृतिः १०० ॥

त्रिकेचंरर्काकियोगे नवमाब्दे मृतिः ॥ १०१ ॥

टीका—चंद्रमा सूर्य गुरु स युत होवे १ अथवा चंद्रमा सें सूर्य शनि मंगल युक्त होवे २ अथवा शनि सें चंद्र शुक्र मंगल युक्त होवे ३ तो ५ पांच वर्ष की आयु जानना । इस सूत्रमे ३ योग है इनमेंसे कोईभी होवे तो ५ वर्ष की आयु कहना ॥ ९४ ॥

लग्न में राहु सरे पाप ग्रहों से दृष्ट होवे तो पांच वर्ष की आयु जानना ॥ ९५ ॥

कके भगवा सिद्ध राशी का गुरु भिन्न स्थान (६।८।१०) में हों
होवे और पाप ग्रहों में इष्ट होने तो छठे वर्ष में मृत्यु जानना ॥ ९६ ॥

लग्न में गुरु शनि मंगल स्थित होने और क्षीण चंद्रमा ७ सात
स्थान में होवे तो छठे भवता मान में वर्ष में मृत्यु होंगे ॥ ९७ ॥

रात में स्थान में क्षीण चंद्रमा लग्न में शनि मंगल गुरु स्थित होने
और इनका गुरु नही देखना हों तो मान में वर्ष में मृत्यु जानना ॥ ९८ ॥

छठे भाट में स्थान में सौम्य ग्रह (मं. बु. गु. शु.) और ९।९
स्थान में पाप ग्रह जाते तो भाट में वर्ष में मृत्यु जानना ॥ ९९ ॥

तुल्य तथा वृषभ राशी का क्षीण चंद्रमा मध्यम स्थान में होवे और
लग्न में शनि मंगल मूल्य होवे इनका गुरु नही देखता होवे तो ७ सात
वर्ष की आयु जानना ॥ १०० ॥

त्रिक ६।८।१२ स्थान में चंद्र सूर्य शनिका योग होवे तो ९ वर्ष में
वर्ष मृत्यु जानना ॥ १०१ ॥

जभगा इन्द्रकारा गुर्वदष्टा नवमाब्देमृतिः ॥ १०२ ॥

पुनर्वेदे एमेशोक्ते मंददष्टे नवमाब्देमृतिः ॥ १०३ ॥

चंद्राङ्गेशावस्ते वा त्रिके भतुल्याब्देमृतिः ॥ १०४ ॥

जन्मेशाद्रंभगौशुक्रार्को वा लग्नेशेषे भतुल्याब्देमृतिः १०५

चंद्राङ्गेशौ मंदार्कयुतौ द्वादशाब्देमृतिः ॥ १०६ ॥

जीवभौमभे भौमेजीवभे वा सूर्यमंदभे मंदेसूर्यभे द्वादशाब्दे
मृतिः ॥ १०७ ॥

क्रमान्मेपादिगो विधुरष्टम नवम त्रयोविंश द्वा

विंश पञ्चम प्रथमचतुर्थत्रयोविंशाष्टादश विं

शैकविंशदशमलवस्थो लवांकमिताब्देमृतिदः ॥ १०८ ॥

टीका-वृषकीराशी ३।६ के चंद्र सूर्य मंगल होवे और गुरु की द्रष्टी
५९ नही होवे तो नववर्ष की उमर में मृत्यु होवे ॥ १०२ ॥

सात में होवे और ८ भाट में स्थान का स्वामी लग्न में

स्थित हो कर शनी से दृष्ट होवे तो नव वर्ष की उमर जानना ॥ १०३ ॥

चंद्रमा और लग्न का स्वामी सातमे स्थानमे स्थित होवे अथवा
क स्थान ६। ८। १२ में जाय तो उस स्थान मे जो राशि हो उतने ही
वर्ष मे मृत्यु जानना ॥ १०४ ॥

जन्मराशि के स्वामी से भाठमे स्थानमे शुक्र और सूर्य दोनो जाय १
अथवा लग्न का स्वामी छठे स्थान में गया हो तो उस स्थानमे जो राशि
हो उतने ही वर्ष की आयु जानना ॥ १०५ ॥

चंद्र और लग्न की राशि के स्वामी शनि सूर्य से युक्त होवे तो बार १२
वर्ष मे मृत्यु जानना ॥ १०६ ॥

गुरु, मंगल की (१।८) राशि का होवे, और मंगल, गुरु की (९।१२)
राशि का होवे १ अथवा सूर्य, शनि की १०।११ राशि का और शनि, सूर्य
की ५ राशि का होवे तो १२ बार में वर्ष मे मृत्यु जानना ॥ १०७ ॥

जन्म समय मे चंद्रमा मेषके ८ वृषभके ९ मिथुनकर ३ कर्कके २२ सिंहके ५
कन्याके १ तुलके ४ वृश्चिक के २३ धनके १८ मकरके २० कुम्भके २१
मीनके १० भंश का होवे तो भंश के संख्या के बराबर वर्ष मे मृत्यु
जानना ॥ जैसा के किसी के जन्म समय मे चंद्रमा धनके १८ भंश का हो
तो १८ भंडार मे वर्ष मे मृत्यु कहना इसी प्रकार सर्व राशि में मे
तमज्ञना ॥ १०८ ॥

सर्व रिष्ट योगों के भंगयोग ।

रात्रौ पष्ठाष्टमगभ्यद्रः शुक्ले सर्वारिष्टहरः ॥ १०९ ॥

सौम्य भांशगाः सौम्याः सर्वारिष्टहरः ॥ ११० ॥

भेशोर्केद्रे वा सौम्येर्केद्रे सर्वारिष्टहरः ॥ १११ ॥

शीर्षोदयगास्तर्वे सर्वा ० ॥ ११२ ॥

पष्ठाष्टमगे रुष्णचंद्रे दिवा पापदृष्टे सर्वा ० ॥ ११३ ॥

रवोच्चसुहृन्नेचंद्रे सर्वारिष्टहरः ॥ ११४ ॥

चंद्रात्स्वेजीवो व्यये ज्ञाच्छौ लाभे खलाः स ० ॥ ११५ ॥

कर्काजिह्वौ केद्रे सदृष्टे सर्वारिष्टहरः ॥ ११६ ॥

कर्काजवृषे राहौ सर्वा० ॥११७॥

केंद्रे तदग्रेच सर्व खेटाः स० ॥११८॥

शुभमे पूर्णेन्दौ सर्वा० ॥११९॥

षष्ठाष्टमे चंद्रे शुभवर्गगे स० ॥१२०॥

इन्दुङ्गौ सर्व ग्रह दृष्टौ सर्वा० ॥१२१॥

शुभांशे केंद्र कोणे शुक्र दृष्टे चंद्रे सर्वा० ॥१२२॥

बलिशुभः केंद्रगो लाभेसूर्यः सर्वा० ॥१२३॥

सबलेङ्गने शुभमात्र दृष्टे सर्वा० ॥१२४॥

जीवेस्वभोच्चगे केंद्रे सर्वा० ॥१२५॥

पापाः शुभ वर्गगाः शुभ मात्र दृष्टास० ॥१२६॥

ज्यापारिगो राहुः शुभमात्रदृष्टयुतः स० ॥१२७॥

सर्वे बलिनो वा नृराशिगा वामिभगा वाशुभभगा

शुभवर्गगाः सर्वारिष्टहरः ॥ १२८ ॥

टीका— ॥ शुक्लपक्ष में रात्रिसमय में जन्म होवे और छुटे भा स्थान में खदमा स्थितहोवे तो सर्व रिष्टयोग का नाशकरता है १

शुभग्रह कि राशि और नवमांश (२७११२१३१६४) में शु गये होवे तो सर्वारिष्टनाश करते हैं ११०

जन्म राशी का स्वामी केंद्र १४७१० में स्थितहोवे अथवा ग्रह केंद्रमे होवे तो सर्वारिष्टनाश करते हैं १११

संवग्रह जीर्णोदय राशी ३१५१६७८११ में गये होवे तो सर्व मांश करते हैं ११२

कृष्णपक्ष में दिन का जन्म होवे और ६८ छुटे भाईम स्थान खदमा द्वापय ग्रहसे दृष्ट होवे तो सर्वारिष्ट नाश करता है ११३

खदमा भगि स्वराशि (४) उच्च राशी (२) तथामित्र ग्र

राशि में स्थितहोवे तो सर्वारिष्ट नाशकरता है ११४

चंद्रमासे दशमे स्थान में गुरु, बारमे स्थान में बुध शुक्र और ग्यार
मे स्थान में पापग्रह स्थितहोवे तो सर्वारिष्टकानाश करते है ११५

कर्कतथा मेष राशि का चंद्रमा केंद्रमें स्थितहोवे और शुभ ग्रहसे
दृष्टहोवे तो सर्वारिष्ट नाश करता है ११६

कर्कमेघ तथा वृषभ राशि के लग्नमें राहु स्थितहोवे तो सर्वा ० ११७
केंद्र ११४।७।१० और पणफर २।५।८।११ स्थान में सर्व ग्रह
स्थितहोवे तो सर्वारिष्ट नाशकरते है ११८

पूर्ण चंद्रमा शुभग्रह की राशि का होवे तो सर्वा ० ११९
शुभग्रह के वर्ग में गया हुआ चंद्रमा छठे भाठमें स्थान में स्थित
होवे तो सर्वा रिष्टकानाश करता है १२०

चंद्र और जन्म लग्न को सर्व ग्रह देखंत होवे तो सर्वा ० १२१
शुभग्रह की राशि के नवांशमें गयाहुवा चंद्रमा केंद्र कोण १।४।७
१२०।९।५ स्थान में स्थितहोवे और शुक्र उसको देखता होवे तो
सर्वा रिष्टनाश करता है १२२

बलवान् शुभग्रह केंद्र १।४।७।१० में स्थितहोवे और ११ ग्यारमें
स्थान में सूर्य होवे तो सर्वा ० १२३

लग्नका स्वामी बलवान् होवे सर्व शुभग्रह से दृष्ट होवे तो सर्वा
रिष्ट ० ॥ १२४ ॥

केंद्र १।४।७।१० स्थानमें स्वराशि ९।१२ तथा भपनि उच्चराशि ४
में गयाहुवा गुरुस्थित होवे तो सर्वा रिष्टनाश होवे ॥ १२५ ॥

पापग्रह शुभग्रहों के वर्ग में गयेहोवे और शुभग्रह मंगल से दृष्ट
होवे तो सर्वा रिष्टनाश होवे ॥ १२६ ॥

तीसरे ग्यारमें छठे ३।११।६ स्थानमें गयाहुवा राहु शुभ ग्रहों
से युक्त तथा दृष्टहोवे तो सर्वा ० ॥ १२७ ॥

सर्व [शुभ पाप] ग्रह बलवान् होवे १ अथवा सर्व ग्रह नरराशि
[१।३।५।७।९।११] में गयेहोवे २ अथवा सर्व ग्रह अपने मित्रग्रह की
राशि में स्थित होवे ३ अथवा शुभग्रह की राशि में स्थितहोवे ४ अथवा
सर्वग्रह शुभग्रह के वर्गमें गयेहोवे ५ तो सर्वारिष्ट नाशहोवे । इस मंत्र
में ५ पांच योग कहें हैं इनमें से कोई भी १ योग हो तो सर्वारिष्टहर
योग जानना ॥ १२८ ॥ इति सर्वारिष्टहर योगः ॥

अथ नारज योग यद्दत्तं ह.

पष्ठाष्टमशौ चक्षारयुतो तुर्यगो नारजः ॥ १२९ ॥

पष्ठांशेरो पापयुतो नारजः ॥ १३० ॥

पष्ठांशेरापोर्मन्दयोगे शूद्रजो ज्येष्ठेर्वश्यजोऽर्कयोगेश्वरजो

जीवशुक्रान्यतरयोगे ब्राह्मणजः ॥ १३१ ॥

अंशेपापमात्र संयंथे नारजः ॥ १३२ ॥

केंद्रसोत्थेश योगे नारजः ॥ १३३ ॥

द्वित्रिपंचारीशा लग्ना नारजः ॥ १३४ ॥

पापेक्षे शुभेयूनेस्वमन्दे नारजः ॥ १३५ ॥

चंद्रेक्षे सुतेशुके सोत्थेभौमे नारजः ॥ १३६ ॥

लग्नेर्के सुखेराहौ पितृव्यजः ॥ १३७ ॥

लग्ने राह्वारौ पुष्पवंतौयूने नीचजः ॥ १३८ ॥

शून्येपुकेन्द्रेषु नारजः ॥ १३९ ॥

सर्वेद्विषष्टाष्टांत्येषु नारजः ॥ १४० ॥

जीववर्गहीनेगे नारजः ॥ १४१ ॥

स्वेक्षेऽतुर्यसपापचंद्रे चन्द्रलग्नौ गुर्वदृष्टौ नारजः ॥ १४२ ॥

पुष्पवंता वेकभगौ गुर्वदृष्टौ नारजः ॥ १४३ ॥

लग्नाम्बुपंष्टधर्मप योगे नारजः ॥ १४४ ॥

३ ॥ १४५ ॥

॥ १४६ ॥

॥ १४७ ॥

चंद्रमंदयोगे जारजः ॥ १४८ ॥

टीका-छठे आठमे स्थानके स्वामी चंद्र मंगलसे युक्त होकर चतुर्थ स्थानमें स्थित होवे तो जारज (व्याभिचारसे उत्पन्न) कहना ॥ १२९॥

छठे आठ नवम स्थानके स्वामी पापग्रहोंसे युक्त होवे तो जारज कहना ॥ १३० ॥

छठे और नवम स्थान के स्वामी शनि से युक्त होवे तो शूद्र से उत्पन्न कहना एवं बुध से युक्त होवे तो वैश्य से, मृग से युक्त होवे तो क्षत्री से, गुरु से अथवा शुक्रसे युक्त होवे तो ब्राह्मण के वीर्य से उत्पन्न जानना ॥ १३१ ॥

कारकांश लग्नमे पापग्रहमात्रका संबंध होवेतो जारज ० ॥ १३२॥

केंद्र १। ४। ७। १० स्थान के स्वामी से तृतीय स्थान के स्वामिका योग होवे तो जारज कहना ॥ १३३ ॥

दूसरा २ तीसरा ३ पांचवा ५ और छठा ६ स्थानके स्वामी लग्न में स्थित होवे तो जारज कहना । स्मरणरहै ये चारोंग्रह लग्न में होवे तो योग जानना नहींतो योग नहि होता है ॥ १३४ ॥

लग्न में पाप ग्रह ७ सप्तम स्थानमें शुभग्रह आर १० दशम स्थान में शनि स्थित होवे तो जारज होता है ॥ १३५ ॥

लग्न में चंद्रमा पंचम स्थानमें शुक्र और तीसरे स्थानमें भौम स्थितहोवे तो जारज जानना ॥ १३६ ॥

लग्न में सूर्य, चतुर्थ स्थान में राहु स्थितहोवे तो पितृव्य [फाके] से उत्पन्न हुआ कहना ॥ १३७ ॥

लग्नमें राहुर्मंगल और सप्तम स्थानमें सूर्य चंद्रमा स्थितहोवे तो नीच से उत्पन्न कहना ॥ १३८ ॥

केंद्र १। ४। ७। १० स्थानमें कोईभी ग्रह नहीं होवे तो जारज कहना ॥ १३९ ॥

सर्व ग्रह २। ६। ८। १२ दूसरे छठे आठमे बाहरवें स्थान में स्थित होवे तो जारज कहना ॥ १४० ॥

लग्नमें गुरु का योग नहि होवे तो जारज कहना ॥ १४१ ॥

दशम स्थानमें तथा चोथे स्थानमें पापग्रह से युक्त चंद्रमा स्थित होवे और लग्न, चंद्र, कौं गुरु नहि देखता होवे तो जारज ॥ १४२ ॥

सूर्य चंद्र दोनों एक राशि में स्थित होवे और उनको गुरु नदी देखता होवे तो जारज कहना ॥ १४३ ॥

लग्न १ चतुर्थ ४ पञ्च ६ और ९ नवम के स्वामीयों का योग होवे तो जारज कहना ये चारों एक राशि में जितने नजीक अंशमें होवे उतनाहि योग बलवान जानना ॥ १४४ ॥

नवम ९ और ४ चतुर्थ स्थानमें पापग्रह स्थित होवे और लग्नेश्वर निर्बली होवे तो जारज कहना ॥ १४५ ॥

चतुर्थ स्थान पाप ग्रहों के बीचमें होवे लग्नपति निर्बली होवे पापग्रह से दृष्ट होवे तो जारज ० ॥ १४६ ॥

सप्तम भाषका स्वामी धन २ स्थानमें पापग्रह से युक्त होवे और भौम से दृष्ट होवे तो जारज ० ॥ १४७ ॥

चंद्र शनिका योग होय तो जारज होता है ॥ १४८ ॥

जारज योग के भंग योग.

लग्नपेङ्गे वा लग्नदृष्टि जारजयोग भङ्गः ॥ १४९ ॥

लग्नेजीव युतदृष्टे जारजयोग भङ्गः ॥ १५० ॥

लग्नचंद्रान्यतरो जीवभर्गान्यतरगो जारजयोग भङ्गः १५१

टीका— लग्नेश लग्नमें युक्त होवे अथवा लग्न को देखता होवे तो जारज योग का भंग जानना ॥ १४९ ॥

लग्नमें गुरु युक्त होय तथा लग्न को गुरु देखता होवे तो जारज योग का भंग जानना ॥ १५० ॥

लग्न तथा चंद्रमा गुरु की राशि का अथवा गुरु के दशवर्ग में होवे तो जारज योग का भंग जानना अर्थात् इनयोगों में से कोई १ योगभी होवे तो उपरोक्त जारज योग नहीं जानना ॥ १५१ ॥

चिन्ह का विचार

यदवयवे कुजाकां तत्रारक्तचिन्हम् ॥ १५२ ॥

राहर्कजीवत्र तत्र शामचिन्हम् ॥ १५३ ॥

लग्ननाभंद्वाराच्छाः शिरसिचिन्हम् ॥ १५४ ॥

शुक्ले रंधेराहो मस्तके वा वाम कर्णे चिन्हम् १५५

आरंभे कर्णेभ्यो लिंगे गुदसमीपे वा चिन्हम् ॥ १५६ ॥

ज्ञेयोरंध्रे कोणेशुके सुखेद्भेनंदे जठरे चि० ॥ १५७ ॥

रावहच्छौतुर्ये मंदेकुजेवाङ्गे वामपादे चि० ॥ १५८ ॥

यत्य राजयोगो भंग रहितस्तस्य करचरणान्वतरत्र राज
चिन्हम् ॥ १५९ ॥

चंद्रार्कौ यदङ्गौ तदङ्गे चिन्हम् ॥ १६० ॥

टीका- काल पुरुष के शरीर विभाग के विचार से शरीर के जिस
वयवस्थान में सूर्य भौम युक्त होवे उस स्थान में लालरंग का चिन्ह जान-
ना ॥ जैसे किसीके लग्न में ४ चतुर्य स्थान में कर्क राशी में सूर्य मंगल
युक्त हो तो यह स्थान कालपुरुषके हृदयकाई इसलिये इस कुंडलीयाले
हृदयके समीप लालरंग का मश यगेराका चिन्ह कहना एवं सर्व
भागों का विचार जानना ॥ १५२ ॥

राहु शनि जिस स्थान में होवे उस अंगपर श्याम चिन्ह जानना १५३
लग्न में चंद्र भौम शुक्र युक्त होवे तो मस्तकपर चिन्ह जानना १५४
लग्न में शुक्र और ८ अष्टम स्थान में राहु युक्त होवे तो मस्तकपर
श्याम वाम कर्णपर चिन्ह जानना ॥ १५५ ॥

लग्न में मंगल और नवम पंचम ९।५ स्थान में शनि युक्त होवे तो
गर्भ अथवा गुदा के समीप में चिन्ह जानना ॥ १५६ ॥

अष्टम स्थान में बुध गुरु त्रिकोण स्थान (९।५) में शुक्र और चौथे
स्थान में शनी युक्त होवे तो पेटपर चिन्ह जानना ॥ १५७ ॥

चतुर्य स्थान में राहु शुक्र और शनि अथवा मंगल लग्न में स्थित
तो पाँच पाँच में चिन्ह जानना ॥ १५८ ॥

जिसके भंग रहित राजयोग पूर्ण होवे उसके हात अथवा पाँवों में
चिन्ह जानना ॥ १५९ ॥

चंद्र, रवि, जिस अंग में युक्त होवे उस अंग में चिन्ह कहना ॥ १६० ॥
शुभ जन्म के योग.

योगोत्तमेद्भे वा चंद्रेशुभं जन्म ॥ १६१ ॥

सूर्याब्दे सद्युहो शुभं जन्म ॥ १६२ ॥

एकरिमन्नपि केंद्रे ग्रह युते शुभं० ॥ १६३ ॥

आत्मकारके सध छे शुभजन्म ॥ १६४ ॥

टीका—लग्न वर्गोत्तम नवमांश में होंगे अथवा चंद्रमा वर्गोत्तममांश में होंगे तो जन्म शुभ जानना ॥ १६३ ॥

सूर्य से दूसरे स्थान में शुभग्रह स्थित होंगे तो शुभ जन्म जानना ॥

भौकभी केंद्र स्थानमें ग्रह युक्त होंगे तो शुभ जन्म कहना ॥ १६३ ॥

आत्म कारक ग्रह चलवान होंगे तो शुभ जन्म कहना ॥ १६४ ॥

शरीर की भावृति लक्षण वर्ग विचार.

लग्न नन्दाशप्ततुल्याकारो वा वीर्याधिक ग्रह तुल्यतनुः १६५

चंद्राकांतनवांशप वर्णः ॥ १६६ ॥

टीका—लग्न में जिस ग्रह की राशी का नवमांश होवे उसग्रह के स्वरूप (संज्ञा तं० सूत्र ४२ से ४८ में कहे हैं) के समान शरीर का भाकार अथवा जोग्रह अधिक चलवान होंगे उसग्रह के स्वरूप के समान शरीर का भाकार लक्षण कहना ॥ १६५ ॥

चंद्रमा जिस राशीके नवमांशमें होवे उसके स्वामी के वर्ग के समान शरीर का गौर इयामादि वर्ण जानना ॥ १६६ ॥

सत्त्वादिगुणपृकृती का विचार.

सूर्योपस्यत्रिंशांशे, तद्गुणभाक् ॥ १६७ ॥

टीका—सूर्य जिस ग्रह के त्रिंशांशमें होवे उसग्रह का जो सत्त्वगुणमादि गुणहोंगे वैसाही शरीर का गुण जानना ॥ १६७ ॥

इति श्रीमहादेवकृत जातकतत्त्वे प्रसूतिका
तत्त्वद्वितीयम् ॥ २ ॥

इति श्री गणकवर्ध्म श्रीमन्महादेव कृत जातक तत्त्वारूप्य जातकग्रंथे
तत्त्वानु श्रीनिवास रचित तत्त्वप्रदर्शनि भाषाटीकायां
प्रसूतिका तत्त्व द्वितीयम् ॥ २ ॥

अथ प्रकीर्णं तत्वारम्भः ।

आलिङ्गनाय संवृत्तौ भवीदेवौ मिथोभिषा ।

विश्लेषस्यैकतांयातौ भूयास्तामङ्गलायनः ॥ १ ॥

टीका-अथ प्रकीर्णतत्त्वका आरम्भ करते समय ग्रंथकर्ता मंगला चरण करते है । आलिङ्गन के लिये प्रवृत्तहुए शिवपार्वती परस्पर विश्लेष (जुदे) होने के भय से भेकरूप भिन्होने (भर्जनासीश्वर) धारण किया है वे साम्बसदाशिव हमारे मंगल के लिये होवो ॥ १ ॥

सजादौ भवानां विचारः ।

योभावःस्वस्वामि शुभैर्युक्तोदृष्टो वा तस्यवृद्धिः पापैर्हानिर्भि
श्रैर्मिश्रम् ॥ १ ॥

नौचारिस्थोग्रहो भावनाशकः ॥ २ ॥

स्वसुहृन्नुद्गस्थोभाववृद्धिकरः ॥ ३ ॥

यद्वावात्रिके पापास्तद्वावनाशः ॥ ४ ॥

यद्वावेशात्रिके त्रिकेशो वा यद्वावेतद्वावनाशः ॥ ५ ॥

यद्वावीयकेंद्रार्थकोणस्थानानि शुभपतियुतानि तद्वावपुष्टिः
पापयुतानिचेद्धानिर्भिभयुतानि मिश्रम् ॥ ६ ॥

यद्वावेशोरिनौचास्तमः शुभैर्युतेक्षितश्चेत्तद्वावनाशः ॥ ७ ॥

यद्यद्वावीपरंधेश सूर्यशानि गुलिकेश गुलिकांशेशानांमध्ये
योधिकबली तत्पाके मूर्तिविज्जदिनाशः ॥ ८ ॥

टीका- प्रथम द्वादशभावों का शुभाशुभ फल विचार के साधारण नियम कहते है । जोभाव अपने स्वामी और शुभग्रहो ॥ युक्त भववा दृष्टहोवे उस भावकी वृद्धि और पापग्रहो से युक्त वा दृष्टहोवे उस- भाव की हानी तथा शुभ पाप मिले हुवे (मिश्र) ग्रहों से युक्त दृष्ट होवे उसका मिश्रफल जानना ॥ १ ॥

नीचराशी का तथा शत्रु राशी का ग्रह जिसभाव में स्थितहोवे वह ग्रह उस भवका नाश करता है ॥ २ ॥

स्वराशि का तथा मित्र और उच्चराशी का ग्रह जिसभाव में स्थित होवे वहग्रह उसभाव की वृद्धि करता है ॥ ३ ॥

जिस भावसे ६।८।१२ छठे आठवे बारवे स्थान में पापग्रह गयेहोवे उसभाव की हानी जानना ॥ ४ ॥

जिस भावका स्वामी ६।८।१२ में स्थित होवे अथवा जिसभाव में त्रिक स्थान (६।८।१२) का स्वामि युक्तहोवे उस भावका नाश कहना ॥ ५ ॥

जिस भावसे १।४।७।१०।११।५ स्थान शुभ ग्रह से और अपने स्वामी से युक्त होवे उसभाव की वृद्धि (उत्तम फल) कहना और पापग्रह से युक्त होंवे तो उसभावकी हानी तथा मिश्र (शुभपाप) ग्रहसे युक्त होंवे तो मिश्र (मध्यम) फल कहना ॥ ६ ॥

जिस भावका स्वामीशत्रु ग्रहकी राशीका अथवा नीच राशीका तथा अस्त का होंवे और वह शुभग्रहों से युक्त तथा दृष्टनहिहोवे तो उस भावका नाश होता है ॥ ७ ॥

जिस जिस भावसे ८ भट्टम स्थानका स्वामी, और सूर्य, शनि, गुलिक की राशीका स्वामी, और गुलिक के नवांशका स्वामी, इनपांचों मेंसे जो अधिक चलवान् होंवे उसकी दशामे उस उस देह धनादि भाव का नाश जानना । अर्थात् लग्न से ८ स्थान के स्वामी से बिनाद किया होंवे देहका नाश कहना. धनभावसे ८ के स्वामी से होतो धनका ऐसीहि प्रत्येक भाव के फलका नाश कहना ॥ ८ ॥

अष्टांग विचारः

स्वशिङ्गेऽशुभयुगे वाशुभदृष्टे देहसौख्यं ॥ ९ ॥

अङ्गेऽङ्गे देह सौख्यं ॥ १० ॥

महापेङ्गेऽत्रिके देहसौख्यं ॥ ११ ॥

उन्नेपापा लग्नगेच दीनरीये देहसौख्यं ॥ १२ ॥

देहकाश्ययोगः ।

शनिचंद्रौमेपे देहकाश्यं ॥ १३ ॥

अन्त्येहेलां केंद्रगेवके देहकाश्यं ॥ १४ ॥

लग्नेशाधिष्ठित भेषाग्निके देहकाश्यम् ॥ १५ ॥

शुक्रांगे शुक्रग्रहे देहकाश्यं ॥ १६ ॥

शुक्रयुतेगेशे देहकाश्यम् ॥ १७ ॥

शुक्रग्रहर्षज्ञेरो देहकाश्यम् ॥ १८ ॥

लग्नेशांशेरो शुक्रेदेहकाश्यम् ॥ १९ ॥

शुक्राङ्गौपापैः देहकाश्यम् ॥ २० ॥

टिका-भय शरीरका विचार कहते हैं । लग्नका स्वामी स्वनवांशम वि शुभग्रह से युक्तहोवे भयवा शुभग्रहों से दृष्टहोवे तो देहका सुख होवे-॥ ९ ॥

लग्नका स्वामी लग्नमे होवे तो देह सुख जानना ॥ १० ॥

पापग्रह से युक्त लग्नेश्वर ६-८-१२ में स्थान में जायतो देह सुख नहीं होवे ॥ ११ ॥

लग्नमें २-३ पापग्रह होवे और लग्नका स्वामी हीनपत्नी होवे तो देह सुख नहीं होवे ॥ १२ ॥

देहकाश्ययोग कहते हैं ।

मेघ राशी में शनि चंद्र युक्त होवे तो देह दुर्बल कहना ॥ १३ ॥

घारमे स्थानमे सूर्य, और केंद्र १।४।७।१० स्थानमे भीम होवे तो देह काश्य (कृश) जानना ॥ १४ ॥

लग्नेश्वर जिसराशी में स्थितहोवे उस राशी का स्वामी त्रिक (६-८-१२) स्थानमे स्थितहोवेतो देह कृश (पतली) होवे ॥ १५ ॥

शुक्र राशी १।२।३।५।६।९ के लग्नमे शुक्रग्रह [रवि मंगल शनि-बुध गुरु] स्थितहोवे तो देह काश्य (पतलीदेह) होवे ॥ १६ ॥

लग्नेश्वर शुक्रग्रह [रविमंगल शनि औरशुक्रराशी में गयेहुये बुध गुरु] से युक्तहोवे तो देह काश्य [पतली देह] जानना ॥ १७ ॥

लग्नेश्वर शुष्क ग्रह की राशीका होवेतो देह काश्य [दुर्बलदेह] जानना ॥ १८ ॥

लग्नपति के नवांशका स्वामी शुष्कग्रह (र. म. श. बु.) होवे तो दुर्बल देह होता है ॥ १९ ॥

शुष्कराशी [१-२-३-५-६-९] के लग्नमे २-३ पापग्रह युक्तहोवे तो (दुर्बला) देह मनष्य होता है ॥ २० ॥

देह पुष्टियोग ।

राराशि साङ्गनाथे देहपुष्टिः ॥ २१ ॥

तोयक्षेत्रेशुभाश्विते वा जलखगदृष्टे देहपुष्टिः ॥ २२ ॥

शुभक्षेत्रे जलक्षेत्रांशे देहपुष्टिः ॥ २३ ॥

लग्नेशुभक्षे पापदृष्टिर्जिते देह० ॥ २४ ॥

लग्नेगुरुयुते वा गुरुदृष्टे देह० ॥ २५ ॥

जलक्षेत्रे शुभैर्युते वा दृष्टे देह० ॥ २६ ॥

मिथुनांशे देह० ॥ २७ ॥

लग्ने सवले सत्त्वचरे देह० ॥ २८ ॥

टीका-लग्नराशी का स्वामी लग्नेश्वर से युक्त होवे तो पुं प्ररीरवाया होता है ॥ २१ ॥

लग्नका स्वामि जलराशी ५।१।१०।१२।१८ में स्थितहोके शुष्क [रं. बु. ग. शु.] से युक्तहोवे भयथा जलगाह (रं. शु. बु. ग.) से दृष्टहोवे तो पुष्टदेहवाला होता है ॥ २२ ॥

शुभग्रह की राशी [४।६।९।१२।२।७] का लग्न हो और लग्न के नवांश का स्वामी जलराशि का होवे तो पुष्टदेहवाला होता है ॥ २३ ॥

शुभ राशीका लग्न पापग्रह से भट्टहोवे तो पुष्टदेह जानना ॥ २४ ॥
लग्नलग्न में गुरुयुक्त होवे भयथा लग्नको गुरु देखनाहोवे तो देह जानना ॥ २५ ॥

जलराशी ४ । ७ । ८ । १० । ११ । १२ का लग्न शुभग्रहों से युक्त
या दृष्टहोवे तो पुष्ट देह होता है ॥ २६ ॥

कारकांश कुंडलीमें मिथुन लग्न होवे तो पुष्टदेह होताहै ॥ २७ ॥

जन्मलग्न में बलवान शुभग्रह स्थितहोवे तो पुष्टदेह होताहै ॥ २८ ॥

लग्नादिराशयः शिरः प्रभृतिकालाङ्गेपुकल्पाः ॥ २९ ॥

यत्राङ्गे दीधराशि दीर्घमपथ्व तदीर्घम् व्यस्तेहस्वमिधेमिश्रं

ग्रहानाकांतराशिश्चेद्राशिचत् ॥ ३० ॥

दीर्घदेह योग ।

शुभात्सप्तमेभौमे दीर्घदेहः ॥ ३१ ॥

लग्नपेदीर्घमे दीर्घदेहः ॥ ३२ ॥

देह और देहके कोन २ अवयव हूय दीर्घ है उनका विचार ।

टीका-जैसे मेषादि द्वादश राशि मस्तकादिपादपर्यंत कालचरुषमे
लग्ना की है तैसेहि जन्म लग्नकी राशि को आदिले १२ चारादि
शि मस्तक से पादपर्यंत कालचरुष के भंगने कल्पना करना ।
दाहरणके लिये कल्पना कीजिये जैसे किसीका जन्मलग्न ५ सिंह राशि
तो ५ सिंहमस्तक ६ कन्या मुख ७ तुल उर ८ वृश्चिक हृदय ९ धन
१० मकर कटि ११ कुंभवस्ति १२ मीनलिंग १ मेष उर २
३ जातु ३ मिथुन जंघा ४ कर्क भंगि (पांव) स्थान हुआ इसीप्रकार
एक लग्नसे भंगकी कल्पना करना ॥ २९ ॥

इन चारोंनः मस्तकादि पादपर्यंत भंगस्थान में से जिसभंगमें दीर्घ
राशि ५।६।७।८ और दीर्घ राशीकास्वामी (मू. बु. शु. मं.) स्थित
होवे यह भंगदीर्घ जानना और औरजिसभंगस्थानमें हस्वराशि १।१-
१२।१।२ और हस्वराशि कास्वामी स्थितहोवे वह भंग हस्व जानना
एवंमिश्र राशि ३।४।९।१० और मिश्र राशि केस्वामि निमस्थान में
स्थितहोवे उसभंगको सत्र भयान नही दीर्घ और नही हस्व जानना ।
यह जिसराशि में जाय उसीराशी के समान ग्रहको हस्व दीर्घ मिश्र
समझना ॥ ३० ॥

युग्मसे मात्रमे स्वानमें भौम स्थितहोवे तो दीर्घदेह होताहै ॥ ३१ ॥

लग्नकी राशिका स्वामि दीर्घराशि ५।६।७।८ का होना दीर्घ देह होता है ॥ ३२ ॥

॥ वामन योग. ॥

मंदानुर्यचंद्रेराश्यायभागे वात्पतराश्वन्यभागेश्वामनः ३३

लग्नेशेत्पतरभे शुभदृग्भागे वामनः ॥ ३४ ॥

पृथोदयभेचंद्रेनुर्यशनिदृष्टेचाजङ्गेश्वामनः ॥ ३५ ॥

सिंहेऽर्काच्छेस्रमृगेचंद्रेवामनः ॥ ३६ ॥

आयंत्येशेचंद्रेमंददृष्टेसौम्याऽदृष्टेवामनः ॥ ३७ ॥

लग्नेशेत्पक्षलग्नदर्शनि स्मनः ॥ ३८ ॥

वामन योग कहने है ।

टोका—शनिसें चौथे स्थानमे चंद्रमा राशिके प्रथम भागमे सि होवे अथवा च्दस्य राशि के अंत्यभाग में [२९] अंशमे होवेतो वा (ठिंगना) होता है ॥ ३३ ॥

लग्नेश च्दस्व राशिमे स्थित होवे और वस्को शुभग्रह नहि देख होवे तो वामन हाता है ॥ ३४ ॥

पृथोदयराशी (१।२।४।९।१० का चंद्रमा चौथे स्थानमे श से दृष्टहोवे और लग्नेश मेष राशी का होतो वामन हाता है ॥ ३५ ॥

मूयं शुक्र सिंहराशीमे स्थितहोवे और दसमे स्थान मे मकरराशी : चंद्रमा होतो वामन हाता है ॥ ३६ ॥

लग्नतया व्यय १२ स्थान का स्वामिचंद्रमा, शनीसे दृष्टहोवे अं शुभग्रहोसे अदृष्टहोवे तो वामन हाता है ॥ ३७ ॥

लग्न का स्वामि हस्वेराशी मे स्थित होवे अथवा लग्नको देख होवे तो वामन हाता है ॥ ३८ ॥

विकलांग योग ।

केंद्रस्थाः क्रूरा विकलाङ्गः ॥ ३९ ॥

केंद्रगौ पुष्पवंतौ विकलाङ्गः ॥ ४० ॥

लग्नेशुकेमंददृष्टे श्रोणिभागे वैकल्यम् ॥ ४१ ॥

तुयशुके मंदाराज्ञान्यतनयुतेजविकरचरणकट्यन्यतमेवै-

कल्पम् ॥ ४२ ॥

चंद्रेस्वेभौमेस्ते मंदवेशिगे विकलाङ्गः ॥ ४३ ॥

सुताङ्केभौमे क्रूरैर्दृष्टे हीनाङ्गः ॥ ४४ ॥

मंदेर्धे स्वचंद्रे ज्ञेस्ते विकलाङ्गः ॥ ४५ ॥

नीचगाः शुकेन्दुमदाः कुम्भेर्के विकलाङ्गः ॥ ४६ ॥

टीका-केंद्रस्थान (१४।७।१०) में क्रूरग्रहास्थितहोवेतो विकलांग (विकलशरीरवाला) होताहै ॥ ३९ ॥

केंद्रस्थान १।४।७।१० में सूर्य चंद्रमा होवे तो विकलशरीर होताहै ॥ ४० ॥

लग्नमें गयाहुया शुक्र शनि से दृष्टहोवे तो कटि भागमें विकलता होताहै ॥ ४१ ॥

चौथे स्थानमें शुक्र, होवे और शनि, भौम, अथवा बुध इनतीनों में से किसीसेभी गुरु युत होवे तो हाथ, पांव, कटि, स्थानमें से किसी भेकस्थानमें विकलता होताहै ॥ ४२ ॥

चंद्रमा १० दशमे भौम ७ सातवें शनिवेशिस्थान [सूर्य से दूसरे] में होवेतो विकलांग होताहै ॥ ४३ ॥

पांचवें तथा नवमे मंगल होवे और क्रूरग्रहो से दृष्टहोवे तो हीनांग होताहै ॥ ४४ ॥

शनि २ दूसरे चंद्रमा १० दशमे बुध ७ सातवें स्थानमें स्थितहोवे तो विकलांग होता है ॥ ४५ ॥

शुक्र चंद्र और शनि नीच राशी में स्थित होवे और कुंभराशी का सूर्य होवेतो विकलांग होता है ॥ ४६ ॥

रक्तपित्तरोग योगः

नीचेभौमे रक्तपित्तकोपः ॥ ४७ ॥

टीका-जन्म समयमें भौम नीचराशीका होवेतो रक्तपित्त रोगका कोप होता है। अर्थात् नाक, मुख, तथा मलद्वार की तरफसे रुधिर पड़ाकरता है ॥ ४७ ॥

देहदुर्गन्धयोग.

मंदर्शेशुकेदेहदौर्गन्धम् ॥ ४८ ॥

पटेशोक्षर्षे वा नके देहदौर्गन्धम् ॥ ४९ ॥

क्षर्शेशुके ज्युते केद्रे देहदौर्गन्धम् ॥ ५० ॥

मेपगेचंद्रेऽङ्गे देहदौर्गन्धम् ॥ ५१ ॥

टीका-शनि की राशी १० । ११ का शुक्र होवे तो देहमें दुर्गन्ध होती है ॥ ४८ ॥

छठे स्थान का स्वामी बुध की राशि, ३।६ का होवे भयवा मकर राशी का होवे तो देहमें दुर्गन्ध होती है ॥ ४९ ॥

बुधकी राशी ३।६ में गयाहुवाशुक्र बुधसेयुक्तहोवे और केन्द्र १।४।७।१० स्थानमें स्थितहोवे तो देहमें दुर्गन्ध होती है ॥ ५० ॥

मेपराशी का चंद्रमा जन्म लग्नमें स्थितहोवे तो देहमें दुर्गन्ध होती है ॥ ५१ ॥

लकड़ी के साहारेचलने का योग.

लग्नेशेत्ये पापयुतदृष्टे यष्ट्याचलति ॥ ५२ ॥

टीका-लग्नका स्वामी १२ या १६ स्थानमें पापग्रह से युक्त तथा दृष्टहोवे तो लकड़ी के साहारे से चलनेवाला होता है ॥ ५२ ॥

विलज्जयोग.

चंद्रर्जाभिमदृष्टो विलज्जः ॥ ५३ ॥

भौमिंदोसारित्रिके विलज्जः ॥ ५४ ॥

ज्ञाच्छायङ्गे भौमिस्ते विलज्जः ॥ ५५ ॥

जीवेद्वे भौमदृष्टे विलज्जः ॥ ५६ ॥

टीका-चंद्र और बुध दोनूयुक्त भौम में दृष्टहोवे तो विलज्ज होता है ५३ । सीगनंदमा भौम में युक्त होकर त्रिक ६।८।१२ स्थानमें जावे विलज्ज होता है ॥ ५४ ॥

बुध शुक्र लग्नमें और मानमें स्थानमें भौमहोवे तो विलज्ज होता है ५५ । ज्ञाच्छायङ्गे भौम में युक्त होवे तो विलज्ज होता है ॥ ५६ ॥

203 2 2. 2

204

205

राहुमंदारयोगे हल्कपटी ॥ ६७ ॥

शनि मंगल और राहु इन तीनोंमें से १ भेकभी ग्रह सन्तुर्ध र
में होतो हल्कपटी होताहै ॥ ६६ ॥

राहु शनि और मंगल इन निनोमहोका योग(युनि) होवोनोह
पटी होनाहै ॥ ६७ ॥

निष्कपटीयोग.

सुखे स्वक्षोच्चमे शुभे निष्कपटी ॥ ६८ ॥

मुखेशे बलाढ्ये निष्कपटी ॥ ६९ ॥

तुर्धशुभर्क्षे मित्रान्वित दृष्टे निष्कपटी ॥ ७० ॥

हृदयेशे गोपुराद्यंशे निष्कपटी ॥ ७१ ॥

पाताले मृदंशादियुते निष्कपटी ॥ ७२ ॥

लग्नशेषुगे शुभयुतोक्षिते निष्कपटी ॥ ७३ ॥

लग्नेशे बलाढ्ये निष्कपटी ॥ ७४ ॥

लग्नेपे प्रारावतायंशे निष्कपटी ॥ ७५ ॥

लग्नेगुरौ शुक्रदृष्टे निष्कपटी ॥ ७६ ॥

इन्द्रकौतुर्धे क्षणमात्रंकपटी उर्ध्वे निष्कपटी ॥ ७७ ॥

तुर्धेतमसी पापयुतदृष्टे बहिः शुद्धोतः कपटी ॥ ७८ ॥

तुर्धे बहुपापयुतदृष्टेपूर्ववत् ॥ ७९ ॥

टीक-स्वराशि तथा उच्चराशि में गया हुआ शुभग्रह चोथेस्थान
में स्थितहोवेतो निष्कपटी होताहै ॥ ६८ ॥

चोथेस्थान कास्वामी बलवान हो तो निष्कपटी होताहै ॥ ६९ ॥

चोथेस्थान में शुभग्रहकीराशि २।७।३।६।१।९।१२ अपने स्वामी के
मित्रग्रहसे युक्त तथा द्रष्ट होतो निष्कपटी होताहै ॥ ७० ॥

चोथेस्थान का स्वामी गोपुरादि भग्नमें हो तो निष्कपटी होताहै ७१

चतुर्थमात्र मृदंशादिक भेदाने तो निष्कपटी होताहै ॥ ७२ ॥

लग्नेश्वर चतुर्थ स्थानमे अवे शुभ ग्रहसेयुक्त तथा दृष्टहोवेतो निष्कपटी होताहै ॥ ७३ ॥

लग्नेश्वर बलवान् होवेतो निष्कपटी होताहै ॥ ७४ ॥

लग्न का स्वामि पाराशतादि अंशमे होवेतो निष्कपटी होताहै ७५ शुक्र से दृष्ट गुरु लग्नमे स्थित होवेतो निष्कपटी होताहै ॥ ७६ ॥

चंद्रमूर्य का योग चौथे भाग मे होवे तो क्षणमात्र कपटिरहै पश्चात् निष्कपटी होताहै ॥ ७७ ॥

पापग्रह से युक्त तथा दृष्ट राहु चौथे स्थानमे, स्थितहोवे तो बाहर तो निष्कपटी (शुद्ध) और अंतःकरणमें कपटी होताहै ॥ ७८ ॥

चौथेस्थानमे बहुत पापग्रह युक्तहो तथा ४ स्थानकों देखते होवेतो बाहार से निष्कपटी और अंतःकरणमें कपटी होताहै ॥ ७९ ॥

शूरयोगः

राशौ बल्यारंगे खे वा शूरः ॥ ८० ॥

भौमेस्ते बलवान् शूरश्च ॥ ८१ ॥

टीका-बलवान् मंगल, लग्नमे अपवा १० दशमे भागमे जावे और राशिसमय का जन्महो तो शूरवीर होताहै ॥ ८० ॥

सातवे स्थानमे मंगल स्थितहोवेतो बलवान् और शूर होताहै ॥ ८१ ॥

दूसरे ग्रंथोमे लिखसाहे तथा अनुभव से देखनेमे आयाहै कि जिसके जन्म लग्नसे तीसरे ३ छठे ६ ग्यारवें ११ स्थानमे भौम जनि रवि राहु स्थित होतेहै वह शूरवीर बखोगी साहसी हिमतवान् पराक्रमी होताहै ।

कातरयोगः

निर्बलारेणां दृष्टे कातरः ॥ ८२ ॥

राशौरानौ दशमे कातरः ॥ ८३ ॥

स्पर्शगभौमदृष्टे कातरः ॥ ८४ ॥

अंशाद्विक्रमेपापेशूरः शुभेकातरः ॥ ८५ ॥

टीका-जन्मलग्नको निर्बली मंगल देखनाहो तो कातर (दरपोक) होताहै ॥ ८२ ॥

राशि समय में जन्महो शनि दशमेस्थानमें स्थितहोतो का
(डरपोक) होताहै ॥ ८३ ॥

स्वराशि १।८ का मंगल लग्नमें देखता होतो कातर होताहै ८
कारकांसदश लग्नसे ३ तीसरे स्थानमें पापग्रह स्थितहोतो शूरहोत
और शुभग्रह स्थितहो तो कातर होता है ॥ ८५ ॥

क्रोधियोगः

दिवाबल्पा रेखे क्रोधी ॥ ८६ ॥

लग्ने अस्ते वा निर्बलारे शनिदृष्टे क्रोधी ॥ ८७ ॥

लग्नेभौमे क्रोधी ॥ ८८ ॥

यूनेषलवति भौमे क्रोधी ॥ ८९ ॥

त्रिकोणेल्यवीर्ये राशिपे क्रोधी ॥ ९० ॥

अन्त्याष्टमेद्वेशे क्रोधी ॥ ९१ ॥

धनेशे गुलिकान्विते क्रोधी ॥ ९२ ॥

टीका- दिनकाजन्महोवे और बल वाने मंगल १० दश में भय
१ लग्न में स्थितहो तो क्रोधी होताहै ॥ ८६ ॥

लग्नमें भयरा सात वे स्थानमें निर्बली मंगल होवे शनि देखत
होतो क्रोधी होताहै ॥ ८७ ॥

लग्नमें मंगल होतो क्रोधी ॥ ८८ ॥

सातम स्थानमें बलवाने मंगल होवेतो क्रोधी होताहै ॥ ८९ ॥

जन्म राशिका स्वामी निर्बली होके त्रिकोणस्थान (१।५) में स्थित
होतो क्रोधी ॥ ९० ॥

लग्न का स्वामी बारह तथा भाद्रमें स्थानमें जावेतो क्रोधी ॥ ९१ ॥

धन २ स्थान का स्वामी गुलिकसे युक्तहो तो क्रोधी होताहै ॥ ९२ ॥

कलहमिययोग

केतु युने सोन्धे कलह नियः ॥ ९३ ॥

टीका- तीसरेस्थान में केतु युक्तहोतो कलह निय होताहै ॥ ९३ ॥

क्षमावात्प्रयोग

कर्कालिक्षपेर्क भौमदृष्टे क्षमावान् ॥ ९४ ॥

तुर्येशेर्ज्ञे वा लग्नेशे तुर्ये क्षमावान् ॥ ९५ ॥

सचलेतुर्ये क्षमावान् ॥ ९६ ॥

शुभेतुर्ये क्षमावान् ॥ ९७ ॥

टीका- कर्क वृश्चिक मीनराशि में गयाहुवा सूर्य भौमसे दृष्टहोवे तो क्षमावात् होता है ॥ ९४ ॥

चौधस्थान का स्वामि लग्नमें भयवा लग्न का स्वामि चौधस्थान में जावे तो क्षमावात् होता है ॥ ९५ ॥

चौथास्थान धलवान् हो (स्वामि से तथा गुरुबुध से युक्त दृष्ट होवे) तो क्षमावात् होता है ॥ ९६ ॥

शुभग्रह चौधस्थान में स्थित होवे तो क्षमावात् होता है ॥ ९७ ॥

हास्यासक्त योग

शनिग्रहे शारौ हास्यासक्तः ॥ ९८ ॥

ज्ञेज्ञेचास्तेजीवे हास्यासक्तः ॥ ९९ ॥

शार्शेगे हास्यासक्तः ॥ १०० ॥

टीका- बुध मंगल का योगमकर भयवा कुंभराशि में होवे तो हास्यासक्त (हसीमुखी में रहनेवाला) होता है ॥ ९८ ॥

लग्नमें बुध और शनि में गुरु स्थित होवे तो हास्या० ॥ ९९ ॥

बुधकी राशि ३६ का नवांश लग्नमें होवे तो हास्यासक्त होता है १००

द्रोहीयोग.

सोत्येभौमे त्रचंद्र द्रष्टे द्रोही ॥ १०१ ॥

लग्नेशेज्ञे षष्ठे द्रोही ॥ १०२ ॥

लग्नेशे निर्बले द्रोही ॥ १०३ ॥

टीका- तीसरेस्थानमें मंगल होवे और उसको बुध चंद्र देखते हो तो द्रोही होता है १०१

गोपालयोग

अशात्वे जीवार्कमात्रदृष्टे गोपालः ॥ १२३ ॥

टीका- कारकांश लग्न से १० दशमस्थान को गुरु सूर्य के शिवाय और कोई ग्रह नहिदेखते होवे (अर्थात् गुरु सूर्य ही देखतेहों) तो गोपाल न करनेवाला होताहै ॥ १२३ ॥

अविश्वासीयोग

अशांद्धर्मे जीवार्कविश्वासी ॥ १२४ ॥

टीका- कार कांश लग्न से नवमे स्थानमें गुरुसूर्य स्थितहोवे । अविश्वासी (किसीपर भरोसा नही रखनेवाला) होताहै ॥ २४ ॥

कामीयोग.

उच्चगे वा नीचगे वा सिंहपूर्वाद्धं शुक्रोत्रिकेकामी ॥ १२५ ॥

स्वांशे शुके कामी ॥ १२६ ॥

पापदृष्टे शुके कामी ॥ १२७ ॥

युग्मे स्वर्शे वा शुके कामी ॥ १२८ ॥

रांगमुतेपुधनेशे कामी ॥ १२९ ॥

टीका-वृषराशि (१२)काशुक्र ६।८। १२ जाये । अथवाशनि राशि (६) का शुक्र ६।८। १२ में जाये २ वा सिंहराशि के पूर्वाद्धं (१५ अंशों कीतर) में गयादृष्टाशुक्र शिकम्पान (६।८। १२) में स्थितहोवे ३ तो कामी होताहै इस मन्त्रमें ३ योग कहेंहे ॥ १२५ ॥

स्वरांश का शुक्रहोवे तो कामी होताहै ॥ १२६ ॥

शुक्रको पापग्रह दृष्टमें होवे तो कामी होताहै ॥ १२७ ॥

निगुनराशि में अथवा वृषराशि राशि में शुक्रस्थित होवे तो कामी होताहै ॥ १२८ ॥

धन (२) स्थानका कामी दसमें १० लग्नमें १ नवा पांश ५ के स्थान में कामी होताहै ॥ १२९ ॥

अनिवर्णीयोग

कामुकः ॥ १३० ॥

भौमाच्छयुतौ जीवेचारीशे कामाधिक्यं ॥ १३१ ॥

टीका-सात में स्थानमें शुक्र होवेतो अति कामी होताहै ॥ १३० ॥
मंगलगुरुकायोग कोईअस्थानमें होवे और छठेस्थान कास्वामी
रहने तो अतिकामी होताहै इसयोगका संभव कर्क तथा तुललग्न
जन्म पाने वाले को ही होताहै ॥ १३१ ॥

भरुपकाम वा भरुपवीर्य योग

शनिर्धनुषिवृषे लग्ने ऽल्पकामः ॥ १३२ ॥

विषमोदयगेशुकेल्यवीर्यः ॥ १३३ ॥

तुर्यं चंद्रशनि अल्पवीर्यः ॥ १३४ ॥

शुकेस्तेगेशदृष्टेऽल्पवीर्यः ॥ १३५ ॥

शुक्रर्क्षचंद्रेल्यवीर्यः ॥ १३६ ॥

टीका-धन अथवा वृषभ राशिके लग्नमें शनि स्थित होवेतो भरुप
कामी होता है ॥ १३२ ॥

विषम राशो (१।३।५।७।९।११) के लग्नमें शुक्रहोवे तो भरुप वीर्य
होता है ॥ १३३ ॥

चंद्र और शनि चौथे स्थानमें पुनहोवे तो भरुप वीर्य होताहै १३४

सातमें स्थानमें गये हूवे शुक्र को लग्न का स्वामी देखताहोवे तो
भरुप वीर्य होता है ॥ १३५ ॥

शुक्र की राशी २। ७ का चंद्रमा होवेतो भरुप वीर्य होता है ॥ १३६ ॥

ननुसक योग

मंदाच्छौखे रंध्रे वा शुभद्रष्टिराहित्ये पण्डः ॥ १३७ ॥

पटान्ते जलर्क्षमं दे शुभद्रर्घीने पण्डः ॥ १३८ ॥

चंद्रार्कावामंदर्जावाभौमार्को युग्मोजर्त्तगा वन्योन्यं पश्यतः

पण्डः ॥ १३९ ॥

ओजर्त्तगे समर्क्षगभोमेशिते पण्डः ॥ १४० ॥

चंद्रज्ञो युग्मोजर्क्षगौ भौमेशितो पंडः ॥ १४१ ॥

पुंभागेसितेन्द्रंगानि पंडः ॥ १४२ ॥

मंदाच्छौखे पंडः ॥ १४३ ॥

शुकात्पष्टेष्टमेमन्दे पंडोवातादशः ॥ १४४ ॥

अशेकेतौ मंदज्ञदृष्टेपंडोवातादशः ॥ १४५ ॥

मंदाच्छौ शुभदाग्धी नौरन्ध्रगौ पण्डो वा तादशः ॥ १४६ ॥

पष्टांत्येनीचगेमंदेपंडो वा तादशः ॥ १४७ ॥

टीका—शनि और शुक्र ये दोनो दशमे अथवा भाठवे स्थान में मिले त होयें और शुभमहोसे अदृष्टहोयें तो नपुंसक होता है ॥ १३७ ॥

जलराशि में गयाहुवा शनि छडे अथवा बारवे स्थान में होयें और उसपर शुभग्रह की दृष्टि नहि होयें तो नपुंसक होता है ॥ १३८ ॥

चंद्र रवि अथवा शनि बुध अथवा मंगल रवि येग्रह क्रमसे सम और विपमराशि में स्थितहोके परस्पर देखते होयें तो नपुंसक होता है अर्थात् चंद्रसमराशिका रवि विपमराशिकाहोयें अथवा शनिसमराशिका और बुधविपमराशिका होयें अथवा मंगल समराशिका और रवि विपमराशिका होयें और ये मत्येक परस्पर पूर्णदाष्टिसे देखतेहोयें तो इन तीनों योग में से एकभी योगमें जन्महोनेसे नपुंसक होता है ॥ १३९ ॥

विपमराशि का लग्न समराशि २।४।६।८।१०।१२ में गयाहुवे भीम से दृष्टहोयें तो नपुंसक होता है ॥ १४० ॥

समराशि का चंद्र और विपमराशि का बुधहोयें इनदोनोंमें मंगल देखनाहोयें तो नपुंसक होता है ॥ १४१ ॥

शुक्रचंद्र और लग्न येतीनों पुरुषराशि १।३।५।७।९।११ के नवांश में होयें तो नपुंसक होता है ॥ १४२ ॥

शनि और शुक्र येदोनों दशमे होयें तो नपुंसक होता है ॥ १४३ ॥

शुक्र से छडे भाठवे स्थान में शनी होयें तो नपुंसक अथवा नपुंसक के समान होता है ॥ १४४ ॥

कारकांश लग्नमें केतुहोयें और यह शनि बुधसेदृष्ट होयें तो नपुंसक या ननुमक के समान होता है ॥ १४५ ॥

शनिगुह्य आठमे स्थानमे स्थित होवे और इनदोनोको शुभग्रह न-
ही देखते होवे तो नपुंसक वा नपुंसक के समान होताहै ॥ १४६ ॥

नीचराशिमे स्थित शनि छेठ तथा बारवे स्थान में होवे तो पद
अथवा पद के समान होताहै ॥ १४७ ॥

वीर्यच्युति योग

राहोशुकेर्कजेवोच्चगेककेर्कमेपंचद्रेवीर्यच्युतिः ॥ १४८ ॥

लग्नेचंद्रे गुर्वर्कजोसुते वीर्यच्युतिः ॥ १४९ ॥

कन्योदये मंदलग्ने मन्दर्क्षशुके वीर्यच्युतिः ॥ १५० ॥

टीका-राह शुक्र अथवा शनि अपनी उच्चराशिमे होवे और कर्कराशि
कामूर्य मेपर्काचंद्रमा होवेतो वीर्यश्राव होता रहताहै ॥ १४८ ॥

लग्नमे चंद्रमा और गुरुशनि पांचवे स्थानमे स्थित होवे तो
वीर्यच्युति (वीर्यश्राव) होता रहता है ॥ १४९ ॥

कन्याराशि के लग्नको शनिगुह्य देखते होवे और शनिके राशि
१०।११ काशुक्रहोवे ता वीर्यच्युतिहोतीहै ॥ १५० ॥

यह योगजिसको होताहै उसके पेशावमे वास्यममे वा स्त्रीकेदर्शन
स्पर्श भागसेहिवीर्यश्रावहोनायाकरताहै

उन्मादयोग

ईज्येङ्गे कुजेस्ते उन्मादी ॥ १५१ ॥

लग्नेशैना मंदत्रिकोणे कुजे उन्मादी ॥ १५२ ॥

मन्देङ्गे व्ययेर्के कोणेचंद्रे वा भौमे उन्मादी ॥ १५३ ॥

मृदेनीचेपटे सोत्थेशे पापद्रे गरलज उन्मादः ॥ १५४ ॥

भौमेस्ते जीवेङ्गे उन्मादी ॥ १५५ ॥

क्षीणेद्वर्कजावत्ये उन्मादी ॥ १५६ ॥

मंदार्थशौ सपापौ वातज उन्माद ॥ १५७ ॥

धनेशार्कजोभूर्ययुतौ राजकोपज उन्मादः ॥ १५८ ॥

यमार्थशौ भौमयुतौ पित्तज उन्मादः ॥ १५९ ॥

चंद्राकोकोणाङ्गगोर्कद्रेजीवेयमारक्षणवारे उन्मादः ॥ १६० ॥

इदृक्जौलग्ने ज्ञदशौ विव्हलः ॥ १६१ ॥

टीका-लग्नमे गुरु और सातमे मंगलहोवेतो उन्मादि (विक्षिप्त) होताहै ॥ १५१ ॥

लग्नमे शनि सातवें अथवा नवमे पांचवे मंगलहोवे तो उन्मादि होताहै ॥ १५२ ॥

लग्नमे शनि, चारवे सूर्य, नवमे पांचवे चंद्र, अथवा मंगल स्थितहोवे तो उन्मादी होताहै ॥ १५३ ॥

तीसरे स्थानका स्वामी अस्तका, अथवा नीचराशिका छठे स्थान में होवे और पापग्रह से दृष्टहोवे तो जहरस्नानसे उन्माद होताहै ॥ १५४ ॥

सातमे मंगल और लग्नमे गुरु होवेतो उन्मादी होताहै ॥ १५५ ॥

क्षीगचंद्र और शनि येदोनुबारव स्थानमेंहोवे तो उन्माद होताहै ॥ १५६ ॥
शान और धनस्थानका स्वाभि ये दोनों पापग्रहसे युक्तहोवे तो वायुस उन्माद होताहै ॥ १५७ ॥

धनेश और शनि ये दोनों मर्य से युक्तहोवेतो रानकोपसे उन्माद होता है ॥ १५८ ॥

शनि और धनस्थान का स्वाभि ये दोनों मंगल से युक्तहोवे तोः पित्तजन्य उन्माद होताहै ॥ १५९ ॥

चंद्र और सूर्य दोनों नवमे पांचवे अथवा लग्नमें होवे और केन्द्र १४।७।१० मेंगुरु होवे जन्मसमय में शनि अथवा मंगल की काल होराहोवे या शनि मंगलवार केदिन जन्म होवे तो उन्माद होताहै ॥ १६० ॥

चंद्र शनि लग्नमे होवे और बुध इनकी देखताहोवे तो विव्हल (भ्रमिष्ठ) होताहै ॥ १६१ ॥

शीघ्रवार्ध क्य चिन्होदय योग

धनेकेतो शीघ्रवार्धक्यचिन्होदयः ॥ १६२ ॥

टीका-धनस्थानमे केतु होवेतो शीघ्रवृद्धावस्था के चिन्ह उदय होजाताहै ॥ १६२ ॥

मरुति वृद्ध योग

इदृक् केज्या लग्नगा प्रकृति वृद्धः ॥ १६३ ॥

टीका—राहु शनि सूर्य गुरु ये चारो लग्न मे होवे तो प्रकृति वृद्ध स्वाभाविकवृद्ध) होताहै ॥ १६३ ॥

नातिवृद्धनयुवा योग

चंद्राच्छोलग्ने नातिवृद्धो नयुवा ॥ १६४ ॥

टीका—चंद्र शुक्र लग्नमे होवेतां नतोभधिक वृद्ध और नभानि वानही (मध्या वस्थाका) होताहै ॥ १६४ ॥

वृद्धभी तरुण के समान रहनेका योग.

सबलेभौमेलामे वृद्धोपितरुगायते ॥ १६५ ॥

टीका—चलवान मंगल लाभ ११ भावमें होवेतो वृद्धावस्थाहोवेनोभी तरुणके समान रहताहै ॥ १६५ ॥

रसायन व्यसनी योग.

सुखेशे रसायनव्यसनी ॥ १६६ ॥

सुखेशे विदले रसायनव्यसनी ॥ १६७ ॥

टीका—चोथे स्थानका स्वामि १० दशमे स्थानमे होवेतो धातु उपधातु की रसायन घनाना तथा उसकासेवन करने मे विशेष प्रीतिरखनेवाला होताहै ॥ १६६ ॥

चोथे स्थानका स्वामि निर्बली होवेतो धातु उपधातु की रसायन घनाना तथा उसकासेवन करनेमे विशेष प्रीतिरखनेवाला होताहै ॥ १६७

बहुभुक्तयोग.

सपापे अर्थेशे बहुभुक् ॥ १६८ ॥

सपापेथे क्रूरपष्टयेशे बहुभुक् ॥ १६९ ॥

टीका—धन २ स्थानका स्वामि पापग्रहसे युक्तहोवे तो बहुत भोजन करनेवाला होताहै ॥ १६८ ॥

धन २ स्थान पापग्रहसे युक्तहोवे और क्रूरपष्टयेशमे होवेतो अधिक भोजन करने वाला होताहै ॥ १६९ ॥

सुखभुक्त योग.

सशुभे धनेशे सुखभुक् ॥ १७० ॥

धनेशुभे पापदग्धने सुखभुक् ॥ १७१ ॥

धनेशुभदृष्ट्याधिक्ये सुखभुक् ॥ १७२ ॥

धनेशे बलवति सुखभुक् ॥ १७३ ॥

वैशेषिकांशोर्थगे वा गुरुदृष्टे सुखभुक् ॥ १७४ ॥

टीका—धनेशशुभग्रहसे युतहोवेतोमुखसे भोजनकरनेवालाहोताहै
धन २ स्थानमें शुभग्रह होवे और धनस्थान को पानग्रह नहिं हो
हो वे तो मुखसे भोजन करने वाला होताहै ॥ १७१ ॥

धन २ स्थानपर शुभग्रह की अधिक दृष्टि होवेतो मुखसे भोजन
वाला होताहै ॥ १७२ ॥

धन २ स्थान का स्वामि बलवान होवेतो मुखसे भोजन करने वा
होताहै ॥ १७३ ॥

धनेश वैशेषिकांश (संज्ञाध्यायमेंज्ञान २१ में कहाहै) में होवे अथ
धनेश को गुरु देखताहोवेतो मुखसे भोजन करनेवाला होताहै ॥ १७४ ॥
श्राद्धात्र भोजनकतोयोग.

धनेशे मंदे नीचगे गुलिक युते सततं श्राद्धभुक् ॥ १७५ ॥

टीका—धन २ स्थान का स्वामि शनि नीचराशि में होवे और गुलिक
युक्त होवे तो निरंतर श्राद्धान्न भोजन करनेवाला होताहै ॥ १७५ ॥
अल्पभुक्योग.

धनेशे शुभे वा स्वाच्चे शुभदृष्टेऽल्पाशी ॥ १७६ ॥

टीका—धन २ स्थान का स्वामिशुभग्रहहोवे १ अथवा अपनी दृष्टिराशि
का होवे और शुभ ग्रह से दृष्ट होवे २ तोअल्पभोजनकरनेवाला
होताहै ॥ १७६ ॥

शीघ्र भुक् योग.

सबलैर्यशे सशुभे शीघ्रभुक् ॥ १७७ ॥

धनेशे चरमे शीघ्रभुक् ॥ १७८ ॥

धनेशुभर्शे शुभदृष्टे शीघ्रभुक् ॥ १७९ ॥

टीका—धन २ स्थानका स्वामि बलवान होवे और शुभग्रह से युत हो
तो शीघ्र भोजन करनेवाला होताहै ॥ १७७ ॥

धन २ स्थान का स्वामि चर राशि १४।७।१० काहोवेतो जल्दि भोजन

न करने वाला होता है ॥ १७८ ॥

धन २ स्थान का स्वामि शुभग्रह की राशि का होवे और शुभग्रह वस्को देखतेहोवे तो जल्दी भोजन करनेवाला होता है ॥ १७९ ॥

चिरभुक् योग

कोशेषापक्षे पापयुतदृष्टे चिरभुक् ॥ १८० ॥

धनेशे स्थिरर्क्षे चिरभुक् ॥ १८१ ॥

टीका-धनभाग्यमे पापग्रह की राशिहोवे और पापग्रह युक्त तथा देखते होवेतो देरतक भोजन करनेवाला होता है ॥ १८० ॥

धनस्था नकास्वाधी स्थिर १५।८।११ राशिका होवेतो देरतक भोजन करने वाला होता है ॥ १८१ ॥

कदन्नभुक् योग

गुलिकारयोगे कदन्नभुक् ॥ १८२ ॥

टीका-गुलिक और मंगल का योग होवेतो दुष्टान्न (खराबभन्न) भोजन करने वाला होता है ॥ १८२ ॥

भोजनशूर

लग्नेजीवे भोजनशूरः ॥ १८३ ॥

टीका-लग्नमेगुरुहोवे तो भोजनमेशूर (भोजन करने में बड़ादुर) होता है ॥ १८३ ॥

धीरयोग

आलपेचलिनिकेंद्रकोणमे सौम्यदृष्टेवैशेषिकांशे धीरः १८४

विक्रमेशे शुभर्क्षांशे शुभदृष्टयुते धीरः ॥ १८५ ॥

विक्रमार्केश योगे धीरः ॥ १८६ ॥

सौत्येशेन्दुयोगे धीरः ॥ १८७ ॥

टीका-तीसरे स्थान का स्वामि बलवान होकर केंद्र कोण १।४।७। १०।१।५ स्थानमे होव शुभग्रह से दृष्टहोवे वैशेषिकांशमे होवे तो धीर (धैरवान्) होना है ॥ १८४ ॥

तीसरे स्थानका स्वामि शुभग्रह की राशि और शुभग्रहके नवमां

शमें होवे शुभमहसे युतदृष्ट होवे तो धीर होताहै ॥ १८५ ॥

तीसरे ३ और १२ वारमे स्थान के स्वामि कायोग होवेतो धीर होताहै ॥ १८६ ॥

तीसरे ३ स्थान के स्वामि से चंद्र का योग होवे तो धीर होताहै ॥ १८७ ॥

विशुनयोग.

सुतेगेशोपिशुनः ॥ १८८ ॥

पापेङ्गेशोपिशुनः ॥ १८९ ॥

पापदृष्टपाधिकेङ्गे पिशुनः ॥ १९० ॥

टीका-लग्नका स्वामि ५ पांचवे होवेतो जुगलसोर होताहै ॥ १८८ ॥

लग्नका स्वामि पापग्रह होवेतो जुगलसोर होताहै ॥ १८९ ॥

लग्नपर पापग्रहों कि दृष्टि अधिक होवेतो जुगलसोर होताहै १९०

चाण्डालयोग.

पापदृष्टेजीवे सतमसी चाण्डालता ॥ १९१ ॥

नीचभांशेजीवे चाण्डालता ॥ १९२ ॥

टीका-गुरु, राहुसेगुरुहोवे और उसको पापग्रह देखता होवेतो चाण्डाल प्रकृति होताहै ॥ १९१ ॥

नीचराशि और नीच नवांशमें गुरुहोवेतो चाण्डाल प्रकृति होताहै १९२

विशाचजन्मयोग.

ग्रस्तेचंद्रेङ्गे पाशाः क्रोणे विशाचजनिः ॥ १९३ ॥

टीका-ग्रहसमय काचंद्रमा लग्नमें होय और १५ नवमें पांचवें स्थान में पाशाद जाय तो विशाच प्रकृतिवाला जन्मताहै ॥ १९३ ॥

शिल्पयोग.

केन्द्रमे सप्तमे गिल्पी ॥ १९४ ॥

मन्त्रेके केन्द्र गिल्पी ॥ १९५ ॥

इन्द्रजयोगे गिल्पी ॥ १९६ ॥

टीका-वेंद्र ११४।७।१० मे शनि, बुधसेयुक्त होवेतो शिल्पकार्य
रनवाला होता है ॥ १९४ ॥

बलवान बुध ११४।७।१० मे स्थानमे होवेतो शिल्पज्ञ होता है १९५
गुरु और बुधका योग होवेतो शिल्प जाननेवाला होता है ॥ १९६ ॥
सुधारासिद्धावट के तथा कलावगेरा हुनर के कामकी शिल्प विद्या कहते है
क्षारादिपदार्थ प्रिययोग

जेज्यौपटे उपदंशप्रियः ॥ १९७ ॥

टीका-छटेस्थानमे बुध बृहस्पति होवेतो अच्छे क्षार पदार्थोंको प्रिय
माननेवाला होता है ॥ १९७ ॥

सर्वार्थचिंतामणीमें दूसरेयोगभीकहे है छठेबुधशुभग्रहसे दृष्ट होवे
और पट्टेशशुभ युक्त होवे परंतु पापग्रहोंके मध्यमे स्थित होवेतो अच्छे
क्षार पदार्थोंको प्रियमाननेवाला होता है १ छठे गुरु अथवा बुधकी
राशीमृदंशदिकमे होते क्षारवस्तु प्रियमाननेवाला होता है २
मधुरादिपदार्थ प्रिययोग.

पट्टेशजीवे शुकेवा मधुरादिप्रियः ॥ १९८ ॥

सशुभेजे मधुरप्रियः ॥ १९९ ॥

टीका-छठेस्थानका स्वामि गुरु अथवा शुक्र होवेतो मधुरादि (मीठे-
आदि) प्रदार्थ प्रियमाननेवाला होता है ॥ १९८ ॥

बुध शुभग्रहसेयुक्त होवेतो मीठा पदार्थ प्रियमानने वाला होता है १९९
ग्रंथांतरमें कहा है कि पट्टेशगुरु वा शुक्र गोपूरादिभंशकमे होवेतो मीठा
आदिपदार्थ प्रियमानने अथवा शुभग्रहसे युक्त शुक्र छठेस्थानमे स्थित होवे २
वा शुभके नवांशमे शुक्र होवे और शुभग्रहसे दृष्ट होवेतो ३ वा
शुक्र बलवान होवे बुधसे युक्त होवे और पारावतादि शुभनवांशमे स्थित
होवेतो नित्य मीठापदार्थका भोजन करनेवाला होता है ४

मधुरे भरुचि, अम्लपदार्थे च रुचियोग.

सपापेजे मधुरेरुचि ॥ २०० ॥

टीका-पापग्रहसे युक्त बुध होवेतो मीठपदार्थपर भरुचिवाला होता है २००
ग्रंथांतरमें कहा है कि बुध पापग्रहसे दृष्ट होवेतो मीठपदार्थपर भरुचि

रखनेवाला होता है १ बुध सड़िन शुक्र छुटे भावम होवेतो यह मनु
सट्टा पदार्थ खानेवाला होता है २ छुटेस्थानमे शुक्र मंगलसे युक्त होवे
१ अथवा छुटेस्थानमे शुक्र होवे और उसको मंगल देखता होवेतो
अथवा छुटेगये हुवे शुक्रकोसुर्थ देखता होवेतो ३ वहमनुष्य सट्टापद
(दहि इमलि निषु कट्टी भादि सट्टापदार्थ) खानेवाला होता है.

नीचकर्मा, नीचपथग, म्लेच्छ योग.

लग्नेर्कज्यंशे केंद्रगचंद्रदृष्टे नीचकर्मा ॥ २०१ ॥

दूनेर्केलग्नेमन्दे पुण्येसोत्थे भौमे श्रेष्ठवर्णोपिनीचपथगः २०
मंदाकारिकर्क्षगौज्यंशे नवांशे त्रिंशांशे वा नीचयोपानुपङ्क्त
म्लेच्छोभवति ॥ २०३ ॥

टीका-लग्नमे शनिका द्रष्टाकाहोवे और १।४।७।१० मे स्थान
गया हुवा चंद्र देखता होवेतो नीचकर्म करनेवाला होता है ॥ २०१ ॥

सातमे सूर्य लग्नमेशनि और ९।३ नवमे तथा तीसरे स्थानमे मंगल
स्थित होवेतो उत्तमवर्गका हो तथापि नीचमार्गमे चलनेवाला होता है २०

शनि और सूर्य दोनों एकराशिके होवे १ अथवा एकराशिके द्रष्टाकाहो
वा एकराशिके नवांशमे ३ वा अकराशिके त्रिंशांशमे ४ होवेतो नीच
जातिकी स्त्रीके संगसे म्लेच्छ होजाता है ॥ २०३ ॥ टीप-इससूत्र
चारयोग कहें हैं इन चारयोगमंसं जिसके दो योगसे जितने अधिव
होवे उतनाहि ये योग बलवान जानना केवल शनि सूर्य दोनों अकर
राशि के होजाने से ये योग नहि मिलेगा

ज्ञातिपीडायोग.

पञ्चाङ्गेशौ लग्नगौ ज्ञातिपीडा ॥ २०४ ॥

लग्नेशोपष्टे पष्ठेशदृष्टे ज्ञातिपीडा ॥ २०५ ॥

शुक्रज्यौलग्नेपष्ठेशयुतौ शन्यारतमोदृष्टौ ज्ञातिपीडा २०६

टीका-लग्नेश और छुटेस्थानका स्वामि ये दोनों लग्नमे होवेतो ज्ञातिसे
पीडा होनि है ॥ २०४ ॥

लग्नेश छुटे स्थानमे होवे और उसको छुटे स्थानका स्वामि देखता
होवेतो ज्ञातिसे पीडा होती है ॥ २०५ ॥

षष्ठशसे युक्तं शुक्र गुरु लग्नमे स्थितहोवे और इनको शनि मंगल राहु देखतेहोवे तो जातिसे पीडाहोतीहै ॥ २०६ ॥

जातिच्युतियोग.

लग्नेशाद्रा लग्नात्त्रिकगैः पापैर्जातिच्युतिः ॥ २०७ ॥

जेन्द्रर्कजा नीचारिभागगा जातिच्युतिः ॥ २०८ ॥

टीका-लग्नसे अथवा लग्नेशसे ६।८।१२ स्थानमे पापग्रह स्थित होवेतो जातिबाहर होताहै ॥ २०७ ॥

बुध, चंद्र, शनि, ये तीनों नीच तथा शत्रु राशिके नवमांशमे होवेतो जातिबाहर होताहै ॥ २०८ ॥

जातिपोष्ययोग.

इन्द्रर्कजौ मित्रर्क्षे जातिपोष्यः ॥ २०९ ॥

टीका-चंद्रशनिमित्रराशिकेहोवेतो जातिकोपोषणकरनवाला होताहै ॥ २०९ ॥

कौतुकियोग.

लाभेशेक्रे कौतुकि ॥ २१० ॥

लाभेशुभे वा सचले कौतुकी ॥ २११ ॥

लाभेशुभे कौतुकि ॥ २१२ ॥

टीका-लाभ ११ स्थानकास्वामी लग्नमेहोवेतो कौतुकिहोताहै २१०
लाभस्थानकास्वामिशुभग्रहहोवे वा बलवानहोवेतो कौतुकि (बिलाडी)
होताहै ॥ २११ ॥

ग्यारहें स्थानमे शुभग्रह स्थितहोवेतो कौतुकि होताहै ॥ २१२ ॥

आलसियोग.

इज्यमन्दयोगे अलसः ॥ २१३ ॥

लग्नेशे मंदान्विते अलसः ॥ २१४ ॥

लग्नेशे निर्बल अलसः ॥ २१५ ॥

लग्नेषापट्टयाधिक्ये अलसः ॥ २१६ ॥

टीका-गुरु शनिकं योग होवेतो भालसी होताहै ॥ २१३ ॥

लग्नेश्वर शनीसे युक्त होवेतो भालसी होताहै ॥ २१४ ॥

लग्नेश्वर निर्वली होवेतो भालसी होताहै ॥ २१५ ॥

लग्नपर पापग्रहोकि दृष्टि अधिक होवेतो भालसी होताहै ॥ २१६ ॥

कृषिकर्तायोग

अंशाद्धर्मे जिवे कृषिकर्ता ॥ २१७ ॥

अंशादरिगौ पापौ कृषिकर्ता ॥ २१८ ॥

टीका-कारकांशलग्नेसे नवमेस्थानमे गुरु होवेतो सति करनेवाला होताहै ॥ २१७ ॥

कारकांश लग्नसे छठे स्थानमे २ दो पापग्रह स्थित होवेतो सति करने वाला होताहै ॥ २१८ ॥

सत्त्वाटयोग

धनुषि वृषेक्षे क्रूरदृष्टेस्त्वाटः ॥ २१९ ॥

सपापे पार्श्वेक्षे स्त्वाटः ॥ २२० ॥

कर्केचंद्रे भौमदृष्टे सिंहचापास्यंगनालग्ने स्त्वाटः २२१

टीका-कर्यहोत्र दृष्ट धन तथा धृषभ लग्न होवेतो सत्त्वाट (मत्ता) होताहै ॥ २१९ ॥

पापग्रहोकि राशिका लग्नपापग्रहसे युक्त होवेतो सत्त्वाट होताहै २२०

कर्कराशिमेंगयाहुवा चंद्रमा मंगलसे दृष्ट होवे और ५१९।८।६ राशि का लग्न होवेतो सत्त्वाट होताहै ॥ २२१ ॥

शोभननेत्रयोग

नेत्रेगुमे नेत्रेगंचगुभान्विनेत्रेगयुतेरोभननेत्रः २२२

टीका-नेत्रस्थान २।१२ में शुभग्रह होवे, नेत्रस्थानका स्यामि शुभग्रहसे और लग्नेससे युक्त होवेतो अच्छे नेत्रवाला होताहै ॥ २२२ ॥

बुधदुस्त्रोचन योग

नेत्रिने पिभद्रेषु बुधदुस्त्रोचनः ॥ २२३ ॥

और बुध लग्नमे स्थित होके मिथ्र (शुभगाय) ग्रहसे बुधदुस्त्रोचन (पीरनेनेत्रका) होताहै ॥ २२३ ॥

मिलिताक्षयोग

धने वा व्ययेपापे मिलिताक्षः ॥ २२४ ॥

टीका-दूसरे अथवा बारवें स्थानमे पापग्रह होवेतो मिलिताक्ष होताहै ॥ २२४ ॥

विकलनयनयोग.

सकृत्कार्कोन्त्ये वात्रिकेणे विकलनयनः ॥ २२५ ॥

टीका-दूसरे अथवा बारवें स्थानमे अथवा ९।५ वें स्थानमे हावे तो विकलनेत्र होताहै ॥ २२५ ॥

मंदलोचनयोग.

धनेवाव्येषुके पापयुते काणो वा मंदलोचनः ॥ २२६ ॥

टीका-दूसरे अथवा बारवें स्थानमे शुक्र पापग्रहसे युक्त होवेतो काणा [अकचक्षु] अथवा मंददृष्टिवाला होताहै ॥ २२६ ॥

वक्रनेत्रयोग.

पुण्यवंतावमदृष्टौ वक्रक्षगौ व त्रिके वक्रनेत्रः ॥ २२७ ॥

चंद्रारावेकभागेऽक्षगोबिन्धुम् ॥ २२८ ॥

टीका-सूर्य और चंद्रमा ये दोना वक्रीग्रहकी राशिमे स्थित होवे और पापग्रह से दृष्टहोवे १ अथवा ६।८।१२ स्थानमे स्थित होवे तो वक्र नेत्र (टेढ़ेनेत्र) होताहै ॥ २२७ ॥

चंद्र, और मंगल दोना भेक नवांशमें (बहुतसमीप २ अंशके, भेकराशिमे) होयतो नेत्रमे बिन्दुहोताहै ॥ २२८ ॥

नेत्ररोगीयोग.

पष्टेशेवक्रगर्शेऽक्षिरोमी ॥ २२९ ॥

ज्ञारक्षलम्नपे ज्ञारदृष्टेऽक्षिरोमी ॥ २३० ॥

रंध्रांगेशोपष्टे सद्यनेत्ररोगः ॥ २३१ ॥

पष्टेश्मेशुः दक्षिणनेत्ररोगः ॥ २३२ ॥

धनेशुभेक्षिते लग्नेरो पापयुते सगोत्रेः ॥ २३३ ॥

मंदारगुलिकयुते नेत्रेशे नेत्ररोगः ॥ २३४ ॥

नेत्रेपापा यमदृष्टा नेत्रे रोगहतं भवेत् ॥ २३५ ॥

नेत्रेशांशेषापार्श्वे रोगहतनेत्रः ॥ २३६ ॥

लग्नाष्टमेशुके क्रूरदृष्टेश्रुपातान्नेत्रपीडा ॥ २३७ ॥

लग्नेभौमेशयने नयनेगदः ॥ २३८ ॥

स्वेषाशुक्रयोगे नेत्ररोगी ॥ २३९ ॥

शुक्रात्रिकेनेत्रेशे नेत्ररोगी ॥ २४० ॥

त्रिकोणसूर्येपापदृष्टे निस्तेजेनेत्रः ॥ २४१ ॥

टीका—यकगतिग्रह की राशिमें छठेस्थानका स्वामि होवेतो नेत्र होता है ॥ २२९ ॥

लग्नका स्वामि बुध (३।६) अथवा मंगलकी (१।८) राशि होवे और बुध मंगल उसको देखते होवेतो नेत्ररोगी होता है ॥ २३० ॥

लग्न और अष्टमस्थानके स्वामि ये दोनों छठेस्थानमें होवेतो स (बाये) नेत्रमें रोगहोता है ॥ २३१ ॥

छठे भाठमें स्थानमें शुक्रहोवेतो दक्षिणनेत्रमें रोगहोता है ॥ २३२ ॥

धनेश शुभग्रहसे दृष्टहोवे और लग्नश पापग्रहसे युक्तहोवेतो सरो नेत्रहोता है ॥ २३३ ॥

दूसरे और चारवेस्थानके स्वामि शनि मंगल और गुलिकसे युक्तहोवे तो नेत्रमें रोग होता है ॥ २३४ ॥

दूसरे चारवे स्थानमें पापग्रहहोवे और उनको शनि देखताहोवेतो रोगसे नेत्र पीडित होते हैं ॥ २३५ ॥

नेत्रस्थान (२।१२) के स्वामिका नवांशका स्वामि पापग्रहकी राशि का होवेतो रोगसे नेत्रपीडित होते हैं ॥ २३६ ॥

लग्नमें तथा भाठमें शुक्रहोवे क्रूरग्रहसे दृष्टहोवेतो अश्रुपातसे नेत्रमें पीडाहोती है ॥ २३७ ॥

शयनावस्थामें गयाहुवा मंगल लग्नमें होवेतो नेत्रमें पीडाहोती है ॥ २३८ ॥

धनेश और शुक का योग होवेतो नेचरोगी होता है ॥ २३९ ॥

शुकसे ६।८।१२ नेचस्थान का स्वामि होवेतो नेचरोगी होता है ॥ २४० ॥

पापग्रह से द्रष्ट स्यं ९।५ नवमे पांचमे स्थानमे होवेतो निस्तेज नेमहानेहै ॥ २४१ ॥

अथ योग

लग्नेरो सार्कशुके त्रिके जन्मांथ ॥ २४२ ॥

सूर्य राहुग्रस्तगे मन्दारी त्रिकोणे जन्मांथ ॥ २४३ ॥

नेत्रांगेशो भान्वच्छयुनी त्रिके जन्मांथः ॥ २४४ ॥

त्रिकेचंद्रारयोगे पातादन्यः ॥ २४५ ॥

सेज्येशो त्रिके सेकादन्यः ॥ २४६ ॥

चंद्राच्छीत्रिके कामान्यः ॥ २४७ ॥

जेन्द्रुत्रिके गामान्यः ॥ २४८ ॥

इन्द्रको सोत्ये वा केंद्रेण्यः ॥ २४९ ॥

पार्वत भोमे केंद्रेण्यः ॥ २५० ॥

यमर्सेसे सूर्येण्यः ॥ २५१ ॥

मौम्यात्रिके क्रूरदृष्टा अन्यः ॥ २५२ ॥

कुजंग कुंभेण्यः ॥ २५३ ॥

शुक्रांगगयुनी स्वांत्येगी त्रिकस्यान्यः ॥ २५४ ॥

शुभपापाम्बांयुक्त भन्द्रोधनेण्यः ॥ २५५ ॥

सुवांयुगी पापीअन्यः ॥ २५६ ॥

चंद्रत्रिके पातट्रेण्यः ॥ २५७ ॥

चंद्रार्कोन्यदेशुभरग्यानी अन्यः ॥ २५८ ॥

मिर्दकंजो वा शुकेण्यः ॥ २५९ ॥

यमेन्द्रर्काः क्रमादन्त्यार्थाष्टमगा नेत्रहीनः ॥ २६० ॥

यथा तथा पष्ठाष्टान्त्यधनस्था श्रद्धाकरियमा चलीग्रह
दोषजानेत्रहीनता ॥ २६१ ॥

लग्नाच्छुकाद्रासुतेराहु सूर्यदृष्टच्छेत्रेनाशः २६२
मंदेतुर्ये पापैर्दृष्टे नष्टदृष्टिः ॥ २६३ ॥

टीका—लग्नेश्वरसूर्य शुक्रसे युक्तहोकर ६।८।१२ स्थानमें होवेतो
जन्मांध होताहै ॥ २४२ ॥

लग्नमें ग्रहणसमय का सूर्य होवेऔर शनि मंगल ९।५ मेंस्थान
होवेतो जन्मांधहोताहै ॥ २४३ ॥

नेत्र २।१२ स्थानका स्वामी और लग्नेश ये दोनों सूर्य शुक्र सेयु
क्त हो के ६।८।१२ स्थानमें जावेतो जन्मांध होताहै ॥ २४४ ॥

चंद्र मंगल का योग ६।८।१२ में स्थानमें होवेतो पतन (गिरजाने)
से अंधाहोता है ॥ २४५ ॥

शुक्रसे युक्त चंद्रमा ६।८।१२ में स्थानमें होवेतो सेककरने से अंधा
होताहै ॥ २४६ ॥

चंद्र और शुक्र दोनों ६।८।१२ स्थानमें होवेतो कामांध होताहै २४७

युध चंद्रमा ६।८।१२ में स्थानमें होवेतो शास्त्रांध होताहै ॥ २४८ ॥

चंद्र और सूर्य दोनों ३ तीसरे स्थानमें भयवा १।४।७।१० में
स्थानमें होवेतो अंधाहोताहै ॥ २४९ ॥

पापग्रह कि राक्षी में गयाहु १।४।७।१० मेंस्थानमें होवेतो
अंधाहोताहै ॥ २५० ॥

शनि कि राक्षी १०।११ का सूर्य ७ सातमें स्थानमें होवेतो अंधा
होताहै ॥ २५१ ॥

शुभग्रह ६।८।१२ में स्थानमें गयेहोये और उनको मृगग्रह देखने होये
तो अंधा होताहै ॥ २५२ ॥

बृश्रादि का मंगल लग्नमें होवेतो अंधाहोताहै ॥ २५३ ॥

शुक्र और लग्नका स्वामी ये दोनों २।१२ दोनों और मारमें स्थानमें
होवे तो अंधा होताहै ॥ २५४ ॥

शुक्र और पापग्रहोसे युक्त चंद्रमा धनस्थानमें स्थितहोवेतो अंधा होताहै ॥ २५५ ॥

पांचवे और चौथे ४ इनदोनोंस्थानोंमें पापग्रह स्थितहोवेतो अंधाहोताहै ॥ २५६ ॥

पापग्रह से दृष्ट चंद्रमा ६।८।१२ में स्थानमें स्थित होवेतो अंधा होताहै ॥ २५७ ॥

चंद्र और सूर्य येदोनों धारमें स्थानमें स्थितहोवे और इनको शुभग्रह नहिदेखतेहोवेतो अंधाहोताहै ॥ २५८ ॥

सिंह राशिकाशीन अथवा शुक्र लग्नमें होवेतो अंधाहोताहै ॥ २५९ ॥

शनि चंद्र सूर्य, ये तीनों क्रमसे १२।१८ स्थानमें स्थितहोवे अर्थात् शनि १२ वा.में चंद्रमा २ दूसरे सूर्य ८ भागमें स्थानमें होवेतो नेत्रहीनहोताहै ॥ २६० ॥

छठे स्थानमें चंद्र अष्टम स्थानमें रवि बारह स्थान में मंगल और धन स्थानमें शनि इस प्रकार यथाक्रमतया विनाक्रम कोईभी स्थानमें इनग्रहोंमेंसेकोईभी ग्रह स्थित होवेतो इनमेंसेजाग्रह अधिक बलवान होवे उसी ग्रहके घातपित्त कफादि दोषसे नेत्रनाश होते है ॥ २६१ ॥

लग्नसेअथवाशुक्रसे पांचवेस्थानमेंराहु सूर्यसे दृष्टहोवेतो नेत्रनाश होतेहै ॥ २६२ ॥

चौथे स्थानमें शनि पापग्रहोसे दृष्टहोतो नष्टदृष्टी होताहै ॥ २६३ ॥

निशांघयोग

सेदुः शुक्रस्त्रिकस्थो निशांघः ॥ २६४ ॥

शुक्रेंद्रयुतेनेत्रेदोङ्गे निशांघोनतुस्वोच्चशुभैर्युते ॥ २६५ ॥

टीका—चंद्रसेयुक्त शुक्र ६।८।१२ में स्थानमेंहोवे तो निशांघ (राक्षसैअंधा) होताहै ॥ २६४ ॥

नेत्रस्थान २।१२केस्थानी शुक्रचंद्रसेयुक्त होके लग्नमेंस्थितहोवेतो निशांघ (रातके समय अंधा) होताहै परंतु ये ग्रह स्वराशी उच्चराशी के तथा शुभग्रह से युक्त नहिहोवेतो येयोग जानना ॥ २६५ ॥

नेत्रनाशयोगे

लग्नार्यशौत्रिकेक्षिनाशः ॥ २६६ ॥

चंद्राको सिंहेजे शन्यारदृष्टे नेत्रनाशः ॥ २६७ ॥

टीका-लग्नेश और धनेश ये दोनों ६।८।१२ स्थानमें होंवेतो नेत्र नाश होताहै ॥ २६६ ॥

चंद्रसूर्य, सिंहराशि के लग्नमें स्थितहोंवे और शनि मंगल इनको देखते होंवेतो नेत्र नाशहोतेहै ॥ २६७ ॥

धामनेत्रेघातयोग

भौमेन्त्ये वामनेत्रे घातः ॥ २६८ ॥

टीका-बारमें स्थानमें मंगल होंवेतो वामनेत्रमें घातहोतीहै ॥ २६८ ॥

दक्षनेत्रेघातयोग

मन्देर्धे दक्षनेत्रे घातः ॥ २६९ ॥

टीका-दूसरेस्थानमें शनि होंवेतो दक्षिणनेत्रमें घातहोतीहै ॥ २६९ ॥

नृपकोपसे नेत्रोत्पाटनयोग.

लग्ने धनारी कर्मशाः शुक्रयुता नृपकोपाग्नेत्रोत्पाटनं २७०

अच्छाक्षिणौ नीचांशगौ पापयुतौ नृपकोपाग्ने ॥ २७१ ॥

राजारिनाथांशौत्रिके लग्नेशयुतौ नृपको० ॥ २७२ ॥

टीका-धनेश पणेश और दशमेश येतीनों ग्रह शुक्रसेयुक्तहोंके लग्नमें स्थितहोंवेतो राजाके कोपसेनेत्र उखाड़े जातेहै ॥ २७० ॥

शुक्र और नेत्र स्थान २।१२ केस्वामि येदोनो नीचराशिके नयांशमें स्थित होंवे और पापग्रहसे युत होंवेतो राजाकेकोपसे नेत्रउखाड़े जातेहै ॥ २७१ ॥

दशम और छठे भावके स्वामि जिनग्रहोंकेनयांशमेंहोंवे वेग्रह६।८।१२ में स्थानमें लग्नेश से युतहोंवे तो राजाके कोपसेनेत्रउखाड़ेजावे २७२

नेत्रप्रमादयोग

शुक्राक्षिणौ पणगौ शुभेर्नदृष्टौ नेत्रप्रमादः ॥ २७३ ॥

टीका-शुक्र और २।१२ में स्थानके स्वामी छठे स्थानमें स्थितहों

॥ शुभग्रह इनकोनहींदेखेहोंवे तो नेत्रप्रमाद (नेत्रस्थिर नहिरह
यर उपर चलने होंवे रहनेका) रोगहोताहै ॥ २७३ ॥

काणयोग

लग्ने भौमे वाचद्रे शुक्रज्येष्ठे काणः ॥ २७४ ॥

सिंहेचंद्रेस्ते भौमद्रेष्ठे काणः ॥ २७५ ॥

कर्केकंससमे भौमद्रेष्ठे काणः ॥ २७६ ॥

चंद्राच्छावरेये वा शुने वामाक्षणाकाणः ॥ २७७ ॥

टीका—मंगल अथवा चन्द्रमा लग्नमे होवे और शुक्र गुरु इसको खते होवेंतो काणा होताहै ॥ २७४ ॥

सिंहराशिकाचंद्रमा सातमे स्थानमे स्थितहोवे और मंगल से दृश्यहोवेंतो काणा होताहै ॥ २७५ ॥

कर्कराशिका रवि सातमे स्थानमे स्थितहोवे और मंगल इसको खता होवेंतो काणा होताहै ॥ २७६ ॥

चंद्र और शुक्र येदोनो चारमे स्थान मे अथवा सातमे स्थानमे स्थित होवेंतो वामनक्षत्र काणा होताहै ॥ २७७ ॥

दंपती काणयोग

व्ययारीगौ चंद्रार्कौ दंपतीकाणौ ॥ २७८ ॥

टीका—चारमे स्थानमे चंद्रमा और छठे स्थान मे रवि स्थित होवेंतो पति (दोनों स्त्री पुरुष) काण होताहै ॥ २७८ ॥

स्पष्टीकरण.

कंचल १२ । ६ स्थान मे चंद्र रवि के स्थित होनेसेही दोनों स्त्री पुरुष काणा होना समझनी । वास्तविक विचारकरनेसे जैसे नाश भय, काण. भादि जोनों योग पिछाही सहभायेहै उनमे २ । ६ । ८ स्थान और मध्य चंद्रपर मंगल शनि आदि पापग्रह कीदृष्टी और योग का विशेष संबंध वर्णितहै. वैसेही लग्न और मातमे स्था

१२ । ६ योजन स्थान है उसमे सूर्य चंद्र का योग होनेसे दंपति के मे काणलहाना समझदे. परंतु यदि पूर्वोक्त योगानुसार इन १२ । ६ नमे मध्यमे चंद्र सूर्य पर मंगल शनि आदि पापग्रह की दृष्टी या पाप का योग नहीं होवेंतो ये योग नहीं मिलेगा.

१४ कारण नक्षत्रबंधों योगोंके अन्वयविनही संयोगदिपाई इसलिये । १५ इसयोग न पापग्रह का दृष्टेखनहि कियाहै तथापि इसकाबंध

हानादि भनप्व एत भेरुहयोगमं पापग्रहोकार्योग तथा दृष्टिं
होवेतो योग बलवान् होत है.

इसीप्रकार विना १० भाइ ३ माता ४ पुत्र ५ स्त्री ७ काका १२ ब्र
स्त्री ९ पुत्रस्त्री ११ काकेस्त्री ६ मामा ६ मामाकीस्त्री १२ भ्रा ११
फुफा ६ मासी ६ मासा १२ साला ९ सालेकगत्र १ सालाकीस्त्री ३ दाई
१ दादा ७ पुत्रकगत्र ९ इत्यादि स्थानके स्वामियोंमेंसे जिस २ स्थान
कास्वामी रवि शुक्र सं युक्त होके ६।८।१२ स्थानमें जावे और मंगल शनि
राहुहंशल नेपुन्यन भादि पापग्रहोंसे युक्त दृष्ट होवे तो उस २ का भयत
प्राप्त होवेगा ऐसा बुद्धिमान पंडितोंने विचारकरके कहना ॥ उदाह
र जैसे १० दशम स्थान २ पिताका स्थान है इसदसमभावसे २।१२।
भाव और इन स्थानके स्वामी पापग्रह से युक्त दृष्ट होवे और ६
भावका स्वामी रवि शुक्र सं युक्त हांके पापग्रहोंसे द्रष्ट होवेतो
भंवा होता है

इसीप्रकार प्रत्येक उपरोक्त भावके स्वामी से प्रत्येक भावका वि
करके कहना.

बधिरयोग.

मंदान्तुर्येसौम्ये पटेशेत्रिके बधिरः ॥ २७९ ॥

सरिपु पूर्णेदुशुक्रौ बधिरः ॥ २८० ॥

रात्रौज्ञे पटे खेशुक्रे बधिरः ॥ २८१ ॥

सितेत्येक्षयुते वामकर्णे श्रुतिन्यूनता ॥ २८२ ॥

ज्ञपटेशौ क्रूरदृष्टौ बधिरः ॥ २८३ ॥

पापाख्यायत्रिकोणे सौम्यैर्नेक्षिता बाधिर्यकराः ॥ २८४ ॥

पटेशेत्रिके मंददृष्टे बधिरः ॥ २८५ ॥

टीका—शनिसे चोथे स्थानमें युक्त होवे और छठे भावका स्वामी ६।८।१
भावमें होवेतो बहरा होता है ॥ २७९ ॥

पूर्णचंद्रमा और शुक्र ये दोनों अपने शत्रुग्रहसे युक्त होवे तो बहरा होता
इसयोगमें भी पापग्रहका उल्लेखन हिंदै तथा पिवास्तविक विचार से इन

पापग्रहोकीदृष्टि तथा पापग्रहोका योगहोवेतो अवश्य बहुराहोताहै २८०
राजिसमयका जन्महोवे लग्नसे छठेस्थानमेबुध और दशवे भावमे
शुक्रहोवेतो बहुराहोताहै ॥ २८१ ॥

वारमेभावमेशुक्र बुधसेयुतहोवेतो वामकर्णसे कम सुननेवाला
होताहै ॥ २८२ ॥

बुध और छठेभावका स्वामी इन दोनोको क्रूरग्रह देखते होवे तो बहुरा
होताहै ॥ २८३ ॥

तीसरे ग्यारवे नयमे पांचवे भावमें पापग्रह जावे और उनको शुभग्रह
नहिदेखतेहोवेतो बहुरा होताहै ॥ २८४ ॥

छठे भावका स्वामी ६ । ८ । १२ मे स्थानमे होवे और उसको शनि
देखता होवे तो बहुरा होताहै ॥ २८५ ॥

कर्णच्छेदयोग

हंसार्किचंद्रास्त्रिसुतास्तर्धर्भगाःसौम्याऽष्टयुताकर्णच्छेदः—

॥ २८६ ॥ चंद्रादस्तेपदे शुक्रार्कौलग्ने कर्णच्छेदः २८७

नीचेनृगौकंणिमुते कर्णच्छेदः ॥ २८८ ॥

टीका—सूर्य शनि चंद्रमा ३।५।७।९ में स्थान मे स्थितहोवे और शुभ
ग्रहोसे दृष्टया युतनहिहोवेतो कर्णच्छेद होताहै (कानकटताहै) २८६
चंद्रमासेसातमे स्थानमे शनिहोवे और शुक्रसूर्य लग्नमे होवेतो
कर्णच्छेदहोताहै (कानकटताहै) ॥ २८७ ॥

नीचराशि [६] काशुक्र राहुसे युतहोवे तो कर्णच्छेद होताहै ॥ २८८ ॥
सर्वांशमे इनके अतिरिक्त २ दोयोग यह कहेंहे कि शनिधर मंगल सहित
होवे और धनेश लग्नमें होवे १ तथा षष्ठेश और धनेश मे दोनो लग्न
मेहोवे और शनि मंगल १२ वारमे भावमे स्थितहोवे २ तो कानकट
या फुटजावे—एसेही विचार पित्रादीभावो काभीकरना, पित्रादिभाव
और भाष्य एवं उनउन भाष्यके कारकग्रहोंके साथ उपयुक्त धधिर
तथा कर्णच्छेदादि योग हावे अथवा भागे नाशाछेदादि और भीजो
जोयोग बहेजावेगे वे योग होवेतो पित्रादिको को धधिर, तथा कर्ण
विच्छेदादि समस्त योगोंका फलकहना ।

नाशाछेदयोग

शुकेपष्ठे कुजेज्ञे नासाच्छेदः ॥ २८९ ॥

टीका-छटेस्थानमेशुक और लग्नमेमंगल होवे तो नासाछेद होता है ॥ २८९ ॥

मुखदुर्गंधयोग

इंद्रच्छौ मेपगौ लग्नेपष्ठे मुखदौर्गंधं ॥ २९० ॥

कर्काजगेशुके मुखदौर्गंधम् ॥ २९१ ॥

लग्नेइंदौ पष्ठेशे मुखदौर्गंधम् ॥ २९२ ॥

टीका-चंद्र और शुक मेपराशिमें होवे और लग्नमे ताय छटेयुधहोवे तो मुखमेदुर्गंध (बदबु) आती है ॥ २९० ॥

कर्कामेपराशिका शुकहोवेतो मुखमे दुर्गंध आती है ॥ २९१ ॥

लग्नमे चंद्रमाहोवे और छटे स्थानका स्वामि युधहावे तो मुखमे दुर्गंध आती है ॥ २९२ ॥

मूकयोग

कर्कालिज्ञपेते सूर्याधस्थचंद्रदृष्टे मूकः ॥ २९३ ॥

ह्यारिशौ लग्नगौ मूकः ॥ २९४ ॥

जीवारीशावंगे मूकः ॥ २९५ ॥

धनेशेष्पौत्रिके मूकः ॥ २९६ ॥

टीका-कर्क युधिक तथा मीन इननिःशब्द राशिमे गयेहुये युध को मूर्ख गींचे गयाहुया (अमावास्याका) चंद्रमा देखता होवेतो मूक (गुंगा) रहि २९३

ध और छटे स्थानका स्वामि येदोनो लग्नमे स्थितहोवेतो मूक (गुंगा) होता है ॥ २९४ ॥

ध और चंद्रमा लग्नमे युक्तहोवेतो मूक (गुंगा) होता है ॥ २९५ ॥

वेश और गुरुयेदोनो धाटा १२ में स्थानमे होवेतो मूक (गुंगा)

॥ २९६ ॥ - इसी तरह विना माना भाई भोनाई श्री मामा

॥ गंगरा का विचार जिस २ भावमे किया जाता है इन २ भाव

स्वामी गुरुसे युक्त होके ६।८।१२ जावेतो जिस २ भावका स्वामि होवे
 १२ को गुंगापन होनेका कहना. शंभुद्वारा प्रकाशमे लिखा है कर्क
 धेक और मीनराशी मे पापी ग्रह स्थित होवे राशीके अंतमे वा वृषराशी
 वंदमा स्थित होवे और पापग्रहोसे दृष्ट होवेतो मूक होता है और शुभ
 १ से दृष्ट होवेतो चिरकालके पश्चात् बोलनेवाला होता है. अर्थात् पांच
 के उपरांत बोलता है. १. कूरग्रह संधिमे गये होवे कोई शुभग्रह नही
 ति होवे अथवा चंद्रमा पापग्रहोसे युक्त होवेतो जड़के समान गुंगा होता है.

गुंगस्वर योग

कर्कालिप्तगोक्षे चंद्रदृष्टे सुखे सूर्ये पृष्ठभे पापदृष्टे गुंगस्वरः

॥ २९७ ॥ शुक्लेन्द्वारावद्धे गुंगस्वरः ॥ २९८ ॥

टीका—कर्कपृथिविकतपामीनराशिमे गवाहुवावुध चंद्रसे दृष्ट होवे, चोथे-
 ग्रानमे सूर्य होवे और छठे स्थानको पापग्रह देखते होवे तो गुंगस्वर
 समजनने नही भावे वैसा नाकमे गड़बड़ गड़बड़ बोलनेवाला] होता है
 २९७ ॥

शुक्लपक्षमे जन्म होवे और चंद्रमंगल का योग लग्नमे होवे तो गुंगस्वर
 गुंगा स्वरवाला) होता है ॥ २९८ ॥

इन उपरोक्त योगोसे मूक होता है ये ग्रंथ कारं का मत सत्य है परंतु सुकमनु-
 योकि कुंडलिये देखनेसे मकत्व किंवा बाणीमें दोष उत्पन्न हाने का विशेष
 कारण, जो मां अनुभव से दृष्टिगत होते हैं वे इस मुनिव है

(१) द्वितीय स्थान में पापग्रह युक्त होवे और उस स्थान का स्वामि
 तीचराशिका किंवा अस्तंगन होके पापग्रहोसे दूषित (युक्त दृष्ट) होवे
 और रवि बुध का सिंहराशिमे योग कोई भी स्थानमे होवे तो निधन करके
 मूक (गंगा) होता है

(२) सिंहराशिमें रवि बुध भेकड़ा जिसके होते हैं उसकी बाणी मे नि-
 धन पूर्वक दोष होता है बहुबाजो लोक बोलते समय अटकने दे, उनकी
 कुंडली मे ये योग होता है ।

अनि बोलनेवाले बोलते समय अटकनेवाले मुस्र टेढ़ा बांका करके बो-
 लनेवाले बां उभे पड़त आंखें मिचकानेवाले यंगरा बोलनेके असंख्य भेद हैं

महसित मुल

धनेशे स्वोद्यगे केंद्रे प्रहसितमुखः ॥ २९९ ॥
कोरोरो सौम्ययते केंद्रे ॥ ३०० ॥

टीका-मीनराशिमे चंद्रसूर्य युतहोवेतो प्रहसीत मुख होताहै २
धनेश अपनी स्वराशि तथा उच्चराशि का होके केन्द्र राशि/७/१०
युत होवेतो प्रहसित मुख होताहै ॥ ३०१ ॥

धनेश अपनी स्वराशि तथा उच्चराशि का होके केन्द्र १।४।७।१० स्थित होवेतो प्रहसित मुख होता है ॥ ३०० ॥

धन(२)स्थान का स्वामि शुभग्रह से युक्त होकर ११४/७१० स्या
मे स्थित होवतो सुमुख होताई ॥ ३०१ ॥

दुर्मुखा योग

धने पापे धनेशेषापयुते नीचरिगे दुर्मुखः ॥ ३०२ ॥

टीका-धन स्थान में पापग्रह होवे और धनेशपापग्रह से युक्त होके नीच
अथवा शशुराशि का होवेतो दुर्मस्व होता है ॥ ३०२ ॥

दधिमुस योग

धनेपापे दीर्घमुक्तः ॥ ३०३ ॥

टीका-धन स्थान में पापग्रह होवे तो दीर्घमुक्त (लंबेमुक्तवाला) होता है ॥ ३०३ ॥

भागभूतियोग

यामित्रेमंदे चंद्रसे वाग्मी ॥ ३०४ ॥

भंदाच्छावित्ते मंदभेके वाग्मी ॥ ३०४ ॥
 दिवाग्निहेले वाग्मी ॥ ३०५ ॥

दिव्यसिंहेन वाग्मी ॥ ३०६ ॥

त्रैकैके वाग्मी ॥ ३०७ ॥

उत्ते न कोणेवास्वोचे शुभेक्षिते पुं ग्रहयोगे वा म्यी ३०८

धनेशोपारावतांशे केंद्रे वाग्मी ॥ ३०९ ॥

त्रैम्येशोजीवे वाग्मी ॥ ३१० ॥

तागी शंशे उचे गोपुरे वा वाग्मी ॥ ३११ ॥

शुभेजीवे वर्गोत्तमे वाग्मी ॥ ३१२ ॥

निशेषोपारावतांशे जीवयुते वाग्मी ॥ ३१३ ॥

न-सातमेशनि दशभेधद्रमा होवेतो अतिवका (भच्छाबोलने-
व्याख्यानदाता, पुराणवक्ता, शास्त्रानुसार अत्यंतबोलनेवाला)

॥ ३०४ ॥

स्थानमे शनि शुक्र जावे और शनि की राशि १०।११ का सूर्य
अतिवका होताहै ॥ ३०५ ॥

के समय जन्महोवे और सिंह राशीका युग्महोवे तो भच्छावका
॥ ३०६ ॥

समय मे जन्महोवे और कर्ककायुग्महोवेतो भच्छावका होताहै ३०७

धानका स्वामि युग्मसे युक्तहोवे और १।४।७।१०।१।५ स्थानमे
यवा धनस्थानकास्वामि अपनिस्वराशी उच्चराशीकाहो शुभयुग्म
वे युग्मयहसे युक्तहोवे तो भच्छावकाहोताहै ॥ ३०८ ॥

वकास्वामि पारावतांशमेहोवे १।४।७। १० स्थानमे जावेतो
का होताहै ॥ ३०९ ॥

राशीके नवांशमे गुरुहोवेतो भच्छावका होताहै ॥ ३१० ॥

सराशीके नवमांशमेहोवे उसकास्वामी उच्चराशीकाहोवे अथवा
होवेतो भच्छावका होताहै ॥ ३११ ॥

से युक्त गुरु वर्गोत्तमांशमे होवेतो भच्छावका होताहै ३१२

का स्वामि पारावतांशमेहोवे गुरुसे युक्त होवेतो भच्छावका
३१३ ॥

जिह्वादोषयोग

त्रैजिह्वादोषः ॥ ३१४ ॥

टीका—छठे स्थानका स्वामी बुध होवे तो ज्ञानमें कोई भीतरहका रा होता है ॥ ३१४ ॥

ये दोष होना संभव प्रतीत नहीं होता क्योंकि जिन्हाका संबंध धनस्थानमें है अतएव धनस्थानमें पापग्रह स्थित होवे धनको पाप ह देसते होवे और पण्डेश बुध होवे पापग्रहों से युक्त दृष्ट होवे शत्रुनीचराशी गंत होवे तो अवश्य जिन्हामें दोष होना संभव है ।

अस्फुटोक्तियोग.

मदेशाद्धने केतावस्फुटोक्तिः ॥ ३१५ ॥

टीका—सातमें स्थानके स्वामी से धनस्थानमें केतु होवे तो बोलनेवाला नहीं होता है ॥ ३१५ ॥

गद्गदवाक्ययोग.

मंदर्क्षे मंददृष्टे गद्गदवाक् ॥ ३१६ ॥

टीका—बुध १०११ राशिका होवे और शनि उसको देखता होवे गद्गद वाक् (प्रेमसे जैसे गद्गद स्वरोंके बोलता है वैसेही गद्गद कंठसे बोलने वाला) होता है ॥ ३१६ ॥

लङ्घारोक्तियोग.

धर्मेशे शुके लङ्घरोक्तिः ॥ ३१७ ॥

धनेशे विधले क्रूरांशे लङ्घरोक्तिः ॥ ३१८ ॥

पापधने वा पापदृष्टे क्रूरांशे पापयुते लङ्घरोक्तिः ॥ ३१९ ॥

टीका—नवमें स्थानका स्वामी शुक्र होवे तो लङ्घरोक्ति (जिस भद्रांश जपान भक्ततावि उत्तमभद्रापर बहुत देवता जपान करने और धर्म बोलसके एसा) भद्रा के बोलनेवाला होता है ॥ ३१७ ॥

केवल नवमें शुक्र होवे तो ये योग मिलना अभिभव है ।

धनेशनिर्वृष्टी होवे और क्रूरग्रह के नवांशमें होवे तो लङ्घरोक्ति (जादे के बोलने वाला) होता है ॥ ३१८ ॥

पापग्रह होवे अथवा धनस्थान को पापग्रह देखने होवे के नवांशमें होवे और पापग्रह युक्त होवे तो लङ्घरोक्ति (जादे

भटक के बोलने वाला) होता है ॥ ३१९ ॥

परुष वाक्ययोग.

मन्देन्दुयोगे परुषवाक् ॥ ३२० ॥

टीका-शनि, चंद्रका योग कोई स्थान में होवे तो परुषवाक् (बठोर बचन बोलने वाला) होता है ॥ ३२० ॥

दंतविकारयोग

गोजधनेगे क्रुरेष्टे वा युते दंतविकारः ॥ ३२१ ॥

सप्तभेषापाः सौम्यैरदृष्टा दंतविकृतिः ॥ ३२२ ॥

चंद्राकर्कषा वा पापा अस्ते दशनाभिघातः ॥ ३२३ ॥

सप्तभेषाद्धनेराहौ स्थूलदंतः ॥ ३२४ ॥

धनारीशौयुतौ सपापौ दंतरोगी ॥ ३२५ ॥

सुतेगेराहौ दंतुरो दंतरोगीवा ॥ ३२६ ॥

टीका-पापग्रहों से दृष्ट अथवा युक्त शृषभ, मेष, वा धन राशि कालग्न होवे तो दंतविकार (दांत में बीमारी) होती है ॥ ३२१ ॥

सात में स्थान में गये हूँ पपाग्रहों को शुभग्रह नाहि देखते होवे तो दंतविकृति (दांत में विकार) होता है ॥ ३२२ ॥

चंद्र शनि और सूर्य सात में स्थान में जावे अथवा पपाग्रह सात में बैठे होवे तो दातगिरजावे अथवा टूट जाते हैं ॥ ३२३ ॥

सप्तभेष से दूसरे स्थान में राहु होवे तो मोटे दांत वाला होता है ॥ ३२४ ॥

धनेश और पृष्ठश ये दोनों, पपाग्रहों से युक्त होवे तो दंतरोगी होता है ॥ ३२५ ॥

पांच में अथवा लग्न में राहु होवे तो बड़े दातवाला दंतुर, अथवा दंत रोगी होता है ॥ ३२६ ॥

हस्तनाश हस्तपीडा योग

शकुचुजीयुतौ दिवातुर्गमे शुक्रेच हस्तनाशः ॥ ३२७ ॥

शन्यारौराहुमुते चारीगौ हस्तनाशः ॥ ३२८ ॥

द्वेप्येत मंदेयुक्तयुते हस्तनाशः ॥ ३२९ ॥

मंदेन्दर्काः पष्ठाष्टमगा हस्तपीडा ॥ ३३० ॥

टीका-शनि १ मंगल २ बुध ३ गुरु ४ ये चारों भेकस्थानमें युत होवे दिनके समयका जन्म होवे और चौथे स्थानमें शुक्र स्थित होवे तो हातका होता है ॥ ३२७ ॥

शनि और मंगल राहु के भोग्यांशमें स्थित होवे और छठे स्थान में ज तो हस्तनाश होता है ॥ ३२८ ॥

छठे स्थानमें शक्रराशीका शनि शुक्रसे युत होवे तो हस्तनाश होत ॥ ३२९ ॥

शनि चंद्र और सूर्य ये तीनोंहि छठे वा भाठमें स्थानमें स्थित हों तो हातमें पीडा होती है ॥ ३३० ॥

कुम्भयोग

तुर्थेक्षेत्रो वक्रभेल्यांशे कुम्भः ॥ ३३१ ॥

टीका-मेषतया वृषिकं राशिका लग्नेश्वर चतुर्थस्थानमें जावे और यह वृषिकराशि के नवांशमें स्थित होवे तो कूबड़ा होता है ३३१

काठिन चित्त योग

रंध्रेस्थिरे ज्ञेयराकाः कठिनाचित्तः ॥ ३३२ ॥

टीका-बुध गुरु और शुक्र ये तीनोंही भाठमें स्थानमें स्थिर राशि रा ५८११ के हों तो कठोरचिन्तमान होता है ॥ ३३२ ॥

विरुद्धचिन्तयोग

सुखेक्रे मुरास्थिते सुखेगे विरुद्धचित्तः ॥ ३३३ ॥

टीका-चतुर्थस्थानमें मरुपद स्थित होवे और सुखे मरुपदसे पुन होवे तो विरुद्धचिन्त होता है ॥ ३३३ ॥

भद्रादियोग

रंध्रार्ग शुक्रार्ग दानादण्डवृद्धिः ॥ ३३४ ॥

भोनर्गार्ग शुक्रार्ग दानादण्डवृद्धिः ॥ ३३५ ॥

इदृशो भोनर्गार्ग मंदेय्यर्ग कललजण्डवृद्धिः ॥ ३३६ ॥

मण्डिर्गार्ग मरुपददे मृगशार्गः ॥ ३३७ ॥

टीका-शुक्र और मंगल आठमे स्थानमे युक्तहोवे तो वायुके कोप भंडवृद्धिहोतीहै ॥ ३३४ ॥

शुक्र और मंगल मेष अथवा वृश्चिक राशिकेहोवेता वायुसे भंडवृद्धिहोतीहै ॥ ३३५ ॥

शुक्र और मंगल मेष अथवा वृश्चिक राशिमे होवे और उनको शनि गुरु देखतेहोवेतो कललज (रक्त और जलवीर्य के कोपसे) भंडवृद्धिहोतीहै ॥ ३३६ ॥

कारकांश लग्नमे गुलिक युक्तहोवे और केवल बुधहीउसको देखतेहोवेतो स्थूल (बड़े) भंडका होताहै ॥ ३३७ ॥

जंघाक्षतियोग.

पूर्णेन्द्वारोपणे जङ्घाक्षतिः ॥ ३३८ ॥

शनीन्द्वाराच्यये जंघाक्षतिः ॥ ३३९ ॥

टीका- पूर्णचंद्रमा और मंगलका योग छठे स्थानमेहोवेतो जंघाक्षति (पीडलीमे पीडा) होतीहै ॥ ३३८ ॥

शनि चंद्र और मंगल चारमे स्थानमे स्थितहोवेतो जंघाक्षति (पीडलीमे पीडा) होतीहै ॥ ३३९ ॥

पंगुयोग.

क्षपाल्यजर्कर्कमृगान्यतमगौइन्द्रर्कजौ सपापौनवमपंचमं पंगुः ॥ ३४० ॥

पक्षसूर्यारमंदाः पंगुः ॥ ३४१ ॥

मंदारीशौच्यये पापदष्टौ पंगुः ॥ ३४२ ॥

रंभांकेशौ सपापौ तुर्ये पंगुः ॥ ३४३ ॥

कर्कचंद्रार्कजौ शुभादष्टौ पंगुः ॥ ३४४ ॥

मंदाच्छयुतौ शुभादष्टौ पंगुः ॥ ३४५ ॥

दारोशौरेणपापे पंगुः ॥ ३४६ ॥

इति प्रथमखिवेक.

टीका-मीन १२ वृश्चिक ८ मेष, १ कर्क ४ मकर १० इन राशिमें से कोई राशिमें चंद्र शनि पापग्रहों से युक्त होवे १ भयवा पापग्रहों से युक्त चंद्र ११५ में स्थानमें स्थित होवे २ तो पंगु (पांगला) होता है ॥ ३४० ॥ सूर्य भंगल और शनि छठे स्थानमें एकत्रित होवे तो पंगु (पांगला) होता है ॥ ३४१ ॥

शनि और पृथ्वी दोनो चारमें स्थानमें होवे और पापग्रह इनको देखते होवे तो पंगु होता है ॥ ३४२ ॥

अष्टमेश और नवम स्थानका स्वामिये दोनो चौथे स्थानमें पापग्रह से युक्त होवे तो पंगु होता है ॥ ३४३ ॥

चंद्र शनि कर्क राशिमें स्थित होवे और शुभग्रह उनको नहीं देखते होवे तो पंगु होता है ॥ ३४४ ॥

कोई भी स्थानमें शनि शुक्र का योग होवे और उनको शुभग्रह नहीं देखते होवे तो पंगु होता है ॥ ३४५ ॥

सप्तम स्थानका स्वामी शनि, पापग्रह से युक्त होवे तो पंगु होता है ३४६ ॥ पापग्रह १२ या स्थान मीन राशि और शनि का अमल है इसका १२ धैर्यीनो पापग्रह से युक्त दृष्ट होवे नीच तथा शत्रु की राशि में हो और ऊपर कहे हुए योग बनते होवे तो अवश्य पंगु या पापमें कोई भी तरह की पीड़ा होने का संभव है.

इसके शिवाय और क्या देखना ?

उपरोक्त योगों के शिवाय भाई कोलाहल, भाई के पुत्र की हत्या, माता का पिता (नाना) माता का राग्य, मंत्र का बाप, पुत्र का शाला, पुत्र के छोटे भाई की हत्या, पुत्र का भाग्य, साल का पुत्र, मालिक की माता, बाप की माता, (दादी) सुसर का पिता, मांभिका मृत्यु, काके का मार के शत्रु, गुरु का पुत्र, सुसर का राग्य न्यापार, सासु की माता, आदि का विचार भी उपर कहे हुए योगों के अनुसार ही प्रथम भाग में देखा.

शरीर के लक्षणों परसे ।

लग्नचंद्र और ग्रहों की परीक्षा करना अनिवार्य का काम है और यह प्रपन्नता से सर्व-वरक्षता है भवः यहां टटका दिग्दर्शन करा देना अवश्य है ।

शरीर और शरीरके अवयव, वर्ण, चेहरा, नेत्र, स्वर, दंतपंक्ति, वाणी केश, हाव भाव शरीर के उपरकेचिन्ह आदि के सहायतासे लग्न व चंद्र और ग्रहोंकी परिक्षा होतीहै इसमें कुछभी शंका नहींहै किंतु अवलोकनशक्ति जिसमानकी होतीहै उसीमानसे इसकाममें यशमिलताहै।

अतएव शरीर लक्षणपरसे यहपरिक्षा कैसे करना ऐसे उपयोगी विषयका परिज्ञान सर्व साधारणोंको प्राप्त होनेके लिये कईवार अनेक मनुष्यों पर अनुभव कियेहुये योग सर्वसाधारणों के अनुभवार्थ प्रकाश करतेहैं जिससे लग्न कराहै किवा खोटा इसका निर्णयभी भलीप्रकार कुंढकी तथा शरीर लक्षणपर से कर सकेंगे।

नीचेलिखे हुये लक्षण जिस जिस समय जिन २ के शरीरपर देखनेमें आवें उसी उसी समय भसुक लग्न व भसुक राशी है ऐसा निःशंका कहनेमें हरकत नहीं इन लक्षणोंमें सर्व मनुष्यमात्र आसकेंगे ऐसा कह नहींसकते क्योंकि ईश्वरीकृतीका वर्गीकरण करणां अत्यंत कठिनही नहीं किंतु अशक्य है। अतः आज पर्यंत जितने समझमें और अनुभवमें आयेहैं उतनेही योग लिखेहैं अभ्यासि मनुष्योंने इनका योग्य उपयोग करके अपना अपना ज्ञान बढ़ाना चाहिये।

मेघ—भविनी, भरणी, कृतिका का भेकचरण मिलके मेघराशी होतीहै, ऐसेही प्रत्येक राशी २। नक्षत्रोंकी होतीहै इन प्रत्येक नक्षत्रोंका स्वरूप भिन्न २ है इसकारण इसराशीके तथा प्रत्येक राशीयोंके लक्षण जो जो लिखेहैं उनमें परस्पर विरोध देखने में आवेगा। भसुक नक्षत्र का भसुकलक्षण कहनेमें आना कठीण है तथापि प्रत्येक राशीयोंके मनुष्यों ने जो जो लक्षण देखने में आयेहैं वे सर्व लिखेहैं इसकारण विरोध के तरफ नक्षत्रोंके भिन्नत्वसे देखके विचार करना।

चालचलन बावले के समान एकांत अधिकप्रिय, इसना बहुत म और वहभी सिर्फ चेहरेपर दिखनेवाला, बोलना अटकतेहुये, नादे सेनही, शब्दफिका घोगरा (रीत्या मनुष्यके समान) होठके बाहर किलेहुयेदांत किंवा दांतों केसाथ दुसरी छोटीलाईन वा दांतोंके पीछे कसेतीन एकके पीछेएक ऐसेदात होवे, दांतोंकी नीचेकी पंजीबकरी

केदांत के समान छोटी व गोलहोने, शरीर की मुद्रा गुस्सेवाले मनु-
 केसमान, बढातेनचलनेवाला और दोढ़नेवाला, दूरदूर की मुस-
 करनेवाला, बारंबारस्पर्शान्तर करनेवाला, फिरणका उद्योग धंधा कर-
 वाला, शरीरपतला, वर्णताम्रकेसमान, दांनोंमेंसेमृनपढ़नेकीपि-
 किंवा अन्यकोईभी प्रकारका दंतरोगवाला, नितना कहे उतना-
 करने वाला (मुदकीबुद्धि नहि) स्वतःविवारनकरतेहुवे दूसरा व
 माफिक सुनके भलमकरनेवाला क्रोधविशेष परंत क्रोधका भा-
 अत्यतकम, नेत्रलालरंगके, तथा कण्ठपीले (पिंगट) मस्तकतया
 भयवाकोनसेहिशिरोभागपराकिसीभीतरहकीनिशानीहोवे प्रकृति
 बहुधा ज्वरका तथा रक्तका विकारवाला, तामसी, नगही,
 हृष्टभंतपर्यंत चलानेवाला, मनमेंभावे उसका कुछ विचार
 कामकरनेवाला, शरीरके अवयव मजबूत, ऐसा इसराशीका स्वा-
 सर्वराशिषोमे यह राशी जल्दी पेहचानमें आसनीहै और इसरा-
 मनुष्यभी बहुत देखनेमें आतेहै ।

इसराशीमें यदि रावि होवेतो सफेत, हरा, और कालामिले हुवे ।
 जैसे किसी किसी अंग्रजों के नेत्र होतेहैं वैसे नेत्रहोवे, राध और
 एकत्रहोवेतो विशेष उपरोक्तरंग केनेत्र होवे, केवल मंगलहोवेतो
 केश तांबेकेसमानव पिंगटहोवे, इसराशीमें जो अकेलारवी लगनेमें
 तो वह मनुष्य ऊंचाशरीरका और संतप्तहोवे, व मस्तकशूलकीपीडा
 इसराशीके लग्नमें केवलमंगलहोवतो शरीरके कोईभी भागसे रक्तस्राव
 विकारहोवे, मुख व छातीका भाग विशेषलालहोवे, मस्तकमें गुमहे
 टाट बगेरा विकारहोके उस की निशानीरहै, किंवा पढ़नेसे जलन
 उसकी निशानीरहै, अथवा माताके वणहोवे, ।

रावि किंवा मंगलइसराशीमें दूसरेस्थानमेंहोवेतो विशेषकाल। हरा
 सफेदामिलेहुवरंगकेनेत्र (कोईरअंग्रजोंके जैसेहोतेहैं वैसे)होवे, वडु
 मनुष्यके सरीसेहोवे, और नेत्रपीडा (आँखआनेकी) विशेष आदत
 चाये अथवा छठे स्थानमें ये ग्रह होवेतो अपघातहोवे, आग्निभय
 पेट पर दाग (टामके) निशानहोवे, भयंकर तापभावे, छोटी माता व
 बढीमातसे विशेषपीडाहोवे अम्लपित्तरोगहोवे वा अग्निसे जलने
 दुःखहोवे, ।

इसराशीमे लगभग शनिहोवेतो बोलतेसमय जबानविशेष अटके भयव
इसरी कोईभी खोदहोवे दांतबंदकरके बोले किंवा टेढ़ामुढ़ करके बोले
नेत्रमैले बारीक व छंदहोवे और कुछ पिगट होवे ।

शनिकेसाथ रवि भयवा मंगलकायोग होवे किंवा रवि मंगल दोनूक
योग होवेतो नेत्र मानरे (बिंदीकेनेत्रके समान) होवे, इसराशीमे रा
थवा शनीकोईभी स्थानमे होवेतो शब्द फीका खोखरा होताहै ।

वृषभ—कृत्तिका के तीन चरण रोहिणी व मृगके दोचरण मिल
यभ राशी होती है इसराशी के मनुष्य क्वचित मिलते है ।

शरीरकायांघा सुवसूरत व मध्यमठंचा, दांतसफेत, वर्णसफेत
शिर व तेजस्वी, चेहरामोहक, व सुंदर, नेत्रसफेतहोके तेजस्वी प्रकृति
नेरोगी गालभोर हातकामणीबंध (कलई) गोल और भरीहुई, शि
तः शरीरमे धनुल्लस्य तेजःप्रभतिस्वच्छता येगुण विशेष नजरभाते
बंदरेपर छायाका बिन्दुभीहोनावे इसराशी किस्त्रिया भति तेजस्व
भोर गौर होती है.

इसराशिमे गुरु वद्व किंवा शुक्रहोवेतो शरीर का भोर दांतका व
पटिक के समान शुभ्र व तेजस्वी होताहै.

उपरोक्त वर्णन जैसा रोहिणी भागमे अच्छामिलेगा वैसाइतरभाग
नही मिलेगा.

मिथुन—मृगके दो चरण, आर्द्रा व पुनर्वसुके तीनचरण मिल
मिथुनराशी होती है इसराशी के मनुष्य बहुत नजरभाते है

चेहरासुंदर और दाढ़ीकेभागकीतरफ छोटापन भस्तकपीठकेभाग व
तरफ नांरलसरीखालंबा शरीर दुबलापतला व छंचा, वर्णइरामिलाहु
काला, नेत्रकाले, केशबारीक, स्वरधनुल, वाणीस्वष्ट, विशेषबोलनेवाल
बना (ब्याख्यानदाना) विद्वान, विश्रव्यासेगी, भाषाशास्त्र उत्तमजान
बाला, शास्त्री, पुराणी, इलोक दोहे कहानन पगेरा का उपयोग बोलने
विशेष करने वाला, और कमरघाहर निकालकेनमतादुरा चलने वाल
होवे, येभेदम राशी के लक्षण है—

कर्क—पुनर्वसुका एकचरण, पुष्य व भरतृषा मिलके कर्कराशी है
तीहै. इसराशीकेलम पानीधिरनेवाला, पान बन्धीव का गोबीन, नटाश

केनजकि जन्म पानेवाला भयवा रहनेवाला, फिरनेका धंधावाला, गायन जानने वाला, आंगिके दांत चोड़े व मोठे, और कुंठे बाहरदिसनेसरीस्त्रे, चेहरा गोलभौरमोहक, हातकेपंजेबगल्ले और पांव ये भयवबढेहोवे, बढातेजदोढनेवाला जल्दी पांवांके पांवरस्त्रके चलनेवाला, शूर, अनद्र खेलने वाला, चैनकरने वाला, स्त्रीयोंका शोकीन दोस्त्रियोवाला, वर्णकालासांवला, बांधासाधारण मनपूत, चंचायिमध्यम, व्यसनी और अनेक स्त्रीयोंको भोगनेवाला इस प्रकार के लक्षण इस राशी के है.

इस राशी के लग्न में गुरु होवेतो हर्षभोरा व बांधाशरीर अच्छा होता है और निर्व्य शनी होता है, इस राशी में शुक्र व चंद्र लग्न मेंतो भती चैनी होता है, और गाने का बजाने का तथा नाटक विशेष शोफीन होता है, मंगल शनी व राहु होवेतो व्यशनी इस पिचार का व रोगी प्रकृति का होता है, चतुर्थ तथा षष्ठ स्थान में राशी में ये ग्रह होवेतो दुःख दारिद्र और विपत्ति भोगने वाला षष्ठ पेटमें दुखने का तथा उदर रोग वाला होता है.

सिंह—मया पुरां व सतरा का १ चरण मिलके सिंह राशी होती है, दांतभानिगममजपूत, छाति थोड़ी व भरदार, कपाल बिस्तीर्ण और कुंठेक भागे निकला हुआ, चेहराभोंगेके पाससेसूक्ष्म दृष्टी से देखने में सिंह सरिया दीप्ति, नाककुंचरा, शरीरमजपूत, कलाहवा शरीर, वर्णकाला, शब्दमोठा, निषट्कछातिका, थेंदर, प्रमत्तपनेके अत्रगण्य होके पट्टागमे नियमितचलने, वाला अधिकारि (भाकि सर) प्रहरान, छातिकाभागे निकालके चलने वाला और महारइने वाला, बड़ा मजपूत पट्टवान, शिष्टा परेन और अरण्य इनमें कोईभी कारण बग निराम करने वाला, व इनमें प्रीतिरखने वाला, इस प्रकार इस राशी का मन्त्र है ।

इस राशी में गुरु वन्द्य शुक्र वृज व ग्रह होवेतो वर्णभोग होता है. चेहराका दूसरेपर महान में गोच (दृषद्वा) बंध जाना है कपाल भजन होता व मन्त्रक का भगनी बड़ा होता है

रवि होवेतो बहुधा वन काटा होता है, पण शरीर मजपूत व अतिगम सुंदर होता है. मन्त्र होवेतो प्रहृति भनि वृष्ण होवेतो शरीर बढन वन

वान मजबूत होता है, वर्ण तांबेके समान होता है, नेत्र पीले, शरीर का दिखाव लड़ाउमनुष्य के समान, और अति गंभीरदिष्टता है, दूसरे मनुष्य को अपने तावेमें रखनेवाला कपाल अधिक आगे निकला हुआ और कपाल पर उंचापणा, तेजस्वी, क्रूरस्वभावका, अमलदार, (बड़ा भाफिसर) सनापति होने योग्य, अपघात, दुःस्वाप्ति, और रक्त श्राव इनका भय विशेष, ऐसा होता है.

शनि किंवा राहु होवेतो शरीर परिश्रम सहन करने की शक्तिवाला होता है परंतु रोगिष्ठ रहता प्रमुखत्व प्राप्त नहीं होवे शत्रुभय विशेष होवे.

कन्या—उत्तरा के तीनचरण हस्त और चित्राके दोचरण मिल के कन्या राशी होती है. लम्बावाला खड़ा रहे और चले उस वक्त गर्दन टेड़ीरखे, भालसी, धीमा, चलते समय हातजादे हिलावे, हंसताहुवा घाले, चेहराघौड़ा गोल, चालहातीसरीखीघूमती, स्त्रीयों के लक्षण. विशेष, स्वरचारीक, विद्वान, हस्तकलाकुशल, पहनने के फपड़े यंगरा काचिगड ने करने की विशेष चिंता नहीं करने वाला, इस प्रकार का इस राशी का स्वरूप है.

तुला—चित्रा के दो चरण स्वाती और विशाखा के तीन चरण मिलके तुल राशी होती है. चेहरा, हात, पांचकी नलिये भारएकंदर शरीर अधिक लंबा होता है, पांचकी नलिये बाकदार, शरीरउंचा और दुबला पतला, यंग बहुतधा काला, स्वरपतला, मुंह बंद करके हंसने वाला, अनुकरण करने योग्य, गिनतीके और तुलेंदुवेवचन ठहरके बोलने वाला, वृत्तिसात्विक बोलते समय उभीगर्दनजादे हिलाताहै खड़ा रहे और चलें उस समय कमर नमाके भागे झुका हुआ दिखता है, विद्वान, और शास्त्रज्ञ, ऐसा इस राशी का स्वरूप है.

लग्न में रवि इसराशी का होवेतो शरीर विशेष उंचा व काला होनाहै, चंद्र होवेतो शरीर के अवयव जादे लंबे और गारे होते है, गुरु शुक व बुध होवेतो दिखनोटा सुंदर शरीर होता है.

वृश्चिक—विशाखा का एक चरण अनुराधा ज्येष्ठा मिलके वृश्चिक राशी होती है. कमर के उपर के भागकी अपेक्षा नीचे का भाग छोटा होता है, औरठसी प्रमाणे किर्नक अवयवभी छोटे होतेहै, उंचाई

कम होती है नाक मोटा और फूना हुआ स्वभावगहरा और सुन्नर रखने वाला, सर्वदांतबड़े, वर्णगोरा, मुखकानवाड़ा मोठा, इस तरह का इस राशी का स्वरूप है.

धनु—मूल पूर्वाषाढा और उत्तराषाढाका एक चरणमिलके धनराशी होती है. छाति भागे करके घूमते चलनेवाला कसाहुवा शरीर, शरीरकी भाकृति विशेषमजबूत और सुढोल, नाक चंपेकीकलीके समानतीक्षा शरीरनदुपला न जादेपुष्ट, बहुतहीमजबूत, गला थ दाढी ये भाग मानो किसीने हातसे दुरुस्त किये होंवे वैसे कोरदारसुन्दर गरदन जाड़ी भरी हुई, भुजदंडभेरहुंवे, पहलवान के समान, और हाथकी ई जाड़ी घोंढेपर घेठनेवाला, लड़ाई दंगे में पीछे न हटने वाला, घोलने में घलका गवं विशेष रखनेवाला, वर्णसाधारणगोरा, लड़ाई में बहादुर, नेत्रपीले, ऐसा इस राशी का स्वरूप है.

इस राशी में मंगल होवेतो प्रकृति अत्यंत उष्ण होती है और भर्षा (बयाशीर) भयवा दूसरा रक्त विकार का कोईरोग, अपघात किया कोईभी दुःख की प्राप्ति होतीरहे, शुक्रहोवेतो शरीर तेजस्वी होवे देवी मनुष्यकेसमान दिखनेवाला होता है, बुध वा गुरु इस राशी में होवेतो साफसुधरा तेजस्वी मुन्दर स्वरूप वाला होता है, शनि वा राहु होवेतो मुढालसन्नक होवे परंतु रोगिष्ठ रहे.

मकर—उत्तराषाढा केतीनचरण, भयग, धनिष्ठाके दोचरण मिलकर मकर राशी होती है. कितनेक वयन शरीर पतला, छोटा गर्दन लट्ट सरीसी लंबी, भंसकट और भविचार से घोलनेवाला एकही बात में मन गुवा न निवाला, भंगविशेष हास्यास्पद, एकदम बड़े आवाज से और मध्यमे बहुतधीरव में भाषण करने वाला, कितनेक समय शरीर भनि लट्ट, (मजबूत) शरीर के कितनेक भयपर घातकीकी अपेक्षा अधिकता है, वायुमें जकड़ा हुवा शरीर, स्नान गंध्यादि धर्म अनिपुणः सर करने वाला, परमेश्वरकी मगुन भक्ति करने वाला, जमा खन के तत्क विनीय लक्ष देने वाला, बड़ी बड़ी, मुत्तदार मूठे रखनेवाला, भाँके केरा करे, दूर दूरदेशोंकी मुसाफरी करने वाला जवाहामरके सरविवा किंवा बहुतघारीक, शरीरके मान में मजबूत बहुत बड़ा, इसप्रकार का इस राशी का स्वरूप है.

इस राशी में जब मंगल अंतके भागमें होवेतो शरीर बड़ा भारी व भक्ति लट्ट होता है वर्ण, ताँबेके समान होवे और शरीर पर भतिशय चेसाहोते है.

कुंभ—धनिष्ठा के दोचरण शततारका, पूर्वाभाद्रपदाके तीन चरण मिलकेकुंभ राशी होतीहै, शरीर सूक्ष्म, बहुधा मस्तकपर तालुके भागमें केशनहीहोवे, कपालके दोनुबाजुके भागजादे छोटे दिखतेहै, चेहरा दिसाउ सुंदर, विद्याव्यासंगी, बड़ाकल्पना करने वाला, गंभीर व तात्विक विचार करने वाला, कायदेकापंडित इस प्रकार इस राशीका स्वरूप है. इसराशीका शनि लग्नमें होवेतो शरीरपुष्ट, ऊँचा, और मजबूत, होताहै.

मीन—पूर्वा भाद्रपदा का अंश चरण उत्तरा भाद्रपदा व रेवती मिल के मीन राशी होती है. शरीर विशेषठेगणा, मस्तक व कितनेक शरीर के अवयव बहुत छोटे, जननेंद्रियचारीक, वर्णसाधारणगोरा, इसप्रकार के इस राशी के लक्षण है.

इस प्रमाणे राशी के सामान्य लक्षण है एक राशी के सर्वही लक्षण एक ही मनुष्य में मिल जावेगे ऐसा नही समझना चाहिये किंतु जिस समय एक दो लक्षण स्पष्ट देखने में आवे उस समय उस राशी का निश्चयात्मक ज्ञान होवेगा ।

लग्न अमुक राशिका व चन्द्र अमुक राशीका है ऐसा निश्चयात्मक कहते आना मुश्किल है तथापि दोनों मेंसे एक कायम होने बाद दूसरे का ज्ञान उत्तम होसकेगा इस काममें अवलोकन व विचार शक्ति बढ़ाने का ज्यों ज्यों विशेष अभ्यास होता जावेगा त्यों त्यों लग्न व चन्द्रकी परिक्षा होने में परिज्ञान अधिक बढ़ता जायेगा ।

ग्रह परिक्षा.

कुंडली में ग्रह कहींभी क्यों बैठे राशीपरत्व और स्थानपरत्व शरीरपर परिणाम अवश्य करते हैं इस परिणाम का बरोबर ज्ञान होने से किसी समय लग्न का ज्ञान नहीभी होवेतो वह इस परस होसका है इस कारण थोड़ेसे अनुभव किये हुवे योग नीचे दिये है.

१ कपाल अधिक आगे दिखेतो सिंह राशीका मंगल लग्न में है ऐसा जानना—

२ नेत्र पीले और लाल दिखते तो अग्नि राशी (मेष-सिंह-अथवा धनु) में रवि अथवा मंगल ग्रह है ऐसा जानना नेत्र बहुत बड़े और भागे भागे हुये (निकले हुये) दिखने के लक्षण मंगल के ही है यह निश्चय जानना—

३ नेत्र गोल होंगे और भागे हुये दिखते होवे तो सप्तम में मंगल है ऐसा समझना.

४ कपाल में दर्द, अर्श (बवाशिर) नेत्रों में भारकपणा, चेहरे पर अधिक लाली, ऐसा लक्षण होवे तो मंगल लग्न में है ऐसा जानना.

५ गर्दन के भाग पर लाल रंगका दाग, किसी भी कारण से उत्पन्न हुये जखम का निशान होवे अथवा जल जानेका तथा रक्त विकार के गांठ वगैरा का चिन्ह होवे माताके व्रणका चिन्ह होवे इस प्रकार के लक्षण देखने में आवे तो लग्न में अथवा चन्द्र के पास मंगल होगा और ये योग मेष राशी पर हुवा होगा तो अवश्य कुछ निशान होवे हीगा.

६ नेत्र में पीड़ा होती रहती होवे विशेषतः आसोकी पलकों में दाँते पड़जाने का विकार होवे तो मंगल धनस्थान में है ऐसा जानना.

७ शरीर का कोनसाहि भाग टुटा हुवा काटा हुवा अथवा जलाया हुवा होवे तो धन राशी में मंगल है ऐसा जानना.

८ काला हरा और सफेद मिले हुये रंग के नेत्र जैसे किसी २ अंग्रेज के होते हैं ऐसे होय तो रविमंगल किंवा हर्शलमंगल ये नेत्र स्थान में अथवा कुंडली में कहीं भी एकत्र होवेगे.

९ नेत्र अति तेजस्वी स्वच्छ काले व पाणीदार होवे तो शुक्र दूसरे स्थान में अथवा नेत्रस्थान में होवेगा ऐसा समझना.

१० नेत्र मलिन अतिकाले गहल रंगके (गुलले) छोटे बड़े इस प्रकार के होवे तो लग्न में अथवा दूसरे स्थान में चंद्रसे युत शुक्र जानना.

११ शुक्र के समान ही चंद्रके ही नेत्र होते हैं यह अवलोकन अभ्यास शक्ती से इन दोनों ग्रहोंका फरक समझने में आता है लिखते नहीं बनता।

१२ नेत्र में हरेपणा अधिक होवे तो रवि शनि, मंगल शनि, व हर्शल शनि, का योग लग्न में अथवा दूसरे स्थान में कर्क, सिंह, धन, मेष, राशी में है ऐसा जानना.

१३ दाँत शुभ्र स्वच्छ व तेजस्वी होवे तो चंद्र गुरु और शुक्र लग्न तथा दूसरे स्थान में समझना.

१४ आर्द्रमुख व होठपर चर्बी व लालपणा विशेष होवेतो लग्नमे तथा दूसरे स्थानमे चंद्रसमझना.

१५ बोलते वसंत भटकताहोवे तथा जीभ मे विकार होवेतो लग्नमे अथवा दूसरे स्थानमे राहुपापयुत समझना.

१६ दातवंदकरके अथवा मुखनादे नहीखोलके मुहमेही बोलताहोवे तो लग्नमे शनिहै ऐसा जानना.

१७ लिखने के समय मुहवांकोटेझ करके लिखताहोवे तो दूसरस्थानमे राहु का संभव जानना.

१८ जिवान भागे करके बोलता होवे रकारका उच्चार उत्तम नहीकर सका होवे किंवा अभ्यकोई बोलने की खांड होवेतो चंद्रराहुसंयुक्तजानना अथवा लग्नमे राहुजानना.

१९ दंतपंक्ति धनुष्या कार व अतिशय चांकदार होवेतो लग्नमे राहु होताहै.

२० दमा सर्दीका विकार व वातवद्ध शरीर होवेतो शनिचंद्र जल-राशीमे भेकत्र समझना.

२१ बोलतेवसंत संकारताहोवे व चारवार खांदसे गरदन घसताहोवे तो चंद्र शनि कुंभराशिमे एकत्र जानना.

२२ हमेशा सरदी सेनाकषदता होवे वा बहुधा बोलते समय नाकमे कुछ भटकगयाहोवे वैसा करेतो शनिचंद्र मकर राशिमे अथवा जल-राशि (कर्क वृश्चिक मीन) मे जानना.

२३ पेट बहुतबढादिखे किंवा पेटपर बहुतसेकेश होवेतो चौथेस्थान मे चंद्र अथवा गुरु इनदोनोमेसे एक का संभव जानना.

२४ अम्लपित्तका रोगहोये तो रविमंगल ये दोनो भेषराशी के होके लग्न चतुर्थ वा षष्ठ स्थानमे जानना.

२५ अपस्मार (मृगी) होवेतो चंद्रमा शनिसे युक्तहै और सामने मंगलहै किंवा चंद्रमा मंगलसे युक्तहै और सामने शनिचेठाहै वा छठे स्थानमे चंद्र और चारमे स्थानमे मंगल गया है ऐसा जानना.

२६ वस्त्रा भरणसे शरीरको सजानेवाला, न्यारे न्यारे रंगके अनेक प्रकार के पोशाक पहननेवाला, और शोकीन, ऐठवान, भत्तरकाशोकीन, ऐश करनेवाला होवेतो लग्नमे शुक्रहोनेका संभव जानना.

२७ दूंद (तोद) वाला शरीर, गोरा, सत्वगुणी, श्रेष्ठबुद्धिका, कष्ट मकृति, विनम्रक कामकरनेवाला, स्मरणशक्तिभरपूर, अथांतशनकरने वाला, भव्य, विलकुलनिर्व्यशनी, गंभीर, सभ्य कीर्तीमान्, विद्वान् सफेदकरडेपहननेवाला, दांत व नेत्र स्वच्छ, विद्याव्यासंगी, प्रौ विचारका होवेनो लग्नमे गुरु जानना.

२८ भंडबुद्धी का विकार होवेनो वृश्चिक राशिके शनिके भंगल देखता है किंवा वृश्चिक राशिमे गण्डेडवे चंद्रको शनि और मंग देखते होंगे ऐसा जानना.

२९ जाली फूल पत्ते कतरना बलगदार [मरोडदार सुन्दर] भस्म लिखना नाम्मनसे भस्म लिखना झाड़ंग बगेरा कोईभी तरहकी हस्त फांशद्वयका काम करताहोवे तो कन्याराशिमे शुक्र अथवा चंद्रमाका संभय जानना.

३० बकील घेरीस्टर सोलीसीटर वा जन होवेतो मिथुन कन्या, किंवा मकर कुंभ, किंवा धन धीन, इनलग्नमे जन्म जानना.

अथवा इन लग्नमे जन्मनहीहोवेतो गुप्त गुरु व शनि तों भरद्वय वर राक्षस राशिमे समझना—तथा शनि और गुरु ये दोनों ग्रह वसती कुंहुलीमे मुख्यतासे तौन स्थितीमे अवश्य होवेगे.

१ शनि गुरु एकराशिमे बहुत नभीक नतीक भंगमेहोवे.

२ शनि गुरु परस्पर एकसे दूसरा सातमे स्थानमे होंगे.

३ धेही ग्रह परस्पर नवन पैवमहोवे और मेष मूल मिथुन वर कुंभ किंवा सिंह राशिके होके १।७।२।८।५।११।३।९ स्थान मेगवे है ऐसा जानना.

३१ इतनियर तथा एल. सी. पगिशा पास कियाहुया भोदर तिया होवेनो ठमके मिथुन मूल या कुंभ राशीका भंगल और गुरु १।७।५।९।१।११ मे स्थानमे है, रवि और शुक्र एक राशी मे नभीक नतीक भंगके है, और लग्न अथवा चंद्र परराशिके है ऐसा जानना. ।

३२ शिशक वा धेया करनेवाला होवेनो लग्न अथवा चंद्र से नवन स्थानमे गुरु समझना.

३३ जेम्पट द. मोहरी करने वाले गाढ़े गाढ़े गाढ़े किंवा रेखा (इस्तेवटर) होवेनो मेष लग्न किंवा मेषका चंद्रदे ऐसा समझना ३४ मंगल संदरा हुआ सोला बनेहा का विशेष आईकर होवेनो मंग

राशीमें गुरु भयवा चंद्रहै ऐसाजानो

३५ राजकीयसंकट आयेहोवे तो रवि भयवा चंद्र इनका भे
किंवा हर्शल का केंद्रयोगहै भयवा रवि वा चंद्र शनि भयवा
युतहै ऐसाजानो

३६ सर्जन डाक्टर होवेतो वृश्चिक राशीमें चंद्र मंगल भयवा
भयवा वृश्चिक राशी लग्नमें वा दशमेहै ऐसाजानो ।

३७ निष्पुत्रिक होवेतो शनि व गुरु एकराशीपर है ऐसाजानो

३८ संतती मूलमें होतीही नहीहोवे भयवा बहुत कम होति
पंचम भावके आरंभमें सिंह कुंभ भयवा मेष राशीहै ऐसाजानो

३९ संतती जल्दी जल्दी होतीहोवेतो पंचममें कर्क मकर वृ
मीनराशिहै ऐसा समझो

४० कन्या प्रजा अधिक होतीहोवेतो लग्न चंद्र पंचम स्थान
ये कर्क मकर वृश्चिक वा मीन राशीमेंहै ऐसाजानो

४१ लड़के अधिक मरते होये तो गुरु व मंगल ये एक रा
बहुत नजीक नजीक भंशके भयवा मंगल की पूर्ण दृष्टि योग
है ऐसा जानना ।

४२ गर्भपात होते होवे बालक जन्म के बाद अल्प काल में
होवे स्त्री के प्रसूती समय में बालक भट्ठाहोवे किंवा वा
काट के निकाल नेका प्रसंग आताहोवेतो पंचमस्थानमें वा प
स्थानमें राहु मंगल व हर्शल ये ग्रहहै ऐसाजानना. परंतु कर्क
मेष, राशी का राहु होवेतो संतान जल्दी देताहै और हानीभी न

४३ सर्व लड़केहि होतेहोवेतो पंचममें पुरुष राशि है और
भी पुरुष राशी में है अथवा पांचमें व एकादशस्थानमें पुरु
ऐसाजानना.

४४ संतती एकवस्तु होने बाद फेर बहुत वर्ष पीछे बालक
पंचममें तथा एकादशमें शनिहै ऐसाजानना.

४५ पीठपर बहुत भाई बहन होवेतो तीसरे स्थानमें कर्क,
वृश्चिक, मीन, ये राशी है ऐसाजानो.

४६ पीठपरके भाई बहन जीवते नहीहोवेतो तीसरे स्थानमें
मेष सिंह धन वा वृश्चिक राशिका, होनेका संभवहै.

४३ ज्येष्ठ व पीठपरका (छोटा) भाई व बहन मृतहोये भयवा टन के गर्भगत हुयेहोयेतो तीसरे स्थानमे रवि वा मंगल हे ऐसा जानना.

४८ भाइयोंमे एकपता नहीहोये किंवा भाइयोका कोईभी तरह का मुल नहीहोयेतो तीसरे भयवा ९ नवमे स्थानमे मंगल हे ऐसा जानना

४९ फानसे कम सुनताहोये तो मिथुन तुल वा कुंभ राशीका शनि तीसरे ग्यारमे भयवा नवमे स्थानमे जानना.

५० फान फुटाहोयेतो शनि मंगल व रविये ग्रह तीसरे ग्यारवे किंवा नवमे स्थानमे एकत्र भयवा, उलट पुलट ये एक एक ग्रह एक एक स्थानमे होने का संभव जानना ।

५१ जन्म होनेके पश्चात् ७ सात वर्षकेभीतर किंचित पहले कोईभी समयओ कुटुंबमे एक भयवा अधिक भकस्मात् मृत्यु हुवे होयेतो दूसरे स्थानमे हर्शल हे ऐसा जानना ।

५२ हर्शल का स्वाभाविक धर्म ऐसाहै कि वह जन्म कालमे जिस स्थानमे होवे उस स्थानपर जिस व्यक्तिका विचारकिया जाताहै उसी व्यक्तिका भकस्मात् मृत्यु होताहै ।

५३ मा बापका मृत्यु एकसाथ एकही समयमे होवेतो चतुर्थ स्थान में शनि चंद्र योग होवे और चौथे भयवा दशमे स्थानमे हर्शल होना चाहिये-इससंबंधके औरभी योगहै वे इसप्रथमे क्रमसे भगेभावगेही

५४ जिनके भगंदर सर्वांगमे जखम किंवाग्रग, गर्मी व दूसरे भयकर जननेंद्रियके विकार होवेतो उनके छठेस्थानमे वृश्चिक राशीमे शनि किंवा मंगल होवेगा ।

५५ लग्नकायंमे जो भांगगडपडीहोवे किंवा भकस्मात् लग्न निधय हुये हुवे बिसरजावे किंवा अन्य विघ्न आयहोवे तो सप्तममे हर्शल होनेका संभवहै

५६ जिनको दिगंत कीर्ति प्राप्तहोतीहै उनके नवम स्थानमे गुरु चंद्र योग होताहै ।

५७ जो मनुष्य अपने पीछे अपना नाम कायम रखने चालेहोतेहै उनके नवमस्थानमे भयवा चंद्रसे नवमस्थानमे शनि, गुरु रवि व हर्शल इन बडेग्रहोंमेसे एकादा भी ग्रह, बलवान गये बिनारह जानही

५८ साधारणतः श्रीमंत मनुष्योंके ग्रह उदीत (उज्जमसेलग्नपर्यंत)

भागमे किंवा धनभाग (नवमेसे तीसरे स्थानके आरंभ पर्यंत) मे बहुत ग्रह स्थित होतेहैं ।

५९ द्रव्य कितनाही मिले तथापी हातमे टिकतानही बिनाकारण संच होजावे कर्नहोजावे चंगरा बाते संपत्ति संबंधमे बनतीहोवे तो लग्न के तथा चंद्रके दूसरे स्थानमे मंगल होनेका संभवहै वाजबी रीतीसे खर्च करतेहुवेभि पैसा की तंगीरहे और कर्ना करनापटता होवेतो लग्नसे अथवा चंद्रसे चारवे स्थानमे मंगल होनेका संभवहै ।

६० छुटुब घड़ाहोवे किंवा बहुत मनुष्यो का उपजीवन स्वतःके आधारपरहोवे तो दूसरेस्थानमे गुरु होने का संभव होताहै

६१ छुटुब मे कलह होडारहताहोवे तो दूसरेस्थानमे रवि होनेकासंभवहै

६२ यहीलाजित संपत्ति के संबंधका झगडा पैदाहोवेतो दूसरेस्थानमे मकर राशिका रविहोनेका संभवहै.

६३ याहन (सवारी) तथा चतुर्दका व बर्गचित्रंगरा कृषी का शोख होवेतो चतुर्थस्थानमे गुरु शुक्र अथवा बुध होनेका संभवमानना

६४ नाक मुख दांत पेढीवे चंगरा मेसे कोईभी अवयवसे रुधिर जोनेका विकार होवतो मेघराशिके २६ अंशके भागे का लग्न होताहै ।

६५ स्त्री अति सुंदर व गोरी होवेतो सप्तममे अथवा लग्नमे शुक्र-होपु अथवा गुरुहोवे स्वर्चित चंद्रभीहोता है ।

६६ स्त्री सासुरगणकी दुबले पतलपाथकी और बढी संतप्तक्रूरस्वभाव की होवेतो सप्तममे अथवा दुसरे स्थानमे मंगल होताहै ।

६७ घालयच्चे मुख्यरूप होवेतो पांचमे अथवा एकादश स्थानमे शुक्र होनेका संभवहै ।

६८ बच्चे रोगी रहते होवे तो पांचमे स्थानमे शनि अथवा मंगल होनेका संभवमानना ।

६९ क्या बार्गनवाला तथा व्याक्यान दाना शास्त्री किंवा वैष्णवकरणी होवेतो मिथुन राशिका लग्न अथवा चंद्र होनाहै ।

७० श्रीउठके चली गई होवे किंवा किसीभीकारणसे स्त्रीसे बेबनाय होवेतो सप्तम स्थानमे हशेल जानना ।

७१ यदिकोई मनुष्य किसीके मोद (दनक) गयाहोवेतो बसकी कुदली मे नीचे लिखहुये योगमेसे एकभाद योग निघय होवेगा ।

- (१) कर्क किंवा सिंह राशीमें पापग्रह.
- (२) चंद्र किंवा रवि ये पापग्रहोंसे युक्त भयवा दृष्ट.
- (३) चतुर्थ भयवा दशम में पापग्रह.
- (४) मेष सिंह धन किंवा मकर इन राशियोंमेंसे कोईभी राशी चतुर्थ भयवा दशम स्थानमें.
- (५) चंद्र के चतुर्थ स्थानमें पापग्रह.
- (६) रविके दशमें भयवा नवमें पापग्रह.
- (७) चंद्र भयवा रवि ये शत्रुक्षेत्री शत्रुग्रहसे युक्त.

७२ जोड़ले (दोबच्चे साथहोवे) बच्चे बहुधा एकलग्न और एक राशीमें जन्मपाते है उनके लग्नमें राहु होताहै और वह राहु का मीन मिथुन भयवा धन राशी में होताहै मीन और मिथुन ये राशि राशि चक्रमे युग्म (जोड़ली) राशीहै इसकारण जोड़ले बालकों कुंडली में इनराशीमें लग्न, चंद्र, राहु, किंवा शुक्र, भयवा ल स्वामी, होतेहैं ऐसा देखनेमें आताहै कन्या और धन ये राशी भ क्रमसे । मीन और मिथुन राशी की सातमी राशी है इसकारण व रोक लग्न चंद्र राहु आदि इन राशियोंमें भी देखनेमें आतेहै !

७३ ललाई लिये हुवे गौर कांती, मुखपर व छातीपर लाली, ने पाणीदार, चित्र विचित्र पोषाख धारण करने का हौस निर्मला तेजस्विता, छुट, स्ट्राकिंग घट्याल, छत्री, लकड़ी ये वापरने काहो होवे तो शुक्र और मंगल का योग होने का संभव होता है ।

७४ चंदरा ऊंचाकम, चोढाजादा, हास्यमुख, टाप टीपते नर गाला वक्त्रवर्णविशेष स्वच्छ वस्त्र पहिनेने का व शरीर स्व स्वर्ण का और विद्या व वासंगका हौस होवे तो लग्न में युध है व जानना ।

७५ शरीर दुबला पतला कफ प्रकृती, गौरा व पाणीदार अनिर्गल घोलने वस्त्र जिसके मुहमेंमें थूक उड़ता होवे या लाल पड़नी ई दांतम्वत्त पोषाख मलिन नेत्रमंकेद, प्रगामी, भलंकार व सुगंधीपद धारण करनेवाला ये लक्षण होवेंतो लग्नमें चंद्र होनेका संभवहै ।

७६ निर्दयशनी होवेंतो लग्नमें युध मुक्त शुक्र भयवा चंद्र इनमें भी एक ग्रह समझना ।

७७ जगन्मेल लोग भगवे गिनेजातेहो जो राजा, संस्थानिक, जादगिरदार, इनामदार, किंवा बड़ी तनख्वाह के सरकारी मोठे नोकर, (व. आफिसर) बहुतलोकोंपर अधिकार रखनेवाला, तथा बहुतलोग जिससे मानदेवे और अपने ऊपर मुख्यामाने तथा जोलोग स्वासगीर्ध चलानेवाले होवे उनको भी जगन्मेल राजा अपना प्रजाके पाससे मान मिले, प्रजाकेलोकों के तरफ से यही अपना खरा अग्रगण्य है ऐसी समझ राजा सरीखा मान जिसको मिलताहो, उत्तम व्याख्यान दात उत्तम पुराणिक, बड़ा शास्त्री, उत्तम हरीदास, बगेरा मानपानेवाले लो तथा जिनके हाथनीचे विशेष लोक काम करतेहो. जो प्रधान हो कोईभी मुख्य पदपर रहनेवाले होते है, उनकी कुंडली मे सिंह अथवा कर्क ये राजाराशि अवश्य चलवावू हुये बिना रहनी नहीं । और जिसका अविकार और मान बड़ा होवे उसो माफिक इन राशिमें रा. चंद्र गुरु बुध किंवा शुक्र ये सर्व ग्रह किंवा इनमेंसे एकभी कोई ग्रह युक्त हुये बिना रहतानही.

- (१) लग्न सिंह होवे इस राशि मे रवि, चंद्र, गुरु, बुध किंवा शुक्र मेंसे कोई एक ग्रह वा सर्वग्रह युक्त होवे और दशमे इनमें कोई ग्रह होवेतो मुख्यत्व प्राप्त करनेका कारण होनाहै.
- (२) मंगल सिंह राशि का होवे वा दशमे सिंह राशिका जावेतो उ. मनुष्य का मुख्यत्व शीघ्र मिले और उसका मान अधिक और तनख्वाह जल्दी बढ़नीजातीहै
- (३) सिंहराशि मे राहु शनि ये दो ग्रह मात्र अच्छेनहींहै ये ग्रह । वे तो मनुष्य जिस खाते मे होवे उस खाते मे मुख्य की जरूरतकी जरूरी मिलने वाली नहीं और तरक्की (प्रशुशन, पग बढ़ना) भी जरूरी होता नहीं
- (४) सिंहराशि १।३।४।५।९।१० स्थान मे स्वाभाविक चलवान है इ. स्थानोंमेंसे कोईभी स्थानमे ये राशि होवे और इसमें गुरु, मंगल, रवि, चंद्र बुध, वा शुक्र होवे तो अनुक्रम उत्तोर पहिले से अथवा दूसरा निचल योगहोनाहै
- (५) सिंहराशि मे कोई भी ग्रहनही होवे तोभी केवल सिंहराशि । उपरोक्त स्थानमे होवेतो मुख्यपद देतीहै उपरोक्त बडेमनुष्य

कि कुंडली में सिंहराशि कोई भी उपरोक्त स्थिती में नानही होवेतो फिर फल ज्योतिष का महत्वही क्या है ।

(३) जिस प्रमाणे सिंहराशि का वर्गन कियाहु उसीप्रमाणे कर्क राशि नाभि महत्व है फल इसराशीमें कोईभी पात्राग्रह का योगनही होना चाहिये शुक्र, बुध, चंद्र, गुरु, ये ग्रह इसराशीमें उतरी तर बलवान होते है

(७) कुंडालि में ये दोन [४१५] राशि उनम स्थितीमें होवेतो अति उत्तम योग होताहै

एक राशि बलवान दूसरी निग्रह होवेतो उत्तम योग

एकराशि बलवान दूसरी बलहीन होवेतो मध्यम योग

परंतु कर्क राशि बलवान और सिंह निर्बल होवेतो निर्बल योग

(८) लग्न बलवान होवे और इन दोनराशी का पूर्वोक्त योग कुंडलीमें कहींभी होवे तो इनके फलका अनुभव स्थान बलके योग्यतानुसार मिलेगा ।

लग्नबलवान नही होवे और ये राशी कुंडलीमें कहींभी बलवान होवेतो जो हल के पगार की मुख्यपणे की जगह होवे वह जगह मिलतीहै परंतु जिनके लग्न बलवान नही होवे और ये राशी भी बलवान नही होवे तो उसका जीवनतो निरर्थक ही होताहै.

इनके शिष्याय जितने अनेक योग इस पुस्तकमें लिखे है उन सब योगोंका इसी प्रमाणे मनुष्य के शरीर लक्षण सुख दुःखादि जीवन कृमके योग मिलाके अनुभव करने का सतन अभ्यास करते रहने से कुंडली देखनेकी जिसमानकी अवलोकन व विचार शक्ति ज्यों ज्यों अधिक बढेगा त्यों त्यों भुद्गतफल कहनेका और सहजमें मनुष्य की कुंडली के ग्रहोंकी परिक्षा करनेकी योग्यता उतनेही मानसे बढतीजावेगी । इतिशम्

इति प्रथम विवेक टीका समाप्तः

अथ धनविवेक.

धनेंगेरो खेलाभये धनेशांशेशे शुभे नामतोधनी ॥ १ ॥

चंद्राच्छुभै रुपचयगैः सद्योधनी ॥ २ ॥

स्वार्थपौ युतौ केंद्र कोणगौ सद्योधनी ॥ ३ ॥

खेशांशेशापेशौ युतो सद्योधनी ॥ ४ ॥

सिंहासने धनेश धनी ॥ ५ ॥

धनेशात् धनांगपेशौ केंद्रगोधनी ॥ ६ ॥

चतुर्षु स्वर्क्षगेषुधनी ॥ ७ ॥

बल्यर्थेशः स्वायांकगो धनी ॥ ८ ॥

चंद्रार योगे धनी ॥ ९ ॥

अवधन भायका विचारकहतेहै

टीका—लग्नेश धन २ स्थानमे, लाभ ११ पति दशमस्थानमे धनस्थान केस्वामि का नवमांशका स्वामि शुभ ग्रहोवे तो नाम मात्र से धनवान् होताहै अर्थात्पास बुझनहि होते हुवेभी धनस्थान समझा जावेगा. ॥ १ ॥

चंद्रमासे ३६।१०।११ स्थानमे शुभग्रह स्थितहोवेतो शीघ्रधनवान् होताहै ॥ २ ॥

दशम स्थानका और धनस्थान का स्वामि एक राशिमे युतहोके १।४।७।१०।५।९ मे स्थानमे स्थित होवेतो शीघ्र धनवान् होताहै ॥ ३ ॥

दशमस्थान के स्वामि का नवमांश का स्वामि और लाभ ११ स्थान का स्वामि एकत्र युतहोवे तो शीघ्र धनवान् होता है ॥ ४ ॥

धन २ स्थानका स्वामि सिंहासनांश मे होवेतो धनवान् होताहै ॥ ५ ॥

धनस्थान का स्वामि जाहाबैठाहोवे उससे दूसरे स्थानका स्वामि और लग्नका स्वामि येदोनो १।४।७।१० मे स्थानमे जावे तो धनवान् होताहै ६ चारग्रह स्वराशि मे गये होवेतो धनवान् होताहै ॥ ७ ॥

यलवान धन २ स्थानका म्यामि १०।११९ मे स्थानमे जावेतां
धनवान होता है ॥ ८ ॥

भद्र और मंगलका योग होवेतां धनवान होता है ॥ ९ ॥

स्वल्प धन योग

केंद्र कोणेंधशे ऋषपट्यंशे स्वल्पधनं ॥ १० ॥

लाभेशांशेऋषपट्यंशेगुरुजीवान्यतरयुतदृष्टे

स्वल्पधनी ॥ ११ ॥

टीका-इसरे स्थानका म्यामि ऋष पट्यंश मेहोवे और १।४।७।१०।१।९
मे स्थानमे स्थितहोवे तो स्वल्पधनी होताहै ॥ १० ॥

लाभेश भिसग्रह के नवांशमे होवे बहम्रह ऋष पट्यंशमे होवे और
गुरुअथवा गुरु से युत दृष्टहोवे तो स्वल्पधनी होताहै ॥ ११ ॥

बहुधन योग वा महाधनी योग

सौम्यै लपचयगै बहुधनः ॥ १२ ॥

लग्नेशांशे शांशे बलाढ्ये वैशेषिकांशे शुभदृष्टे बहुधनः १

स्वशांशे वैशेषिकांशे सार्थेश लाभेश दृष्टयुते बहुधनी १।

केंद्र चतुष्टये शुभान्विते महाधनि ॥ १५ ॥

लग्नार्यापेशा वैशेषिकांशे महाधनी ॥ १६ ॥

कर्केज्ञे मंदेलाभे महाधनी ॥ १७ ॥

स्वर्क्षेसुते लाभेमंदे महाधनी ॥ १८ ॥

लाभेजीवे स्वर्क्षेके पंचमे महाधनी ॥ १९ ॥

स्वर्क्षेगुरौ पुत्रेचंद्रे महाधनी ॥ २० ॥

सिंहेकेज्ञे गुर्वारयुते माहाधनी ॥ २१ ॥

कर्केज्ञे चंद्रे गुर्वारयुते महाधनी ॥ २२ ॥

भौमिंगे स्वर्क्षे मन्दाच्छत्रयुते महाधनी ॥ २३ ॥

जीर्णगे स्वर्णे चंद्रायुते महाधनी ॥ २४ ॥

स्वर्णजेज्ञे मंदाच्छयुत दृष्टे महाधनी ॥ २५ ॥

स्वर्णशुक्ले चंद्रार्कयुत दृष्टे महाधनी ॥ २६ ॥

कन्यायांयमारराव्हच्छा महाधनी ॥ २७ ॥

मेषा-लग्नसे ३।६।१०।११ में स्थानमें सर्वशुभ ग्रहगये होवे तो बहुत कामालिक होता है ॥ १२ ॥

मृगेश जिसग्रह के नवांश में होवे उसग्रह के नवांशका स्वामि पलवान और वैशेषिकांशमें स्थित होकर शुभग्रहसे दृष्ट होवे तो बहुत धनवान होता है ॥ १३ ॥

शमिश के नवांश का स्वामि वैशेषिकांशमें स्थित होके दूसरे और १५ स्थानमें स्वामि योसे दृष्ट होवे वायुत होवे तो बहुत धनकामालिक होता है ॥ १४ ॥

मारीही केंद्र १।४।७।१० स्थानमें शुभग्रह युत होवे तो महाधनी होता है ॥ १५ ॥

लग्न १ धन २ औरलाभ ११ इनतीनों स्थानोंके स्वामि वैशेषिकांशमें होवे तो महाधनी होता है ॥ १६ ॥

कर्कशांशका बुधहोवे और शनिग्यारमें स्थान में होवे तो महाधनी होता है । इस सृगमें कर्कका बुधका स्थाननहीं कहा है इससे कोई स्थानमें कर्कका बुधपडने संयोग होसकता है परंतु मेरे विचारमें यदि कर्कका बुध पांचमें स्थानमें हो तो अधिक बलवान योग होना संभव है १७ स्वराशि १०।११ में स्थित शनि ५ में अथवा ११ में स्थानमें होवे तो महाधनी होता है ॥ १८ ॥

ग्यार में स्थानमें गुरु और स्वराशि का ५ सूर्य पांचमें होवे तो महाधनी होता है ॥ १९ ॥ यह योग मेष लग्नमें होना संभव है

स्वराशि (९।१२) का गुरु होवे और (५) पांचमें स्थानमें चंद्रमा होवे तो महाधनी ॥ २० ॥

इस योगमें भी गुरु का स्थान नहीं कहा है परंतु यदि गुरु लग्नमें होवे तो शनि सप्तमें ये योग अधिक बलवान होना संभव है कारण लग्नमें

१२ का गरु होनेसे ५ मे कर्क का चंद्र हो सकता है इससे दोनो स्वसे का नवम पंचम योग होता है और इन दोनो केन्द्र त्रिको धिपोका दृष्टी संवध होता है सो मीन लग्न मे यदयोग अधिक बलवा जानना चाहिये ।

सिंह राशि का सूर्य लग्नमे गुरु मंगलसे युत होवे तो महा धनी होता है २१
कर्क राशि का चंद्रमा लग्नमे गुरु मंगल से युत होवे तो महा धनी होता है ॥ २२ ॥

स्वराशि १।८ का मंगल लग्नमे होवे और शनि, शुक्र, बुध, इनतीनों से युत होवे तो महा धनी होता है ॥ २३ ॥

स्वराशि १।१२ का गुरु लग्नमे होवे और चंद्र मंगल से संयुत होवे तो महा धनी होता है ॥ २४ ॥

स्वराशि (३।६) का बुध लग्नमे शनि शुक्रसे युत होवे या दृष्ट होवे तो महा धनी होता है ॥ २५ ॥

स्वराशि (२।७) का शुक्र लग्नमे होवे और चंद्र सूर्य से युत दृष्ट होवे तो महा धनी होता है ॥ २६ ॥

कन्या राशिमें शनि, मंगल राहु और, शुक्र, ये चारो ग्रह स्थित होवे तो महा धनवान होता है ॥ २७ ॥

सहस्रानिष्के शयोग ।

लग्नपांशेशे धनपांशेशे च सौम्ये गुरुदृष्टे सहस्रानिष्के शः २८

लग्नपर्ये लाभेशे कर्क गुरुदृष्टे सहस्रानिष्के शः ॥ २९ ॥

अंगेशांशेशे गोपुरे कर्केशे दृष्टे सहस्रानिष्के शः ॥ ३० ॥

टीका— लग्नेश कन्यांशका स्वामी और धनेश केनवांशका स्वामी शुभ दृष्ट होय और इनको गुरु देखता होवे तो एक हजार निष्क का म्यामा होता है ॥ २८ ॥

निष्क = अमाफि (मोहर) को कहते है अमर मे लिखा है “ दीनारेऽपि निष्कोष्ठी ” कोई २२० ग निष्क का अर्थ रुपया भी करते है परंतु शास्त्र दृष्ट्या और अनुभवसे निष्क का अर्थ अमाफि होना मुक्ति युन है इसका ग ३ मंशमे जहां निष्क शब्द आवे वहां अमाफि जानना ।

लग्नेश धनस्थानमेहोवे लाभेश ११दशमास्थितहोवे और गुरुसेष्ट होवेतो एकहजार असर्फी का मालिक होताहै ॥ २९ ॥

लग्न के स्वामी का नवांश का स्वामि गोपुरांशमे होवे और उसको दशमेस्थानका स्वामी देखता होवेतो एक हजार असर्फीयोका स्वामि होताहै ॥ ३० ॥

द्विसहस्र निष्केशयोग

कर्मेशस्य नवांश सप्तशिशौ बलाढ्यौ जीवाच्छदष्टौ

द्विसहस्र निष्केशः ३१

धनायेशौ सौम्यपट्यंशे बलान्वितौ द्विसहस्रनिष्केशः ३२

टीका-दशमस्थान के स्वामि का नवांशका स्वामी और सप्तमांशका स्वामी धेदोनोबलवानहोवे, गुरुशुक्र इनको देखते होवेतो दोहजार असर्फीयोका स्वामिहोताहै ॥ ३१ ॥

धनेशऔर लाभेशपेदानेशुभपट्यंशमेहोवे और बलवानहोवेतो दो हजार असर्फीयोका मालिकहोताहै ॥ ३२ ॥

धनभावेश जिसग्रहकेद्रेष्काणमेहोवे वहग्रह धनेशजिसग्रहकेनवांशमे होवे उससेयुतहोवे और वहसर्वोत्तमबलवानहोवेतो आठहजार मुद्रा (मोहर) कास्वामी होताहै ॥

अयुत निष्केश योग ।

लग्नेशस्यन्यंशेश युक्तसप्तमांशेशो वैशेषिकांशे अयुतनिष्केशः ॥ ३३ ॥

टीका-लग्नेश जिसग्रहकेद्रेष्काणमेहोवेवह लग्नेशके सप्तमांशके स्वामि होयत होवे औरवैशेषिकांशमे होवेतो दसहजार असर्फीयो का मालिकहोता है ॥ ३३ ॥

अयुताधिकनिष्केशयोग ।

शुक्रेस्वांत्ये जीवेथैवैशेषिकांशेद्वेशे अयुताधिकनिष्केशः ३४

गुरुवेगौधने वैशेषिकांशे केंद्र कोणेवायुताधिकनि० ॥ ३५ ॥

टीका- चारहवें भयवा दूसरे स्थानमें शुक्र, और दूसरे स्थानमें बृहस्पतिहोवे और लग्नेश वैशेषिकांशमें होवेतो दसह नारसे अधिक द्रव्यका स्वामी होताहै ॥ ३५ ॥

गुरु और लग्ना स्वामिये द नं० वैशेषिकांशमें स्थित होकर धनभाज मेनाये भयवा १।४।७। १०।९।५ में स्थाने स्थितहोवेतो दसह नारसे अधिक द्रव्यका स्वामी होताहै ॥ ३५ ॥

लक्षाधीशयोग ।

कर्भेशस्य ज्येशेशस्य सप्तशिश ऐरावतांशे लक्षाधीशः ३६

टीका-दशमेश जिसग्रहकेद्रेष्काणमें होवे उसके सप्तमांश का स्वामि ऐरावतांशमें होवेतो लक्षाधीश होताहै ॥ ३६ ॥

त्रिलक्षेशयोग

सप्तभेकेन्द्रचतुष्टयेधनपेपारावतेतिहासनेवालक्षद्वयेशः ३७

टीका-चारों केन्द्र १।४।७।१० स्थानमें शुभग्रह स्थित होवे और धनरा पारावतांशमें भयवा सिंहासनंशमें होवेतो दो लक्षद्वयका स्वामि होताहै ॥ ३७ ॥

त्रिलक्षाधिपयोग

लग्नापेशौ वैशेषिकांशगौ सौम्यपदशंगौच त्रिलक्षा

धिपः ॥ ३८ ॥

धनायधर्मेशावलिनः केंद्रगात्रिलक्षाधिपः ॥ ३९ ॥

टीका-लग्नेश और लाभेश ये दोनों वैशेषिकांशमें होवे और सौम्यपदशंग में स्थितहोवे तो तीन लक्ष का स्वामि होताहै ॥ ३८ ॥

धन २ लाभ ११ और नवम ९ स्थान के स्वामि बलवान होवे और ये तीनों १।४।७। १० स्थानमें स्थितहोवे तो तीन लक्ष का मालिक होताहै ॥ ३९ ॥

कोटीशयोग ।

लग्नांशेश भाग्येशौ परमोच्चांशगौ लाभेशेवैशेषिकांशगः

कोटीशः ॥ ४० ॥

टीका- लग्नके नवांशका स्वामि और भाग्येश ये दोनों परम द्वांश मेजावे और लाभेश वैशेषिकांशमे स्थित होवे तो कोटीश (एक करोड़ का स्वामी) होता है ॥ ४० ॥

वास्त्ये बहु धन लाभयोग ।

सांकार्धशौ केंद्रगौ लग्नेशस्यांशेशस्येश्वरेण दृष्टौ बाल्ये
बहुधनलाभः ॥ ४१ ॥

लग्नार्थायगैः शुभैर्धलादधैर्धनेशस्यांशेन दृष्टैर्बाल्ये बहुधन
लाभः ॥ ४२ ॥

टीका- नवमेश और धनेशका योग १।४।७।१० मे स्थानमे से कोई भी स्थानमे होवे और उनको लग्नेशके नवांशका स्वामि जिसराशिमे होवे उसराशिका स्वामी देखता होवे तो बालपणकी अवस्थामे बहुत धन लाभ होता है ॥ ४१ ॥

लग्न १ धन २ और ग्यारमे भाग्यमे सर्वशुभग्रह बलवान् होके स्थित होवे और उनको धनेश के नवांशका स्वामी देखता होवे तो बालपणकी अवस्थामे बहुत धनका लाभ होता है ॥ ४२ ॥

निध्याप्तियोग

लाभेशेङ्गे लग्नेशेर्धे धनेशलाभे निध्याप्तिः ॥ ४३ ॥

लग्नेशेशुभैर्धे निध्याप्तिः ॥ ४४ ॥

कोशेशे रंघे निध्याप्तिः ॥ ४५ ॥

टीका- लाभेश लग्नमे, लग्नेश धनस्थानमे, धनेश लाभस्थानमे, वेतो गढे हुवे धनका लाभ होता है ॥ ४३ ॥

लग्नका स्वामी शुभग्रह धन २ स्थानमे स्थित होवे तो गढे हुए जाने की प्राप्ती होती है ॥ ४४ ॥

धन स्थानका स्वामि भाटमे स्थानमे स्थित होवे तो गढे हुवे धनका लाभ होता है ॥ ४५ ॥

स्वोपार्जित धनाप्तियोग.

सर्वग्रहाधिकत्रले लग्नपेकेंद्रे जीवयुते वैशेषिकाशित्थेशे स्वो-
पार्जितधनः ॥ ४६ ॥

अंगेशाशेशोचली धनपमित्रं सत्केन्द्रकोणगः स्वो० ४७
लग्नायपयुक्तोर्थेशः केंद्रकोणेशुभदृष्टः कालबलान्वितः
स्वोपार्जितधनः ॥ ४८ ॥

टीका—लग्नका स्वामि सर्वग्रहोंसे अधिक बलवान् होके १।४।७।१०
में स्थानमें गृहसे युक्तहोवे और धनेश वैशेषिकांशमें स्थितहोवेतो
अपने बलपराक्रमसे कमायाहुवा धन प्राप्तहोताहै ॥ ४६ ॥

लग्नेश के नवांश का स्वामि बलवान् होवे तथा धनभाव के स्वामिका
मित्र शुभग्रहहोवे और केंद्रकोण (१।४।७।१०।९।५) स्थानमेंस्थित होवे
तो अपने बलपराक्रमसे कमायाहुवा धन प्राप्तहोताहै ॥ ४७ ॥

धनभाव का स्वामि लग्नेश और लाभेश से युक्तहोके केंद्रकोण (१।४
७।१०।९।५) स्थानमें स्थितहोवे और शुभग्रह से दृष्टहोवे, कालबलसे
युक्तहोवे तो अपने बलपराक्रम से कमायाहुवा धनप्राप्त होताहै ॥ ४८ ॥

भ्रातृधनाप्तियोग.

बलान्वितौश्रोत्यगो धनाङ्गणौ पुंयहदृष्टयुक्तौ वैशेषिकां-
शग सोत्थेशतयुतदृष्टो भ्रातृधनाप्तिः ॥ ४९ ॥

टीका—धनेश और लग्नेश ये दोनों बलवान् होके तीसरे स्थानमें
स्थितहोवे पुरुषमहसे युक्त अथवा दृष्टहोवे और वैशेषिकांशमें स्थित,
नृनाथेश से युक्त वा दृष्टहोवे तो भाईका धनप्राप्तहोना ॥ ४९ ॥

मानृधनन्याभयोग.

तुर्यगयुतदृष्टे धनेशे जननी धनलाभः ॥ ५० ॥

टीका—धनेश चतुर्थस्थानके स्वामी से युक्त वा दृष्टहोवे तो माताका
धनलाभ ॥ ५० ॥

बंधुतः कृपेर्वाधनलाभयोगः.

धनेशसुरेशयुतदृष्टे वैशेषिकांशे बन्धुतः कृपेर्वाधनलाभः ५१

टीका-धनेश चौथे स्थानके स्वामिसे युक्त वा दृष्टहोवे और वैशेषिकांशमे होवेतो बंधु से वा कृषिकर्म से धनलाभ होता है ५१

पुत्रतन्धनाप्तियोगः.

सुतेशतत्कारकाभ्यां युतदृष्टे वार्थेशे बलिनि सुततो धनाप्तिः ५२

टीका-धनस्थान का स्वामि पंचम स्थानके स्वामि से और पंचमके कारकसे युत वा दृष्टहोवे वा धनेश बलवावहोवे तो पुत्रसे धनप्राप्ति होती है ॥ ५२ ॥

सुपुत्रार्जित धनाप्तियोगः.

वैशेषिकांशे द्वेशे बलाढ्ये सुपुत्रार्जित धनाप्तिः ॥ ५३ ॥

टीका-लग्नेश वैशेषिकांशमे होवे और बलवानहोवे तो सुपुत्रार्जित धनकी प्राप्ति होती है ॥ ५३ ॥

शत्रुतापनाप्तियोगः.

पट्टेशतत्कारकयुतदृष्टे र्थेशे बलिनि शत्रुतो धनाप्तिः ५४

टीका-पट्टेश से तथा उसके कारकसे धनेश युत वा दृष्टहोवे और बलवावहोवे तो शत्रुसे धन प्राप्ति होती है ॥ ५४ ॥

भार्यातो धनाप्तियोगः.

जायेश तत्कारकयुतदृष्टे र्थेशे बलिनि भार्यातो धनाप्तिः ५५

टीका-बलवान् धनेश सप्तम भावके स्वामि और सप्तम भावके कारकसे युत वा दृष्टहोवेतो स्त्री से (श्री संबंध से) धनाप्ति होती है ५५

पितासे धनाप्तियोगः.

श्वेशतत्कारकयुतदृष्टे र्थेशे बलिनि पितृतो धनाप्तिः ॥ ५६ ॥

टीका-बलवान् धनभावका स्वामि दशमेश और दशमभावके कारकसे युत वा दृष्टहोवेतो पितासे धनकी प्राप्ति होती है ॥ ५६ ॥

तुर्यैर्क पितृधनाप्तिः ॥ ५७ ॥

टीका-चतुर्थ स्थानमे मृगं स्थितहोवेतो पिताके धनकी प्राप्ति होती है ॥ ५७ ॥

धनाप्तियोग.

कोशेशेषलवतियस्यकारकेण यद्भावेशेनवा युतेदृष्टे तद्वारा
धनातिः ॥ ५८ ॥

टीका—धनस्थानका स्वामी बलवान् होकर जिस भावके कारक से
अथवा जिस भावके स्वामी से युत या दृष्टहोवे उसभावसे जिस २ पितृ
मातृ भ्रात्रा दिव्यनिकां विचार कियाजाता है उस २ व्यक्तिकेद्वाराधन
की प्राप्ति होवेगा ऐसाजानना ॥ ५८ ॥

धनलाभ प्राप्तिदिशा.

लाभेश दिशायाधनातिः ॥ ५९ ॥

लाभ गत राशि दिशातो धनातिः ॥ ६० ॥

टीका—लाभ ११ स्थानका स्वामी जिस दिशाका मालिक होवे उसी
दिशासे धन प्राप्ति होतीहै दिशाके स्वामी बृहज्जातकमे “प्रागाद्या रावि
शुक्र लोहित तमः शौरिंदु वित्मूरयः ”इस प्रकार कोईहै अर्थात् लाभ
श रावि होवेतो पूर्व दिशासे शुक्रहोवे तो अग्निकोणसे मंगलहोवेतो
दक्षिणदिशासे राहु होवेतो नैऋतकोणसे शनिहोवे तो पश्चिम से चंद्र
होवेतो वायुकोणसे बुध होतो उत्तरसे गुरुहोतो ईशान कोणसे धनलाभ
होताहै ॥ ५९ ॥

एवं लाभस्थान मे जो राशी स्थितहोवे उसराशी की जो दिशा
होवेउसी दिशासे धनकी प्राप्ति कहना अर्थात् १। २ राशिहोतो
पूर्वसे ३ अग्नि कोणसे ४। ५ होतो दक्षिणसे ६ होतो नैऋतसे ७। ८ होतो
पश्चिमसे ९ होतो वायुकोणसे १०। ११ होतो उत्तर दिशासे १२ मीन
राशि होवे लाभ स्थानमेतो ईशान कोणसे धनलाभहोवेगा कित्नाका
यहमिमतहैकि १। ५। ९ राशिहोतो पूर्वसे २। ६। १० दक्षिणसे, ३। ७। ११
पश्चिमसे, ४। ८। १२ उत्तर से प्राप्ति होतीहै ॥ ६० ॥

धनलाभयोग

लाभेशे केंद्र कोणे लाभेषापे धनलाभः ॥ ६१ ॥

लाभपेधने धनपेलाभे धनलाभः ॥ ६२ ॥

धनायपौ केंद्रगौ धनलाभः ॥ ६३ ॥

लाभपेपारावताद्यंशे धनलाभः ॥ ६४ ॥

लाभेशंशे केंद्रकोणे शुभसंबंधे धनलाभः ॥ ६५ ॥

शुभांतरे लाभेशंशे धनलाभः ॥ ६६ ॥

लाभपस्यांशे शुभसंबंधे धनलाभः ॥ ६७ ॥

ज्ञाच्छा वर्धे धनलाभः ॥ ६८ ॥

रंध्रेसौम्या धनलाभः ॥ ६९ ॥

मेपे चंद्रे घटेगंदे नके शुके चोपेकें पैतृकं धनं नलभते ७०

टीका—लाभेश ११४।७।१०।१।५ मे स्थान मे स्थितहोवे और ग्यारहवें स्थानमे पापग्रह बैठेहोवे तो धनलाभ होताहै ॥ ६१ ॥

लाभेश धनभावमे और धनेश लाभ भावमे स्थितहोवेतो धनलाभ होताहै ॥ ६२ ॥

दूसरे २ और ग्यारहवें ११स्थानके स्वामी ११४।७।१०।१।५ मे स्थानमे स्थित होवे तो धनलाभ होताहै ॥ ६३ ॥

लाभ (११) भाव का स्वामी पारा वतादि भंशमे होवेतो धनलाभ होताहै ॥ ६४ ॥

लाभ ११ भावका स्वामी कारकांश कुंडली मे १-४-७-१०-९-५ मे स्थानमे स्थित होवे शुभग्रह से संबंध कर ताहोतो धनलाभ होताहै ६५

लाभ ११ भावेश कार कांश लग्नमे शुभ ग्रहो के मध्यमे होवेतो धनलाभ होताहै ॥ ६६ ॥

लाभेशका नयांशका स्वामि शुभग्रह से संबंध करताहोतो धनलाभ होताहै ॥ ६७ ॥

गुप और शुक्र धन भाव मेगये होवेतो धनलाभ होताहै ॥ ६८ ॥

भाठमे भावमे शुभ ग्रह गयेहोवेतो धनलाभ होताहै ॥ ६९ ॥

मेप राशि मेचंद्रमा, कुंभ राशिमे शनि मकर राशिमे शुक्र, धनराशि मे सूर्यकपस स्थितहोवेतो पिताका धन [संपत्ति] नहिमिलेगा ॥७०॥

परांगना भासक्तिमे द्रव्यनाश योग

अंशांकेराहौपरांगनासक्तेर्द्रव्यनाशः ॥ ७१ ॥

टीका—कार कांश लग्नसे ९ नवमे स्थानमें ग्राह होवेतो पत्नी की भासन्ती के वारण से धनका नाश होनाहै ॥ ७१ ॥

ज्ञाति विवाद से धनहानी योग

व्ययेजे ज्ञातिविवादाद्धनहानीः ॥ ७२ ॥

टीका—वारह १२ वे स्थानमें बुध स्थित होवेतो ज्ञानि संबंधी विवाद से धनहानि होताहै ७२

मिथ्याकोशांतकृतयोग

सकूरैत्येशे मिथ्याकोशांतकृत् ॥ ७३ ॥

टीका—व्यय १२ स्थान का स्वामि पापग्रह से युत होवेतो फल काममें धन को खर्च करके संपत्तिकानाश करनेवाला होताहै ॥ ७३ ॥

राजदंडाद्धनक्षययोग

लग्नेशेल्पवलेसूर्ययुतेथंशंत्येनीचेवा पापदृष्टे राजदंडाद्धनक्षयः ॥ ७४ ॥

लाभेशेत्थ्येन्त्येशेथे त्रिकेथंशे वा नीचगे राज० । ७५ ॥

पट्रेथंशे सपापे नीचगे राजकारकयुते वा राज० ॥ ७६ ॥

धनशेत्थ्ये व्ययेशेथं सपापेशे रिगे राजदं० ॥ ७७ ॥

लाभेस्त्रेशे गेशयुते दुःपट्रंशे राजदं० ॥ ७८ ॥

टीका—लग्नेश अल्प बलीहोवे धनस्थानका स्वामी वारवें १२ स्थानमें सूर्य से युत होवे और नीचराशि का होवे अथवा पापग्रहसे दृष्ट होवेतो राजदंड (जरबाना देनेसे) धनका नाश होता है ॥ ७४ ॥

लाभेश वारवें १२ स्थानमें और वारवें स्थानका स्वामि २ धनभावमें होवे १ अथवा धनेश ६।८।१२ में स्थानमें नीचराशि का होवेतो राजदंड ॥ धननाश होताहै ७५ (इसमंत्रमें २ योगकहेहैं)

धनभावका स्वामि नीचराशि में स्थित हो के छठे स्थानमें पापग्रह के साथ युक्त होवे अथवा राजकारक ग्रह से युत होवे तो राजदंड से धनक्षय होताहै ॥ ७६ ॥

धनस्थान का स्वामी १२ चारहवें स्थानमें, चारमें स्थानका स्वामी धन स्थान में होवे और पापग्रह से युक्त लग्नका स्वामी दृष्टे स्थानमें होवे तो राजदंडसे धनक्षय होता है ७७

दशम भावका स्वामी ग्यारह ११ स्थानमें लग्नेश से युक्त होवे और वह दुष्ट [भद्र] पञ्चम में होवे तो राजदंड से धनक्षय होता है ७८

चौराग्न भूष कृत धन नाशयोग.

धनायणौ कुजदृष्टौ पापांशगौ हीनबलौ सपाणौ चौराग्नि
भूषकृतो धननाशः ॥ ७९ ॥

धनेशांशे शांशेशे सपापे त्रिके लग्नेशदृष्टे चौराग्नी भूष कृतो
धननाशः ॥ ८० ॥

टीका—धन २ और लाभ ११ भावके स्वामी ये दोनों ही भूमिसे दृष्ट होवे पापग्रह के नवांश में होवे, निर्बली होंगे, और पापग्रह से युक्त होवे तो चौरासे भूमिसे वा राजा से धन का नाश होता है ७९

धनभावका स्वामी जिस ग्रह के नवांशमें होवे उसके नवांशका स्वामी पापग्रह से युक्त होकर ६।८।१२ स्थानमें स्थित होवे और उसकी लग्नका स्वामी दक्षता हों, वे चौरासे [चौरा होनेसे] भूमिसे (लाय लगनेसे) राजा से (राजा कि नाराजांसे) धनका नाश होता है ८०

लोकपवाद मूलसे धनक्षययोग.

सपापे खेरोरिगे क्रूरपण्यगे धनायण्युते लोकपवाद मूल
क धनक्षयः ॥ ८१ ॥

टीका—दशम भाव का स्वामी छठे स्थानमें पापग्रह से युक्त होवे क्रूर पण्यंशमें होवे धन २ और लाभ ११ भावके स्वामी योंसे युक्त होवे तो लोकपवाद के कारण धननाश होता है. ८१

निर्धनयोग

धनेशांशेशे त्रिके सपापे क्रूरपण्यगे निर्धनः ॥ ८२ ॥

सपापा धनधनेशांशेशा निर्धनः ॥ ८३ ॥

व्यपेशांशेशे धनेश युतदृष्टे निर्धनः ॥ ८४ ॥

नीचेके केंद्रे सपापे निर्धनः ॥ ८५ ॥

कोशेशांशे शांशे कालदंडांशे निर्धनः ॥ ८६ ॥

लाभे लाभपे वा पाप संवंधे निर्धनः ॥ ८७ ॥

टीका—धनेश का नवांशका स्वामि जिसराशिमें स्थित होवे उसी स्वामी ६।८।१२ में स्थानमें पापग्रह से युत होंगे और करपष्टचैशमें हो तो निर्धन होता है ८२

धन २ भाव धनभाव का स्वामि और लाभ ११ भावपति येतीनो पापग्रह से युत होवे तो निर्धन होता है ८३

चारवें स्थानके स्वामीका नवांशका स्वामि धनेश से युत होवे व दृष्ट होंगे तो निर्धन होता है ८४

नीचराशि का मूल केंद्र (१।४।७।१०) में पापग्रह से युत होंगे तो निर्धन होता है ८५

धनेश के नवांशका स्वामि का नवांशका स्वामि कालदंडांशमें होंगे तो निर्धन होता है ८६

लाभेश लाभ ११ भावमें पापग्रह संसर्ग्य करताहोंगे तो निर्धन होता है ८७

पाप मूलक धननाश योग

व्यये व्ययेगे वा पापसंघर्षे पापमूलक धनक्षयः ॥ ८८ ॥

टीका—व्यय १२ स्थानका स्वामि चारवें स्थानमें होंगे अथवा पापग्रह से संसर्ग्य करताहोंगे तो पापकर्ममें धननाश होता है ८८

धर्म मूलक धनक्षय योग

अर्पेत्पेदोवा शुभगंधं धर्ममूलक धनक्षयः ॥ ८९ ॥

शुक्रग्यां वाचंद्रज्ञौ व्यये धर्ममूलक धननाशः ॥ ९० ॥

टीका—वाचं स्वामि चारवें स्थान में स्थित होंगे अथवा शुभग्रह ने संसर्ग्य करता होंगे तो धर्म कर्ममें धनक्षय होता है ८९

शुक्र शुक्र अथवा चंद्र शुक्र व्यय १२ स्थान में स्थित होंगे तो धर्म कर्म में धन का नाश होता है ९०

भ्रातृकृत धननाशयोग

अंत्येशेल्पबले भौमसंबंधे भ्रातृकृतो धननाशः ॥ ९१ ॥

टीका—व्ययस्थानका स्वामि निर्बलीहोवे और मंगल से संबंध करता वेतो भाई धनकानाश करताहै ॥ ९१ ॥

मातृकृतधननाशयोग

सुखेश संबंधेत्येशो मातृकृतो धननाशः ॥ ९२ ॥

टीका—चारमे स्थानका स्वामि निर्बलीहोवे और सुखेश ४ से बंध करताहोवेतो माता धननाशकरतीहै ॥ ९२ ॥

पुत्रकृतधननाशयोग

व्ययपेल्पबले पुत्रेश संबंधे पुत्रकृतो धननाशः ॥ ९३ ॥

टीका—व्ययेश निर्बलीहोवे और पुत्रेश (पंचमेश) से संबंध करताहोवेतो पुत्र धनको नाशकरताहै ॥ ९३ ॥

शत्रुकृत धन नाश योग.

व्यपेशे बलहानि गुलिकादिपुते वा पण्डेशसंबंधे शत्रु
तो धननाशः ॥ ९४ ॥

धनेशेरिगे शत्रुकृतो धननाशः ॥ ९५ ॥

टीका—व्यय १२ स्थानका स्वामि निर्बली होवे और गुलिक शनि मंगल राहु आदिपापग्रहसे युतहोवे अथवा पण्डेश से सम्बंध करता होवे तो शत्रु के सबब से धनका नाश होताहै ॥ ९४ ॥

टीका—धनस्थानका स्वामि छठेस्थानमें जावेतो शत्रु धनका नाश करताहै ॥ ९५ ॥

जाया कृत धननाशयोग

कुरारोन्त्येरोल्पबले जायेशसम्बंधे जायाकृतो धननाशः ॥ ९६ ॥

टीका—चारमे स्थानका स्वामि कुर ग्रह [सू० मं० श०] केनवांश में स्थितहोकर निर्बली होवे और सप्तमेश से सम्बंध करता होवे तो स्त्री धनकानाश करती है ॥ ९६ ॥

पितृकृतधननाशयोग

व्ययेशे खेश संबंधे पितृकृतो धननाशः ॥ ९७ ॥

टीका—व्ययेश भल्पबलीहोवे और दशमेशसे संबंधकरताहोवे तो पिता धनकानाशकरताहै ॥ ९७ ॥

धननाशयोग

धनेजे चंद्रदृष्टे धनहानीः ॥ ९८ ॥

क्षीणेदावर्थे दृष्टे संचित धननाशः ॥ ९९ ॥

राहर्कजावर्थे शुक्लेदुयुतराशीरायुते कुमार्गव्ययः १००

कोरेकुजेथनाशोग्निचौरादितः ॥ १०१ ॥

त्रिकोणेजीवे भोजने धननाशः ॥ १०२ ॥

कोणेश संबंधी योर्थगेहेग्रह सिके शयुतो धननाशकः १०३

टीका—धनभावमेवुध, चंद्रमासे दृष्टहोवेतो धनहानि होतीहै ॥ ९८ ॥

क्षीणचंद्रमा धनभावमे होवे और सस्कोयुधदेसता होवेतो संचित कियेहुवे धनका नाश होताहै ९९

धनभावमे राहु शनि शुक्र और चंद्रमा, जिसराशिके होवे उस के स्वामी से युत होवेतो कुमार्ग मे धनका खर्च अधिक होताहै १००

धनभाव मे मंगल होवेतो अग्नि भयवा चौर बगेरा से धनकानाश होताहै १०१

नवमे पांचमे भावमे गुरुहोवेतो भोजन के (बीमने निमाने के) काममे धनकानाश होताहै १०२

जोग्रह धनभावमे, नवमे पांचमे स्थानके स्वामी से सम्बंध करताहोवे और ६।८।१२ स्थानके स्वामी से युत होवे यहधननाश कारक जानना १०३

निर्धनयोग

लाभार्थात्येराहुः शयने निर्धनो भ्रमतेमहीम् ॥ १०४ ॥

लग्नेशेरंधरेंधरेशे मारकेशयुने निर्धनः ॥ १०५ ॥

पष्टेशेगे लग्नेशेषष्टे मारकेशयुते निर्धनः १०६

चंद्रार्कविंगेमारकेश युतदष्टे निर्धनः १०७

टीका-शपना वस्यान मे मयाहुवाराहु ग्यारवें दूसरे भयता बारमे जायमे जायेतो धनकेलिये भूमिपर भटकताफिरता रहनेपरभी निर्धन होताहै १०४

लग्नेश भाटमे और अष्टमेश लग्नमे दूसरे तथा सातमेस्यानके स्वासि युत होयेतो निर्धन होता है १०५

छठेस्यान का स्वामि लग्नमे और लग्नका स्वामी छठेस्यान मे दूसरे तथा सातमे स्यानके स्वामी से युत होयेतो निर्धन होताहै १०६

लग्नमे चंद्र और सूर्य ये दोनो दूसरे तथा सातमे स्यान के स्वामि से युत तथा दृष्टहोवे तो निर्धन होताहै ॥ १०७ ॥

दरिद्रियोग.

धनकारकात् धनेवेदेशरेषापे दरिद्री १०८

स्वकारकात् त्रिपष्टे शुभे दरिद्री १०९

स्वशुभा धनेषापा दरिद्री ११०

टीका-धनकारक (गुरु) से दूसरे, चौथे, तथा पांचवें, स्यानमे पापग्रह होयेतो दरिद्री होताहै ॥ १०८ ॥

धनकारक [गुरु] से तीसरे, छठे स्यानमे शुभग्रह होयेतो दरिद्री होताहै ॥ १०९ ॥

दूसरे भाषमे पापग्रह और दशमे शुभग्रह होयेतो दरिद्री होताहै ११०

महादरिद्रियोग.

धर्मशैत्यैत्येरोर्ये तृतीयगेषुषापेषु महादरिद्री १११

केंद्रगाभंश्रेज्यमंदागुंठिकारोसुतांत्याष्टमगोमहादरिद्री ११२

एकभर्यो पुण्यवंता वन्योन्यांशगौ सदादरिद्री ११३

पुण्यवंतोपष्टे शेषानीचर्क्षगा राजपुत्रोपि दरिद्री ११४

शेदारयमा नीचगा मृगेशुक्रैराजपुत्रोपि दरिद्री ११५

नीचैर्ककोणे रंध्रेभोमे राजपुत्रोपि दरिद्री ११६

टीका-नवमे स्थानका म्यामि चारमे, चारमे भावका स्वामी धनभागे, और तीसरे भागमे दोनीन पापग्रहनावे तो महादरिद्रीहोताहै १११

चंद्र गुरु और शनि १११७१० मे स्थानमे जावे और गुलिक व मंगल ये दोनो पांचवे चारवे तथा आठमे स्थानमे होंवेतो महादरिद्री होताहै ११२

सूर्य और चंद्रमा ये दोनो एक राशीमे होंवे और सूर्य, चंद्रके नवांश मे व चंद्रमा सूर्यके नवांशमे (कर्क राशीके नवांश मे सूर्य और सिंह राशी के नवांशमे चंद्रमा) होंवेतो सदादरिद्री होताहै ११३

सूर्य और चंद्रमा ये दोनो कुम्भराशीमे होंवे और शेष सर्व ग्रह नीच राशीमे गये होंवे तो राजाका पुत्र होंवेता भी दरिद्री होताहै ११४

बुध, चंद्र, मंगल, शनि ये चारो नीचराशीके होंवे और मकर राशी का शुक्र होंवे तो राजकापुत्रहोंवे तो भी दरिद्री होताहै ११५

नीचराशीका सूर्य नवमे तथा पांचवे होंवे और आठमे भावमे मंगल होंवेतो राजाकापुत्रभी दरिद्रीही होताहै ११६

सर्व संपत्तमान् योग.

अंगेशोगुरु ज्ञकवियुतः केन्द्रगः सर्वसम्पदन्वितः ११७

स्वोच्चेस्वमित्रेवा शुभमे शुभैर्दृष्टेक्षेत्रे संपत्तिमान् ११८

धनेशेज्यौ धनेकेंद्रे संपत्तिमान् ११९

देयलोकारिके सखलेक्षेत्रे सम्पत्तिमान् १२०

लग्नेशेबलवति शुभवर्गिकेन्द्रपयुते सम्पत्तिमान् १२१

लग्नेकं शुभैर्दृष्टे स्वक्षेत्रे सम्पत्तिमान् १२२

केन्द्रार्थकोणे लग्नेशेज्ययोगे सम्पत्तिमान् १२३

लाभशेस्येपुसौम्येषु सम्पत्तिमान् १२४

धनेशेक्षेत्रे तुर्याक्षेत्रे स्वभावावलोकितौ सम्पत्तिमान् १२५

टीका-लग्नका स्वामि गुरु, बुध शुक्र से युक्त होके १।४।७।१० मे स्थानमे स्थित होवेतो सर्वसम्पत्तिमान् होताहै ११७

लग्नेश्वर स्व, उच्च, तथा अपनि मित्र, राशीका भयवा शुभ ग्रहकी राशीका होवे और उसको शुभग्रह देखते होवेतो सम्पत्तिमान् होताहै ११८

धनभावका स्वामी और गुरु ये दोनो १।२।४।७।१० स्थानमे जावे तो सम्पत्तिमान् होताहै ११९

देवलोकांश मे सूर्यहोवे और लग्नेश्वर बलवान् होवे तो सम्पत्तिमान् होताहै १२०

लग्नेश्वरबलवान् होवे शुभग्रहोके वर्गमे जावे केन्द्रके स्वामि से युक्त होवे तो सम्पत्तिमान् होताहै १२१

लग्नमे सूर्य शुभग्रहोसे दृष्ट होवे और लग्नका स्वामी दशम भावमे होवेतो सम्पत्तिमान् होताहै १२२

लग्नेश्वर और गुरु इन दोनोका एकराशिमे योग १।४।७।१०।२।९।५ स्थानमे होवेतो सम्पत्तिमान् होताहै १२३

ग्यारमे और पांचवे स्थानमे सर्व शुभग्रह गये होवेतो सर्व सम्पत्तिमान् होताहै १२४

नवमस्थानका स्वामि लग्नमे होवे चतुर्थका स्वामि चतुर्थ को और नवमका स्वामि नवमभावको देखता होवेतो सम्पत्तिमान् होताहै १२५
बहुकुटुंबीयोग.

सप्तौम्येथेशेथे केन्द्रेवा कुटुम्बी १२६

धनेधनेशे वा शुभसम्बन्धे कुटुम्बी १२७

टीका-धनभावका स्वामि शुभग्रह से युक्त होके दूसरे भाव मे होवे अथवा केन्द्र १।४।७।१० स्थानमे जावेतो कुटुम्बवाला होताहै १२६

धनभावका स्वामि धनभावमे होवे अथवा धनेश शुभग्रहसे सम्बन्ध करता होवेतो बड़े कुटुम्बवाला होताहै १२७

विंशतिजन पालक योग.

धनेशे शुभैर्युते परावतांशे विंशतिजनपालकः १२८

टीका- धनभावका स्वामी शुभग्रहोसे युक्त होवे और परावतांशमे स्थित होवे तो बीस मनुष्यो को पालनेवाला होताहै १२८

(१२६)

(जातकतत्व)

पञ्चाशन्ननपालकयोग.

धनेशगोपुरांशे धनेशांशपेशुभे सिंहासनांशे पञ्चाशन्न
पालकः १२९

टीका-धनेश गोपुरांशमे होवे और धनभावके स्वामीका नवांशका
स्वामि शुभग्रहहोवे और वह सिंहासनांशमे गयाहोवेतो पचास मनुष्य
को पालने वाला होताहै १२९

त्रिशतजनपालकयोग.

धनेशसिंहासने वा पारावतांशे जीवयुतदृष्टे त्रिशत् जन
पालकः १३०

टीका-धनभावपति सिंहासनांशमे होवे अथवा पारावतांशमेहोवे और
गुरुसे युत किंवादृष्टहोवे तो तीसरो मनुष्यो को पालन करनेवाला
होताहै १३०

अनेकजनपालकयोग.

सिंहासनांशेजीवे गोपुरांशेशुके धनेशे ऐरावतांशे एकजन
पालकः १३१

टीका-सिंहासनांशमे गुरु, गोपुरांशमे शुक्र, और ऐरावतांशमे धनेश
होवेतो अनेक मनुष्योंका पालन करनेवाला होताहै १३१

अनादरयोग.

सपापेष्टमेशे पाऽदृष्टे पापांतरे पापक्षेत्रा रन्ध्रे यातथाभूते
पारभवान्वितोऽन्यथा तद्धानः १३२

टीका-अष्टमेश अथवा अष्टमस्थान पापग्रहसे युतहोवे, पापग्रहसे
दृष्टहोवे, पापग्रहके बीचमेहोवे या पापग्रहकी राशीमे गयाहोवे तो
अनादर पनेवाला होताहै (कहींभी आदरनहीं होवे) और शुभग्रहसे
युतदृष्ट शुभग्रहके बीचमे शुभग्रहकी राशीका अष्टमेश अथवा अष्टम
भावहोवेतो सर्वत्र आदरपानेवाला होताहै १३२

सम्पत्तियोग

वृषेकं दीनेचन्द्रे मेषेनन्दे कर्केभागे सम्पत्तियोगः १३३

भाग्येशे व्यये केन्द्रेपापे धनादिहीनः १३४

टीका—वृषभराशी का सूर्य, मीन का चंद्र, मेष का शनि, और कर्क का मंगल, होवेतो संपदारहित होताहै १३३

नवमे भावका स्वामी बारमे होवे और १४/७/१० स्थानमे पापग्रह गये होवेतो धनादि सम्पत्तीहीन होताहै १३४

परिवारक्षय योग.

लग्नान्त्यारस्ते सर्वे परिवारक्षयः १३५

इतिद्वितीय धनविवेकः

टीका— लग्नमे बारमे और सातमे स्थानमे सर्व ग्रह गयेहोवे तो परिवारकाक्षय होताहै (परिवारके सर्वलोकोंका नाश होजाताहै) १३५

विशेषप्रकारके धनयोग

- | | |
|----------------------------|----------------------------|
| (१) भाग्येश लाभेशयोग. | (१२) लाभेश धनेशयोग. |
| (२) भाग्येश दशमेशयोग. | (१३) लाभेश चतुर्थेशयोग. |
| (३) भाग्येश चतुर्थेशयोग. | (१४) लाभेश लग्नेशयोग. |
| (४) भाग्येश पंचमेशयोग. | (१५) लाभेश पंचमेशयोग. |
| (५) भाग्येश लग्नेशयोग. | (१६) लग्नेश धनेशयोग. |
| (६) भाग्येश धनेशयोग. | (१७) लग्नेश चतुर्थेशयोग. |
| (७) दशमेश लाभेशयोग. | (१८) लग्नेश पंचमेशयोग. |
| (८) दशमेश चतुर्थेशयोग. | (१९) धनेश चतुर्थेशयोग. |
| (९) दशमेश लग्नेशयोग. | (२०) धनेश पंचमेशयोग. |
| (१०) दशमेश पंचमेशयोग. | (२१) चतुर्थेश पंचमेशयोग. |
| (११) दशमेश धनेशयोग. | |

ये इत्थनीस प्रकारके और भी विशेष धनयोगहैं येसर्वयोग व्ययस्थान केसिंराय धनभागमेंहोवे अथवा चतुर्थपंचम स्थानमेंहोवे तोरूपेत्तम. फल देनेशालेजानना ।

७ सातमे स्थानमे धनयोगहोवेतो पूर्णफलभाटमेबारमे होवेतो भाषाफल ६ छठेहोवेतो चतुर्थांशफल दानासमदाना. जबदो ग्रहबहुतनजीक २ (बहुततो ५ भांशकेपरकसे) होवेतभियोगजानना.

दारिद्र्ययोग.

- | | |
|----------------------------|-----------------------------|
| [१] पट्टेश धनेशयोग. | [१२] व्ययेश सप्तमेशयोग. |
| [२] पट्टेश लग्नेशयोग. | [१३] पट्टेश भाग्येशयोग. |
| [३] पट्टेश चतुर्थेशयोग. | [१४] पट्टेश तृतीयेशयोग. |
| ✓ [४] व्ययेश धनेशयोग. | ✓ [१५] व्ययेश भाग्येशयोग. |
| [५] व्ययेश चतुर्थेशयोग. | [१६] व्ययेश तृतीयेशयोग. |
| [६] व्ययेश लग्नेशयोग. | [१७] पट्टेश लाभेशयोग. |
| ✓ [७] पट्टेश दशमेशयोग. | [१८] पट्टेश अष्टमेशयोग. |
| [८] व्ययेश दशमेशयोग. | [१९] व्ययेश लाभेशयोग. |
| [९] पट्टेश पंचमेशयोग. | [२०] व्ययेश अष्टमेशयोग. |
| [१०] पट्टेश सप्तमेशयोग. | [२१] पट्टेश व्ययेशयोग. |
| ✓ [११] व्ययेश पंचमेशयोग. | |

ये इकवीस प्रकारके विशेष दारिद्र्ययोगहैं. येयोग धनस्थानमें वा दारिद्र्यभागमें होवेतो पूर्णबलवात्तजानना व्ययस्थानमें होवेतो पादोन (पौन ४५) और दूसरेस्थानमें होवेतो अर्धबलजानना.

उपरोक्त समस्त धन और दारिद्र्य योगों का विचार करने से जितने जो जो योग आवे वे क्रमसे (धनयोग) धनयोगके तरफ और दारिद्र्ययोग दारिद्र्ययोगके तरफ जुदे २ अंक २ बाजु क्रमसे लिखना और इनके बलका बलका विचार करके देखना यदि धनयोगकी अपेक्षा दारिद्र्य योग अधिक बलवात् होगये होवेतो धनयोग होतेहुवेभी दारिद्र्य योगकी प्रवृत्ति ही रहेगी। और यदि दारिद्र्य योगकी अपेक्षा धनयोग अधिक संख्या का और बलवात् होवेतो धन योगकी प्रबलता होनेके कारण दारिद्र्य योग होतेहुवेभी धनयोग की ही प्रबलता होगे.

इसप्रकार उभय योगोंमेंसे जो योग बलवत्तर होवे वही फल लाभके तारतम्यानुसार जानना.

इनमेंभी विशेष सूक्ष्म विचार पूर्वक देखने से धन और दारिद्र्य ग के बलावल के तारतम्य भेदसे ही श्रीमंतका दारिद्र्य और दारिद्र्य श्रीमंत तथा श्रीमंतके महा श्रीमंत और दारिद्र्य के महा दारिद्र्य है उनका विचार इसप्रकार जानना.

१. किन्ना श्रीमंत स्थिति मेंसे कोईभी स्थितिमें जन्म क्योंहो

परंतु इतना निश्चित है कि गरीब स्थिती में जन्म होके जो मनुष्य श्री मंत होजाते हैं उनके धनयोग श्रीमंती की स्थिति में जन्म पावेवाले मनुष्यके धन योगसे भी बलवत्तर होते हैं । ऐसे दोमनुष्यों कि कुंदली देखनेसे जान पड़ेगा कि पहिला श्रीमंत व दूसरा चाहे कितनाही श्री मंत हो तथापि सामान्य दिखेगा । इसी प्रमाणे जन्मभर सामान्य स्थिति भोगने वाले कि अपेक्षा किंवा जन्म दरिद्री मनुष्यकी अपेक्षा जो मनुष्य श्रीमंत के यहां जन्म लेके भागे बिल्कुल दरिद्री होनेवाले हैं उन के यह दारिद्र्य योग करने वाली स्थितिमें अधिक बल पत्तर होंगे ।

देशकाल व जातिपरत्व से धनयोग के फल मिलते हैं हिंदुस्थान में जन्म पाये हुये मनुष्य के जो उत्तम धनयोग होंगे वही योग जो आज के समय में अमेरिका जर्मन अथवा इंग्लैंड देशोंमें किसी मनुष्य के होवेतो वह कोटधाधीशहोवे बिना रहेगानही और हिंदुस्थान में उसी उत्तम धनयोग वाला बहुत हुवा तो लक्षाधिश होजाताहै ऐसहि यह हिंदुस्थान अभी यदि किसी भिल्ल बंगरा नीच जातीवाले के आजाये तो वह बहुत हुवातो बेफिक्री से पेटभर खाने कमाने वाला होसकता है इससे अधिक उसकी श्रीमंतीकी दोढ़ जानेवाली नही सारांश, धन योग का फल परिस्थिती के प्रमाणसे प्राप्तहोवेगा ।

ज्योतिष शास्त्र से हि इस बातका निर्णय होना चाहिये यह बात बराबरहै परंतु इतनी सूक्ष्मता समझने कि मनुष्य में सामर्थ्य नही इस लिये अपनेका देश, काल, जाति, परिस्थिती, के तरफ लक्ष देके विचार करने के शिवाय दूसरा साधन नही.

कुंदलीमें भाग्यभवन को भादिले धनभावपर्यंत ६ स्थान "धनभाग" और सहजभावसे अष्टनभावपर्यंत ६ स्थान "दारिद्र्यभाग" के जानना

१ धन योग और दारिद्र्ययोग ये दोनोंयोग यदि धनभागमेंहोंवे और धनयोग उत्तम प्रकल बनेहोवेतो मनुष्य गरीब के घरमें जन्मपाकर भी गरीबी की स्थिती से निकलके श्रीमंतों (सन्नतों) पायेबिनारहेगानही परंतु यदि दारिद्र्ययोग की शक्ति अधिकहोवेतो वहकितनाहि उलट मुलट प्रयत्नकरेगा तथापि मूलकीस्थितिमें विशेष बदलाता होनेवाला नही, और दारिद्र्ययोग यदिबिल्कुलही नहीहोवेतो वहमनुष्य भामर गांत श्रीमंतीभोगेगा और रंककाराव हुयेबिना रहेगानही, धनयोगही मूलमेंनहीहोवेतो किसी तरेसे कष्टसे पेट भरता रहेगा.

२ धनयोग और दारिद्र्ययोग यदि ये दोनूनों दारिद्र्यभागमें हुये हों ऐसे समय यदि धनयोग की शक्ति अधिक बलवान् होवेतो मनुष्य गरीब स्थितिमें होतेहुये भी उन्नतिपानेमें अग्रसर होवेगा परंतु उसका स्वरूप (मर्यादा) सामान्य रहेगा और समयभी अधिक लगेगा ऐसा मनुष्य भ० १ के योग के मनुष्यों की अपेक्षा कम योग्यताका होवेगा. और यदि दारिद्र्ययोगमूलमेंही नहीं होवेतो मनुष्य मूलमें गरीब होवेतो प्रयत्न से धनवान् होवेगा और धनवान् स्थितिका होवेता किंचित् धन बढ़ावेगा अथवा जो स्थितिहै वही कायम रहेगा। धन योग बिल्कुल नहीं होवेतो आमरण दारिद्र्यभोगकरेगा अथवा श्रीमान के कुलमें जन्म लिया होवेगा तो दिनादिन कंगाल होता जावेगा।

धनयोगकी अपेक्षा दारिद्र्ययोगकी शक्ति अधिक होवेतो किसी समय ठीकस्थिति किसीसमय दुःखी स्थिति भोगना पड़ेगा.

३ धनभागमें धनयोग व दारिद्र्यभागमें दारिद्र्य योग सम समान शक्ति के होवेतो मनुष्य कितनेक दिन गरीब स्थितिको व कितनेक दिन श्रीमंती स्थिति को भोगेगा। यदि धनयोग की शक्ति अधिक होवेतो गरीबीसे निकलके उन्नति पावेगा और धनवान्स्थितिका होवे तो किंचित् धनबढ़ानेवाला होवेगा। दारिद्र्ययोग की शक्ति अधिक होवे तो उसके नसीबमें या जन्म दारिद्र्यभोगना पड़ेगा.

यदि ये योग धनवान् के होवेतो "भरमभारी और टिपारा साली" ऐसी स्थिति उसके आयुष्यमें जावेगा; अर्थात् पईसा नहीं रहेगा और केवल भरम बनारहेगा।

४ दारिद्र्यभागमें धनयोग व धनभागमें दारिद्र्ययोग होवेतो मनुष्य सधनघरमें जन्म पावे तो भागेदरिद्रीहोवेगा व जन्ममें दरिद्री होवेतो बहुत समय बाद किंचित् दारिद्र्यसे पिंडसुटेगा.

ये योग जिसप्रकार जन्म लग्नपर से देखे वैसेही चंद्र पुंडली पर भी देखना और तारतम्यसे सांपत्तिक स्थितिका विचार करना।

इसप्रकार धनयोगका विचार करके निर्णय करने से जो अनुमान ठेकायाजावेगा वः सहसा चुकनेवाला नहीं यः विचार उन्नतिप्राप्ति अपेक्षा जिसका जो स्वयं करेगा तो विनचूक अनुदान बंधतारकेगा।

धनयोगों के शिवायमे धनभावमे भाईकी स्त्री का मामा, भाईकी काकीसासु, भाईको गुराफरी वा धनहानि स्वर्चं, मामाकि भाईकीस्त्री, माताकोलाभ, मित्रक पुत्रकीस्त्री, मित्रकोलाभ, पुत्रकीसासु, पुत्रके मित्रकी स्त्री, पुत्रकोराज्यसुख. शत्रुके भाईकीस्त्री, स्त्री की मृत्यु, दादा की मृत्यु, दादीको धन सुख, सुसराकोलाभ, आदिवातोका भि विचार करना.

इतिद्वितीय धनविवेकीका समाप्तः

अथ सहजविवेकः ।

बहुभ्रातृमगिनीयोग.

लग्नलग्नेशान्यतरत द्वाषणैर्धेन्द्वारेज्यै बहुभ्रातरः केतौ-
तुषहु भगिन्यः ॥ १ ॥

सोत्यंशे स्वर्णसौषद्रे भ्रातृमान् ॥ २ ॥

सोत्यपे सशुभेकेन्द्रे भ्रातृमुखम् ॥ ३ ॥

सोत्येषुभैर्पुते वा दृष्टे सोत्येषलिनिभ्रातृलाभः ॥ ४ ॥

भ्रातृपे कारके वा बलिनी शुभमम्बन्धे भ्रातृलाभः ॥ ५ ॥

गोपुरे सोत्येशे कारके निहासने शुभर्षे भ्रातृलाभः ॥ ६ ॥

परात्रो भ्रातृो केन्द्रे शुभयुग्दृष्टे भ्रातृलाभः ॥ ७ ॥

सोत्यो सोम्यभांशे भ्रातृलाभः ॥ ८ ॥

सोत्येसोत्यपे पलाङ्गे भ्रातृलाभः ॥ ९ ॥

सुदंतादिषु सोत्यो शुभयुग्दृष्टे भ्रातृलाभः ॥ १० ॥

पेशेपिकांशे सौत्यपे शुभग्रहदृष्ट भातृलाभः ॥ १३ ॥

पुंभां गोत्यकारकेशी पुंग्रहदृष्टा भातृलाभे-

यैपरित्येगिनीलाभो मिश्रे उभयलाभः ॥ १४ ॥

टीका-लग्न तथा लग्नेश से तीसरे और ग्यावे स्थानमें युव ग्रह मंगल गुरु जाये तो बहुत भाई का मुख होता है और केतु गया होवे तो बहुत भगिनी का मुख होता है. १

तीसरे भावका स्वामि स्वराशिका होवे शुभ ग्रह देखते होवे तो भाई का मुखवाला होता है २

तीसरे भावका स्वामि शुभग्रह से युतहोवे और केंद्र (१४१७१०) स्थानमें गयाहोवे तो भाई का मुख होता है ३

तीसरा भाव शुभग्रहों से युतहोवे अथवा शुभग्रहों से दृष्टहोवे तीसरे भावका स्वामि बलवान् होवेतो भाई का लाभ होता है ४

तीसरे भावका स्वामि भयवा भ्रतृकारक बलवान् होवे शुभग्रह से सम्बंध करताहोवे तो भाईकी प्राप्ति होती है ५

तीसरे भावका स्वामि गोपुरांशमें होवे भ्रातृकारक सिंहासनांशमें होवे और शुभग्रह की राशी में गयाहोवे तो भाई की प्राप्ति होती है ६

भ्रातृस्थान का स्वामि पारावतांशमें होवे और केंद्र (१४१७१०) स्थान में स्थितहोकर शुभग्रह से युत दृष्टहोवेतो भाई का लाभ होता है ७

तीसरे भावका स्वामि शुभराशी और शुभराशी के नवांशमें होवेतो भाई का लाभ होता है. ८

तीसरे स्थानमें तीसरे भावका स्वामी गयाहोवे बलवान् होवेतो भाई का लाभ होता है ९

तीसरे भावका स्वामि मृदंशादिक से युतहोवे और शुभग्रह से युत दृष्ट होवेतो भाई लाभ होता है. १०

तीसरे भावका स्वामि वैशेषिकांशमें होवे शुभग्रहसे युतदृष्ट होवेतो भाई का लाभ होता है ११

तीसरे भावका स्वामि और भ्रातृकारक ग्रह ये दोनों पुरुषराशी (१३१५१७१११) और पुरुषराशी के नवांशमें गये होवे इनको पुरुषग्रह (२. मं. गु.) देखते होवेतो भाईका लाभहोवेगा और इनसे विपरीत

होवे अर्थात् दोनोग्रह स्त्री राशी और स्त्री राशी के नवांशमे गये होवे और इनको स्त्री ग्रह (चं. शु. श.) देखते होवेतो भगिनी का लाभ होवेगा । और मिश्रग्रह देखते होवे मिश्रराशि नवांशमे दोनो ग्रहगये होवे तो दोनो का (भाई बहनका) लाभ होवेगा १२

भ्रातृ भगिनी संख्या विचार.

सोत्थराश्यंश वशाद्भावादि संख्या ॥ १३ ॥

सोत्थगग्रह स्यांशका द्वात्रादि संख्या ॥ १४ ॥

सोत्थेशकारयुत भांशवशाद्भावात्संख्या ॥ १५ ॥

सोत्थेशयुतभांशवशा चत्संख्या ॥ १६ ॥

स्त्री खेटैर्धर्मगै भगिन्यो नृखेटैर्धातरः ॥ १७ ॥

ज्ञेयौधने कन्यायांराहौ भ्रातृत्रयम् ॥ १८ ॥

टीका-तीसरे स्थानमे जितनी राशीहोवे वा जितने नवांश गये होवे उतनेहि भाई बहन की संख्या जानना १३

तीसरे भावमे गयेहुवे ग्रहके नवांश की संख्या के अनुसार अर्थात् जितने नवांशगये होवे उतनेहि भाई बहन की संख्या जानना १४

तीसरे भावका स्वामि और कारक ये दोनो जितनी संख्याके राशी पथके नवांशमे होवे उतनीही संख्या भाई बहनकी जानना १५

तीसरे भावका स्वामि जितनी राशी और नवांशमे गयाहोवे उसके रक्षातभाईबहन की संख्या जानना १६

नवमे भावमे जितने स्त्री ग्रह गयेहोवे उतनीही संख्या बहिन जानना और जितने पुरुषग्रह गयेहोवे उतनीही संख्या के भाई जानना यदिग्रह वक्रभयका उच्चरशी के होवेतो तीनगुनी संख्या जानना एवं स्वक्षेत्री होवेतो द्विगुण संख्या जानना ऐसेहि नीच शत्रुक्षेत्री होवेतो आधी संख्या जानना १७

सुथ गुरु धनभावमे गयेहोवे और कन्यारशीका राहु होवेतो तीन भाई जानना १८

भ्रातृहीनयोग.

विक्रमेशारौ त्रिकस्थौ भ्रातृहीनः ॥ १९ ॥

पट्टेसोत्थपारौ पापभगौ पापयुतौवा भ्रातरउत्पद्यनश्यंति २०

भ्रातृकारके नीचक्षीशे पापदृष्टे दुःपष्टचशे भ्रातृहानिः २१

सोत्थेपापयुत दृष्टे भ्रातृहानिः ॥ २२ ॥

भ्रात्रीशेषापांतरे भ्रातृहानिः ॥ २३ ॥

पपांतरेसोत्थे नीचस्वेटाश्विते वा शुभादृष्टे भ्रातृहानिः २४

सोत्थपांशेशे पष्टे नीचास्तारिगे भ्रातृहानिः ॥ २५ ॥

भ्रातृकारके पापान्तरे भ्रातृहानिः ॥ २६ ॥

भ्रातृपे सोत्थे क्रूरपष्टचशे पापदृष्टे भ्रातृहानिः ॥ २७ ॥

सहजेशांशेश्वरांशेशेपष्टे भ्रातृहानिः ॥ २८ ॥

सोत्थेशांशेश्वरांशेगे नीचास्तारिगेभ्रातृहानिः ॥ २९ ॥

सोत्थपे वा कारकेत्रिके पापेक्षितयुतेस्वोच्चेवा भ्रातृहानिः ३०

सोत्थगेऽपिर्षाख्ये भ्रातृहानिः ॥ ३१ ॥

सोत्थपेतत्कारके वा पापैर्युते वा भ्रातृहानिः ॥ ३२ ॥

सिंहेर्केद्वे भ्रातृहानिः ॥ ३३ ॥

धनगाःपापाःसहजेराहौ भ्रातृहानिः ॥ ३४ ॥

भोमात्सोत्थपापे भ्रातृमुखं ॥ ३५ ॥

टीका-तीसरे भागका म्यामि और मंगल ये दोनु ६।८।१२ स्थानमे गयेहोवोनो भ्रातृहीन होवे १९

तीसरे स्थानका म्यामि और मंगल ये दोनोग्रह सृष्टेभ्यानमे पाप-
ग्रहकी राशीकेहोवे भयवा पापग्रहसे युक्तहोवोनो भाई दरपन्नहोके नाश
होवे २०

भ्रातृकारकग्रह नीचराशी तथा नीचराशी के नवांशमे होवे, पापग्रह से दृष्टहोवे दृष्ट पष्टचंश मे होवे तो भ्रातृहानि होवे २१

तीसरा भाव पापग्रह से युक्त दृष्टहोवे तो भ्रातृहानि होवे २२

तीसरे भावका स्वामी पापग्रहोंके मध्यमे (बीचमे) होवेतो भ्रातृहानिहोवे २३

तीसरा भाव पापग्रहों के बीचमेहोवे नीचराशीमे गयेहुवे ग्रहसे युक्त-होवे अथवा शुभग्रहोंसे भद्रदृष्टहोवेतो भ्रातृहानि होवे २४

तीसरे भावके स्वामिका नवांशका स्वामी छठेस्थानमे नीच अस्त तथा शत्रुराशी मे गया होवे तो भ्रातृहानि होवे २५

भ्रातृकारक ग्रह पापग्रहों के बीचमे होवेतो भ्रातृहानिहोवे २६
तृतीयेश तृतीयभावमें पापग्रहोंसे दृष्टहोवे वा क्रूरपष्टचंशमेहोवे तो भाईयोका नाशहोवे २७

तृतीयेश के नवांशके स्वामीका नवांशका स्वामी छठेस्थान में गयाहोवे तो भ्रातृहानिहोवे २८

तृतीयेश के नवांशका स्वामी जिसराशी के नवांशमे होवे उसका स्वामी नीच अस्त तथा शत्रु ग्रह की राशिमे गयाहोवेतो भ्रातृ हानि होवे २९

तीसरे भावका स्वामी अथवा कारकग्रह त्रिकस्थान (६।८।१२) में पापग्रह सेयुक्त दृष्टहोवे अथवा अपनी शत्रुराशीमे स्थितहोकेमि ६।८।१२ स्थानमे पापग्रहसे युक्तदृष्टहोवेतो भ्रातृहानि होवे ३०

तीसरे भावमे पापग्रहोंका योग अधिक होवेतो वात्स्यावस्थामे भ्रातृ हानि होवे ३१

तीसरे भाव का स्वामी अथवा भ्रातृकारकग्रह पापग्रहों से युक्त होवेतो भ्रातृ हानिहोवे ३२

सिद्धराशी का सूर्य नवमे होवेतो भ्रातृहानिहोवे ३३

धनभावमे दो तीन पापग्रह गयेहोवे और तीसरे भावे राहु होवेतो भ्रातृ हानिहोवे ३४

मंगल से तीसरे स्थानमे पापग्रह गये होवे तो भाईका सुख नहीहोवे ३५

अनुजोत्पत्तियोग.

लग्नांत्यगौणौ अनुजोत्पत्तिः ॥ ३६ ॥

टीका-लग्न और चारमे भावमे पापग्रहगये होवे तो छोटे भाईका जन्म होवे ३६

अनुजहीनयोग.

सोत्थेमंदे भौमदृष्टे अनुजहीनः ॥ ३७ ॥

टीका—तीसरे भावमे शनि जावे उसको मंगल देखता होवेतो छोटा भाई नहीहोवे कदाचित् होवेभीतो नीवित नहीरहे ३७

आतारोगीयोग

सहजेऽज वर्गे भौमदृष्टे आतारोगी ॥ ३८ ॥

टीका—तीसरे भाव मे चंद्रमाका वर्ग अधिक होवे और उसको मंगल देखता होवे तो भाई रोगी रहे ३८

आतृतःस्नेहयोग

सोत्थांगेराभिन्ने आतृतस्नेहः शत्रूचेद्वरेम् ॥ ३९ ॥

टीका—तीसरे भावका स्वामी और लग्न का स्वामी येदोनों ग्रह परस्पर मित्र होवेतो भाई के साथ मित्रता रहेगा और येदोनों परस्पर शत्रुग्रहहोवे तो भाई केसाथ शत्रुता रहेगा ३९

राजप्रेष्ययोग.

अंशे रविशुक्रदृष्टे राजप्रेष्यः ॥ ४० ॥

अंशात्वे ज्ञदृष्टेयुते राजप्रेष्यः ॥ ४१ ॥

टीका—करकांश लग्नको रविशुक्र देखतेहोवेतो राजाकी नोकरी करने वालाहोताहै ४०

कारकांश लग्नसे दशम भाव बुधसेयुतदृष्ट होवेतो राजाकी नोकरी करने वाला होताहै ४१

विवरण—हलकारा, चपराशी, सिपाही, हथालदारको, आदिले नीचे दजेके मुत्सदीगिरी की नोकरी करनेवालोमेसे कोईभी काम कर ने वालोको प्रेष्यकहतेहै ।

भूतकयोग ।

सुर्यारभंदैः शुभदृष्टिहीनैः कर्मगैर्भूतकः ॥ ४२ ॥

मन्दांशे नीचभेशुके व्ययेचंद्राकौ भूतकः ॥ ४३ ॥

दशमगैः पापैः सौम्या दृष्टैर्भूतकः ॥ ४४ ॥

टीका—सूर्य, मंगल, शनि, येतीनों दशमे भावमें जावे और इनको शुभ ग्रहनही देखतेहोवे तो कोई भीतरहकी मजूरी करनेवाला होताहै ४२

नीचराशी का शुक्र शनिकि राशी के नवांशमें होवे और चंद्र सूर्य वारवेस्थानमें गयेहोवेतो कोईभीतरहकी मजूरी करनेवाला होताहै ४३

दशमे भावमें दोतीन पापग्रहजावे औरउनको कोई शुभग्रहनही देखताहोवे तो कोईभी तरहकी मजूरी करने वालाहोताहै ४४

दासान्वितयोग

पट्टेशोमाने भ्वेशोमन्द्युत केन्द्रे दासान्वितः ॥ ४५ ॥

राज्ये शुभदृष्ट्याधिक्ये दासान्वितः ॥ ४६ ॥

टीका—छठेस्थानका स्वामीदशमे भावमेंहोवे दशमेभावकास्वामि शनीसे युतहोवे केन्द्र (१४।७।१०)स्थानमें गयाहोवेतो नोकर चाकरोसे युतहोवे ४५

दशमे भावपर शुभग्रहो कीदृष्टि अधिकहोवती नोकर चाकरोसे युतहोवे ४६

बहुदासान्वितयोग.

कर्मेशांशो मंदे पट्टपसंबंधे बहुदासान्वितः ॥ ४७ ॥

नृपके शुभकर्मपट्टे बहुदासान्वितः ॥ ४८ ॥

टीका—दशमे भावके स्थामिके नवांशकास्वामिशनि छठे भाव स्वामिसे संबंध करताहोवेतो बहुतनोकरोसेयुतहोवे ४७

दशमे स्थानमें सूर्य होवे औरउसको दशमेस्थान का स्वामि शुभा देखताहोवेतो बहुत दासों (नोकरों) वालाहोताहै ४८

विक्रमीयोग.

सहजे शुभ दृष्ट्याधिक्ये वा पापयुते वा सहजपे बल
ढचे विक्रमी ॥ ४९ ॥

सहजपे केन्द्र कोणे विक्रमी ॥ ५० ॥

सोत्थांगेशयोगे विक्रमी ॥ ५१ ॥

टीका-तीसरे भावपर शुभग्रहोक्ति अधिक दृष्टि होवे. १ भयवा तिसरे भावमें पापग्रह युतहोवे २ भयवा तिसरे भावका स्वामी वरवान होवेतो पराक्रमी होताहै ॥ ४९ ॥

तिसरे भावका स्वामी केंद्रकोण (१४४° १०१° १५) स्थानमें जावे तो पराक्रमी होताहै ॥ ५० ॥

तीसरे भावका स्वामि और लग्नका स्वामि इन दोनों का योगहोवे (दोनों भेक राशिमि ५ भंश के अंतर से अधिक अंतर के नहींहोवे) तो पराक्रमी होताहै ॥ ५१ ॥

प्रसिद्ध कर्मा जीवी योग.

अंशे मंदे प्रसिद्ध कर्मा जीवी ॥ ५२ ॥

टीका-कार कांश लग्नमें शनि गयाहोवे तो प्रसिद्ध कर्म करके जीवन व्यतीत करने वालाहोवे ॥ ५२ ॥

काष्ट पापाणादि विक्रेता योग.

पष्टेशे सोत्थे काष्ट पापाणादि विक्रेता ॥ ५३ ॥

टीका-छठे स्थानका स्वामि तीसरे भावमें जावेतो लकड़ीवा लकड़ी का बनाहुवा सामान और पाषाण (फत्थर) वगेरा का सामान बेचनेवाला होताहै (स्टेशनरी सामान बेचनेवाला भी इसी योगमें हांताहै) ५३ भिक्षुकयोग.

मेपचंद्रे भौमदृष्टे भिक्षुकः ॥ ५४ ॥

चंद्रे शुभदृग्धीने दासोथवा भिक्षुकः ॥ ५५ ॥

सर्व ग्रहे नीच मूढांशगैः कर्मान्यगैः भिक्षुकः ॥ ५६ ॥

अंत्ये गुरौ केंद्रेशानी लग्नेज्जे भिक्षुकः ॥ ५७ ॥

टीका-मेपराशी मे चंद्रमाहोवे वस्को मंगल देखता होवेतो भिक्षुक भिक्षुमांग के पेटभरने वाला) होता है ५४ ॥

चंद्रमाको शुभग्रह नहीदेखते होवेतो दास भयवा भिक्षुक होताहै ५५ तत्रग्रह नीचराशि भयवा नीचराशिके नवांशके तथा अस्तके होवे र दशमे स्थानके बिना दूसरे कोई भी स्थानमें जावेतो भिक्षुक होता है ॥ ५६ ॥

बारमे भावमे गुरु, केंद्रमे शनि, लग्नमे चंद्रमा गयाहोवेतो (भिक्षु) भीक्षमांगकेपेट भरने वालाहोताहै ॥ ५० ॥

निन्दकर्म जीवी तथा नीच कर्माजीवीयोग.

चन्द्राद्धेनपुत्रेजीवे षमेशुभे वा पापेनिन्द्य कर्माजीवी ५८

एकस्मिन्ग्रहे मित्रभगेपराजीवी ॥ ५९ ॥

राज्येक्षेत्रो त्रिकोणार्थे मन्देपापैर्मृत्युगै नीचव्रत्याजीवी ६०

टीका—चंद्रमासे दूसरे अथवा पांचवेंस्थानमे गुरुहोव, और भाठमे स्थानमे शुभ अथवा पापग्रह गयाहोवेतो निन्द्यकर्मकरनेसे आजीविका होवे ॥ ५८ ॥

एकभीग्रह अपने मित्र ग्रह की राशिमे गयाहोवेतो पराजीवी अर्थात् दूसरेके आधारपर नीचाहचलाने वालाहोताहै ॥ ५९ ॥

लग्न का स्वामि दशमे स्थानमे और २।५।९ स्थानमे शनि और भाठमे स्थानमे पापग्रहगये होवेतो नीचवृत्तीके कर्मसे जीवननीचाह करने वालाहोवे ॥ ६० ॥

पित्रादिनःअर्थात्तियोग.

लग्नाद्वाचंद्रा दर्काद्येर्दशमगैः पितृ जननो शत्रुमित्रभ्रातृ

स्त्री भृत्ये ज्योर्ज्याप्तिः ॥ ६१ ॥

टीका— लग्नसे अथवा चंद्रमासे दशमे स्थानमेंसूर्य गयाहोवेतो पितासे, चंद्रमाहोवेतो मातासे, मंगलहोवेतो शत्रुसे, बुधहोवेतोमित्रसे, गुरुहोवेतोभ्रातासे, शुक्रहोवेतोस्त्रीसे, शानेहोवेतानाकाकाकरसे, धनकी प्राप्ति होतीहै ६१

सारावली में विशेषफल इसीप्रकार लिखाहै

चंद्रसे दशमे सूर्य होवेतो—सिद्धारंभ, धनसमृद्ध, उत्तमसत्त्व, नृपति जानअथवात्र पुष्टदेहिहोवे.

” ” भौमहोवेतो—साहसनिरत, प्रत्यंतनिवासी, विपयलुब्ध मूर निपादचरितहोवे.

” ” बुधहोवेतो—विद्वान्, धनवान्, बहुभुज, नृपति कपान्, भिरुग्न्त, प्राज्ञ, होवे.

चंद्रसे दशमे गुरुहोवेतो—सिद्धार्थ, धार्मिक, धनसमृद्ध, उत्तनचरित.
नरेंद्रसाचिव, प्रख्यातहोवे.

" " शुक्रहोवेतो—सुभग, ललितस्वर, वित्तवंत, सिद्धार्थ,
नृपपूजितहोवे.

" " शनिहोवेतो—रोगी, निःस्व, दुःखान्वित, प्रजाहीन, बर्ममे,
नित्योद्विग्नमनहोवे.
वृत्तिविचार.

लग्नेन्दुकेभ्यः स्वरास्यांशेश वशाद्वृत्तिवदेत् ॥ ६२ ॥

टीका—लग्न चंद्र और सूर्य इनतीनों में से जो अधिक बलवान् होवे उससे दशम स्थान के स्वामी का नवांश का स्वामी जो ग्रह होवे उसीके धर्मानुसार वृत्ति (धंधा) कहना अर्थात् वह जिन २ वर्णवस्तुषु दिशा समय आदिका कारक होवे उन्हीद्वन्द्वी वस्तुओं के व्यवसाय (धंधा करने) वाला होवेगा । कितनेक कामत है कि धंधेका विचार " भेदका स्पष्टपतिगांशनाथवृत्त्या " "कर्मेशस्थनवांशराशिपयशाद्वृत्तिवदेत्" इत्यादिवचनसे रवि चंद्र येनिस ग्रहके नवांशमें होवे उसके धर्मानुसार धंधा कहना, तीसरा मत यह है कि कुंडलीमें लग्नचंद्रमें से जो ग्रह होवे उससे जो दशमस्थान है उसका अधिपति जिस ग्रहके नवांशमें होवे उसके धर्म प्रमाणसे धंधा कहना । इनतीनोंमें से प्रथमीति लग्न चंद्र और सूर्य में से जो अधिक बलसम्पन्न होवे उससे दशमस्थानका अधिपति जिस राशि के नवांशमें हो उसके स्वामी के धर्मप्रमाणे धंधा कहना यह त्रयोन्तकल्पना अधिक भारुद्ध और गुम्भि युक्त है अतएव शसिप्रमाणे धंधेकी कल्पना करना

ग्रहोकाधर्म.

सूर्यांगे भेषज्य सुगन्धिसुवर्णोर्णा मुक्तामणिषण्येन भंत्रोपदेश
रमवाद विनोद मार्गे वावृत्तिः ६३
चंद्रांशेशद्व मुक्ता शालादि वाणिज्येन कृषि मृदावाग्बिनोद
मार्गे राज्याङ्गना श्रयेन वृत्तिः ६४
भासांगे मनःशिला हरितालहिङ्गलुकाजनादिभिः सहचक्र

कुन्त चापतोभराधैः साहसै र्निग्नक्रियास्वचल क्रियारम्भे
नानिः ॥ ६५ ॥

।।शेऽक्षराविन्यासेनगणितेन य-त्रयोगेनकाव्येनचित्रपुस्तक
त्रच्छेद बाणभान्परचना गन्धयुक्तिप्रभृतिभिर्वृत्तिः ६६
।।वांशे देवब्राह्मण पंडितेभ्यः सुवर्ण लवणांजन गजाद्याकर-
रः क्रियावादेन यज्ञदानतीर्थोपवासगुरुसेवनादिभ्यो वृत्तिः ६७
क्रांशे वज्रमरकत पद्मरागेन्द्र नीलप्रभृतिः रौप्येणलोहै
भिः श्रेष्ठमहिषिभिः सुवर्ण गजाभ्यापारेण वृत्तिः ६८
यंशे अध्वगमना दिकेन बध्यघातिकया स्वशरीर ताड-
येन भारवाहेण स्वकुलानुचित कर्मभिः वृत्तिः ॥ ६९ ॥

—लग्नचंद्र तथा सूर्यसे दशम स्थान के स्वामी का नवांश का
सूर्य होवेतो—वैद्यकी (वैद्य अथवा डाक्टरों का मसै,) अन्तर
रासुगंधी पदार्थोंसे, सुवर्णके लेनदेनसे, ऊनी कपड़ोंके व्यापार
।। मणि बगेरा की दुकान से अच्छी सलाह या राय देनेसे, धी
कर बगेरा पहरस के व्यापारसे, मुकद्दमेबाजीसे, हसी खुशी
तमाशोंके रस्तेसे अथवा कितनोंकका मत है कि इनके शिवाय
गद्दी और धान्यके व्यापारसे वृत्ति होवे ६६

रद्द अथवा सूर्य से दशम स्थानके स्वामीका नवांशका स्वामी
रा-शिक्ष मोती प्रवाल आदि वस्तुके व्यापार से खेलतीके काम-
गीचेमिट्टीके घरतन खिलाने आदि मिट्टीके व्यापारसे अच्छि
।। इसि मुशि के रस्तेसे तथा राजाङ्गनाके आभयसे अथवा
।। मत है कि पाणी सरीसे पनले पदार्थ वा पाणीसे उत्पन्न
पदार्थोंके व्यापारसे तथा बकके व्यापारसे वृत्ति [घन्धा]

रद्द अथवा सूर्यसे दशम स्थानके स्वामीका नवांश का
।।, हविशो-येनसिद्ध इरताऊ, ईगडू सुरमा बगेरा के

व्यापारसे तलवार चक भाला घनुष्य तोंगर बन्दूक तोप आदि भस्त्र शस्त्रोंके व्यापारसे साहस कर्मोंके करनेसे, अग्नि के सहायतासे होनेवाले मुनार, लुहार, आदिके काम से लड़ाई में याद विवाद आदि स्वचल क्रियारंभसे तथा कितनेक के मतसे चाँदी, सिपाही, बिजली, सम्बन्धी कामकरने से, रसोई करनेसे, तथा सड़क का काम करने से वृत्ति होवे ॥ ६५ ॥

लग्न चन्द्र अथवा सूर्य से दशमे स्थान के स्वामी का नवांशका स्वामि पुण्यहोवेतो—सुन्दर भस्त्र लिखनेसे गगिन के कामसे (हिताय के कामसे) यंत्रकला कौशल्य के काम से कविता करने से दार्दिग (विच लेखन) के कामसे पुस्तककी धंधाई पुस्तकबनाई आदि कामसे पत्रके फुट पत्ती आदि काटके बनानेके कामसे वाणरचना तथा पुष्पके हार गजरे गेंद पंखे शय्या आदि रचना के कामसे धूप भगरपत्ती उबटना आदि सुगंधी पदार्थोंके व्यापार से तथा कितनेक के मतसे वस्तुत्व (व्याख्यान तथा बोलनेके कामसे) शास्त्राध्ययन और ज्योतिष के धंधासे तथा बुद्धितामर्थके धंधेसे शिक्षक के कामसे बुरुसेहर के कामसे कागद के व्यापारसे वर्षासन अथवा नेमणुक लेकर रहनेवाला ऐसा धंधा करने से वृत्ति होवे ॥ ६६ ॥

लग्नचंद्र अथवा सूर्य से दशमे स्थानके स्वामिके नवांशका स्वामि गुरुहोवेतां—देव ब्राह्मण तथा पंडित के संबंधी देवपूजन यज्ञ याग अनुष्ठान तथा शास्त्रीय पुराण कथा वार्ता व्याख्यानादि धर्मोपदेशके कामसे सुवर्ण लवण सुरमा आदिके तथा हाथी के व्यापारसे भूगर्भस्थ खदानोंके व्यवसायसे कमकांडादि क्रियाचारसे दांत तीर्थ वप्यास गुरु सेवनादि कार्यसे तथा शिक्षक भण्णासी वेदांती योगी हारदास बरील बेरिस्टर सोलीसीटरके कामसे मसलतदार भक्त साधु भंडारेदार मजिस्ट्रेट तथा न्यायाधीश के कामसे व लोकोमे मुख्या आदि के काम से वृत्ति (धंधा) होवे ॥ ६७ ॥

लग्न चंद्र तथा सूर्य से दशमे स्थान के नवांश का स्वामि शुक्रहोवेतो—हीरा मरकतमणि पद्मराग इंद्रीलमणि आदिके व्यापारसे चाँदी, लोहा, सोना, भुंदर गौ, भैंस, गज, अश्व, आदि के व्यापारसे तथा दूर दूरी गुड व सारंपदार्थ के व्यापारसे तथा कितनेक के मतसे दाढ़ने

काममे रहने वाला, कपडे भुंगधीपदार्थ व फूल बेचने वाला नाटक मे पार्टलानेवाला अलंकारदागदागीनेबेचना तथातम्पार करनेका धंधाकरनेवाला होवे ॥ ६८ ॥

लग्न चंद्र तथा सूर्य से दशमे स्थान के स्वामिके नवांश का स्वामी शनिहोवेतो- चपरासी हलकारा तथाजिन को रस्तेमे जादा चलना फिरनापडे जैसे कामकरनेवाला, आंठदेदारकेकामसे भृन हिंसा व चोरी करने से अरने शरीर को ताड़नादि दुःखदेनेसे हमाली मजूरी आदि स्वकुलानुचिन काम करनेसे तथा छापाखाने का मलिक भयन वसम नोकरी करनेसे सती व बागवगीचिका काम करनेसे देवालयमें नोकरी करने से कभी कभी ईश्वरभक्ति मंदिरमेंपूजा करनेका और सम्वाद पहुंचानेका धंधा करनेवाला हावे ॥ ६९ ॥

पाश्चात्यलोक धंधाके विचार करने में जन्म कुंडली मे दशमस्थानमे गई हुई राशी तथा घलवात्र राशि और राशिर्षामे गयेहुवे ग्रहोके धर्म अनुसार घुनिका निर्णय करते है । उनलोगोका कथन है कि मेष, वृषभ सिंह, व मकर ये राशी धातु इमारतबांधना सोतारका काम और त्रिकविद्या इनका बोधकरती है.

मिथुन तुल व कुंभ ये तीनो शास्त्रीय राशिये है इसकारण जिसकाममे कै, शास्त्र, व बुद्धिचातुर्य का उपयोग विशेषहोवे वैसे काम के करने लें लोक उत्पन्न करती है.

कर्क वृश्चिक व मीन ये राशी होटल (बीसी, उपहारगृह) का धंधा करने वाले तरेहवार सर्वप्रकार की दाख व मादक पदार्थ बेचनेवाले (यत्रा तम्पार करनेवाले दाखके व्यापारी खलाशी तथा मच्छीमारने लें वा बेचनेवाले लोक उत्पन्न करती है.

मृश्चिक राशि ये विशेष करके रसायन शास्त्र वेत्ता व प्रसिद्धमैद्य बडे मोटे बिज्ञहाक्टर) और भांजगड करने का धंधा करनेवाले लोक उत्पन्न कातीहै.

कन्या और धन ये राशि संवाद पहुंचानेकाकाम फिरकोल सामान वा व्यापारी पुस्तके बेचनेवाला और छापनेवाला खोद काम करनेवाला कलाभिन्न लोक तम्पार करती है.

वृषभ कन्या व मकर राशि कृषि सर्वधी व बाग वगीचे संबंधी विशेष विज्ञानजानने वाले लोक तम्पार करती है.

मेष सिंह धनये भग्निराशि भग्निसे भयथा वाफसे भयथा बिमलीसे चलनेवाले कारखानेका धंधे करनेवाला, हथियारोंका कारखाना चलाने वाला लड़ाक व भयंकर रितिके कामकरनेवाले लोक तप्पार करती है। जब यहोतसे ग्रह इन राशियों में चलवान् होवें तो ऐसा धंधा करने वाला होता है.

जब बहुतसे ग्रह कर्क वृश्चिक और मीन इन जलराशियोंमें गयेहोवेंतो पाणीसरीखी पतलीद्वा सोढावाटर लिमोनेट, भकं, गुलाबजल, लवेंडर और भेरहवार अनेक प्रकारकी दारुबचनेवाला बलालीका धंधा करनेवाला तथा मच्छीका बेपारी होताहै.

जो बहुत यह शास्त्रीय राशीमें गयेहोवेंतो उत्तम विद्वान् दुरुसही लेखक संपादक भयथा कपड़ेका बेपारी होवेगा.

जो बहुतग्रह पृथ्वी (धृष कन्या मकर) राशीमेंहोवेंतो इमारत बांधनेका काम खेतीका काम भूमि संबंधका व्यवसाय करने में प्रवीण होताहै.

जब बहुत ग्रह मेष सिंह धन इन भग्निराशियोंमें गये होवेंतो लुहार सुतार सोनार कारीगर का कामकरनेसें घोडा बगेरा चतुष्पदका व्यापारी वायुकसवार ईजनीयर व लोह का काम करनेवाला दलाल और सेनामें हरके प्रकार की नोकरी करने वाला होताहै।

धुध मंगल व शनि चलवान् होकर एकत्र होवेंतो मनुष्य खोर लुटार वर-भाश बे काप दे शिर काम करने वाला बहुत चुरे लोको का भगुभा होताहै.

शुक्र धुध मंगल एकत्र होवेंतो सोदाइका धारीफ नकाशीका काम करनेवाला चित्र कारीका काम करने वाला कारीगर मनुष्य होताहै.

चंद्र शनीसें दुषित हुवा होवेंतो उस मनुष्यने स्वतंत्र धंधाकरना नहीं पांतोदार होवेंतो उसमें भागेहोनानही ऐसा मनुष्यने नोकरी करनाहि अच्छाहि इसीमें भाग्योदयहोवेगा.

पञ्चात्य ज्योतिषी इसतत्व के आधारपर धंधेकी कल्पना करते है। राशिवग्रह इनकां उपरोक्तत्वानुसार विचार करके लग्न चंद्र व सूर्य से दशमस्थानगनराशि, उस्कास्वामी, उसके नवांशकी राशी, और उसराशा का स्थान, दशम स्थानस्थग्रह, और अधिक ग्रह जिन राशी योमें जावे उनका विचार करके, धंधे का विचार देशकाल जाति कुल रिवाज और परिस्थितीको ध्यानमें रखके करनेसे बहुत करके ज्ञेय की कल्पनाठीक होवेगा।

लग्नादशमेश आरक्षराद्यास्मिन्नवांशे वर्तते तदीशोक्तावृत्तिः
प्रत्यहं ॥ ७० ॥

द्रव्यदा मित्रारिस्वभान्यतरत्रयत्रगतास्तादृशमित्रारिस्वो-
योगद्वाराधनातिः ॥ ७१ ॥

धनदोर्कं स्तुङ्गे बलिनि स्वविक्रमा दनम् ॥-७२ ॥

लग्नार्थायगौ स्तौग्ये बलिभिर्बहुप्रकारैर्धनातिः ॥ ७३ ॥

इति तृतीय-विवेकः

टीका- जन्म लग्नसे दशम स्थान का स्वामी गौचरमे राशि भ्रमण-
शात् जिस समय जिसराशी के नवांशमे होवे उसके स्वामिके धन
द्वारा प्रत्यह वृत्ति कहना ॥ ७० ॥

द्रव्यदेनेवाला ग्रह भरने मित्र ग्रहकीराशिमे गयाहोवेतो मित्र द्वारा
शत्रु कीराशिमे गयाहोवेतो शत्रुद्वारा स्वराशिमे गया होवेतो भयने
शत्रुद्वारा धन प्राप्तिहोतीहै ॥ ७१ ॥

धनदेनेवाला सूर्य अपनी राशिमे गयाहोवे बलवानहोवे तोभयने
द्वारा क्रमसे धनकी प्राप्ति होवेगा ॥ ७२ ॥

लग्न धन और लाभ स्थानमे बलवान शुभ ग्रह गये होवेतो बहुत
तरहसे धनाप्ति होवेगा ॥ ७३ ॥

इसके सिवाय पराक्रम, भाईके सालेकापुत्र, भाईकेपुत्रकीस्त्रीके
भाई, मामाकापिता, माताकाव्यय, माताकाकाका, माताकापुसाफसी,
माताकीगामी, मित्रकीमामी, मित्रकाकाका, मित्रकाव्यय, पुत्रकेपुत्र-
कीस्त्री, पुत्रकालाभ, शत्रुकापिता, सालेकीस्त्री, स्त्रीकामाग्य, नोकर-
चाकर, उरुस्थल, पिताकाशत्रु, दादीकाभाई, दादाकाभाग्य,
भादिकारिचारभी तीसरे भावसेदिकरना।

इति तृतीय विवेक टीका समाप्ता ।



अथचतुर्थशिवेकः

मानुर्दुग्धशोषयोग.

यृधिकींशे मानुर्दुग्धशोषः ॥ १ ॥

सोत्थपेत्रिके सचन्द्रेपरम्री स्तन्याग्नं ॥ २ ॥

टीका-कारकांश लग्न यृधिकींशोका द्वैवेतां माताका द्वय सुत्तां
भयान् माताकेदुग्ध कमनीवर्तरे ॥ १ ॥तीसरे भागका स्वामी ६।८।१२ स्थान में होवे और चंद्रमा सप्त
द्वैवेतां परस्त्रीका स्तनयानकरके परवर्तिता द्वैवेता ॥ २ ॥

मातृमुख नाशयोग

खेकुजेष्टमेजांशे बलाढये मातृ सुखं ॥ ३ ॥

पट्टेष्टमेचंद्रे स्तेभौमे सपापे मातृ सुखं ॥ ४ ॥

शुके वाचदेशान्तरे पापयुद्धेष्टे मातृसुखं ॥ ५ ॥

सुखे मुखेशे वापापांतरे पापयुद्धेष्टे मातृसुखं ॥ ६ ॥

चंद्रान्ते सपापे शुके मातृसुखं ॥ ७ ॥

मंदे पापयुद्धे पापशे मातृसुखं ॥ ८ ॥

पुत्रेचंद्रे मातृसुखं ॥ ९ ॥

चन्द्रारौखे धर्मवा मातृसुखं ॥ १० ॥

सपाप चंद्रेस्ते मातृसुखं ॥ ११ ॥

गुरावने धनेमन्दे राहौयूने मातृसुखं ॥ १२ ॥

जीवेकैर्येन्दे सोत्थे राहौ माता नजीवति ॥ १३ ॥

सोत्थेस्वर्के लग्नेभौमे माता नजीवति ॥ १४ ॥

पापांतरेचंद्रेवाचद्रानुर्यनगस्थाः पापामाता नजीवति ॥ १५ ॥

सुखे मंदे पाप दृष्टे शीघ्रं मातृ नाशः ॥ १६ ॥

टीका-दशमे भावमें मंगल भाठमे स्थानमे गृह्यान् गुरुहोवेतो माताका सुखनही होवे ॥ ३ ॥

एठे अथवा भाठमे स्थानमे चंद्रमा होवे और पापग्रह संयुत मंगल सातमे गया होवेतो माताका सुखनही होवे ॥ ४ ॥

शुक्र अथवा चंद्रमा पाप ग्रहोंके बीचमें होवे अथवा पाप ग्रहों संयुत दृष्ट होवेतो माताका सुखनही होवे ॥ ५ ॥

सुखेश सुख भावमे गया होवे अथवा सुखेश पाप ग्रहोंके बीचमें होवे पापापग्रहोंसे युतदृष्ट होवेतो माताका सुख नही होवे ॥ ६ ॥

चंद्रमासे सातमे स्थानमे पापग्रहसेयुतशुक्र गया होवेतो माता कामुख नही होवे ॥ ७ ॥

शनि पापग्रहोंसे युतहोवे और पाप ग्रहकी राशी मेंगयाहोवेतो माताका सुख नही होवे ॥ ८ ॥

चंद्रमा पांचमे स्थानमे गयाहोवेतो माताका सुख नही होवे ॥ ९ ॥

चंद्र और मंगल येदोनो नवमे अथवा दशमे भावमे गयेहोवेतो माता कामुख नही होवे ॥ १० ॥

पाप ग्रह संयुत चंद्रमा सातमे स्थानमे गयाहोवेतो माताका सुख नही होवे ॥ ११ ॥

लग्नमें गुरु धनमें शनि सातमेराहुं होवेतो माताका सुखनही होवे १२

लग्नमेगुरु धनमेशनि तीसरे स्थानमेराहुं गया होवेतो माता नही जीवे ॥ १३ ॥

तीसरे अथवा सातमे स्थानमें मूषे और लग्नमें मंगल गयाहोवेतो मातानही जीवे ॥ १४ ॥

पापग्रहोंके बीचमें चंद्रमा होवे अथवा चंद्रमासे तीसरे औरसातमे स्थानमे पापग्रह गयेहोवेतो माता नही जीवे ॥ १५ ॥

सुख (४) स्थानमे शनि पापग्रहसे दृष्टहोवेतो शीघ्र माताका नाश होवे ॥ १६ ॥

मातृदीर्घायुयोग.

सुखेमदे शुभदृष्टे चिरेण मातृनाशः ॥ १७ ॥

सुखेशुभकारकेशुभयुतेबलादयेवामुसेपातृदीर्घायुः १८

चंद्रे बलादये वा शुके शुभयुतदृष्टे मातृदीर्घायुः ॥ १९ ॥

शुके वाचन्द्रे शुभांशे केन्द्रे मातुर्दीर्घायुः ॥ २० ॥

सुखपांशेशांशपे केन्द्रे बलाढ्ये मातुर्दीर्घायुः ॥ २१ ॥

टीका-चोखेस्थान में शनि शुभ ग्रह से दृष्टहोवेतो माताका नाश बहुत वर्षों पीछे होवे ॥ १७ ॥

चतुर्थ भावमें शुभग्रह होवे बलवान् मातृकारक ग्रह शुभग्रहसंयुत होवे अथवा वहमातृ कारकग्रह सुखस्थानमें गयाहोवेतो माता दीर्घायु होवे ॥ १८ ॥

चंद्र बलवान् होवे अथवा शुक्र शुभग्रहसे युत दृष्ट होवेतो माता दीर्घायुहोवे ॥ १९ ॥

शुक्र भद्रमा चंद्रमा शुभग्रहके राशिके नवांशमें होवे और केंद्र (१४।७।१०) स्थानमें गयेहोवेतोमाता दीर्घायुहोवे ॥ २० ॥

चतुर्थ स्थानके स्वामि केनवांशका स्वामी जिसग्रहके नवांशमेंहोवे वहग्रह बलवान् होकर केंद्र (१४।७।१०) स्थानमें जावेतोमाता दीर्घायुहोवे ॥ २१ ॥

पिता मात्रा सहैव मृत्यु योग.

लग्नाभ्युध-शास्त्रिकोणकेन्द्रगाःपितामात्रासहैवम्रियते २२

टीका-लग्न चतुर्थ और नवम स्थानके स्वामि-१४।५।७।९।१० इनस्थानोंमेंगये होवेतो पिताकिमृत्यु माताके साथहीहोवे ॥ २२ ॥

मातृ वधगो.

राशौ चंद्रात्रिकोणे मन्दे मातृवधः ॥ २३ ॥

टीका-राशिके समय मन्दहोवे और चंद्रमासे ९।९ स्थानमें शनि गयाहोवेतो माताका वधहोवे ॥ २३ ॥

माता पतिव्रता योग.

सुखेशोक्ते बलाढ्ये माता पतिव्रता ॥ २४ ॥

सुखे वैशेषिकशि शुभदृष्टे माता पतिव्रता ॥ २५ ॥

सुर्ये शुभार्कदृष्टे माता पतिव्रता ॥ २६ ॥

टीका-लग्नमें बलवान् मुखेश होवेतो माता पतिव्रता होवे ॥ २४ ॥

स्येन वैशेषिकांशमे होवे शुभग्रहों से दृष्ट होवेतो माता मतिप्रद
॥ २५ ॥

तुर्गेश शुभग्रहहोवे चस्को शुभग्रह और रवि देखता होवतो मा
दना होवे ॥ २६ ॥

माता जारिणियोग.

रेश कुजेनयुते चंद्रेसुखे पापदृष्टे माता जारिणी ॥ २७ ॥

सुखे राहुयुते सापे माता जारिणी ॥ २८ ॥

का-वृद्धेन और मंगल इन्द्रोको से युत चंद्रमा सुख स्थानमे जावे
इनको पाप दृष्ट देखते होवेतो माता जारिणी (पति घत धर्महीना).
॥ २७ ॥

त स्थानका स्वामि राहु और पापग्रहोसे युत होवेतो माता
रिणी होवे ॥ २८ ॥

मातृ स्नेहयोग.

लग्न सुखेशा वन्योन्यमित्रे शुभेक्षित युते मातृस्नेहः २९

तुर्गेशे केन्द्रेक्षेशदृष्टे दाशुभ द्युते मातृस्नेहः ३०

का-लग्न और सुख स्थान कास्वामि गेदोनो परस्पर मित्रग्रह होवे
शुभाग्रहों से युत तथा दृष्टहोवेतो मातासे प्रीति भच्छिद्राङ्गा २९
तुर्गेशाकेन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमें गया होवे और चस्को-
दा देखताहोवे भवया केन्द्रेन गया हुआ सुखेश शुभग्रहसे युत दृष्ट
हो मातासे स्नेह रहेगा । इनयोगोंके विरहीत होवेतो मातासे वैर
गा ऐसा जानना ॥ ३० ॥

द्वित्रि मतायोग.

विप्रे द्वित्रिमातरः सौम्ये एका ॥ ३१ ॥

का-चतुर्थ स्थानमें पापग्रहगया होवेतो दांतीन माताहोवे और
पदगया होवतो एक माता होवे ॥ ३१ ॥

चतु पदमुल्लयोग.

वृषाये चतुषदाः सुखदाः ॥ ३२ ॥

सुखे शुभ दृष्ट्यापि कपे चतुषदाः सुखदाः ३३

टीका-शरकीय लग्न गृहमें राजिका होवेगी गुरुवार (गाय भेज
पीड़ा गेरा) का द्रुम होवेगा. ॥ ३२ ॥

सुमन्यामर शुभग्रहांके दृष्टि अधिक होवेगी चतुष्पदका मुम
होवेगा ॥ ३३ ॥

वाल्मेयुष्मीयोग.

जीवेकेन्द्रेक्ष्यो पाराशो वात्सेमुष्मी ॥ ३४ ॥

धर्मशुभेक्ष्यो ययुभेक्ष्योके वात्सेमुष्मी ॥ ३५ ॥

टीका-गुरु केन्द्रस्थानमें होवे और लग्नका स्वामि पागुरांशमें
गयाहायेगा वात्स्यारूपामे सुखी रहेंगा ॥ ३४ ॥

नयने भाषामे शुभग्रहः लग्नमें पागुरांश धनभाषामे शुभग्रह देवतांशमें
मे होवेतो वात्स्यायस्यामे सुखीरहेंगा ॥ ३५ ॥

नृगाब्दशतरंमुखीयोग.

शुभर्जेक्ष्यो शुभेक्ष्यो वा गोपुरेनृगाब्दशतरंमुखी ३६

टीका-लग्नका स्वामि शुभग्रहकी राजिमेनावे शुभग्रहों सं दृष्टहोवे
अथवा गोपुरांशमें गयाहोवेतो १६ सालावर्षकी उमर होवेवार सुखी
होवेगा ॥ ३६ ॥

विंशतिवर्षोर्ध्वपुष्पीयोग.

लग्नेशोचापे वा लग्नेशांशपे वा तथास्थितलाभेशे विंश-
तिवर्षेभ्यः परंमुखी ॥ ३७ ॥

टीका-लग्न कास्वामि धनराजिका होवे १ अथवा लग्नेश्वरके
नवांशका स्वामि धनराजिका होवे २ अथवा लाभेश वा लाभ स्थानके
स्वामिकानवांशका स्वामि धनराजिमे गयाहोवेतो (इनतीनोंपांशों
मेंसेकांई भीभेद योगहोवेतो) बीस वर्षकी उमर होनेके बादसुखी
होवेगा ॥ ३७ ॥

त्रिंशद्वर्षः परंमुखीयोग ।

लग्नेशांशोकेन्द्रे तथालाभे शांशे वा त्रिंशद्वर्षः परं-
मुखी ॥ ३८ ॥

टीका- लग्नके स्वामिका नवांशका स्वामी केंद्र (१४।७।१०)
मेगया होवे १ तथा लाभ (११) स्थानके स्वामिका नवांशका स्वामि
केंद्र (१४।७।१०) मेगयाहोवेतो २ तीस वर्षकी उमर होजाने केवधा-
सुखी होवेगा ॥ ३८ ॥

आद्यवयसिसुखयोग.

लग्ना दातुरीयगाः शुभाआये वयसि सुखम् ॥ ३९ ॥

लग्नेशुके पूर्वार्द्धे सुखी ॥ ४० ॥

केन्द्रस्था गुरुजन्मतनुपा यौवने सुखी ॥ ४१ ॥

टीका- जन्मलग्नसेवतयेभावपर्यंत (१२।३।४) शुभग्रह गयेहोवेतो
उमरके आदिभागमें सुखीहोवेगा ॥ ३९ ॥

लग्ननेशुक गयाहोवेतो आयुके पूर्वार्द्धमें सुखीहोवेगा ॥ ४० ॥

केंद्र (१४।७।१०) स्थानमें गुरु और जन्मलग्नका स्वामिगयाहोवेतो
यौवना वस्थामें सुखीरहेगा ॥ ४१ ॥

बाल्येदुःखिततः सुखीयोग.

पापाधने केन्द्रे शुभे लग्नेशोत्तमंशे बाल्येदुःखिततः

सुखी ॥ ४२ ॥

टीका- धनभावमें पापग्रह, केंद्र (१४।७।१०) में शुभग्रह गयेहोवे
और लग्नेश उत्तमंशमें होवेतो बाल्यमें दुःखीरहे और पीछे सुखी-
रहेगा. ॥ ४२ ॥

मध्यवयसीसुखीयोग.

पञ्चमादाष्टमगाः शुभामध्यवयसिसुखी ॥ ४३ ॥

टीका- पंचमस्थानसे आठमेस्थान पर्यंत (५।६।७।८) संपुंशुभग्रह
गयेहोवेतो मध्यवयसामें सुखीरहेगा ॥ ४३ ॥

आद्यमध्यवयसिसुखीयोग.

शुभसर्गैर्दृग्गनान्त्यलाभगैः केन्द्रेतिहासनेजीवे आद्य मध्य-
वयसोः सुखी ॥ ४४ ॥

लग्नार्थे सोत्थे शुभदृष्टियुते शुभेक्षेर्जावेपारावते आद्यमध्य
व्यसोः सुखी ॥ ४५ ॥

टीका- लग्न (१) व्यस (१२) और लग्न (११) स्थानमे मध्यं शुभ
पहगये होवे और रिहासनांशमे गयाहुवा गुरु बेष्ट (१४/५१०)
स्थानमे गया होवे तो आद्य और मध्य दोनो अवस्थामे सुखी रहेगा ४५
लग्नधन और तृतीयस्थान शुभपहोसे युतदृष्ट होवे लग्नमे शुभपहो
राशि होवे गुरुपारावतांशमे गया होवे तो आद्य और मध्य दोनो अवस्थामे
सुखी रहेगा ॥ ४५ ॥

अस्य तथा मध्यांत व्यसोः सुखी योग.

धर्मादारिः कगाः शुभा अन्त्येव यासि सुखी ॥ ४६ ॥

देवलोकांशे युक्ते गोपुरे लग्ने शुभदृष्टे मध्यान्त्य व्यसोः
सुखी ॥ ४७ ॥

टीका- नवमस्थानसे वारमे स्थान पर्यंत (११०/१११/१२) सर्वं शुभ
पहगये होवे तो अन्त्यावस्थामे सुखी होवे ॥ ४६ ॥

देवलोकांशमे शुक्र होवे गोपुरांशमे लग्न होवे आरंभमे महसे दृष्ट होवे तो
मध्य और अन्त्य दोनो अवस्थामे सुखी रहेगा. ॥ ४७ ॥

आजीव सुखी योग.

गोत्तमेक्षे शो वा स्वोच्चांशके वा स्वदिग्रयंशो वा शुभयु-
तदृष्टे आजीव सुखी ॥ ४८ ॥

टीका- लग्नका स्वामी वगैरे नवांशमे (जिसराशिका जन्म कुंडलीमे होवे
स्वराशिका नवांश कुंडलीमे भी) होवे तो १ अथवा लग्नका स्वामी
अपनि स्वराशि व दृष्टराशि के नवांशमे होवे २ अथवा लग्नका स्वामी
अपने मित्रराशि के द्रष्टाणमे होवे अथवा शुभराशि से युतदृष्ट होवे तो
आजन्म (जीवे जहां तक) सुखी रहेगा ॥ ४८ ॥

सुखी योग.

शुभेक्षे शुभदृष्टे पापयोगहिते सुखी ॥ ४९ ॥

/ पञ्चसुस्वर्शेषु महासुखी ॥ ५० ॥

मातालेशेजीवदृष्टेसुखी ॥ ५१ ॥

शुभेसुखेसुखी ॥ ५२ ॥

सुखेशुभान्तरेसुखी ॥ ५३ ॥

नीवेबलिनी तुर्यपयुतेसुखी ॥ ५४ ॥

केन्द्रकोणेशुभेसुखेशु सुखी ॥ ५५ ॥

मातालेशे मृदंशेसुखी ॥ ५६ ॥

अग्नेशाज्जीवे बलिनिसुखी ॥ ५७ ॥

गोपुरायशेम्बुपे जीवेचसुखी ॥ ५८ ॥

शुभाशितुयेशे धनोपचयगेसुखी ॥ ५९ ॥

शुभान्तरेचन्द्रेसुखी ॥ ६० ॥

का-लग्नमे शुभग्रह होवे और उनको शुभग्रह देखतेहोवे कोईभी ग्रहका योग नैदाहोवेतो सुखीहोवे ॥ ५९ ॥

नम कुंडलीमे पांचग्रह स्वराशिके (स्वक्षेत्री) होवेतो माहासुखी ॥ ५० ॥

स्वस्थानके स्वामीको गुरुदेखता होवेतो सुखी होवे ॥ ५१ ॥

स्वस्थानमे शुभग्रह स्थितहोवे तो सुखीहोवे ॥ ५२ ॥

स्वस्थानका स्वामी शुभग्रहोंके मध्यमे होवेतो सुखीहोवे ॥ ५३ ॥

लवाग्रगुरु मुखेशसे गुप्तहोवेतो सुखीहोवे ॥ ५४ ॥

मुखेशशुभग्रह से युक्त होकर केन्द्रकोण (१।४।७।१०।१।५) स्थानमे पावेतो सुखी होवे ॥ ५५ ॥

मुखेश मृदंशमे गयाहोवेतो सुखीहोवे ॥ ५६ ॥

अग्निके स्वामीसे गुरु अधिक बलवान् होवेतो सुखीहोवे ॥ ५७ ॥

मुखेश और गुरु ये दोनों गोपुरादि शुभांशमे होवेतो सुखीहोवे ५८

मुखेशशुभग्रहकी राशिके नवांश मे होवे औरवह २।३।६।१०।११ में ॥ नम गयाहोवेतो सुखीहोवे ॥ ५९ ॥

चंद्रमा शुभग्रहोंके मध्यमे होवेतोसुखीहोवे ॥ ६० ॥

दुःखी योग.

ज्ञराव्हर्काः सुतम्या स्तर्येभौमे रन्ध्रेमन्दे दुःखी ॥ ६१ ॥

लग्नगाः पापा दुःखी ॥ ६२ ॥

पापे तुर्येजीवे ल्पत्रलिनिसधनोपिदुःखी ॥ ६३ ॥

सपापे सुखपे ऽबले सधनोपिदुःखी ॥ ६४ ॥

पापाशेम्बुपेनीचगे सधनपुत्रोपिदुःखी ॥ ६५ ॥

सभौमार्काम्बुपे क्रूरांशे शुभदृग्घीनेनित्यं दुःखी ॥ ६६ ॥

भौमार्कोनीचारिभागौ सुखेपापदृष्टौ क्रूरांशेप्रमादा द्दुहार्थ
नाशोदुःखीच ॥ ६७ ॥

रंघ्रेशेलाभे बाल्येदुःखी ॥ ६८ ॥

लग्नेर्कजे धमेराहौ पटे भौमे दुःखी ॥ ६९ ॥

पापान्तरे चन्द्रे दुःखी ॥ ७० ॥

लग्नेरोन्त्ये खेपापे चंद्रार योगे दुःखी ॥ ७१ ॥

टीका— पंचमस्थानमे बुधराहुऔरमूर्य, चौथेस्थानमेंभौम, आठवें
स्थानमें शनि गयाहोवेतो दुःखीहोवे ॥ ६१ ॥

लग्नमें पापग्रहगय होवेतो दुःखीहोवे ॥ ६२ ॥

मुखस्थानमे एकपापग्रहजावे और गुरू भद्रपल्लीहोवे तोसधन
होनेहुवेभीदुःखीहोवेगा ॥ ६३ ॥

मुखस्थानका स्वामि पापग्रहसे युतहोवे औरबहनिबंलीहोवे तो
सधन होनेहुवे भी दुःखीहोवे ॥ ६४ ॥

मुखस्थान का स्वामि नीचराशी मे गयाहोवे और पापग्रहकी राशी
के नवांशमे होवेतो सधन और पुत्र वालाहोनेहुवे भी दुःखीहोवेगा ६५

मुखस्थान का स्वामि पापग्रह केनवांशमेहोवे मूर्यमेंगलसेयुतहोवे
और शुभग्रहोंमे दृष्टनहीहोवेनोनित्य दुःखीहोवेगा ॥ ६६ ॥

मूर्य और मंगल येदोनो नीचराश और पापग्रहकी राशिमेंनवांशमे

स्थितहोकर सुखस्थानमें जावे और पापग्रहोंसे दृष्टहोवेतो अपने प्रमादसे
 धन आदि का नाश होवे और दुःखी होवे ॥ ६७ ॥

अष्टमस्थान का स्वामि ग्यारह स्थानमें गया होवेतो बाल्या वस्थामें
 दुःखी होवे ॥ ६८ ॥

लग्नमें शनि, भाठमें राहु, छठे स्थानमें भौम, स्थित होवे तो दुःखी होवे ६९
 पापग्रहोंके मध्यमें चन्द्रमा गया होवे तो दुःखी होवे ॥ ७० ॥

लग्नेशवारमें स्थानमें, और पापग्रह दशमें स्थानमें, गया होवे और खंड
 मंगलका योग कोई भी स्थानमें हुआ होवेतो दुःखी होवे ॥ ७१ ॥

मूषिका मार्जार आदि दुःखयोग.

मेषांशे मूषिका मार्जारं दुःखदम् ॥ ७२ ॥

सिंहांशे श्वावदयो दुःखदाः ॥ ७३ ॥

कन्यांशे ग्निकणा दुःखम् ॥ ७४ ॥

टीका—कारकांश कुंडलीमें मेष राशिका लग्न होवेतो मूषिका (बूढ़े)
 और बिल्ली दुःख देवेगे ॥ ७२ ॥

कारकांश कुंडलीमें सिंह राशिका लग्न होवेतो श्वान वगैरा दुःख
 देवेगे ॥ ७३ ॥

कारकांशल लग्न कन्याराशिका होवेतो अग्निकेकण (तणक्या)
 वगैरासे दुःख होवेगा ॥ ७४ ॥

प्रसादवादयोग.

तुर्ये शाब्दन्द्राच्छी प्रासादवान् ॥ ७५ ॥

तुर्ये शाब्दुच्चग्रहे प्रासादवान् ॥ ७६ ॥

अंशान्तुर्ये राहर्कजौ प्रासादवान् ॥ ७७ ॥

टीका—कारकांश कुंडलीमें चतुर्थस्थानमें चन्द्रशुक्रका योग होवेतो
 प्रासाद (राजाओंके महल के समान महल) वाला होवे ॥ ७५ ॥

कारकांशल लग्नसे चतुर्थस्थानमें राहर्कजौ ग्रह गया होवेतो प्रासाद
 वाला होवे ॥ ७६ ॥

कारकांश लग्नसे चतुर्थस्थानमें राहु शनिका योग होवेतो प्रासाद
 वाला होवे ॥ ७७ ॥

इष्टिकाग्रहयोग.

केत्वारौतुर्येया दिष्टिकाग्रहं ॥ ७८ ॥

टीका—कारकांशलग्नसे चतुर्थस्थानमें केतु मंगल का योग होनेसे ईष्टसेयनाहुया मकानहोवे ॥ ७८ ॥

काष्ठग्रहयोग.

सुखेराज्जीवे काष्ठग्रहम् ॥ ७९ ॥

टीका—कारकांश लग्नसे सुखस्थानमें गुरुगयाहोवेतो लवदीन मकान (जिस्में लकड़ीनादे लगीहोवे वैसामकान) होवे ॥ ७९ ॥

तृणग्रहयोग.

सुखेरा दर्के तृणग्रहम् ८०

टीका—कारकांश लग्नसे सुखस्थानमें सूर्यगयाहोवेतो तृणग्रह (फूस कापर) होवे ॥ ८० ॥

विचित्रग्रहयोग

धर्मपेकेन्द्रे गेहशेस्वोच्चाभिन्नगे तुर्येतुंगगेग्रहेविचित्रग्रहम् ८१

खतुर्येशौ चन्द्रमन्दयुतौ विचित्रमेश्म ८२

टीका—नवमेभावकास्वामी केन्द्र (११४।७।१०) स्थानमें, चतुर्थस्वकास्वामी स्वतन्त्र अथवामित्रराशिका होवे और चतुर्थभावमें वृद्ध राशिमें गयाहुया कोईभी ग्रहस्थितहोवे तो विचित्रग्रहहोवे ॥ ८१ ॥

दशम और चतुर्थका स्वामी येदोनो चन्द्रशान्तिस युतहोवे तो विचित्रग्रहहोवे ॥ ८२ ॥

हर्म्यप्राकारादियुतग्रहयोग.

स्रोत्येसौम्ये तुर्येशेबालिनि गृहेशेशे चलपुर्गे हर्म्यप्राकारादि

युतग्रहम् ८३

तुर्यपेसिंहासने गोपुरे मृद्वंशे वा हर्म्यप्राकारादियुतग्रहम् ८४

टीका—तीसरेभावमें शुभग्रहहोवे चतुर्थेश बलवानहोवे और चतुर्थस्थानके स्वामिका स्वामी (चतुर्थभावकास्वामिजिसराशिमेंगयाहोवसकास्वामी) पूर्णबलवानहोवे तो देवता, राजा, और बड़े धनवानो रहनेयोग्य चागिर्दिके संकेष्टिन उत्तमनदलहोवे ॥ ८३ ॥

चतुर्थभाषका स्थानि सिंहासनांश गोपुरांश भयवा मृदंशमें गयाहोवे तो राजाभोंके रहने योग्य उत्तम महल होवे ॥ ८४ ॥

दैविकवेशमयोग.

गृहेशे पारावते गोपुरे वा चन्द्रगुरुदृष्टे दैविकवेशम् ८५

लग्नांश्वर्थे शा यावन्तः केन्द्रकोणेतावन्तो गृहाः शोभनाः ८६

टीका—चतुर्थभाषका स्वामी पारावतांशमें भयवा गोपुरांशमें होवे और वह चन्द्रगुरुसे दृष्ट होवे तो देवताओंके समान यद्वा देवतायुक्त उत्तम महल होवे ॥ ८५ ॥

लग्नेशचतुर्थेश और धनेश इन तीनों ग्रहोंमेंसे जितने ग्रह केन्द्रकोण (१।४।५।७।९।१०) स्थानमें गये होवे उतने ही गृह अच्छे सुंदर होवे ८६

गृहलाभयोग.

लग्नेशेऽम्बुगे सुखेशेऽङ्गे गृहलाभः ८७

गेहेशेऽवलाढये केन्द्रे शुभदृष्टे गृहलाभः ८८

सुखेशे वैशेषिकांशे परमोच्चगे गृहलाभः ८९

चतुर्थेशांशेशांशेशे केन्द्रे गृहलाभः ९०

लाभार्थेऽथो तुर्येतुर्यपे वैशेषिकांशे शुभदृष्ट्योगेऽवहर्थां गृहं

लभ्यते ९१

टीका—लग्नेशचतुर्थेशोंमें और चतुर्थेशलग्नमें गया होवे तो गृह लाभ होवे ॥ ८७ ॥

चतुर्थेश बलवान्दोके केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमें गया होवे शुभग्रहसे दृष्ट होवे तो गृहलाभ होवे ॥ ८८ ॥

परमोच्चराशिमें गया होवा सुखेश वैशेषिकांशमें गया होवे तो गृहलाभ होवे ॥ ८९ ॥

चतुर्थेश के नवांशका स्वामी जिस राशिमें गया होवे उस राशि के स्वामी का नवांश का स्वामी केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमें गया होवे तो गृहलाभ (घरकालाभ) होवे ॥ ९० ॥

धन २ और लाभ ११ भावके स्वामी चतुर्थमासमें होवे और चतुर्थमासका स्वामी वैशाखिकाशमें गया होवे शुभग्रहसे युक्त दृष्ट होवे तो वृत्त धनसहित घरकालाभ होवे ॥ ९१ ॥

भक्तस्माद्गृहलाभयोग.

तुयान्नपौ तुयेऽकरमाद्गृहातिः ॥ ९२ ॥

टीका-लग्न और चतुर्थभावका स्वामी ये दोनों चतुर्थ भावमें गये होवे तो भक्तस्मात् गृहका लाभ होवे १ यदि ये दोनों लग्नमें गये हों और अपनी वृत्त, मित्र, तथा स्वराशीमें होंवे शुभग्रहों से दृष्ट होवे तो भक्त्यं विना प्रयत्न किये ही घरका लाभ होवे ॥ ९३ ॥

दत्तकयोग

गृहलाभ योगमें भी. २ भेद है । १ धर्मार्थ किंवा बहीस कोई मकान मिल जावे भयवा अपने घर नजीक रिस्तेवाँलका मकान दत्तकनाने-हुवे भी अपने कबजेमें आजाय २ दूसरा अपने जन्मदाता मातापिताके छोड़ दूसरे मातापिताके यहां दत्तक (गोदमें) जानेसे घर और संपत्ति-कालाभ होवे ।

उपरोक्त गृहलाभयोगोंसे इस दत्तकनानेके योगमें जन्मदाता मातापिताके सुखकी हानि और दूसरे मातापिताके घर और संपत्ति का लाभ होनेकी विशेषता होनेसे दत्तक गये हूँवे कितनेही मनुष्योंकि कुंडलियोंपर तात्विकावित्तरद्वारा विचार करनेसे जो ७ नियम दत्तक योगके अनुभवमें आये हैं वे इस ग्रंथके पाठकोंके अनुभवार्थ प्रकाशित करनेमें आते हैं ।

(१) कर्क भयवा शिंशुराशिमें पापग्रह गये होवे ।

(२) चंद्र भयवा रवि पापग्रहोंसे युक्त किंवा दृष्ट होवे ।

(३) चतुर्थ भयवा दशमस्थानमें पापग्रह गये होवे ।

(४) मेष, सिंह, धनु किंवा मकर इन राशियोंमेंसे कोई भी एकराशि

चतुर्थ भयवा दशमभावमें गई होवे ।

(५) चंद्रके चतुर्थस्थानमें पापग्रह गये होवे ।

(६) रविके दशमस्थानमें भयवा नवमस्थानमें पापग्रह गये होवे ।

(७) चंद्र भयवा रवीये शत्रुश्रेणी शत्रुग्रहसे युक्त होवे तो दत्तकनाने

गृहलाभहोषगा । जो लोग दत्तकगये हैं' भयवाजीजानेवाले हैं उनकी-
जन्मकुटलीमें इन ७ योगोंमेंसे भेक दो तीनयोग अवश्यदेखनेमें
आवेगा, यदि भेकभी योगनहिदिखनेमें आवे तो नोतिपकी झुठामान-
नेवालोका कथन सत्यसमझना ।

गृहनाशयोग.

यावन्तः पापाः स्वाभ्युस्वान्त्यनाथैः सहिता स्त्रिकस्था
स्तावन्तो गृहा बन्धिना दहन्ते ॥ ९३ ॥

रावृहर्कोअंशे कुजमात्रदृष्टे गृहदाहः ॥ ९४ ॥

तुर्येशेषेष्टे पापदृष्टे गृहनाशः ॥ ९५ ॥

गेहेशांशेषेष्टे गेहनाशः ॥ ९६ ॥

तुर्याङ्गार्थेशा यावत्पापैर्युता स्तावन्तां गेहानां नाशो-
नतु शुभदृष्टे ॥ ९७ ॥

केन्द्र केणैके गेहे शैथिल्यप्रयुक्त पात भयम् ९८

तुर्येशरन्ध्रे स्वयमेव गेहं पातयति ९९

टीका-जितने पापग्रह वृश्चम, चतुर्थ, धन, और चारमे, भावके स्वाभि-
योसे युक्त होके ६।८।१२ स्थानमेंगये होंवे तबने हीघर अग्निसे जलना
ग ७३

कारकांश लग्नम राहु सूर्यगपेहोवे और इनकी केवलमंगलही दृष्टता
होवे तो अग्निसे घर जलेगा ९४

चतुर्येश छठेभावमें पापग्रह से दृष्टहोवेतो घरका नाशहोवे ९५

चतुर्थेश के नवांश का स्वामीछठे स्थानमें गयाहोवे तो घरकानाश-
होवे. ९६

चतुर्थ लग्न भी धन इनतीभाव के स्वामि जितने पापग्रहो से
तहोवे तबनेही पत्नी का नाशहोवे और यदि ये शुभग्रहोसे दृष्टहोवेतो
घरकानाशनहीं होवेगा ९७

केन्द्र कोण (१।४।९।७।९।१०) स्थानमें रविस्थितहोवेतो पुराना
रहोनेके सबबसे पढ़नेका भयरह ९८

चतुर्थेश भावमें भावमें गगनादेवो गृह्णी परकोराहना १९

बहुगृहवासयोग

तुर्यतत्पौचरक्षे कारके वा तथा बहु गृहवासः १००

टीका—चतुर्थभाव और उमका स्वामी ये दोनों घर राशी के होते भयवा चतुर्थभावाका कारक (चंद्र बुध) घरराशी का होते तो बहुत परमे रहनवाला (भेकपरमे कभी स्थिरवास नहीं करने वाला) होते १००

स्थिरवासयोग.

गृहस्ततो स्थिरे तथा कारके दा स्थिरवासः १०१

शुभपष्ठंशे तुर्ये स्थिरवासः १०२

टीका—चतुर्थभाव और उमका स्वामी ये दोनों स्थिराशीके होते भयवा चतुर्थभावाका कारक [चंद्र बुध] स्थिराशीके होनेवाला भेकही परमे स्थिरवास करनेवाला होते. १०१

चतुर्थभाव शुभपष्ठंशमे होते तो भेकही परमे स्थिरवास करने वाला होते १०२

बहुक्षेत्रवाद योग.

खे सुखेशे कर्मेंशेम्बुगे बलिनिभौमे बहुक्षेत्रवान् १०३

बलाढ्यौ खाम्बुपौ परस्परसुहृदौ बहुक्षेत्रवान् १०४

तुर्यतत्पौ शुभयुतौ बहुक्षेत्रवान् १०५

तुर्येशेसुते गोपुरांशे बहुक्षेत्रवान् १०६

टीका—चतुर्थेशदशमेभावमें और दशमेशचतुर्थस्थानमें गयाहोवेमंगल बलवान् होवतो बहुत जमीनवाला (बडानगरिदार) होते. १०३

दशम और चतुर्थ भावके स्वामी बलवान् होते और आपसमें दोनों मित्रग्रह होते तो बहुत जमीन वाला होते १०४

चतुर्थभाव और चतुर्थ भावका स्वामी ये दोनों शुभग्रहसे युक्त होते तो बहुत जमीनवाला होते १०५

चतुर्थेश पंचमभावमें गोपुरादि भंशमें गयाहोवे तो बहुत जमीनवाला (बडानगरिदार) होते १०६

क्षेत्राप्तियोग.

बलिन्यङ्गेशोम्बुगे बलिन्यम्बुपेङ्गे शुभदृष्टयोगे स्वपराक्र-
माक्षेत्राप्तिः १०७

आटपेण तत्कारकेण वा युते तुर्येशे आतृतःक्षेत्राप्तिः १०८

स्त्रीकारकेम्बुगे क्षेत्रपेयूने तयोर्मैत्र्यां कलत्रतःक्षेत्राप्तिः १०९

पष्टेशेतुर्ये तत्पेपष्टे पष्टेशतःक्षेत्रपेधिकबलेशत्रुतःक्षेत्राप्तिः ११०

गेहेशेस्वराशौ बलिन्युपचयगेशुभदृष्टे बहुक्षेत्राप्तिः १११

टीका—बलबाह्यलग्नेशमुखभावमें, और बलबाह्यचतुर्थेश लग्नमें गया होवे शुभग्रहसे युत दृष्ट होवे तो अपने पराक्रमसे जमीनकी प्राप्ति होवे १०७

तृतीयभावके स्वामीसे अथवा तृतीयावकाशकारक (मंगल) से चतुर्थ भाव का स्वामी युत होवे तो भाईसे जमीनकी प्राप्ति होवे १०८

स्त्रीकारकग्रह [शुक्र] मुखभावमें और मुखभावका स्वामी सातमें भावमें गया होवे यें दोनो परस्पर मिश्रग्रह होवे तो स्त्री से अथवा स्त्रीके संबंधसे जमीनकी प्राप्ति होवे. १०९

छठे भावका स्वामी चतुर्थ भावमें और चतुर्थ भावका स्वामी छठे भावमें गया होवे छठे भावके स्वामीसे चतुर्थेश अधिक बलवाह होवे तो शत्रुसे जमीनकी प्राप्ति होवे ११०

चतुर्थेश स्वराशिकांशों में और बलवाह होकर ३६।१०।११में भावमें शुभग्रहसे दृष्ट हो के गया होवे तो बहुत जमीनकी प्राप्ति होवे १११

क्षेत्रादिनाशयोग

गेहेशेनीचारातिमूढगेपापान्तरेपापदृष्टेक्षेत्रादि नाशः ११२

पापान्तरे कुजे पापदृष्टे क्रूरशिक्षेत्रादिनाशः ११३

तुर्येशे क्रूरपृथ्वेशे तुर्येपापे क्षेत्रादिनाशः ११४

तुर्येशेविके क्षेत्रादिनाशः ११५

गेहेरोये सशोपे नीचारिभे क्षेत्रादिनाशः ११६

कर्मेशुगे सशोपे क्षेत्रनाशः ११७

क्रूरमृत्युयमापंशे सपेमुसे क्षेत्रनाशः ११८

सेससुधेशुगे राजकोपात् क्षेत्रनाशः ११९

वित्तेशोरोराशिश्चरेणसहितेऽपानेशुगे राजकोपात्
क्षेत्रनाशः १२०

टीका—चतुर्थेश नीच शत्रु राशीका भयका भस्ममहोये पापग्रहोंके
पीचमं और पापग्रहोंसे दृष्टहोये तो जमीनजायदादका नाशहोवे ११२
पापग्रहोंके मध्यमें मंगलगयाहोवे पापाग्रहोंसे दृष्टहोवे और क्रूरग्रहकी
राशिकेनवांशमें होवेतो जमीनजायदादका नाशहोवे ११३

चतुर्थेश क्रूरपृष्ठार्धेश (पापपृष्ठार्धेश) महोये और चतुर्थस्थानमें
पापग्रहगयाहोवेतो जमीनजायदादका नाशहोवे ११४

चतुर्थेश ६।८।१२में भावमेगयाहोवेतो जमीनशरीराका नाशहोवे ११५

चतुर्थेश धनभावमें पापग्रहसे युतहोवे नीच तथा शत्रुराशि
गयाहोवे तो जमीन जायदादभांदि सम्पत्तिकानाशहोवे ११६

दशमभावका स्वामी पापग्रहसे युतहोके चतुर्थभावमें जावेतो जन्म
नका नाशहोवे ११७

क्रूर, मृत्यु, यम, आदि दुष्टपृष्ठार्धेशमें गयाहुवा दशमभावकास्वा
चतुर्थभावमें गयाहोवेतो जमीनका नाशहोवे ११८

सूर्य और चतुर्थभावकास्वामीयेदोनो दशमें भावमेगये होवेतो राज
के कोपसे जमीनका नाशहोवे (राजाजमीननष्टकरलेवे) ११९

धनेश के नवांशका स्वामी जिसराशिके नवांशमें होवे उसकेस्वामी
से और पापग्रहमें चतुर्थभावका स्वामी युतहोये तो राजाके कोपसे
जमीनका नाशहोवे १२०

भूमिविक्रेतायोग.

गेहेरोतुङ्गे थैशोपापेनीचारिभे भूमिविक्रेता १२१

टीका—चतुर्थेश उच्चराशिमें और नीच तथा शत्रु राशिमें गयाहुवा

धनभावका स्वानि पात्रग्रहद्वारे तो मनीन केवने चालाहोवे १२१

पुत्रनमित्रतायोग.

सुताङ्गेशमित्रत्वे पुत्रोमित्रम् १२२

टीका-पुत्रमेश और लग्नेशके मित्रताहोवेतो पुत्रसे मित्रतारहे १२२

स्वातन्त्र्ययोग.

धूनाङ्गेशमित्रत्वे स्त्री मैत्री १२३

टीका-धूनामेश और लग्नेशके मित्रताहोवेतो स्त्रीसे मित्रतारहे १२३

वहननमैत्रीयोग.

सुखाङ्गेशमित्रत्वे बहुजनमैत्री १२४

सुखेशुभदृश्याधिक्ये बहुजनमित्रता १२५

टीका-सुखेश और लग्नेशके मित्रताहोवेतो बहुत मनुष्यो से मित्रताहोवे १२४

चतुर्थ भाग पर शुभग्रहोंके दृष्टि अधिकहोवे तो बहुत जनोंसे मित्रताहोवे १२५

सुहृन्मित्रयोग.

द्वयोर्मित्रक्षेत्रगयोः सुहृन्मित्रः १२६

टीका- के हनी दोमित्रक्षेत्रगयोः मित्र होवेतो मित्र का पालन करने चालाहोवे १२६

वन्धुपूज्ययोग.

सुखेमौम्ये मौम्यदृष्टे सुखकारकेचालिनि वन्धुपूज्यः १२७

गोहेमौम्ये गोहपे शुभदृष्टे जावदृष्टे वन्धुपूज्यः १२८

तुर्येस्वाधे स्वमित्रमे वा खेदः गुरुदृष्टे वन्धुपूज्यः १२९

श्रीमस्त्वर्क्षगै वन्धुपूज्यः १३०

टीका-चतुर्थ भाग में गयादृष्ट शुभग्रह शुभग्रह से दृष्टहोवे और शुभकारक [चंद्र पुत्र] पर वरुण होवेतो वन्धु वर्गका पूज्य (माननीय) होवे १२७

चतुर्थ भाग में गुरुग्रह होवे चतुर्थ भागका स्वानि शुभग्रह से दृष्ट और गुरु से दृष्टहोवे तो वन्धु वर्गका पूज्य (माननीय) होवे. १२८

कोई भी छह चतुर्थ भागमें अपनी दंड, रण, अथवा मित्र राशिमें गया होवे और गुरु से दृष्टहोवे तो बन्धु वर्ग का पूज्यहोवे १२९

कोई भी तीनगढ़ अपनी स्वराशि में गयेहोवे तो बंधु वर्ग का पूज्य होवे १३०

बन्धुपकार कर्ता योग.

केन्द्र कोणे सुखेगे वैशेषिकांगे पापदृष्टयोगहीने बन्धु
कारकत् १३१

तुर्पे सौम्याःपन्धुपकारकत् १३२

धनेशे लाभत्रिकोणे गेहेशुभदृष्टे बन्धुपकारकत् १३३

गेहेशे केन्द्रे शुभांगे बन्धुपकार कृत् १३४

चतुर्प महेषु सुदृष्टेद्वयेषु बंधुपाप्यः १३५

टीका—वैशेषिकांश में गयाहुवा चतुर्थेश केन्द्र कोण [१४५१७५] स्थानमें गयाहोवे और पापग्रहों से युक्त दृष्ट नहीं होवे तो बन्धु का उपकार करने वाला होवे १३१

चतुर्थभावमें अभिकशुभग्रह (गुरु गुरु शुक्र) गये होवे तो बन्धु का उपकार करने वाला होवे १३२

धनभावका स्वामी नवमपांचमे अथवा लाभभावमें गयाहोवे और चतुर्थभावशुभग्रहसे दृष्टहोवे तो बन्धुजनपर उपकार करनेवाला होवे १३३

चतुर्थभावका स्वामी शुभग्रहके नवांशमहोवे और केन्द्र [१४५१७५] स्थानमेंगयाहोवे तो बंधुजनपर उपकारकरने वालाहोवे १३४

कोईभी चारगढ़ अपने मित्रग्रह की राशिमेंगयेहोवेतो बंधुजन के पोषणकरने वालाहोवे १३५

बंधुभिस्त्यज्यतेयोग.

तुर्पे क्रूरपष्ठचंशेत्पवीर्ये बन्धुभिस्त्यज्यते १३६

—चतुर्थेश पापग्रहसे युक्तहोवे क्रूरपष्ठचंशमेंहोवे औरभस्त्रवर्ज अथवा नीच शत्रु राशिमें गयाहोवेतो बन्धुजननोसे त्यागा
१३६

बन्धुमध्येकुत्सितयोग

धुनाथे बहुपापयुते तथैव कारके बन्धुमध्ये कुत्सितः १३७
का-चतुर्थेश बहुत पापग्रहोसे युतहोवे और चतुर्थभावका कारक
(बुध) भी बहुत पापग्रहोसे युतहोवे तथाचतुर्थ भावभीपापयुतहोवे
बन्धुनो मे निन्द्यहोवे १३७

बन्धुद्वेषायोग

पापक्षेतुयें नीचास्त खगयुते शुभदृग्योगहीनेबन्धुद्वेषा १३८
का-चतुर्थभावमे पापग्रह की राशहोवे औरउसमे नीच भस्त्र
मेगयाहुवा ग्रहयुतहोवे किसीशुभग्रहसेयुत दृष्टनहीं होयेतों बन्धु
का द्वेषीहोवे १३८

पर्यदृश्यापीयोग.

अन्त्येदोशुभ सम्बन्धे शुभवर्गे स्वोक्तेना पर्यदृश्यापी १३९
अप्येषोपापपिशुभवर्गे शयनसुखम् १४०

का-बारये भायकास्वामी शुभग्रहसेतंचय (संज्ञानंघ्रमुत्र ६४मकहे
मे) करताहोवे शुभग्रहोके दशवर्गमेंहोवे भयवा अपनी दशराशि
माहोवे तो पलंगपर शयनकरनेवाला (उसनशयनसुखवा]
१३९

अप्येषभायकास्वामि पापग्रहहोवे और यदियहशुभग्रहो के वर्गमे
होवे तो शयनकामुख अच्छाहोवे १४०

शयनसुखाभावयोग

अप्येषोपापसम्बन्धे शयनसुखाभावः १४१

अन्त्येदोशुभके शयनसुखाभावः १४२

नीचेद्वेषो शयन सुखाभावः १४३

देहोमन्दमान्यगुयुते शयनसुखाभावः १४४.

इतिचतुर्थविवेकः

टीका-अप्येष प्रापग्रहसे सम्बन्धकरताहोवेतो शयनकामुखनहीं
१४१

लग्नेशभिक (६।८।१२) स्थानमें गयाहोवे तो शयनका सुखनहीं होवे १४२

लग्नेश भीमराजी का होवे तो शयनका सुखनहीं होवे १४३

लग्नेश शानि शुभिक तथा राहुसंयुतहोवे तो शयन का सुखनहीं होवे १४४

इसकोसिवाय भाईकेधनकाविचार पुत्रकाव्यय, पुत्रका सुसाधती पुत्रकाशयनसुख, स्त्री का पिता, सालिककीस्त्री, हृदय, दांदाकोराग्य मानव्यपार, दादीपी माताका सुख, दत्तकजानेकाविचार भादिविषय भीवतुर्थभाषसेदेखना ।

इतिचतुर्थविधेकस्यटीकासमाप्ताः

अथपञ्चमविधेकः ।

बुद्धिमानयोग.

सुतर्जेशुभे शुभदृष्ट युते बुद्धिमान् १

सुतेशेतुङ्गे वा शुभान्तरे बुद्धिमान् २

गुरौकेन्द्रे कोणे बुद्धिमान् ३

शुभमे सुतेशे सुतेर्जावे बुद्धिमान् ४

के सुते वा सुतेशे बलिनि केद्रे वा बुद्धिमान् ५

टीका—पंचम भाषमें शुभग्रह की राशी शुभमइसे युनदृष्ट-होवे तो बुद्धिमान् होवे १

पंचम भावका स्वामि भर्पनी दृष्टराशिमें गयाहोवे अथवा शुभग्रह के मध्यमें होवे तो बुद्धिमान् होवे २

गुरु केन्द्र कोण [१।४।७।१०।१५] स्थानमें गयाहोवे तो बुद्धिमान् होवे ३

पंचमश शुभग्रहकीराशि [३-६।२-७।९-१२।४] इनराशि योमेंसे कोई भीराशि] मेंगयाहोवे और पंचम भावमें गुरु होवे तो बुद्धिमान् होवे ४

बुध पंचमे भाषमें गयाहोवे १ भयवा पंचमेशबलवानहोवे २ भयवा पंचमेश बलवानहोके केन्द्रमें गयाहोवे ३ तो बुद्धिमान होवे ४ विशेष बुद्धिमान योग.

पुत्रेशे केन्द्रे शुभान्विते धारणादिपटुः ६

सुतेशे कारके मृदंशादियुते शुभद्वययुते धारणादिपटुः ७

सुतेशे गोपुरादी धारणादिपटुः ८

सुतकारके गोपुरादी पराङ्गितज्ञो मेधावी ९

टीका-पंचमेश केन्द्र (११५७१०) स्वानमें शुभग्रहसे युत होवेतो धारणादिपटु [कोईभीबात भेककरुन सुनलेनसे पावे रखने समझने भादिमे विशेषचतुर बुद्धिवाला] होवे ६

पंचमेश और पंचमका कारक [गुरु] मृदुभाविशुभपटुर्घशमे होवे और शुभग्रहसे दृष्टहोवे तो धारणादिपटु होवे ७

पंचमेश गोपुरादि अंशमें होवेतो धारणादिपटु होवे ८

पंचमका कारक [गुरु] गोपुरादि अंशमें होवेतो दूसरेके अभिप्राय की उसकीचष्टा परसेहीसमझलेने वाला और मेधावी (धारणादिवि- बुद्धिवाला) होवे ९

शिषोत्तरदानशीलयोग.

ज्ञेयद्वाराणा मुपरि बलिग्रह दृष्टो शिषोत्तरदानशीलः १०

टीका-बुध चंद्र और मंगल इनतीनाग्रहोपर बलवान शुभग्रहका दृष्टि होवेतो हातरमबाव (मुतउचिन जराबरेनेवाला) होवे १०

चंचल धी योग.

लग्न कोणे चन्द्राकौ चंचलधीः ११

केन्द्रे जीवे चंचलधीः १२

सौम्येय्ये ऽपले पादद्वे चंचलचित्तः १३

टीका-लग्नमें तथा ९१५ भाषमें रवि चंद्र गयेहोवेतो चंचल बुद्धि वालाहोवे ११

केन्द्र स्वानमें गुरुगयाहोवे तो चंचल बुद्धिवालाहोवे १२

धनभायमे युध निर्बलीहोके गयाहोवे और बह पापघटसे दृष्टहोवे
 चलचित्त [अस्थिरचित्त वाला] होवे १३
 सात्विकयोग.

ससोत्थपे ज्ञे सात्विकः १४

टीका-तृतीय भाषके स्वामीसे युध युक्तहोवे तो सात्विक प्रज्ञा
 वाला होवे १४

मुषाक्षयोग

व्यपेरोक्ते सुषाक् १५

टीका-व्यपेक्ष लग्नमे गयाहोवे तो अच्छा सुंदर बोलने वाला होवे १५
 विस्मयशीलयोग.

त्रिके चन्द्रे शुक्र दृष्ट विस्मयलरीलः १६

सपापे सुतपे विस्मयलरीलः १७

धी कारके सपापे वा क्रूरपष्टपंदो विस्मयलरीलः १८

टीका-त्रिकस्थान [१८।१२] मे गयादृष्टा चंद्रमा, शुक्रसे दृष्टहोवे
 तो विस्मयण मुद्रिवाला होवे १६

पंचमेश वापघटसे युक्तहोवे तो विस्मयण मुद्रिवालाहोवे १७

मुद्रिकारक चंद्र (युध मुद्र) वापघटसे युक्तहोवे अवस्था मुद्रिवापघट
 क्रूरपष्टपंदमे गयाहोवे तो विस्मयण मुद्रिवाला होवे १८

हीनधीयोग.

छाने चन्द्रे मन्दारदृष्टे हीनधीः १९

सुतेरो क्रूरपष्टपंदो हीनधीः २०

मंदाराका मन्दं परवन्ति म. सूर्यकृपाः २१

टीका-लग्नमे गयादृष्टा चंद्रमा मन्दमंदल से दृष्टहोवे मुद्रिहीनहोवे १९
 पंचमेश क्रूरपष्टपंदमे होवना मुद्रिहीनहोवे २०

छानि मंदल और सूर्य पत्नीने मन्दमाफो देखने होवना मुद्रहोवे २१
 मद्रयोग

चन्द्रमा चन्द्रेण मुद्रिका ज्ञः २२

धनेगुलिकार्कौ पापदष्टौ वा सार्कजेसोत्थपेजडः २३

सपाप धनेशे खे सभाजडः २४

सतमसि सोत्थपे जडः २५

सुतेमन्दे लग्नेशे मन्ददष्टे सुवेशेसपापेजडः २६

गुलिकार्कजौसुते शुभयोगहीने जडः २७

सुतेजीवे भेधानाशः २८

टीका-शनिचंद्र और गुलिक येतीनों केन्द्र (११५७१०) में गयेहो-
पती जड़बुद्धि [महामूर्ख] होवे २२

धनभावमें गुलिक और सूर्य गयेहोवे इनदोनों को पापग्रहदेखतहोवे
१ भयवा तृतीयभावका स्वामि शनिसंयुतहोवेतो जड़बुद्धिहोवे २३

पापग्रहसेयुग्धनेश दशमे भावमें गयाहोवेतो सभामेजड़होवे अर्थात्
सभामेकुछबोलनहोसके २४

तीसरेभावका स्वामि राहुसे युत होवेतो जड़होवे २५

पंचमभावमेंगयाहुवा शनि, लग्नेश को देखताहोवे और पंचमेश
पापग्रहसेयुतहोवे तो जड़होवे २६

पंचमभावमें गुलिक शनिकायोग किसीशुभग्रहसेयुतनहींहोवे तो
जड़होवे २७

पंचमभावमें गुरुगयाहोवेतो भेधानाश (धारणावतिबुद्धिकानाश)
होवे २८

याज्ञिकयोग.

अंशेकेतीशुकमात्रदष्टेयाज्ञिकः २९

टीका-कारकांश लग्नेमे केतु केवलशुकसे दृष्टहोवे तो यज्ञादिकर्म
कांड करानेवालाहोवे २९

मांत्रिकयोग.

अंशात्कोणे पापद्वये मान्त्रिकः ३०

अंशात्कोणे पापद्वये पापदष्टोभूतादिनियहकर्ता ३१

अंशात्कोणेपापे शुभदष्टेनुग्राहकः ३२

टीका-कारकांशलग्नसे पांचमें और नवमें स्थानमें क्रमसे भेकं
पापग्रह दोनोस्थानमें गयेहोवेतोमांत्रिक (मंत्रवेत्ता) होवे ३०.

कारकांशलग्नसे नवमेंपांचमें दोनोस्थानमेंएकर पापग्रहगयंहोवे और
उनको पापग्रह देखते होवेतो भूत्रादिकों का नियम (प्रतिबंध)
करनेवालामांत्रिक होवे ३१

कारकांशलग्नसे नवमें पांचमेंस्थानमें गयेहुवेदोनो पापग्रह शुभग्रहसे
दृष्टहोवेतो लोकोपरमंत्रादिद्वारा अनुग्रह करनेवालाहोवे ३२
भिक्षुयोग.

अंशे जेन्दुशुकदृष्टे वा धनेभिक्षक् ३३

शुकेन्दुदृष्टे रसवादी ३४

सशुभराहृकर्षशेषापमुतौविषयेयः ३५

टीका-कारकांश लग्नको बुध, चंद्र, शुक ये तीनों ग्रहदेखते होवे ।
अथवा धनभावकों ये तीनोंग्रह देखते होवे तो भिक्षु (वैद्य) होवे ३३

कारकांशलग्न शुकचन्द्रसे, दृष्टहोवेतोरसायनका उपयोग करने
वाला रसवेद्य होवे ३४

कारकांशलग्न में राहु रवि, शुभ और पाप दोनो ग्रहोंसे दृष्ट
होवेतो विषवेद्य [विषका विशय उपयोग करनेवाला वैद्य] होवे ३५

लग्न, रवि, चंद्र, मंगल, और दशम भाव इन पांचोंमें से भेक ।
तीन किया पांचोहि वृद्धिक राशिमें अथवा वृद्धिक राशिके मन्त्रांश
किंवा वृद्धिकराशिमें गुगक अंशमेंगयहाव तथा अग्निराशिमें त
हस्तकला कुशलराशि [६] में तथा ३६ राशिके अंशमें होवेतो डाक्टर
होवेगा.

वैद्याकारणयोग.

अर्धमुतपो रंदाज्जीवे वैयाकरणः ३६

बलिनिगुरोवद्रेगे रविशुकदृष्टेशाब्दिकः ३७

१ मेषराशि ८-२०-२१ शरद ७-१७-२९ विपुल १-१८
२ मेष १-१८-२९ मिर ४-१६-२८ वृश्च १-१५-२७ पुष्य २-१०-२६
३ मेष ४-१३-२९ मघ १६-२४ मघ ११-२३ कुम्भ १०-२२ मी
९-२१ मी ७-२६ मी २६ कुम्भ ७-२६ मी २६

टीका—कारकांशलग्नसे धनभावमे तथा पांचमे गुरुगया होवेतो वैयाकरण होवे ३६

धनभावका स्वामी गुरु पूर्णबलवान् होवे और उसको रवि, शुक्र देखते होवतो वैयाकरण होवे ३७

मीमांशकयोग.

धनेसोत्थे शुतेशाज्ज्ञेज्यो मीमांसकः ३८

टीका—कारकांशलग्नसे दूसरे तीसरे तथा पांचमे स्थानमे बुध गुरु गयेहोवे तो मीमांशा शास्त्रज्ञ होवे ३८

तर्कज्ञयोग.

अंशात्सुतार्थसोत्थे जीवारौ तार्किकः ३९

जीवाच्छौधनेशोरख्यार दृष्टोतार्किकः ४०

जीवाच्छौतुङ्गस्वर्क्ष त्रिकोणगौ तार्किकः ४१

टीका—कारकांशलग्नसे दूसरे तीसरे तथा पांचमे भावमे गुरु मंगल गयेहांवेतो तर्कशास्त्री होवे ३९

द्वितीय भावका स्वामी गुरु भयवा शुक्र होवे और उसको रवि मंगल देखते होवेतो न्याय शास्त्री होवे ४०

गुरु और शुक्र ये दोनो अपनी उच्च, स्व, भयवा मलत्रिकोण राशिमे गये होवेतो न्यायशास्त्रज्ञ होवे ४१

सांख्यज्ञयोग.

अंगाद्धने पुत्रे सोत्थे जीवेन्दू सांख्यज्ञः ४२

टीका—कारकांशलग्नसे दूसरे तीसरे तथा पांचमे भावमे गुरु चंद्र गयेहोवेतो सांख्यशास्त्रज्ञ होवे ४२

गणितज्ञयोग.

अंशात्सोत्थे सुतेर्षे केतुजीवौ गणितज्ञः ४३

धनेभौमे शुभदृष्टे गणितज्ञः ४४

चंद्रारोधने तदृष्टो केन्द्रेष्टे वा कुजे गणितज्ञः ४५

धनेशोत्तेश्चोच्चै गुरोऽग्नेऽग्ने मेदे गणितज्ञः ४६

जीवेकेन्द्रकोणे स्वोच्चैशुकेज्ञैर्धेशो वा धने गणितज्ञः ४७

टीका—कारकांश लग्नसे दूसरे, तीसरे अथवा पांचवें भावमें केन्द्र और गुरु गये होयें तो गणितशास्त्र का जाननेवाला होवे ४६

धनभावमें मंगलगया होवे और वह शुभ ग्रहसे दृष्टहोवे तो गणितशास्त्रका जानने वालाहोवे ४७

धनभावमें चंद्र मंगल का योग होवे और उनको बुध देखताहोवे १ अथवा केन्द्रस्थानमें बुध किंवा मंगल गयाहोवे तो गणित शास्त्रका जाननेवाला होवे ४८

धनभावका स्वामि बुध अपनी उच्चराशि (कन्या राशिमें १५ भाग तक) में, गुरुलग्नमें, और शनि भाठमें भावमें गयाहोवेतो गणित शास्त्र जानने वालाहोवे ४९

गुरुकेन्द्र त्रिकोणस्थानमें शुक्र अपनी उच्चराशि (मीन) में और बुध धनभावकास्वामीहोवे वा धनभाव में गया होवे तो गणितशास्त्र जाननेवाला होवे ५०

जिसके गणितज्ञ योग होताहै वह गणितका जाननेवाला ज्योतिषी अथवा गणितशास्त्री किंवा हिसाबतपासनेवाला [भकाउन्टेन्टमन वा इंजनियर, भावरसीयर, सेटलमेन्टभाफीसर, रेंवेइग्युभाफि साइन्सजाननेवाला, पैमायशजाननेवाला, रीकड़्या, खमानची, विवरखनेवाला, जमाखर्चनविश, आदि गणितसे संबंधरखनेवालेका] से ग्रहयोग के बलाबल तारतम्यभेदके अनुसार कोईभी गणितका करनेवाला होंगेगा ।

ज्योतिर्विद योग.

ज्ञाच्छौ सोत्यार्थगौ ज्योतिर्विदांभेष्टः ४८

धनेशेशलिनि केन्द्रायकोणेज्ञे ज्योतिर्विदांभेष्टः ४९

स्वोच्चैधनेजीवे ज्योतिर्विदांभेष्टः ५०

टीका—बुध शुक्र का योग दूसरे तथा तीसरे भावमें होवे अथवा दोनोमें से एक दूसरे और दूसरा तीसरे भावमें गयाहोवे तो ज्योतिषी होवे श्रेष्ठहोवे ४८

धनभावका स्वामि यलवाह होवे और केन्द्रत्रिकोण स्थानमे पुष्य
पा होता उद्योतिर्विदोमे भेष्टहोवे ४९

सद्यताशी (कर्क) का गुरु धनभाषमें गयाहोतो उद्योतिर्विदोमे
उत्तम उद्योतिषी होवे ५०

सर्वाधमें एक यह मी योगलिखाहै कि धनभावका स्वामि सूर्य वा
मंगल होवे और यह गुरु शुक्र से दृष्टहोवे पुष्य पारावर्ताशमे गया होवे
तो उद्योतिष की मुक्ती जाननेमे उत्तरहोवे ५१

भविष्यवत्तयोग.

धीकारके केंद्र कोणे शुभदृष्टे भविष्यद्वत्ता ५१

टीका-धुत्तिकारकग्रह (गुरु) केन्द्रत्रिकोणस्थान में गयाहोवे और
शुभदृष्टसे दृष्टहोवेतो भविष्यफल कहनेवाला उद्योतिषीहोवे ५१

त्रिकालज्ञयोग.

जीवेस्वामिपुद्गरो त्रिकालज्ञः ५२

जीवेगोपुरे शुभदृष्टे त्रिकालज्ञः ५३

टीका-गुरु भवनि स्वराशी ९११२ केनवांशमेहोवे और मृदुसंज्ञकभंग्रमे
गयाहोवेतो त्रिकालज्ञ (भूत भविष्य वर्तमान त्रिनोकाष्ट के फल जानने
वाला) उद्योतिर्विद् होवे ५२

गुरु गोपुरांशमे गयाहोवे और शुभदृष्टसे दृष्टहोवे तो भूत भविष्य
वर्तमान काष्टका फल जाननेवाला त्रिकालज्ञ होवे ५३

वेदांतसंगीतज्ञयोग.

अंशान्तेपुत्रेसोत्थे जीवाकौवेदांत संगीतज्ञः ५४

टीका-कारकांश अन्तसे दूसरे तीसरे तथा पांचमें भाषमें गुरु सूर्य
गये होवे तो वेदान्त शास्त्र और संगीतशास्त्र (नाचन शास्त्र) जानने
वाला होवे ५४

वेदांतज्ञयोग.

पनेयेत्तेतुंगे गोपुरेर्कजे सिंहासनेजीवेच वेदान्तज्ञः ५५

पाराववेपन्दे जेन गुरोदृष्टे वेदान्तज्ञः ५६

केंद्रकोणेजीवे वेदान्तज्ञः ५७

५८ उत्तमांशे भृंगौलग्ने वेदान्तज्ञः ५८

देवलोकेचंद्रे उत्तमांशेभृंगौकेन्द्रे वेदान्तज्ञः ५९

कोशंगेशे कोशेशे पारावते वेदान्ती ६०

स्वोच्चंगेशे कोशेशे पारावते व्ययेशुकेवेदांती ६१

टीका-धनेशपुत्र भवनी उच्चराशि (कन्याके १५) में, शनि गोशरांशमें, और गुरु सिंहासनाशमें, गयाहोये तो वेदांत शास्त्र जानने वाला होये ५५

परायतांशमें शनि होये और गुरुको बुध देखता होवेतो वेशम शास्त्रज्ञहोये ५६

गुरु केन्द्र त्रिकोण स्थानमें गयाहोये तो वेदान्त शास्त्रज्ञ होये (इत योगमें यदि गुरु स्व, उच्च वा मित्र राशिकाहोयेतो योग मिलेगा) ५७

उत्तमांशमें गयाहुवा गुरु लग्नमें गयाहोये तो वेदान्त शास्त्र जानने वालाहोये ५८

देवलोकांशमें चंद्रमा, और उत्तमांशमें गयाहुवा गुरु ये दोनों केन्द्र स्थानमें गयेहोये तो वेदान्त शास्त्र जाननेवाला होये ५९

लग्नेशपनमें और धनेशगगतांशमें होये तो वेदांती होये ६०

अवनि उच्चराशि में गयाहुवा बुध लग्नमें, और पारावतांशमें, गयाहुवा धनेश गुरु वारमें भावमें गयाहोये तो वेदान्तीहोये (ये योग पन्था लग्न में लग्नहोये उसके दियेगा) ६१

प्रत्यनिष्टयोग.

सोरोखेलोके शुभदृष्टे प्रत्यनिष्टः ६२

भाग्येन पागवते शुभदृष्टे प्रत्यनिष्टः ६३

टीका-लग्न भावका स्वभि देवलोकांशमें गयाहोये और वह शुभ दृष्टने दृष्टहोये तो प्रत्यनिष्टहोये ६२

भाग्य भावका स्वभि पारावतांशमें होये और वह शुभ दृष्टने दृष्टहोये तो प्रत्यनिष्टहोये ६३

कवियोग.

स्वर्गमेकविः ६४

लाभेशे लाभेकविः ६५

टीका-दशमेभावका स्वामि लग्नमे गयाहवे तो कवि (कविता करने वाला) होवे ६४

लाभेश लाभ भावमे होवेतो कविहोवे ६५

विदुषारंजकः

सारेज्ञे शुभर्क्षे विदुषां रञ्जकः ६६

ज्ञारौमंक्षे कंदष्टौ राजविदुषो रञ्जकः ६७

टीका-शुभघटकी राशीमें बुध मंगल का योग होवेतो विद्वानोंको प्रसन्न करने वाला होवे ६६

शनिकी राशि (१० वा ११) में गणहूये बुध मंगल को सूर्य देखता होवेतो राजा और विद्वानोंको प्रसन्न करने वाला होवे ६७

इन दोनों योगों में मंगल बुध का योग का स्थान नही बताया है परंतु यदि ये योग धन अथवा पंचम भावमे होवेतो अधिक बलवार होवेगा ।

विद्वान. तथा पंडित योग.

बलीसुतेश केन्द्रकोणे विद्वान् ६८

धनेलाभेक्षेशे पण्डितो धर्मवित् ६९

स्वलाभेसुतेशे पंडितः ७०.

टीका-स्व, उच्च, मित्र राशिमें गयाहुवा बलवार पंचमेश केन्द्र वा त्रिकोण (१४।७।१०।११) स्थानमें गया होवेतो विद्वानहोवे ६८

लग्नेश धन में अथवा लाभ भावमें गया होवे तो धर्मका जानने वाला पण्डित होवे ६९

पंचमेश दशमें अथवा लाभ भावमें गयाहोवे तो पण्डितहोवे ७०

पट्टशास्त्रवद्धमयोग.

केन्द्रेजांवे सिंहासनेशुके धनस्याभांशे शेगोपुरे पट्टा-
स्रवधमः ७१

कोशेशस्यानेश्वराशेरोमंदे वा भौमेसपापे केन्द्रकोणे
पट्टास्रवधमः ७२

सूर्याशेरो वैशेषिकांशे बलिन्त्यर्थे पट्टास्रवधमः ७३
गुरोबलिन्त्यर्थेधने शांशेरोकेन्द्रे शुभदृष्टे पट्टास्रवधमः ७४

टीका—गुरुकेन्द्रस्थानमें, शुक्रसिंहासनांशमें, और धनभावमें जो राशि
होवे उसराशिके नवांशमें गयाहुवा शुभ गोपुरांशमें होवेतो पट्टास्रका
जामनेवाला विद्वान् होवे ७१

धनेश जिसराशिके स्थितहोवे उसके स्वामिका नवांशका स्वामि
दानि भयवा मंगल होवे और वह पापग्रहसे युतहोकर केन्द्र त्रिकण
(१४४/७१०१९५१) स्थानमें गयाहोवे तो यहाँ शास्त्रोंके जाननेवाला
विद्वान् होवे ७२

सूर्य जिसराशिके नवांशमें हो उसका स्वामि वैशेषिकांशमें गया
होवे और धनभाव बलवान् (अग्नेस्वामि वा शुभग्रहसे युत) होवेतो
पट्टास्रज्ञहोवे ७३

स्व, बच्च, मित्र राशिके नवांशमें गयाहुवा बलवान् गुरु धनभावमें और
धनेशके नवांशका स्वामि केन्द्रमें शुभग्रहसे दृष्टहोवे तो पट्टास्र वक्त
विद्वान् होवे ७४

मध्यकर्तायोग.

अंशात्सुते सपापौ चंद्रेज्यौ ग्रंथरुत् ७५

टीका—कारकांश लग्नसे पांचमे भागमें पापग्रहसे युत केन्द्र गुरु गये
होवेतो मध्यकर्ताहोवे ७५

शूद्रोपि विद्वान् योग.

पञ्चादिपदेः सहितेज्ये शुकेक्षिते शूद्रोपिविद्वान् ७६

टीका-राहु भयवा केतु भोरगनिसें युतमुरु शुक्रसे दृष्टदो वों
शुद्धजातिमे उत्पन्नहुवा हो तोभी विदार होवे ७६
सर्वविद्यायोग.

चंद्रात्कोणेजिवे ज्ञात्कोणेपेपे सर्वविद्याः ७७

टीका-चन्द्रमासे १-५ भावमें गुरु और शुभसे १-५ भावमें मंगल गयाहोवो सर्वविद्या माननेवाला होवे ७८

इंध्रेजी पारसी भरषी बिद्यायोग.

पञ्चमेरविनामधौमे कविर्मदतमाभवि पापग्रहेण संहृष्टाविद्या
तास्रपुत्री भवेत् । लग्नस्थितोविज्ञानायः मुतेग्रेपापसंपुते पञ्चमेभक्ते
पावः पारसी मारधी पठेत् २ ज्योतिषदयाम संपद्य पत्र १०२

उपेतिपदग्रामसंग्रहमें लिखाहै कि—रविसँ पाँचमें भावमें मंगल शुक्र, शनि, और राहु इनचारों में से कोईभी भेक, दो वा तीन ग्रह गयेहो और पापग्रह से दृष्टहो तो ईप्सजी बिद्या जानमें बाझाहोवे । लग्नमें चंद्रमाभावे पंचमभाव और पंचमेशपापग्रहसे दृष्टहोवेतो पारसी भधवा भरणी बिद्या जानमेंबाझा होवे । ३

भजन, बेरिस्टर, फ्रीडर, किंवा बकीरु योग:

धुइलीविज्ञाननेलिखाहैकि-जिनके जन्मलग्नमें १-७२-८१५-११३-९
स्थानमें से कोईभी स्थानमें गुरु और शनि एकराशिमें अतिसमीप के
अंशोंमें गयेहोवे १ अथवा परस्पर (शनि से गुरु) सातमे स्थानमें
गयेहोवे २ अथवा परस्पर नवमें पांचवे स्थानमें दण्डोक्त भावोंमें
गयेहोवे ३ और मेष, तुल, मिथुन, धन, कुंभ, किंवा सिंहराशिके हों
तो जन्म, बेरिस्टर, सोलिसीटर, प्लॉटर किंवा वकील, वीए, एल.
एल. बी. अदि वैधीपरिक्षामेपास कियाहुना मनष्य होवे ।

मेरा गुरु ज्ञानि के योग का बल है मेराही ज्ञानि बुध के योगका भी बल उपरोक्त स्थान और राशी में गुरु ज्ञानिकी स्थितिके समान हो ता होनाहै परंतु ज्ञानि और बुध इनकायोग बलदायकताके लिये उन्नत नहींहोता कारण यह है कि बुध बाणीकारकग्रहहै उसका ज्ञानिसे योग होनेको मनुष्य अच्छा बला होनेवालाहोही इसलिये जिसके जन्म

“ જીવિસે વાલણેને મ દોને કા કમલ જાવનારો તો રુકવે બિંદી ” - જીવિ
રિવાજો ” દુલ્હન મેંજ રેલિલે ।

कुण्डलीमे ये योग होताहैवद् गकील भस्मभाषी होताहै ।

उपरान्त (गुरु शनि वा वृष शनि) ग्रहोंका योग पंचमस्थान में स
शान्तम होताहै ९ मेस्थानमें हो तो मध्यम और लग्नमें वा धनभाषने
होतो कनिष्ठ होताहै ।

सभामूकयोग.

तुर्परेणैस्ते पंडितोपि सभामूकः ७८

टीका—चतुर्थेश लग्न. भवशा सप्तम भावमें गया होतो पंडित होते
हुवे भी सभामे मूककेसनान होगावे अर्थात् सभामें बोलनही सके
(सभाक्षोभ होगावे) ७८

भनपत्ययोग.

विषियाः सर्वे नपत्यता ७९

टीका—सर्वग्रहनिर्बली (नीच, शत्रु, राशीमें, वाभस्तंगत तथा १।
८।१२ स्थानमें गये हो वा केशवामे कड़े हुवे बद्धबल में हीन बली) हो
तो पुत्र किंवा पुत्री कोई भी संतान नहिं होवे (संतान रहित होवे) ७९

गर्भानुत्पादयोग.

लग्नेर्के स्तेमन्दे वा घूर्नेर्कशनी स्वेजीवदृष्टे गर्भानुत्पादः ८०

मन्दारौ पष्ठे वा तुर्ये गर्भानुत्पादः ८१

सारीशो र्कजः पष्ठे चन्द्रे चास्ते गर्भानुत्पादः ८२

टीका—लग्नमें सूर्य, और सातमें शानि गया हो १ अथवा सातमें
भावमें रावि शनी गये हो और दशमें भाव का गुरुदेखता हो तो गर्भ
ही उत्पन्न नहिं होवे (गर्भोत्पत्ति भी नहिं होवे) ८०

छठे अथवा चतुर्थ भावम शनि मंगल का योग हो तो गर्भोत्पत्ति
भी नहिं होवे ८१

छठे भाव का स्वामी और शनी येदोनो छठे भावमे जावे और सात
में भावमे चंद्रमा गया हो तो गर्भोत्पत्ति भी नहिं होवे ८२

गर्भच्युतियोग.

सुतपापपुतदृष्टे गर्भच्युतिः ८३

पुत्रस्थनर्वाशो यावत्पापदृष्टः शुभादृष्ट स्तावद्गर्भपातः ८४

टीका-पंचमभाव पापग्रह (मू. मं. श. रा. के. ह. ने. और इनसे युत बुध) से युत और दृष्ट हो तो गर्भपात हो जावेगा ८३

पंचमभावमें जिसराशी का नवांश होवे उसराशीको यदि कोई शुभग्रह देखता नही हो तो जितने पापग्रह देखते होवे उतनेही गर्भका नाश [पात] होवे ८४

सर्पशापादिपुत्रयोग.

सुतेराहौ भौमदृष्टे भौममे वा सर्पशापादिपुत्रः ८५

यमेसुते चन्द्रदृष्टे सुतेशेराहुयुते सर्पशापादिपुत्रः ८६

सराहौपुत्रकारकेपुत्रेशेऽबलेभौमगिशौयुतौसर्पशापादिपुत्रः ८७

सुतकारकेस्तारे राहंगे पुत्रेशेत्रिके सर्पशापादिपुत्रः ८८

पुत्रेशेने सारेकुजरि राहुभादियुते गेचसर्पशापादिपुत्रः ८९

सुतेशेभौमे सुतेराहौ सौम्यदृष्टे सर्पशापादिपुत्रः ९०

सुतागिशौषिवलौ सक्षेज्यासुतेपापाः सर्पशापादिपुत्रः ९१

लग्नेशेराहुयुते पुत्रेशेभौमयुते कारकेराहुदृष्टे सर्पशापा-

दिपुत्रः ९२

टीका-पंचम भावमें गयाहुवा राहु मंगल से दृष्ट हो किंवा पंचमभावमें मंगलकी (मेष, वृश्चिक) राशीमें राहुगया हो तो सर्पके शापसे पुत्रनही होवे ८५

पंचम भावमें गयाहुवा शानि चन्द्रसे दृष्ट हो और पंचमेश राहुसे युत हो तो सर्पके शापसे पुत्रहीनहोवे ८६

पुत्रकारकग्रह [गुरु] राहुसे युत हो, पंचमेश निर्बली हो, और लग्नेश मंगलसे युत हो तो सर्प के शापसे पुत्रराहितहोवे ८७

पुत्रकारकग्रह [गुरु] मंगलसे युत हो लग्नेशेराहु, और पंचमेश १।८।१२ भावमें गया हो तो सर्प के शापसे पुत्रहीनहोवे ८८

पंचमभावका स्वामि बुध, मंगल से युत हो कर मंगलके ही नवांशमें गया हो और राहु शुक्रिक लग्नेसे गयेहोवेतो सर्पके शापसे पुत्रहीन होवे ८९

पंचमभावका स्वामि भंगलहोवे और पंचम भावमे गयाहुआ छ
घरसे गुन किंवा दृष्टहो तो सर्पके शापसे विमुक्तहोवे ९०

पंचमेश और लग्नेश ये दोनो निर्बलहोवे पंचमभावमें सर्वगन्ध
मुप गुरु से युत होकर गयेहो (पंचमें २. मं श. रा. पु. गु. गंधहोवे)
तो सर्पके शापसे पुत्रहीनहोवे ९१

लग्नेश राहुसे व पंचमेश भंगलसे युतहो और पुत्रकारकजह [गुरु]
राहुसे दृष्टहो तो सर्पके शापसे पुत्रहीनहोवे ९२

पितृशापादिपुत्रयोग.

पुत्रपेके कूरांतरे त्रिकोणेष्वयुतदृष्टे पितृशापादिपुत्रः ९३

सुतेकेपापान्तरे मन्दाशेनीचगे पितृशापादिपुत्रः ९४

सिंहज्ये पुत्रशेकेयुते पुत्राङ्गुगौपापो पितृशापादिपुत्रः ९५

सूपेरन्ध्रेसुतेमन्दे पुत्रेशोराहुयुते पितृशापादिपुत्रः ९६

व्यपपेक्षेरन्ध्रेपुत्रे स्वपेरन्ध्रे पितृशापादिपुत्रः ९७

टीका—पंचमभावका स्वामि सूर्य ९ में तथा ९ में भावमें पापग्रहोंके
षचिमे गयाहो और पापग्रहोंसे युतदृष्टहो तो पितृकेशापसे पुत्रहीन
होवे ९३

पंचमभावमे नीचराशिका सूर्य, शनिके नवांशमे (तुल राशीके ४-९
में नवांशमे) गयाहो और पापग्रहोंके मध्यमे स्थितहो तो (पितृ)
के शापसे पुत्रहीन होवे ९४

सिंहराशिमें गुरुगयाहो, पंचमेश सूर्यसे युतहोवे और पंचमभाव
व लग्नमे पापग्रहगये होतो पितृकेशापसे पुत्रनहींहोवे ९५

आठमेंभावमें रवि, व पंचमभावमे शनि, गयाहो और पंचमेश रा
से युतहो तो पितृकेशापसे पुत्रनहींहोवे ९६

चारवेंभावका स्वामि लग्नमे, अष्टमभावका स्वामी पंचम भावमें भी
दशमभावका स्वामी आठमेंभावमे गयाहो तो पितृके शापसे पुत्र
हीनहोवे ९७

मातृशापादिपुत्रयोग.

पुत्रपेचन्द्रेनीचगेवापापान्तरेसुताङ्गुगौपापोमातृशापादिपुत्रः ९८

लाभमेन्दे तुर्येपाषाः पुत्रेनीचगेचन्द्रे मातृशापादिपुत्रः ९९.
 सुतेशोत्रिके लग्नेशेनीचेपाषयुतेचन्द्रेमातृशापादिपुत्रः १००
 सुतेशेचन्द्रे मन्दराब्हारयुते मातृशापादिपुत्रः १०१
 सुखेशोभौमेराब्हर्कजयुतेलग्नेपुण्यवन्तौमातृशापादिपुत्रः १०२
 सुखेशेष्टमेपुत्राङ्गे शौषष्ठेखारीशौलग्नेमातृशापादिपुत्रः १०३
 पुत्राङ्गाष्टारिगाराब्हर्कारपदालग्नेशोत्रिकेमातृशापादिपुत्रः १०४
 राब्हारेज्यास्त्रिकस्था मन्दचन्द्रौपुत्रे मातृशापादिपुत्रः १०५

टीका-पंचमभाषका स्वामि चंद्रमा नीचराशिका हो भयवा.पाप-
 ग्रहोंके मध्यमे (पापाकर्तरीमे) हो और चतुर्थ व पंचमभावमे पाप
 ग्रह गयेहो तो माताके शापसे पुत्रहीनहोवे ९८

लाभभावम शनी, व चतुर्थभावमें २।३ पापग्रह गयेहो और पंचम
 भावमे नीचराशी (८) का चन्द्रमा गयाहो तो माताके शापसे पुत्र
 हीनहोवे ९९

पंचमेश ६।८।१२ भावमें गयाहो लग्नेश नीचराशी का हो और
 चंद्रमा पापग्रह से युतहो तो माताके शापसे पुत्रहीनहोवे १००

पंचमेश चंद्रमाहोवे और वह शनि राहु व मंगल से युतहो तो
 माताकेशापसे पुत्रहीनहोवे १०१

सुक्लेश मंगल हो और वह राहु व शनि से युतहो और लग्नेमे
 सूर्य, चंद्रमा, ये दोनो गयेहोतो माताकेशापसे पुत्रहीनहोवे १०२

सुक्लेशभाठमे भावमें, पंचमेश व लग्नेश ये दोनो छठेभावमें तथा
 दशमेश और षष्ठेश ये दोनो लग्नेमे गयेहोतो माताके शापसे पुत्र
 हीन होवे १०३

राहु सूर्य मंगल और शनि ५।१।८।६ इनभावोंमें यथाक्रम कींया
 व्युत्क्रम गयेहो और लग्नेश ६।८।१२ भावमें गयाहो तो माताके
 शापसे पुत्रहीन होवे १०४

राहु मंगल और शनि ये तीनो ६।८।१२ भावमें गयेहो और पंचम
 भावमें शनि चन्द्रमाका योग हो तो माताकेशापसे पुत्रहीनहोवे १०५

कुलदेवदोषा द्विपुत्रयोग.

मन्दोरिगेहे ज्ञेन्दुसूर्यदृष्टे लग्ने पापदृष्टे कुलदेवदोषा द्विपुत्रः १०९

मन्दर्क्षे सूर्यपापदृष्टे वा पापवर्गे ज्ञे कुलदेवदोषा द्विपुत्रः १०७

टाक-छत्रे भावमें गया हुआ शनि, बुध चंद्र और सूर्य से दृष्ट हो लग्न में पापग्रह देखते हो तो कुलदेवके दोषसे पुत्रहीन होवे १०६

शनि की राशी (१०११) में गया हुआ सूर्य पापग्रहसे दृष्ट हो भयवा लग्नमें पापग्रहोंका वर्ग अधिक हो तो कुलदेवके दोषसे पुत्र हीन होवे १०७

सुतहीनयोग.

मूयें ज्ञे सुते भौमे सुतहीनः १०८

जीवात्सुतेशो गिके पुत्रका ज्ञे शालग्नात्त्रिकस्थाः सुतहीनः १०९

जीवेष्वमे जीवात्सुते क्रूरे सुतहीनः ११०

दारा ज्ञे पुत्रपे बलिनि षष्ठेशयुतदृष्टेऽपुत्रः १११

धीधर्मशौ सदारे शौ दुस्थानगौ हीनबलौ सुभादृष्टे सुते बहुदारीप्यपुत्रः ११२

मन्दारौ खेपने वाऽपुत्रता ११३

मन्दारशुक्रादारगा अपुत्रः ११४

शत्रुभे लग्ने ज्ञेन्दुदृष्टे षष्ठार्थे सूर्ये विपुत्रः ११५

सुतेशो र्त्वार्ये पापयुते विपुत्रः ११६

गुरौ सुतेशो सपापेऽबले विपुत्रः ११७

सपापे ज्ञे शो त्रिके सुतेशो विपुत्रः ११८

कोणे गुरौ पापयुते विपुत्रः ११९

लग्ने शो कुत्रक्षेपे पुत्रेशो विपुत्रः १२०

प्यपेशो सपापे विपुत्रः १२१

कन्याङ्गैःसूयं भौमेसुतेविपुत्रः १२२

सुतेशुकभौमान्यतराष्ट्रे द्वित्रिविवाहेष्वप्य संतानः १२३

लाभेसेन्दौमन्देऽप्यजत्वमः १२४

टीका-लग्नमें सूर्य और पांचमे मंगल गयाहोतो पुत्रहीनहोवे १०८

जिसराशीमें गुरु स्थितहो उसराशीसे पंचम भावका स्वामि जो ग्रहहो वह ६।८।१२ भावमें गयाहो और जन्मलग्नसे भी पंचम तबम व लग्नके स्वामी ६।८।१२ भावमें गयेहो तो पुत्रहीनहोवे १०९
पंचम भावमें गुरुगयाहो और गुरुसे पांचमे भावमें पापग्रह गयाहो तो पुत्रहीनहोवे ११०

पंचमेश सप्तमभावमें अथवा लग्नमें गयाहो और वह बलवान् वृद्धेश से युतहोहो तो पुत्रहीनहोवे १११

नवम, पंचम और सप्तम भावके स्वामी निर्बली होकर ६।८।१२ भावमें गयेहो और पापग्रहोंसे युतहोहो तो बहुतक्रियेहोवे तोभी पुत्र नहींहोवे ११२

शनि और मंगल ये दोनो नवमे तथा दशमें भावमें गयेहो तो पुत्रहीनहोवे ११३

शनि मंगल और शुक्र येतीनो सातमें भावमें गयेहो तो पुत्रहीनहोवे ११४

लग्नेश छठे स्थानमें शत्रुग्रहकी राशीमें हो, और वह बुधचंद्र से दृष्टहो छठे अथवा दूसरे भावमें सूर्यगयाहो तो अपुत्रहोवे ११५

पंचमेश के नवांश कास्वामी अस्तकाहो और वह पापग्रहसे युतहो तो पुत्रहीनहोवे ११६

पंचम भावका स्वामि गुरु पापग्रहसेयुत हो और निर्बली हो तो पुत्रहीनहोवे (पंचम भावमें धन भोज राशोहोवेतो ये योगहोताहै) ११७

लग्नेश पापग्रह से युतहो और पंचमेश ६।८।१२ में गयाहो तो पुत्रहीनहोवे ११८

पापग्रहसे युतहोकर गुरु ९ में तथा ५ में भावमें गयाहोतो पुत्रहीनहोवे ११९

लग्नेश मंगलकी राशा (१।८) में गयाहो और पंचमेश छठे भावमें होतो पुत्रहीनहोवे १२०

धार्मिक भावकास्वामी दशमे किंवा लग्नमें गयाहो तो पुत्रहीनहोवे १२
कन्याराशिक लग्नमें मुर्यहो और पांचमें भावमें मंगल गयाहो तो
पुत्रहीनहोवे १२२

शुक्र किंवा मंगल इनदोनोंमेंसे यदि एक भी पंचमभावरको नहीं देख
ताहो तो दो तीन विवाह करलेनेपरभी संतान नहीं होवे १२३
सात्यपद है कि पंचम भावको शुक्र किंवा मंगल किंवा दोनों देखो
होतो संततीहोवेगा । कारण-विर्यका स्वामि शुक्रहो और रितुका स्वामि
मंगल है अब रितु रेत के स्वामिकी दृष्टि गर्भस्थान (पंचम) पर
होवेगा तभी गर्भ रहेगा और इन की दृष्टि नहींहो तो ५ किंवा १०
स्त्रियोसे विवाह करलेने परभी संततीहोना असंभव है ।
लाभभावमें चंद्र शनी का योग (युती) हो तो संतती नहींहोवे १२४

पुत्रनाशयोग.

पापांतरेसुतमेवातदोशे वाकारके पापसंयुते पुत्रनाशः १२५

क्षीघर्मपुत्रेशांशपाः पापांशगाः पापयुताः पुत्रनाशः १२६

पुत्रेशोकूरांशे नीचास्तमे पापदृष्टे पुत्रनाशः १२७

व्ययेशांशेशस्य व्यंशेशेनयुते वा दृष्टेसुतेशे पुत्रनाशः १२८

पुत्रेर्केप्रकाशे जातंजातंम्रियते १२९

पापाःपञ्चमे जातंजातंम्रियते १३०

सुतेसूर्ये मृतापत्यः १३१

कोणगाःपापाः क्षाणेन्दुज्ञे मन्दक्षेजीविमूढे पुत्रसुखंभूता

नश्यति १३२

ज्ञेयश्चमलग्नेसुखेपापे पुत्रसुखं भूत्वानश्यति १३३

टीका-पंचमभाव, भयवा पंचमेश, किंवा पंचमभावका कारण
गुरु] पापग्रहोंके मध्यमें (पापकर्तरीमें) हो और पापाग्रहसे
५ तो पुत्रनाशहोवे (पुत्रप्राप्ती तो होवेगा किंतु जीवेगानहीं) १

पंचमेश, सप्तमेश, और नवमेश, ये तीनोंग्रह जिस जिस ग्रहके नवांशमेंहोवे वेग्रह पापग्रहके नवांशमें गयेहो और पापग्रहसे युतहो तो पुत्रनाशहोवे [पुत्रहोकर मरजावे] १२६

पंचमेश क्रूरग्रह के नवांशमें गयाहो और वह नीचराशी का वा भस्तंगतहोकर पापग्रह से दृष्टहो तो पुत्रनाशहोवे १२७

व्ययेशके नवांशका स्वाभि जिसराशीके द्रेष्काण में हो उसराशीके स्वामी से पंचमेश युत किंवा दृष्टहो तो पुत्रनाशहोवे १२८

प्रकाशावस्थामें गयाहुआ सूर्य पंचमभावमें गयाहो तो जितने संतान जन्मतेजाय उतनेही मरतेजाय (संतान जीवित रहैनही) १२९

तीन बार पापग्रह पंचमभावमें गयेहो तो जितने संतान जन्मतेजावे उतनेही मरतेजाय १३०

पंचमभावमें सूर्य गयाहो तो मृनापाय होवे १३१

नवमें पाचमें भावमें पापग्रह, लग्नमें क्षीणवृद्धमा, और शनि की राशी (१०-११) में गयाहुआ गुह भस्तका हो तो पुत्रकासुख होकर नाशहोजावे १३२

पंचमभावमें बुध गयाहोवे और लग्न तथा सुख इनदोनो भावमें पाप ग्रह गयेहोतो पुत्रका सुखहोके नाशहोजावे १३३ येसर्वयोग अल्पायु-प्रजाहोनेकेहै ।

पुत्रार्ति वा पुत्रसुख रहित योग ।

क्रूर पृष्ठधंशे पुत्रपे पाप दृष्टयुते पुत्रार्तिः १३४

सोत्थेश चंद्रौ केन्द्रकोणगौ पुत्रसुखंन. १३५

सिंहेर्कजारौ सुतगौ सुनेशेषे सुतसौख्यंन १३६

भौमर्क्षसुतेराहौ भौमदृष्टे सुतसौख्यंन. १३७

नीचगुरौ भृगौश समेजे विषमेर्के सुतंसौख्यंन १३८

धास्थेमंदे पुत्र सुखंन १३९

व्यन्त्याङ्गार्य सुतेसहजे सुतसुखंन १४०

पञ्चपे जीवर्क्षे सुतसुखंन १४१

मन्दज्ञावद्धे लौशुकेज्यौ सुतसुखं १४२

जीवात्सुतेपापे सन्तान सुखाभावे नान्यथा १४३

टीका—पंचमेश क्रूरपञ्चशमे होवे और पापग्रहसे युतकिंवा दृष्ट होवे पुत्र कामुख नहीहोवे (पुत्रहोवे हुवेभीठसका सुखनही होवे) १४४

तृतीयेश और चंद्रमाये दोनो १।४।७, १०।९।५ भावमेंगयेहोवे पुत्रसुखनही होवे १३५

सिंहराशिमें गयेहुवे शनि मंगल पंचमभावमें स्थितहोवे और पंचमेश छठे भावमें हो तो पुत्र सुखनही होवे १३६

पंचम भावमें मंगल की राशि (१—८) में गया हुवाए। मंगलसे दृष्टहोवे तो पुत्रका सुख नही होवे १३७

गुरु और शुक्र अपनी नीचराशि (१०—६) में गयेहोवे अथवा गुरु समराशि (२—४—६—८—१०—१२) में और सूर्य विषम राशि (१—३—५—७—९—११) में गयाहोवे तो पुत्रका सुखनहीहोवे १३८

पंचम भावमें शनिगया हो तो पुत्रका सुखनही होवे १३९

तृतीयभाषका स्वामी (३—१२—१—२—५) भावमेंगया होतो पुत्र का सुखनहीहोवे १४०

✓ पंचम भावमें गुरुकी राशि (९।१२) होतो पुत्रकासुखनही होवे १४१
युध शनि लग्नमें गयेहो और वृश्चिक राशिमें गुरु शुक्रका योग होतो पुत्रका सुखनही होवे १४२

गुरु में पाचमें भावमें पापग्रह गयाहो तो संतान सुख नहीहोवे और शुभग्रह गयेहोय तो संतानका सुखहोवेगा १४३

पुत्रसुखहीनयोगमें पुत्रहोवेनही, १ किंवा पुत्रहोकर मरजाये २ अथवा पुत्रहोतेहुवे भी पुत्रका सुखनहीहोवे ३ (पुत्रहुआ और नहीहुआ गतिभाहोहोवे) ये तीनप्रकारके पुत्रसुख नहीहोनेके भेदहैं इनमेंसे तिनके पुत्रहीन किंवा पुत्रनाश, किंवा वंशविच्छेदयोग, प्रवृत्तहुका होवे उनके तो पुत्रहोतगाहीनही किंवा होके मरजायेगा । और केवल पुत्रसुखहीन योग ही होवे और दूसरे कयरोक्त योग नही हो तो पुत्रहोत होभी पुत्रका सुखनहीहोवेगा ।

वंशविच्छेदयोग.

ज्ञाङ्गणौ लग्नेतर केन्द्रगौवंशविच्छेदः १४४

पापग्रहा व्ययसुताष्टमगा वंशविच्छेदः १४५

चन्द्रेज्योलग्ने दूनेमन्दे वा भौमे वंशविच्छेदः १४६

मुखेपापा वंशविच्छेदः १४७

लग्नान्त्य सुताष्टमगैः पापैर्वंशविच्छेदः १४८

सुतेचन्द्रे पापारन्धाङ्गनान्त्यगा वंशविच्छेदः १४९

ज्ञाच्छौमदे सुखेपापे सुतेजीवे वंशविच्छेदः १५०

चन्द्राष्टमेपापा वंशविच्छेदः १५१

पापेङ्गेसुखेचन्द्रेसुतेङ्गेयो सुतपेऽल्पमले वंशविच्छेदः १५२

पञ्चमेपापा वंशविच्छेदः १५३

शुकेरमरे खेचन्द्रेमुखेपापा वंशविच्छेदः १५४

भौमेङ्गे मन्देरन्ध्रे सुतेर्के वंशविच्छेदः १५५

टीका—ग्रह और लग्नंश ये दोनो लग्नके बिना दूसरे केन्द्रस्थान (४१७।१०) में गयेहो तो वंशविच्छेद होवे १४४

चारमे, पांचमे, और आठमे, भावमें पापग्रह गयेहो तो वंशविच्छेदहोवे १४५

लग्नमें चंद्र गुरु का योगहोवे और सातमें भावमें शनि किंवा भंगल गपाहो तो वंशविच्छेद होवे १४६

संपूर्ण पापग्रह स्वार्थ भावमें गयेहोवे तो वंशविच्छेद होवे १४७

मन्मलग्नमें, चारमे, पांचमे, और आठमे भावमें संपूर्ण पापग्रह गये हो, तो वंशविच्छेद होवे १४८

पंचम भावमें चंद्रमा गपाहोवे और आठमे, लग्नमें, चारमे, भावमें संपूर्ण पापग्रह गयेहो तो वंशविच्छेद होवे १४९

सातमें भावमें शुभ दुरु, स्वार्थ में पापग्रह, और पंचम भावमें गुरु गपाहोवे तो वंशविच्छेद होवे १५०

चंद्रमासे भाठमे स्थानमें पापग्रह गयेहोतो वंशविच्छेदहोवे १५१
 लग्नमें पापग्रह, सुखमेंचन्द्रमा पंचममें लग्नेश, गयाहोवे और पंच-
 मेश भलावली होतो वंशविच्छेद (वंशकानाश करनेवाला योगहोवे) १५२
 संपूर्ण पापग्रह पंचम भावमेंगयेहोवेतो वंशकानाशहोवे १५३
 सप्तम भावमेंशक्र, दशमभावमें चंद्रमा, और सुख भावमें पापग्रह
 ३-४ गयेहोवे तो वंशकानाशहोवे १५४
 लग्नमें मंगल, भाठमे शनी, पाचमें भावमे सूर्य, गयाहो तो वंश-
 कानाशहोवे १५५
 वंशविच्छेदयोगमें पुत्रकिंया पुत्री कोई भी संततीनहीरहे (वंशकानाश-
 होजावेगा)

विलम्बतःप्रजायोग ।

सशुभा अङ्गाङ्कः सुतेशा त्रिकस्थानविलम्बतःप्रजा १५६
 स्वभेसौर्या सुतेपाशाः सुतसुखं विलम्बात् १५७
 पापोजीवो वा तुयेंसुतेऽग्रमेचन्द्रे त्रिंशद्वर्षोर्ध्वं संवतिः १५८
 पापक्षेपापयुतेलग्नेसूर्येऽथलेयुग्मक्षेकुजेत्रिंशद्वर्षोर्ध्वं संवतिः १५९
 कर्केचन्द्रे पापयुतदृष्टेच मन्ददृष्टेसूर्ये पष्टिवर्षेऽपुत्राप्तिः १६०
 राहौलाभे वार्द्धके पुत्रसुखम् १६१

टीका-लग्न, नवम, और पंचम भावके स्वामी शुभग्रहसे युतहोए
 ६।८।१२ भावमेंगयेहो तो विलम्बसे संतानहोवेगा १५६
 दशम भावमे सर्वशुभग्रहगयेहोवे और पंचमभावमें संपूर्ण पापग्रह
 गयेहो तो पुत्रका सुख विलम्ब स(देरीसे) होवेगा १५७
 पापग्रह किंया गुरु चतुर्थ भववा पंचम भावमेंगयाहोवे और भूय
 भावमें चंद्रमाहोतो तीसवर्षकि उमरहोनेके पश्चात्सन्तान होवेगा १५८
 पापग्रहकी राशी [१।८।५।१०।११] के लग्नमें पापग्रह युतहोवे
 सूर्यनिर्बलीहोवे और मंगल समराशी [२।४।६।८।१०।१२] में स्थित,
 तो तीसवर्षकी उमरहोनेके पश्चात्सन्तान होवेगा १५९
 कर्कराशी में गयाहुवा चंद्रमा पापग्रहसे युत व दृष्टहोवे और सूर्य, की
 राशी देखनेहो तो ६० में वर्षमे पुत्रकी प्राप्तिहोवेगा १६०

लाभभायमें राहुगयाहो तो वृद्धावस्थामें पुत्रका सुख होवेगा १६१
इनके सिवाय और भी विशेषयोग वृद्धत्पराशरीमें इस प्रकार
लिखे हैं कि ।

पंचम में गुरु नाचे और पंचमेश शुक्रसे युत होतो ३२ तथा ३३ में
पुत्रप्राप्ति होवेगा ।

पंचमेश और पंचमराकारक (गुरु) ये दोनों केन्द्र (१४।७।१०)
स्थानमें युक्त हो तो ३० तथा ३६ में वर्षमें पुत्रप्राप्ति होवेगा ।

जन्मलग्नते नक्षत्रमें गुरु गयाहोवे और गुरु ने नक्षत्रमें स्थानमें गयाहुश
शुक्र, लाभेश से युक्त हो तो ४० में वर्षमें पुत्रप्राप्ति होवेगा ।

कष्टारुजाप्तियोग. ।

राहुकर्काः सुतागाः शावितः सुतसौख्यदाः १६२

सुनेशोनीचे धर्मरोक्के जकेतु पुत्रे कष्टापुत्राप्तिः १६३

टीका-राहु, रवि, और मंगल ये तीनों पंचम भायमें गयेहोतो
शान्ति करने से पुत्र सुखकी प्राप्ति होवेगा १६२

पंचमेश अपनी नीचराशीने गयाहो, नक्षत्रेश लग्नमें और बुध केतु
पंचम भायमें गयेहो तो कष्टसे (शांति आदि भन्नेरु मपरन करनेसे)
पुत्रकी प्राप्ति होवेगा १६३

श्रीप्रसन्नानोदययोग.

सुनेगोजकके राहु केतू सन्तानोत्पत्तौ नो विलम्बः १६४

टीका-पंचम भायमें मेघ वृषभ किंवा कर्क राशी में राहु भयरा
केतु गयाहो तो संतानकी प्राप्ति होनेमें विलम्ब नही होवेगा १६४

पुत्रप्राप्तियोग. ।

सप्तमेशाशिरलग्नार्थ धर्मरोक्के पुत्राप्तिः १६५

सुनेशधुमयुतदृष्टे वा सुतमेजीवे वा पुत्राप्तिः १६६

लग्नेशपुत्रे पुत्रेयज्यौ बलिनो पुत्राप्तिः १६७

पुत्रेयज्ये बलिनि लग्नेशदृष्टे पुत्राप्तिः १६८

० संतान प्राप्ति के समय निर्णय का विषय स्वयं जानना होता है - कि प्रत्यक्षमय
विचार " समयमें पुत्ररुक् दृष्टो पाप से संतानप्राप्ति के मत -)

वैशेषिकांशेजीवे तथा पुत्रेशेच शुभदृष्टेपुत्राप्तिः १६९

वित्तेशेसुते बलाढ्ये गुरुदृष्टे पुत्राप्तिः १७०

पुत्राङ्गपौपरस्परं पश्यतः पुत्राप्तिः १७१

पुत्राङ्गपावन्योन्यभगौ वा युतौ पुत्राप्तिः १७२

सुताङ्गेशौ केन्द्रगौ शुभान्वितौ धनेषु कलिनिपुत्राप्तिः १७३

पुत्रेशांशे शुभयुतदृष्टे पुत्राप्तिः १७४

धर्माङ्गेशौ संसर्गं धनेषु क्ले पुत्राप्तिः १७५

सुतेशे मृहंशादिगे पुत्राप्तिः १७६

गोपुरादौ सुतेशे पुत्राप्तिः १७७

पुत्रांशे शङ्के लग्नेशांशे सुते पुत्राप्तिः १७८

जीवांशे शङ्के पुत्राप्तिः १७९

धर्माय सुतेशाः पारावतादिगाः शुभदृष्टाः पुत्राप्तिः १८०

लग्नाद्वाचन्द्रात्पंचमे शुभक्षेत्रं शुभसम्बन्धे पुत्रसम्भवो नान्यथा।

टीका-सप्तमेश के नवाशका स्वामी लग्नेश, धनेश, और नयमी इन तीनों ग्रहोंसे दृष्टहो तो पुत्रप्राप्ति होवेगा १६५

पंचमेश किंवा पंचमभाव अथवा पंचमका कारकग्रह (गुरु) शुभग्रहसे युत और दृष्टहो तो पुत्रप्राप्ति होवेगा १६६

लग्नेश पंचम भावमें गयाहो, पंचमेश और गुरु ये दोनों परस्पर युक्त होवे तो पुत्रप्राप्ति होवेगा १६७

पुत्रेशगुरु पूर्णबलवान् होवे और उसको लग्नेश देखताहो तो पुत्रप्राप्ति होवेगा १६८

पुत्रेशगुरु पंचमभाषका स्वामी वैशेषिकांशने गयाहोवे और शुभग्रहसे युक्त होवे तो पुत्रप्राप्ति होवेगा १६९

पुत्रेशगुरु स्वामी बलाढ्य होकर पंचमभावमें गयाहो और गुरु से दृष्ट होवे तो पुत्रप्राप्ति होवेगा १७०

पंचमेश और लग्नेश ये दोनोंपरस्पर भेक दूसरे को देखते होते
पुत्राप्तिहोवेगा १७१

पंचमेश और लग्नेश ये दोनों अन्योन्यराशीमें (पंचमेशकी राशीमें
लग्नेश और लग्नेशकी राशीमें पंचमेश) गयाहो भयवा पंचमेश और
लग्नेश ये दोनों भेकराशीमें युतहोतो पुत्राप्तिहोवेगा १७२

लग्नश और पंचमेश ये दोनों शुभग्रहसे युतहो कर केन्द्र [१।४।
७।१०] स्थानमें गयेहो, और धनेशबलवानहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७३

पंचमेश के नवाशका स्वामी शुभग्रहसेयुत और दृष्टहो तो पुत्रा-
प्तिहोवेगा १७४

नवमेश और लग्नेश ये दोनों सप्तम भावमें गयेहो और धनेशलग्न
में गयाहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७५

पंचमेश मृदृंशादि शुभांशमें गयाहोतो पुत्राप्तिहोवेगा १७६

पंचमेश गोपुरादि भंशमेंगयाहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७७

पंचमभावका नवाशका स्वामी लग्नमें और लग्नेश के नवाशका
स्वामी पंचमभावमें गयाहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७८

गृहके नवाशका स्वामी केन्द्र (१।४।७।१०) में गयाहो तो पुत्रा-
प्तिहोवेगा १७९

नवम, लग्न, और पंचमेश, ये तीनोंग्रह पारावतादि भंशमेंगयेहोवे
और शुभग्रहसे दृष्टहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १८०

लग्नसे भयवा चन्द्रमासे पाचमे भावमेंशुभग्रह की राशि शुभग्रह से
युत दृष्ट हातां पुत्रहोवेगा और इससे विपरीत होवेतो नही होवेगा १८१

कन्या प्राप्तीयोग।

सुतमे समर्शवर्गे ज्ञानन्दान्यतरयुते शुक्रचंद्रान्यतर दृष्टे

कन्या प्रजावान् १८२

पुत्रेते नेत्रपाणौ पुत्रहानिः कन्यातिथ्व १८३

पुत्रेपुत्रेते सभावस्तामे कन्याधिक्यं १८४

शुक्राब्जवर्गे सुतमे समर्श शुक्राब्जदृष्टे बहुकन्यावान् १८५

सुतेशोर्ध्वमे बहुकन्या १८६

लाभेक्षे शुक्रचन्द्रेण कन्याप्रजाः १८७

इन्द्रच्छानामन्यतमे सुते कन्योत्पादः १८८

टिका—पंचम भाव में समराशी (२१४६/८१०/१२) और सप्त राशिका नवांश पुत्र किंवा शनी से पुत्रहोवे और शुक्र भयवा चंद्रसे किंवा इनदोनोंसे दृष्टहो तो कन्या प्रजा वाला होवे १८२

नेत्र पाणि भयस्या में गयाहुवा पुत्र पंचम भावमें गयाहो तो पुत्रही हानी और कन्याकी प्र. र्त्ती होवेगा १८३

सभास्त्रा में गयाहुवा पुत्र पांचमें भयवा सातमें भावमें गयाहो तो बहुत कन्या होवेगा १८४

पंचम भाव समराशी (२१४६/८१०/१२) का होवे और वह शुक्र चंद्र के दशम में होकर शुक्र चंद्रसे ही दृष्टहो तो बहुत कन्यावाला होवे १८५

पंचमेश धनमें भयवा आठमें भावमें गयाहो तो बहुत कन्या होवेगा १८६

लाभभावमें पुत्र, शुक्र, किंवा चंद्रमा इनतीनोंमेंसे (भेकभी प्रद गया होता कन्याप्रजावाला होवे १८७ (नितने अधिक प्रदहा होवे वतनाही योग बलवान होताहै)

पुत्र, चंद्र, और शुक्र इन तीनोंमेंसे एकभी पांचमें भावमें गयाहो तो कन्या प्रजा का भय होवेगा १८८

भयवास्त्य योग ।

ककेचन्द्रेण कन्यायान्नात्पातयः १८९

नीचे पुत्रेण पत्रादिप्रयोगे वास्युते काकचन्द्या १९०

पुत्रेण नीचे मन्दपुत्रे काकचन्द्या १९१

टीका—कके राशी का चन्द्रमा पंचम भावमें गयाहो तो कन्यावाला किंवा भयवा चतुर्थ वा आठ होवे १८९

पंचमेश नीचका होकर ६/८/१२ में भावमें गया हो और पा दृष्टहो पुत्रहो तो काकचन्द्या होवे (भेकभर खान होकर खिलने होवे) १९०

पंचमेश नी. का होकर शनीमें पुत्रहो तो काकचन्द्या होवे १९१

बहुमज योग.

सुतेशुकभांशी वा शुक्रदृष्टेबहुमजः १९२

टीका-पंचम भावमें शुक्र की राशी (२-७) और नवांश हों
कौन वा घरवात शुक्र पंचम भाव को देखता हो तो बहुमज (बहुत
संतान बाळा) होता है १९२

पुत्र पुत्री संख्या योग.

पुत्रे यावत्पुंमहदष्टि स्तावत्पुत्राः १९३

कोणेशुक्रक्षगेन्दावेकपुत्रः १९४

सुतेराहु केतु कुपुत्रः १९५

धीर्येके शुभदृष्टे त्रिपुत्रः १९६

मृगेकजेसुते त्रिपुत्रः १९७

सुते मृगगे भौमे त्रिपुत्रः १९८

कुंभेमन्दे एते पञ्चपुत्रः १९९

१ सुतेसूर्यभौमगुर्वन्यतमेक्रमादेक त्रि पञ्च पुत्रोत्पत्तिः २००

सितेन्दुवर्गेपुत्रर्से भोजमे सितेन्दुपुते बहुपुत्रः २०१

पुत्रेक्षीग्रह इक्षुत्या कन्या २०२

सुते चन्द्रज्ञ सितशनयो द्वित्रि पञ्चसप्तकन्योत्पत्तिः २०३

टीका- पंचम भावपर जितने पुरुष ग्रह की दृष्टिहोवे सतनेही पुत्र
होंगे १९३ (जिस घरकी दृष्टी होंवे वह स्व राशिका होनी द्विगुण
उच्च मूल त्रिकोण राशी का होतो, त्रिगुण संख्या कहना) अथवा
पंचम भावमे जितने नवांश गयेहोवे सतने संतान कहना शुभ ग्रहसेदृष्ट
होतो उससे द्विगुण संख्या मानना । अथवा कितनेक विद्वान पुत्र
स्थान में गई हुई राशी के अंककी संख्याके समान किंवा पुत्रस्थानेश
की किरण की संख्या के समान भी संतानकी संख्या कहते है ।

शुक्रकीराशी (७-२) मे गयाहवा चंद्रमा नवम किंवा पंचम
भावमें गयाहोतो एकपुत्र होनेगा १९४

पंचम भावमे राहु भयवा केतु गयाहोवे तो एक कुपुत्र होवे १९१

पंचम भावमे गयाहुवा सूर्य शुभ पदसे दृष्ट होतो तीनपुत्रहोवे १९६

मकर राशी मे गयाहुवा मंगल पंचमभावमे होतो तीनपुत्रहोवे १९७

मकर राशी का शनी पंचमभावमे गयाहोतो तीनपुत्रहोवे १९८

कुंभ राशी का शनी पंचमभावमे गयाहोतो पांचपुत्र होवेगे परंतु सूत्र २०९ के अनुसार इसी योगमे दत्तपुत्र योगभी होनाताई इति कारण यदि कर राशीका पंचम भाव ६ अंश ४० कलासे अधिक अंश का होवे और उसमे शनीगया होतो तीन पुत्र होवेगे एवं कुंभराशीका पंचम भाव १० अंश ०० कलासे १६ अंश ४० कला पर्यंत के ६ अंश ४० कलाके भक्ति रिक्त शेष अंशका होवे और उसमे शनीगयाहोतो पांच पुत्र होवेगे अन्यथा नही होवेगे । तात्पर्य यहहै कि मकरके ६ अंश ४० कला पर्यंत के पंचम भावमे मकर का शनि, तथा कुंभ के १० अंश ०० से १६ अंश ४० कला पर्यंत के पंचम भावमे कुंभका शनि, जावेगा तो दत्त पुत्र ही लाना पड़ेगा तीन तथा पांच पुत्र नही होवेगे १९९

पंचम भावमें सूर्य गया होतो १ एक पुत्र, मंगल गयाहोतो ३ तीन पुत्र, गुरु गया होतो ५ पांचपुत्र, होगा । सूर्य मंगल दोनोंहोवे तो ४ सूर्य गुरु होवे तो ६ मंगल गुरु होवेतो ८ सूर्य मंगल गुरु वे तीनों गये होंवेतो ९ पुत्र का जन्म होवेगा २००

विषम राशी १।३।५।७।९।११ का पंचमभाव शुक्र और चंद्रके दृष्टावर्गमे गया होवे और वह शुक्र चंद्रसे युक्त होवेतो बहुत पुत्रवाला होवेगा २०१

पंचम भावपर जितने की मढ़की दृष्टी होवे उतनीही कन्याहोवेगा २०२

पंचमभाषमें, चंद्रगयाहोतो ३ शुक्र गया होतो ५ शनीगयाहोवेतो ७ कन्याका जन्महोवेगा (और ये ग्रह दो तीन संयुक्त होवे तो उनकी संख्या के ऐक्यके अनुसार कन्याका जन्म समझना) २०३

चूड़पाराशरीमे सतान संख्याके औरभीविशेष योग इसप्रकार लिखेहैं कि

लग्नमेराहु, पांचमेगुरु, नवमेशनि, गयाहोतो १ पुत्र होवेगा ।

धनेश पंचमेशका योग पंचम भावमे हुवा होतो ६ पुत्र होवेगा उनमे ३ मरजावेगा ।

नवमे भावमे शनि गया होवे और नवमेश पंचम मे होतो ७ पुत्र होवेगा जिनमे दो गर्भ यमल (जोढले) बालकके होवेगे ।

गुरु ९ में किंवा ५ में भावमें व धनेश १० में भावमें गयाहो और पंचमेश बलवान होवेतो ८ पुत्र होवेगा ।

परमोच्चराशी का गुरुहो व धनेश राहुसे युत होवे और नवमेश ९ में गयाहोतो ९ पुत्र होवेगा ।

परमोच्चराशी में गया हुआ पंचमेश लग्नेशसे युतहोवे और गुरु शुभग्रहसे युतहोतो १० पुत्र होवेगा ।

पंचम भावमें पापग्रह गयाहोवे और गुरुसे पांचमें शनीगया हो तो दूसरा विवाह करने से (दूसरी स्त्री के) पुत्र होवेगा और ३ स्त्री का सुख रहेगा.

प्रथम पुत्र किंवा पुत्री जन्म योग ।

अथार्थाङ्गे लग्ने प्रथमः सुतः २०४

द्विस्व भावगा भन्नाशुक्राः प्रथमः सुतः २०५

लाभेषावे पंचमे चन्द्राष्टौ प्रथमः कन्याः २०६

पुत्रेशे पुंभाशे पुंश्रे प्रथमं पुत्रोन्यथा कन्या २०७

टीका-लग्नेश लग्ने किंवा दूसरे तीसरे भावमें गयाहोतो प्रथम पुत्रहोवेगा २०४

चंद्र, मंगल, और शुक्र, ये तीनों द्विस्वभाव राशी में गयेहोतो प्रथम पुत्र होवेगा, २०५

लाभ (११) भावमें पापग्रह गयाहोवे और पांचवें भावमें चंद्र शुक्र का योग होतो प्रथम कन्या होवेगा २०६

पंचमेश गुरु व ग्रह होवे और वह गुरु राशी (१३५, ७९, ११) में, गुरु की राशी के ही नवांश में गया होवे तो प्रथम पुत्रहोवेगा । और पंचमेश यदि स्त्री ग्रह हो वे और स्त्री राशी (२४, ६८, १०, १२) में स्त्री राशी के ही नवांशमें गया होतो प्रथम कन्या होवेगा २०७ औरस पुत्र योग ।

पंचवैष्णवमे गुरुवर्गे शुभराशिवैरसः पुत्रः २०८

टीका-पंचमभावमें केवल गुरु का दशवर्ग होवे किंवा पंचम में शुभ ग्रह की राशी शुभग्रह के चर्म में शुभग्रह से दृष्ट होतो और स पुत्र (सगे पुत्र) का सुख होवेगा २०८

दत्तपुत्र योग ।

मन्दक्षीशौ सुते चन्द्रमन्दान्पतरयुते दत्तपुत्रः २०९

तुर्पे मन्दारौ दत्तपुत्रः २१०

पंशविच्छेदयोगे दत्तपुत्रः २११

टीका—पंचमभावमे शनीकी राशी (१०-११) और शनीकी राशी काही नवांश गयाहो और उसमे चंद्र भयवा शनी पुतहोतो दत्तपुत्र लेना पड़ेगा । २०९

चतुर्थे भावमें शनि मंगल का योग होतो दत्तपुत्र लेना पड़ेगा २१०

पंश विच्छेदके मिलने योग कहें उनमें से कोईभी योग होवेतो दत्तपुत्र लेना पड़ेगा २११

दासीपुत्र योग ।

सकेता पंशेक्षशुक दृष्टे दासीपुत्रः २१२

शुक्रेन्त्ये सौरांशे दासीपुत्रः २१३

टीका—कारकांश लग्नमे गयाहुवा केतु, बुध, शुकतेदृष्ट होतो दासी से वरपन्नहुवा पुत्र होवेगा २१२

वारमे भावमे गयाहुवा शुक्र शनी के नवांशमे होवेतो दासीसे वरपन्न हुवा पुत्र होवेगा २१३

क्रीत पुत्र योग ।

धीर्येमन्दे जेन्दुयुते क्रीतपुत्रः २१४

टीका—पंचम भावमे गया हुवा शनि, बुधचन्द्रसे युतहोतो क्रीत पुत्र भीमत देके सरीदाहुवा (पुत्र) होवेगा २१४

पुत्रेण सह मित्रौ दासिन्य योगः ।

सुताङ्गेशमित्रत्वे पुत्रोभिन्नम्. २१५

सुतांगेशौ समौ पुत्रेण सहोदासिन्यम् २१६

टीका—पंचमेश और लग्नेश के परस्पर मित्रताहोने तो पुत्रके साथ मित्रता (प्रीति) रहेगा २१५

लग्नेश पंचमेश परस्पर समग्रह होवेतो पुत्रके साथ उदासीनता
(समभाव) रहेगा २१६

आज्ञानुवर्ती मृतयोग ।

लग्नपुत्रेशयो रन्योन्यदष्टौ सुतआज्ञानुवर्ती २१७

पुत्रांगेशा वन्योन्य भांगशो सुतआज्ञानुवर्ती २१८

टीका—लग्नेश पंचमेशको और पंचमेश लग्नेशको देखना होतो
पिताको आज्ञापालन करने वाला पुत्र होवेगा २१७

पंचमेश लग्नेश की राशि में किया लग्नेशके नवांशमें और लग्नेश
पंचमेश की राशि में अथवा पंचमेश के नवांशमें गपाहोती पिताकी
आज्ञापालन करने वाला होवेगा २१८

पुत्र वाक्य वक्ष्य योग ।

पुत्रपेक्षेक्षेत्रोपुत्रपुत्रवाक्यवक्ष्यः २१९

सुतेशदृष्टेक्षेत्रे सुतक्षेत्रदृष्टे पुत्रवाक्यवक्ष्यः २२०

इतिपंचमविदेकः

टीका—पंचमेश लग्नेश और लग्नेश पंचमेश गपाहोतो पुत्रके कद
में माफिक बढने वाला होवे २१९

पंचमेश लग्नेशको और लग्नेश पंचमेशको देखना होतो पुत्रके कदमें
में होवे २२०

इन विचारों के सिवाय माईका छोटाभाई, माईकेछालेकीकी,
मित्रका धन कुटुम्ब, माना का धन कुटुम्ब, पुत्रकेपुत्रकाछात्रा, कीकी
छात्र, नोहरका भाई, पेटकासुखदुःख, पिताकामृतपु, दादाकी छात्र,
का विचार भी इसी पंचम भाव से करना ।

इति पंचम विदेकस्यटीका समाप्तः ।

अथ षष्ठविशेकः ।

ज्ञातिशत्रु योग ।

पष्ठेशे पष्ठे ज्ञातिः शत्रुः १

टीका-छठे भाव का स्वामी छठे भावमें ही जायेता ज्ञातिके छठे शत्रुहोवे १

सुतः शत्रुयोगः ।

अन्त्यारिगे सुतेशेसुतःशत्रुः २

पुत्रोदयेश शत्रवे वा पुत्रपेपष्ठे लग्नेशदृष्टे पुत्रःशत्रुः ३

टीका-पंचमेश छठे भयवा चारमे भावमे जावेता पुत्र शत्रु होवे २
लग्नेश पंचमेश के परस्पर शत्रुता होवे भयवा पंचमेश छठे भाव
में गयाहो और उसको लग्नेश देखता हो तो पुत्र शत्रुहोवे ३

मातृवैरयोग ।

लग्नेशस्य सुखापेशौ शत्रु चेन्मातृवैरम् ४

सुखपे पापदृग्युते मातृवैरम् ५

तुर्यपे लग्नपतः पष्ठे वा तुर्येशे पष्ठे मातृवैरम् ६

टीका-सुख और लाभ भावके स्वामी लग्नेशके शत्रु हांता माता
से वैरहोवे ४

सुखेश पापग्रहसे युक्त दृष्टहोता मातासे वैरहोवे ५

सुखेश लग्नेशउ छठे भावमें गयाहो भयवा सुखेश छठे भावमें
गयाहो तो मातासे वैर होवे ६

पिता शत्रु योग ।

लग्नस्वेषयोः शत्रवं वाख्येशे लग्नतो लग्नपतो वा पष्ठे

पिताशत्रुः ७

सुतेशोत्रिके लग्नेशदृष्टे पितृदूषकः ८

पुत्रेशे त्रिकेराब्धार दृष्टे पितृदूषकः ९

टीका-लग्नेश दशमेश के परस्पर शत्रुताहो अथवा दशभावका स्वामी लग्नसें वा लग्नेशसे छुटेभावमे गया होतो पिता शत्रुहोवे ७

पंचमेश ६।८।१२ स्थानमें गयाहो और उसको लग्नेश देखता हो तो पिताको दूषण लगाने वाला होवे ८

पंचमेश ६।८।१२ स्थानमें गयाहो और वह राहु मंगल इन दोनो ग्रहो से दृष्टहो तो पिताको दूषण लगाने वालाहोवे ९

शत्रुपीडायोग.

पष्ठेशकेंद्रे पापदृष्टे शत्रुपीडा १०

पष्ठेपापा वा लग्नेशः पष्ठे पष्ठेशकेंद्रे शत्रुपीडा ११

पष्ठेष्वले पापदृष्टे पापांतरे वा शत्रुपीडा १२

टीका-पष्ठेश केंद्रमे गयाहो और पापग्रह से दृष्टहो तो शत्रुकी पीडा होवेगा १०

छुटे भावमे पापग्रह युतहो अथवा लग्नेश छुटेभावमे और पष्ठेशलग्न में गयाहोतो शत्रुकी पीडाहोवेगा ११

पष्ठेश निर्बली होकर पापग्रह से दृष्टहोवे अथवा पापग्रहोके मध्यगत हो तो शत्रुकी पीडाहोवेगा १२

श्री शत्रु योग ।

लग्नदारापयोः शत्रवे श्रीशत्रुः १३

टीका-लग्नेश सप्तमेश के परस्पर शत्रुता होतो श्री शत्रुहोवे १३
वैरिहन्ता तथा शत्रुनाश योग ।

पष्ठेशगे वैरिहन्ता १४

पष्ठेशे बलाढ्ये वैरिहन्ता १५

पष्ठेशुभ दृष्ट्या धिक्ये वैरिहन्ता १६

पष्ठेशोत्रिके नीचमूढारियुते लग्नेशचलिनि शत्रुनाशः १७

लग्नेशादरीशेल्पबले शत्रुनाशः १८

पष्ठकें कोतुके शत्रुनाशः १९

टाका-पष्ठेश लग्नमे गयाहोगो वैरिनिनाश करनेवाला होवे १४
 पष्ठेश बलवान होवेतो वैरिहन्ता होवे १५
 पष्ठस्थानपर शुभमहों कि दृष्टि भविक होतो वैरिहन्ता होवे १६
 पष्ठेश (६।८।१२) त्रिकस्थानमे हा नीच, भस्न तथा शत्रुनाश
 के ग्रहसे युत होवे और लग्नेश बलवान होतो शत्रुका नाश होवे १७
 लग्नेश से पष्ठेश भस्न बली होतो शत्रु का नाश होवे १८
 छठे भाषमे सूर्य कौतुकावस्थामे गया होतो शत्रुका नाश होवे १९
 व्रणपिठिकादि पीडायोग।

भौमेछौ गुहसितहृग्घाने व्रणपिठिकापीडा २०
 केत्वर्कजा वस्ते व्रणपीठिका पीडा २१
 लग्नपारौ त्रिके ग्रन्थिशस्त्रज व्रणपीडा २२
 सपापेरीशे लग्नेत्रिके शरीरेव्रणः २३
 मंदारा वरिगौ वा व्यपगौ व्रणः २४
 सार्केरीशेक्षे वाष्टमे शिरोव्रणः २५
 लग्नेशकुजेपुत्रेपापान्वितेपापदृष्टेशिलाशस्त्रजं व्रणं मस्तके २६
 भौमेगे घनेजीवे वा शुके व्रणांकितशिरः २७
 सचंदेरीशेगे वाष्टमे मुखव्रणः २८
 भौमारीशावंगे वाष्टमे कंठव्रणः २९
 जीवारीशा वंगे वाष्टमे नाभिमुलेव्रणः ३०
 शारीशोरंधेगेवा हृदय व्रणः ३१
 शुक्रारीशौ लग्नेरंध्रे नेत्रमुले व्रणः ३२
 मंदारिशौ रंध्रे देहे पादव्रणः ३३
 गह्व केतु पुतारीशोष्टमे देहे अधरव्रणः ३४
 श्यापारिगेभीमे व्यपेगुके वामपार्श्वव्रणः ३५

व्ययेगुरौविधौ ज्ञे व्यायारिगेगुदा व्रणः ३६

पष्ठेत्येवाराकिंयोगे सौम्यादृष्टे गंडपालादयः ३७

सपापे कर्मगेरिशे पापदृष्टे वा यदंगरायौ तदंगे व्रणः ३८

टीक - पृथ्विक राशिमै गयेहुवे मंगलको गुरु शुक्र नहीं देखने होवेतो जखम फोड़ा फुनसा की पीड़ाहोवे २०

कतु और शनि ये दोनो सातमें भावमें गयेहोतो जखम फोड़ा बगेरा की पीड़ाहोवेगा २१

लग्नेश और मंगल ये दोनो द्वा. ८. १२ भावमें गयेहोवेतो गठान की और शस्त्र के जखमकी पीड़ा होवेगा २२

पापग्रहसँ युत पष्ठेश लग्नमें तथा त्रिकस्थानमें गयाहोतो शरीरमें पाप (जखम) होवेगा २३

शनि और मंगल ये दोनो छठे अवस्था बारमें भावमें गयेहोतो पापकी पीड़ा होवेगा २४

पष्ठेश सूर्यसँ युतहोकर लग्नमें वा भाठमें भावमें जावेतो मस्तकमें जखमहोवेगा २५

लग्नेश मंगल होवे और ५६ पंचम भावमें पापग्रह सँ युतहोवेतो पापाग तथा शस्त्र से मस्तकमें जखम होवेगा २६

लग्नेश मंगलहो और सातमें भावमें गुरु अथवा शुक्र गयाहोतो प्रगाथित शिरहोरे अर्थात् मस्तकमें बहुत जखमों के चिन्ह होवे २७

पष्ठेश चंद्रसे युतहोकर लग्नमें अथवा भाठमें भावमें गया होवेतो मुखपर व्रण (पाप) होवे २८

मंगल सँ युत होकर पष्ठेश लग्नमें वा भाठमें भावमें गयाहोवेतो फंठमें जखम होवे २९

गुरुसँ युतहोकर पष्ठेश लग्नमें वा भाठमें भावमें जावेतो नाभीके नीचे घग होवेगा ३०

बुधसे युतहोकर पष्ठेश लग्नमें वा भाठमें भावमें गयाहोवेतो हृदयमें घगहोवेगा ३१

शुक्रसे युत होकर पष्ठेश लग्नमें वा भाठमें भावमें गया होवेतो नेत्र के मूलमें जखम होवे ३२

शनीसे युतहोकर पष्ठेश लग्नमें वा आठमें भावमें गयाहोवेतो पाँच
मे व्रण होवे ३३

राहु वा केतुसे युतहोकर पष्ठेश लग्नमें अथवा आठमें भावमें गया
होतो आठ पर व्रण होवेगा ३४

मंगल ३-११-६ भावमें गयाहो और चारमें भावमें गुरुहोतो
बाम पांश्व में व्रण होवे ३५

चारमें भावमें गुरु और चंद्र दोनों गये हो और पुष्य ३-६-११
भावमें होतो गुदा के समीप व्रण होवे ३६

मंगल और शनि का योग छुटे अथवा चारमें भावमें होवे और
उनको हुभयह नहों देखेवे होतो गंडमाला रोग (कंठमें होताहै वह)
होवे ३७

पापग्रहसे युत अथवा दृष्ट पष्ठेश दशमें भावमें जिसराशीमें जावे
वह राशिकालगुरु के भंगमें जिस भंगकी होवे उसी भंगमें जलम
(घाव) होवेगा अर्थात् मेषराशी होतो मस्तक में वृषभ होतो मुखपर
इत्यादि क्रमसे राशीके भंग के अनुसार व्रणका स्थान जानना ३८

तापगण्ड योग ।

लग्नेशार्को त्रिके तापगण्डः ३९

टीका-लग्नेश और रवि इन दोनों का योग ६।८।१२ भावमें हों
तो तापगण्ड (दाहयुक्त गलगण्ड) रोगहोवे ३९

जलगण्ड योग ।

चंद्राक्षरौ त्रिके जलगण्डः ४०

लग्नपष्ठेशचंद्राक्षिके जलगण्डः ४१

मकरांशे दुष्टग्रन्यि गण्डादि ४२

टीका-चंद्र और लग्नेश इन दोनों का योग ६।८।१२ भावमें होतो
जलसे उत्पन्न हुवा गलगण्ड रोगहोवे ४०

लग्नेश, पष्ठेश, और चंद्रमा ये तीनों ६।८।१२ भावमें गयेहोवेतो
जलगण्ड (कफजनित गलगण्ड) रोग होवे ४१

मकरांशलग्न मकर राशीका होतो दुष्टग्रन्यि रोग वा गलगण्ड
रोगादि होवे ४२

पित्तरोगीयोग.

एग्निराज्ञौ त्रिके पित्तरोगी ४३

टीका-लग्नेश और गुरु का योग ६।८।१२ भावमें होतो पित्तका रोग होवे ४३

आमरोगीयोग.

जीवांगिराज्ञौ त्रिके आमरोगी ४४

टीका-गुरु और लग्नेश का योग ६।८।१२ भावमें हो तो आम रोगी होवे ४४

क्षय रोगी योग ।

शुक्राक्षेणौ त्रिके क्षयरोगी ४५

अंशानुर्यात्यगौ क्रमात्कुजराहु क्षयरोगी ४६

भौमाकर्ष्य दृष्टे एग्ने भ्रातृक्षयादिः ४७

चंद्रार्को वन्योन्य भांशगौ क्षयी ४८

सिंहेवा कर्कचंद्रार्को क्षयी ४९

सपमे चंद्रे भौमदृष्टे महणिजः क्षयी ५०

कर्केक्षे क्षयी ५१

टीका-शुक्र और लग्नेशका योग ६।८।१२ भावमें होतो क्षयरोगी होवे ४५

बारकाग्न लग्नसे चतुर्वेभावमें मंगल और बारमें भावमें राहु मये हो तो क्षयरोगी होवे ४६

मंगल और ज्ञानि लग्नको देखने होतो द्वाभाम क्षयादिरोग होवे ४७

चंद्र और रवि परस्पर अन्योन्य राक्षी और नक्षत्रमें गदेदोरे अर्धान् चंद्रको । कर्क । राक्षीमें कर्कराक्षीके नक्षत्रका रविहो और रविही (सिंह) राक्षीमें सिंह राक्षीके नक्षत्रका चंद्रमा हो तो क्षय रोगी होवे ४८

सिंह राक्षीमें अथवा कर्कराक्षी में रवि चंद्रकायोग होतो क्षयरोगी होवे ४९

शनिसे युक्त चंद्रमा को भौम देखता हो तो संग्रहणी रोग जनित क्षय रोग होवे ५०

फकंराशी मे युव गया होवे तो क्षयगोमी होवे ५१

चौरांत्यज जानित रोगयोग ।

लग्नेरोनमह शनि राहु केत्वन्पतमस्त्रिके चौरांत्यज जानितो रोगः ५२

टीका-लग्नेश से शनि, राहु. किया केतु इत्नीनो ग्रहों में से कोईमांभेक ग्रह युनहोकर (६।८।१२) त्रिकस्थानमे गयाहोती चौर तथा भोग्यज जानिके मनुष्य के मयव से रोगहोवंगा । ५२
हृदोगीयोग ।

तुर्यगा डज्यागर्कजाहृदोगी ५३

टीका-गुरु शनि और शनि ये तीनों ग्रह चतुर्थ भावमें गयेहोती हृदोगी होवे ५३

व्याधियुत निस्परोगी तथा नाना रोगराश्र योग.

मंदे पात्रयुतदृष्टेन्त्ये वा त्रिकांणे व्याधियुतः ५४

त्रिकेष्टमेशे निस्परोगी ५५

लाभेरोपश्रु नानागेगवान् ५६

टीका-शनिग्रहसे युक्त दृष्ट होकर शनि पारवें भावमें हो किया १।५ भाव में गयाहोती व्याधियुत (रोगी) होवे ५४

भाटमें भावका स्वामी ६।८।१२ स्थानमें गयाहोती निस्परोगी होवे ५५

सामेन छंटे भावमें गयाहो तो अनेक रोग पाता होतः ५६

श्री रोग योग ।

शुक्राग्रे मनमे श्री रोगः ५७

टीका-शुक्र और मंगल का योग सप्तम भाव में होतो श्री रोगी होवे ५७

श्री रोगी योग ।

गुप्तारोपये राहुर्क दृष्टी लग्नेरोऽप्ये श्री रोगी ५८

टीका-छठेभावमें मयेहुवे शनि मंगल रवि व राहु से दृष्टहो और लग्नेश बलहीन होतो बहुत दिनतक आराम नही होनिवाला (दोष) रोग होवे ५८

उदर रोगी योग ।

मदेराहु केतु उदररोगः ५९

रंध्रपंदे लग्ने चंद्रे उदररोगः ६०

टीका-सातमें भावमें राहु किंवाकेतु गयाहोतो उदर (पेटमें) रोगहोवे ५९

आठमें भाव में शनि और लग्न में चंद्रगया होतो उदर रोग (पेटका रोग अर्थात् मँदासी पेटमें दुखना जलोदर कठोदर आदिरोग) होवे ६०
दंतरोगी योग.

लग्ने गुरु राहु दन्तरोगी ६१

पष्ठे राहु केतु दन्ते धरे वारोगी ६२

टीका-लग्नमें गुरु राहु का योगहो तो दंतरोगी (दातुके रोगवाला) होवे ६१

छठेभावमें राहु किंवा केतुगया होतो दांतमें वा ओष्ठमेंरोगहोवे ६२
स्मररोगी योग.

मन्दारार्केन्दुषु रंध्रारिवित्तान्तरूपेषु स्मररोगी ६३

टीका-शनि, मंगल, रवि, और चंद्रमा ये चारोग्रह ८।६।७।९। इनचारो भावों में क्रमसे वा कोईभी स्थान में चारों भेक राजा में वा न्यारे न्यारे गये होतो काम संवधी (धीरे विकार का) रोगहोवे ६३
नाभिगंगा योग ।

मोत्येर्गणे नाभिगंगा ६४

टीका-छठभाव का स्वामी ३ तीसरे भाव में गयाहोतो नाभिरोगी (नाभी में रोगहो वा नामसरकरने की पीडा) होवे ६४

पाद रोगीयोग

मंदेरिगे पादरोगी ६५

टीका-छठेभाव में शनिगयाहोतो पांव में रोगवाला होताहै ६५

गुदरोगी वा गुह्यरोगी योग ।

क्षारक्षेत्रे शत्रुदृष्टे गुदसमीपे धाक्केवारोगः ६६

क्षारांगेशाः त्रिहगाः सुखेवा व्यये गुदरोगः ६७

कर्कात्पंरो चंद्रे पापैर्युते गुदरोगः ६८

रंध्रेपापा गुह्यरोगः ६९

जीवैत्ये गुह्यरोगः ७०

सारौषष्ठेशज्ञौ लिंगरोगः ७१

टीका-लग्नेश बुधकी राशी (३।६मे) किंवा मंगलकी राशी (१।८) में गयाहो और अपने शत्रुग्रहसे दृष्टहो तो गुदाके समीपमें वा अर्धांग में रोगहोवे ६६

बुध, मंगल और लग्नेश ये तीनों ग्रह त्रिहाराशी में गयेहो और सुख (४) में किंवा चारवें भाग में स्थितहो तो गुदा में रोग होवे ६७

कर्क अथवा कृत्तिक राशिके नवांशमें गयाहुवा चंद्रमा पापग्रहोंसे युतहोवेतो गुप्तांग में रोगहोवे ६८

आठ में स्थानमें ३।४ पापग्रह गयेहोवेतो गुप्तांगमें रोगहोवे ६९

चारमें भाग में गुरु गया होवेतो गुप्तांग में रोगहोवे ७०

षष्ठेश और बुधयेदीनो मंगलसे युतहोतो जननेंद्रियमें रोगहोवे ७१

शस्त्रादिपीडायोग ।

लग्नेकुजे शन्यर्के दृष्टे शस्त्रादिपीडा ७२

टीका-लग्नमें गया हुवा मंगल शनि और रविसे दृष्टहोतो शस्त्रादिक से पीडाहोवे ७२

अरस्मरि योग ।

सार्कजेचंद्रे भौपदृष्टे अस्मारी ७३

रंध्रेचंद्रराहु अपस्मारी ७४

रंध्रे पापाभ्रंदाच्छौ संयुतौ केन्द्रास्मारी ७५

पष्ठाष्टमें मंदे कुजपुते पस्मारी ७६

चंद्रागर्का लग्नमृतिगाः क्रूरदृष्टा अप्समारी ७७

ग्रहणकालेयमारौ रंध्रेष्वे वा गुरुहोनेलग्नेषिकोणेपसमारी ७८

इन्दौष्वे-कुंराहौ अपसमारां ७९

टीका-शनी से युक्त चंद्रमा भौम से दृष्ट होतो अपसमार (मृगी) रोगवाला होवे ७३

भाठमें भाव में चंद्र राहु का योग होतो मृगी रोगवाला होवे ७४

भ टमे भाव में शनि पापग्रह गये हो और चंद्र शुक्र का योग केन्द्रस्थानमें हुआ होतो अपसमार (मृगी) रोगवाला होवे ७५

छठे किंवा भाठ में भावमें शनि मंगल का योग हुआ तो अपसमारी होवे ७६

चंद्र मंगल और सूर्य ये तीनों छठे लग्नमें किंवा अष्टम भावमें गये हो और पापग्रह से दृष्ट होतो अपसमार रोगी होवे ७७

ग्रहण समयका जन्महो शनि मंगल का योग छठे अथवा भाठमें भावमें हो और लग्नमें किंवा ९/५ में भावमें गुरु का योग तर्ही होतो अपसमार रोगवाला होवे ७८

छठे भावमें चंद्रमा और लग्नमें राहु गया होतो अपसमार रोगवाला होवे ७९

तालुरोग योग ।

ज्ञार्थेराी सराहुकेत्वोः षष्ठे तमस्थर्शेषाधुनौ तालुरोगः ८०

टीका-यमेश और गुरु राहु किंवा केतु से युक्त होकर छठे भाव में गये हो और निसराशी में राहु स्थित होवे उसराशी के स्वामी से युक्त हो तो तालुरोगी (तालु स्थानमें रोगवाला) होवे ८०

गलरोग योग ।

सज्ञेसोत्यो गलरोगः ८१

पापेसोत्ये गलरोगः ८२

सोत्येगुलिके विशेषाद्रुगः ८३

सपापेचंद्रे सुखे कंठ रोगः ८४

टीका-तीसरे भाव का स्वामि बुधसे युत होतो गलमे रोगहोवे ८१
 तीसरे भाव में पापग्रह गयेहोतो गलेमें रोगहोवे ८२
 तीसरे भाव में गुलिक गयाहोतो भवदय गलरोग होवे ८३
 पापग्रह से युतचंद्रमा मुखभाव में गयाहोतो कंठमें रोगहोवे ८४
 मस्तक रोग योग ।

सोत्येशेशेश्वरारोरो केंद्रपाश्र्वयुत दृष्टे मस्तकरोगः ८५ ।

यमारराहव एकक्षगा मस्तकरोगः ८६

टीका-तीसरे भावके स्वामी के नवांश का स्वामी जिसराशि के नवांश में होवे उसका स्वामि १।४।७।१० भाव में गयाहो और पापग्रह से युत दृष्ट होतो मस्तकमें रोग होवे ८५
 शनि, मंगल, और राहु ये तिनोयह एकराशिमें गयेहोतो मस्तक में रोगहोवे ८६

मुखरोगयोग.

कुजक्षैगरो ज्युते मुखरोगः ८७

कोशेकारो मुखरोगः ८८

टीका-मंगलकी राशि (१।८) में गया हुआ लोभग्र बुध से युत होतो मुख में रोग होवे ८७

धनभावमें रवि मंगलका योग होना मुख में रोग होवे ८८

कर्णरोग योग

सोत्ये प्रेत पुर्गपाशे भौमे कर्णरोगः ८९

सोत्ये गुलिकार्कजौ शुभदृग्घातौ कर्णरोगः ९०

सोत्ये चूरपण्ड्यंशे कर्णरोगः ९१

अंशे केतौ पापदृष्टे कर्णच्छेदः कर्णरोगो वा ९२

टीका-प्रेत पुरीष संज्ञक पण्ड्यंशमें गयाहुवा मंगल तीसरे भाव गया होतो कानमें रोग होवे ८९

तीसरे भावमें गुलिक और शनि गये हों और इनको कोई शुभ नही देखाता होतो कानमें रोगहोवे ९०

तीसरे भावका स्वामि क्रूरपशुचंद्रशमेगयाहो तो कानमें रोग होवे ९१
कारकांश लग्नमें गयेहुवे केतुको पाप ग्रह देखते होतो कानकटजावे
रथवा कानमें रोग होवे ९२

पानसरोग योग.

पष्ठचंद्रे रंध्रभंदे न्त्यपापेलग्रपेपापांशे पानसरोगः ९३

टीका-छठे चंद्रमा, भाठमें शनि, व बारमें पापग्रह, गये हो और ल-
श पापग्रहके नवांशय होतो पानस रोग होवे ९३

पिशाच पांडायोग.

रंध्रचंद्रे समंदे बले पिशाचपीडा ९४

तमोर्कजी लग्ने पिशाचपीडा ९५

टीका-भाठमें भावमें चंद्रमा शनीसे युत हो और निबली होतो
पिशाचपीडा होवे ९४

उहु और शनि का योग लग्नमें होतो पिशाचपीडा होवे ९५

चातुर्थिक ज्वरयोग.

रंध्रेशसराहुकेतौचातुर्थिकज्वरः ९६

टीका-भाठमें राहु किंवा केतुसे युत हो तो चातुर्थिक ज्वरका रोग
होवे ९६

देहवैकल्य योग ।

व्ययेरो बले क्रूरभांशे नीचारांशे वा देहवैकल्यम् ९७

व्ययेपाना वा व्ययेराः पापयुतो देह वैकल्यम् ९८

सूर्या द्वितीयेभंदे स्वचंद्रे सममेभौमे देहवैकल्यम् ९९

टीका-बारमें भावका स्वामि निबली हो और पापग्रहकी राशिमें
नवशमे अथवा नीचराशी के नवांशमें होतो देह में विकलताहोवे ९७

बारमें भावमें पापग्रह गये हो अथवा व्ययेश पापग्रहसे युतहोतो
देहमें विकलता होवे ९८

सूर्यसे दूसरे भावमें शनि, दशमेचंद्रमा, और सातमें भावमें मंगल
गया होतो देहमें विकलता होवे ९९

तनुशोष, गुल्म, संग्रहणी, अतिसार रोग योगः

चंद्रार्का वन्योन्यर्क्षगौ तनुशोषः १००

कर्कालिघटांशे चंद्रे सप्तदे गुल्मरोगः १०१

अंशात्सुते केतौ संग्रहणी १०२

कोशेभदे वा राहौ संग्रहणी १०३

लग्नेतमोज्ञौ यूनेयमारौ अतिसाररोगः १०४

टीका—चंद्रकी राशी (४) में रवि और रविकी राशी (५) में चंद्रमागयाहो तो तनुशोषरोग (शरीरमूखतानावे यह रोग) होवे १००

कर्क वृश्चिक किंवा कुंभराशीके नवांशमें गयाहुवा चंद्रमा शनिसे युत होतो गुल्म रोग (गोला बढनेकी बिमारी) होवे १०१

कारकाश लग्नसे पाचमें भावमें केतु गयाहोतो संग्रहणीरोग होवे १०२

धनभावमें शनि किंवा राहु गयाहोतो संग्रहणी रोग होवे १०३

लग्नमें राहुबुध और सातमे भावमें शनि मंगल गये होतो अतिसार-रोग होवे १०४

अग्नि विषादित तथा शीत रुक् योग.

धर्मे कुजेग्निविषादितः १०५

सपापे पापदृष्टे चंदौ लग्ने शीतरुक् १०६

टीका—नवमे भावमें मंगलगयाहोतो अग्नि तथा बिषके सबब से दुखी होवे १०५

पापदृष्टसे युत और दृष्ट चंद्रमा लग्नमें गयाहोतो सरदीका होवे १०६

प्रमेहरोग योग.

मंदार्कगुक्ताः पंचमस्याः प्रमेहः १०७

लग्नेर्के मदेभौमे प्रमेहः १०८

सेभौमे शनि युत दृष्टे प्रमेहः १०९

टीका-शनि, रवि, और शुक्र ये तीनों ग्रह पंचमस्थानमें गये होते प्रमेहरोग (मुजाक वा परमिया) होवे १०७

लग्नमें रवि और सातमें मंगल गयाहोतो प्रमेह रोग होवे १०८

दशमें भावमें मंगल शनिसे युत किंवा दृष्ट होतो प्रमेहका रोग होवे १०९

वातरोग योग

समंदरीशे नीचे अनिरोगः ११०

इज्येङ्गे मूदे मंदे वाताधिक्यं १११

त्रिकोणास्ते भौमे मंदेङ्गे वाताधिक्यं ११२

क्षीणेन्दु मन्दौ व्ययगौ वाताधिक्यं ११३

टीका-नीचराशीमें गयाहुवा षष्ठेश जनीसे युत होतो वात रोग होवे अर्थात् ८४ प्रकारके वायुके रोग है उनमेंसे कोईभी रोग होवे ११०

लग्नमें गुरु और सातमें भावमें शनिगयाहोतो वायु अधिकहोवे १११
नवमें पाचमें तथा सातमें भावमें मंगल और लग्नमें शनिगया होतो वात रोग अधिक होवे ११२

क्षीणचंद्र और जनीका योग वारमें भावमें होतो वात रोग अधिक होवे ११३

मूत्र कृच्छ्ररोग योग ।

जलभेचंद्रे तत्पेष्टे जलक्षीर्णे शरपे मूत्रकृच्छ्ररोगः ११४

पापाः षष्ठे वा सप्तमे मूत्र कृच्छ्ररोगः ११५

टीका-जलराशीका चंद्रहो उसचंद्रकी राशीका स्वामी छठे भाव में गयाहो और उसको जलराशों में गयाहुवा बुधदेवताहोतो मूत्रकृच्छ्र रोग (पेशाब महाकंठ से सतरे बह रोग) होवे ११४

छठे भववा सात व भावमें ३४ पापग्रह गयेहोतो मूत्र कृच्छ्ररोग होवे ११५

कुंठ्ययोग

मेपेते खेज्जे रानि भौम योगे कुंठ्य ११६

युग्मकर्क भीनाशे चंद्र यमार दृष्टयुते कुटी ११७

कर्कालि रूप मृगश्रीः पापे त्रिकोणे दृष्टे वायुते कुटी ११८

जेन्दु लग्नपा राहु केतु युताः कुटी ११९

कुजेके रन्ध्रके तुयेर्केजे कुटी १२०

मंदारेन्द्रच्छेपु क्रूरादितेपु जलभगेपुसजलकुटी १२१

मंशकार युतो रक्तकृष्णारूप कुटी १२२

पष्ठेशे सारंगे पित्तकुटी १२३

समन्देरीरोक्ते कफकुटी १२४

सूर्य पष्ठेशावंगे रक्तकुटी १२५

अंशानुपेचंद्रे केतुदृष्टे नीलकुटी १२६

अंशानुपेचंद्रे कुजदृष्टे मृदाकुटी १२७

चंद्राच्छौ सपापौ जलभगौ भित्रि १२८

अंशानुसुखे चंद्रे शुक्र दृष्टेभित्रि १२९

लग्नेश इन्दारौ वा राहुकेत्वन्यतरयुतौ एकत्राभित्रि १३०

मंशारचंद्रा भेषवा वृषे भित्रि १३१

सौरारयोरिः फधनस्थयोः क्रमा लग्नेचंद्रे सूर्येस्ते भित्रि १३२

टीका-मेपराशी का बुध, दशमे चंद्रमा, और शनि भौमका एका शिमें योगहोतो कुष्टरोग बाला होवे इसयोग में शनि भौमके योग का स्थाननही कहाहै परंतु यदि ये योग दशमे भावमे चंद्रमा से युतहोतो विशेष बलवान होवेगा १३६

मिथुन, कर्क, तथा मीन राशी के नवांश में गयाहुवा चंद्रमा शनि मंगल से युत होवा दृष्टहोतो कुष्ठ रोगबाला होवे १३७

कर्क, मृषिक, और मकर, राशी में पापग्रह गये हो और इनसे ५ भावयुत भयवा दृष्टहो तो कुष्टरोगी होवे १३८

बुध, चंद्र, और लग्नका स्वामी ये तीनों राहु किंवा केतु से युत हो तो कुष्ठरोगी होवे ११९

लग्नमें मंगल, भाठमें भावमें रवि और चतुर्थभावमें शनि गया होतो कुष्ठ रोगी होवे १२०

शनि, मंगल, चंद्र, और शुक ये चारो ग्रह पापग्रहसे युत वा दृष्ट हो और जलराशी में गये हो तो जिस कुष्ठरोगमें पानी चुपाकर वैसा सजल कुष्ठ रोगवाला होवे १२१

शनि रवि और मंगल का योग हो तो रक्तकृष्ण नामका कुष्ठ होवे। इस योग में स्थान नहीं कहा है परंतु ये योग १४।८ भाव में होतो बलघाव जानना १२२

षष्ठेश लग्न में मंगल से युत होतो पित्तकुष्ठी होवे १२३

षष्ठेश लग्नमें शनि से युत होतो कफ कुष्ठी होवे १२४

षष्ठेश लग्नमें सूर्य से युत हो तो रक्तकुष्ठी होवे १२५

कारकांशलग्नसे चतुर्थ भाव में चंद्रमा केतुसे दृष्टहोतो नील कुष्ठी होवे १२६

कारकांशलग्नसे चतुर्थ भाव में मयाद्रुव चंद्रमा मंगल से दृष्ट होतो महा कुष्ठी होवे १२७

जलराशी में गये बुध चंद्र शुक पापग्रहो से युतहोतो सफेद कोंड का रोग होवे १२८

कारकांश लग्नसे चतुर्थ भाव में चंद्रमा शुकसे दृष्ट होतो सफेद कुष्ठ रोग होवे १२९

लग्नेश किंवा चंद्र मंगल, राहु भयवा केतुसे युत होतो कोईभी शरीरके एक भागमें सफेद कुष्ठ होवेगा १३०

शनि मंगल और चंद्रमा ये तीनों मेष भयवा मृषभ राशी में गये होतो सफेद कुष्ठ रोग होवे १३१

चारमें शनि, धनमें मंगल, लग्न में चंद्रमा, और सातमें सूर्य क्रमसे गये होतो सफेद कुष्ठ रोग होवे १३२

कुष्ठरोग १८ प्रकारका होता है उनमेंसे ग्रहयोगोंके बलानुसार कोईभी जातका कुष्ठ रोग होता है।

शूलरोगी योग ।

पण्डान्त्यगौ मन्दारौ शूलरोगी १३३

सिंहे चंद्रे पापार्दिते शूलरोगी १३४

लाभेशे सोत्ये शूलरोगी १३५

केद्र कोणे सिंहगेशुके सोत्येजीवे शूलरोगी १३६

टीका—उडे किंवा बारमें भावमें शनि मंगल पायेहो तो शूलरोग बाढा होता है १३३

सिंहराशीमें गयाहुवा चंद्रमा पापग्रहोंसे युत दृष्ट होतो शूलरोगी होवे १३४

लाभेश तीसरे भावमें गया होता शूलरोगी होवे १३५

सिंहराशीमें गयाहुवा शुक्र केन्द्रकोणस्थान (१४५७१०१५) में और शुक्र तीसरे भावमें गया होतो शूल रोगी होवे १३६
पामान योग ।

सपाप चंद्रे नवमे पामानः १३७

टीका—पापग्रहसे युत चंद्रमा नवमे भावमें गयाहोतो पाम (सान) रोग बाला होवे १३७

भक्षरोग योग ।

मन्देन्त्ये पाप दृष्टेऽर्थसः १३८

मन्दे लग्ने कुजेस्तेऽर्थसः १३९

युनेरंध्रेरो क्रूर शुभादृष्टेऽर्थसः १४०

मंदेस्तेलो भौमिद्वेऽर्थसः १४१

मन्देन्त्ये युनगौ लग्नभारौ अर्थसः १४२

व्ययेर्वजे भौमांगेशदृष्टेऽर्थसः १४३

टीका—बारमें भावमें शनि पापग्रहसे दृष्ट होतो भक्ष (बवागोरवा) रोग होवे १३८

शनि लग्नमें और मंगलरातमें भावमें होतो भक्ष रोगी होवे १३९

अष्टमेश क्रूरग्रह होकर सातमें भावमें गयाहो और शुभग्रहसे दृष्ट नहो तो भर्शरोगी होवे १४०

शनि सप्तमभावमें और वृश्चिकराशीका मंगलनवमे भावमें गया हो तो भर्शरोगी होवे १४१

शनिवारमें भावमें और लग्नेश व मंगल ये दोनो सप्तम भाव में गये होतो भर्शरोगी होवे १४२

बारवे भाव में गयाहुवा शनि, मंगल और लग्नेश दोनोसे दृष्टहोतो भर्शरोगी अर्थात् बवाशीर के रोगवाला होवे १४३

कफरोग योग ।

मंदार्क योगे कफरोगः १४४

टीका-शनि सूर्यका योगहोतो कफका रोगहोवे १४४

प्लीहरोग योग ।

पष्ठेशचंद्रे पापयुते प्लीहरोगः १४५

लग्नेशेस्ते क्रूरदृष्टे शुभग्रहानि प्लीहरोगः १४६

चंद्रेण पष्ठेशो क्रूरमात्रदृष्टो प्लीहरोगः १४७

कामांगेशे चंद्रेक्रूरमात्र दृष्टे प्लीहरोगः १४८

सौरारमध्यगे चंद्रे मृगेर्के प्लीहश्वासादिः १४९

सुतगौमंदचंद्रो प्लीहरोगी १५०

टीका-पष्ठेश चंद्रमा पापयुत होतो प्लीहरोगी (तिछीबढनेका रोग) होवे १४५

लग्नेश सप्तम भावमें क्रूर ग्रहसे दृष्टहो और किसी शुभग्रहसे दृष्ट नहिहोतो प्लीहरोगहोवे १४६

चंद्रमा निसराशिमें गयाहो वसराशी का स्वाभि और पष्ठेश ये दोनो क्रूर ग्रहमात्र से दृष्ट होतो प्लीहरोग होवे १४७

सप्तम भावका किया लग्नका स्वामी चंद्रमा हो और वह क्रूरग्रह मात्र से दृष्टहोतो प्लीह रोगहोवे १४८

शनि और मंगल के मध्यमें चंद्रमा गयाहो और नकरराशीकारवि-
होतो प्लीह (तिछी बढनेका) वा श्वास कास का रोगहोवे १४९

पंचम भाव में शनि चंद्रमा गयेहोतो प्लीहरोगराला होवे १५०
दुद्रुगोग योग ।

कोशेजलक्षं चन्द्रे मन्ददृष्टे दद्रुः १५१

लग्नेर्के दद्रुः १५२

टीका—जलराशीमे गयाहुवा चंद्रमा धनभावमे गयाहो और वसं
शनि देखता हो तो दद्रु [दादका] रोगहोवे १५१

लग्नमें रवि गयाहोतो दुद्रुगोग होवे १५२

जलभययोग ।

कर्कांशे जलभयम् १५३

अष्टमे चन्द्रे जलभयम् १५४

लग्नेब्जे पापदृष्टे जलभीः १५५

टीका—कारकांश लग्न कर्कराशी का होतो जलका भय (जलपात)
होवे १५३

भाठमे भाष में चंद्रमा गयाहोतो जलका भय होवे १५४

लग्नमे गयाहुवा चंद्रमा पापदृष्ट से दृष्टहोतो जलका भयहोवे १५५
संप भययोग ।

चंद्रारौपष्ठेऽष्टमेवा सर्पभयम् १५६

तमस्त्यर्थे गुलिकयुतदृष्टे सर्पभयम् १५७

सोत्प्रेरो राहुयुतेब्जे सर्पभयम् १५८

टीका—चंद्र और मंगल छटे भयवा भाठ में भाष में गये होतो सर्प
का भयहोवेगा १५६

धनभावमे गयाहुवा राहु गुलिक से युतदृष्टहोतो सर्पका भयहोवेगा १५७

तीसरे भाव का स्वामि और राहु कायोग लग्न में होतो सर्पका
भयहोवे १५८

चौर तथा अग्नि भय योग

पापेब्जे त्रिकोणे गुलिके चौर भयम् १५९

केतावज्ञे पापयुत दृष्टे पिशाचचौरभयं १६०

सराहुकेतौ पष्ठेशे सर्पपीडाचौराग्निभीर्वा १६१

धर्मेशे पष्ठे पष्ठेश दृष्टे चौराग्निभीः १६२

पष्ठेशे पंदारयुते चौराग्निभीः १६३

टीका—लग्नमें पापग्रह, और ९-९ भावमें गुलिक गया होतो चौर-
का भय होवे १५९

लग्नमें गयाहुवा केतु पापग्रहसे युत और दृष्ट होतो पिशाचका
तथा चौरका भय होवे १६०

पष्ठेशराहु से किंवा केतुसे युव होतो सर्प पीडा अथवा चौरभय
वा अग्निका भय होवे १६१

नवमें भावका स्वामि छठे भाव में पष्ठेशसे दृष्ट होतो चौर किंवा
अग्निका भय होवे १६२

पष्ठेश शनि मंगलसे युत होतो चौर किंवा अग्निका भय होवे १६३
स्फोट अग्नि तथा खल भय योग.

लग्नाष्टास्तेर्के भौमदृष्टे स्फोटाग्निखलभीः १६४

सप्ताष्टाद्यार्थे भौमे सूर्यदृष्टे स्फोटाग्निखलभीः १६५

लग्नान्त्यारिमदे गुलिकारौ सूर्यदृष्टौ स्फोटाग्निखलभीः १६६

सारेपष्ठेशेऽग्निभीः १६७

फूरंगे पापयुतदृष्टेऽग्निभीः १६८

टीका—लग्नमें भाठमें अथवा सातमें भावमें गयाहुवारवि मंगल से दृष्ट
होतो फोडाफुन्सिका तथा अग्निका वा दुष्ट मनुष्यका भय होवे १६४

सातमें भाठमें लग्नमें अथवा धनभावमें गयाहुवामंगलसूर्यसे दृष्ट हो
तो फोडा फुन्सिका तथा अग्नीका अथवा दुष्ट मनुष्यका भय होवे १६५

लग्नमें बारमें छठे अथवा सातमें भावमें गुलिक मंगलका योग
और सनको रवि देखता होतो फोडाफुन्सि तथा अग्नीका अथवा
दुष्टमनुष्यका भय होवे १६६

पण्डेश भंगल से युक्त होतो अग्निका भय होवे १६७
लग्नमें गये हुये फल पापग्रहसे युत और दृष्ट हो तो अग्नीका
भय होवे १६८

इवान भय योग.

धनेमन्देषापट्टयुते शुनोभयम् १६९

मन्दधनेशयुक्तदृष्टे शुनोभयम् १७०

टीका-धनभावमें शनि पापग्रहसे युत और दृष्ट होतो इवानका
(कुलेका) भय होवे १६९

शनि धनेशसे युत और दृष्ट होतो इवानका भय होवे १७०

शृगालादि भय योग.

गुलिकारौ धनेष्टमे वा धनेश दृष्टौ शृगालादिभिः १७१

यमे पण्डेशे सूर्ययुते शृगालादिभिः १७२

टीका-गुलिक और भंगल धनमे अथवा भाठमें नाथमें गये हो
और धनेशसे दृष्ट होतो शिवाल लोमदी आदि जंगली जानवरोंका
भय होवे १७१

धनभावमें पण्डेश सूर्यसे युत होतो शिवाल बगेरा जंगली जानवरों
का भय होवे १७२

चतुष्पदभययोग.

लग्नेजीवसोत्थणौ चतुष्पदभीः १७३

चंद्रार्कभेराहौ चंद्रार्कयुतेपशुभीः १७४

टीका-गुरु और तीसरे भावका स्वाभी ये दोनो लग्नमें गये होतो
चतुष्पद (गाय भंस गधा आदि) का भय होवे १७३

कर्क किंशसिद्ध राशीमें गयाडुवा राहु राक्षसदसे युत होतो पशुका
भय होवे १७४

मृगभययोग.

पण्डेशे मन्दे राहुकेतुयुते मृगभीः १७५

टीका-पण्डेशशनि, राहुकिंवा केतुसे युत होतो हरिक का भय होवे १७५

गजमययोग.

पष्ठांगपौजीवयुतोगजभी: १७६

टीका-पष्टश भौर लग्नेश ये दोनो गुरुसे युतहोतो गजका भयहोवे १७६
अश्वमययोग.

लग्नारीशौ चंद्रयुतौ अश्वभी १७७

टीका-लग्नेश भौर षष्टश ये दोनो चंद्रमासे युतहोतो अश्वका भय-
होवे १७७

गेहशौचित्यमययोग.

रिधेकोणेकेंगेहशौचित्यमयम् १७८

टीका-रवि भाठमें नवमें किंवा पाँचमें भावमें गयाहो तो पुरानेघरका
पढ़नेका भयहोवे १७८

क्षेत्रार्चितायोग.

रवे भौमेक्षेत्रार्चिता १७९

टीका-रशमे भावमे मंगल गया होतो क्षेत्रसंबंधकी चिंता रहे १७९
सौख्याचिता योग.

त्रिके भौमे सौख्याचिता १८०

टीका-मंगल ६।८।१२ भावमे गया हो तो मुक्तकी चिंता रहे १८०
बाहनाभरणवस्त्रचिंतायोग.

जीवेत्रिके बाहनाभरणवस्त्रचिंता १८१

टीका-गुरु ६।८।१२ म.व में गया होतो बाहन आभूषण और वस्त्रा-
दिककी चिंता रहेगा १८१

उग्र चामर चिंता योग.

त्रिके चंद्रे वा सिने चामर उग्र चिंता १८२

टीका-चंद्र भयषा शुरु ६।८।१२ में भावमे गया होतो चामर
(धं११) व दणकी चिंता रहे १८२

पुष्प चिंता योग.

पूने कोणे जीवे पुष्प चिंता १८३

टीका—गुरु सातमे किंवा ९/५ भावमें गयाहो तो पुत्रसंबंधी चिंता रहे १८३

धी चिन्तायोग.

जेसुते धी चिन्ता १८४

टीका—गुरुपंचमभावमें गयाहो तो मुद्रिसंबंधी चिन्ता रहे १८४
तात बंधु चिन्तायोग ।

सूर्य कोणे तात बंधुचिन्ता १८५

टीका—नवमे पांचवें भाव में सूर्यगयाहोतो पिता तथा बंधु हर्षरी चिन्ता रहे १८५

यात्रा चिन्तायोग ।

सुतेघुने शुक्रे यात्रा चिन्ता १८६

टीका—पांचवें अथवा सातवें भाव में शुक्र गयाहोतो यात्रा (मुसाहरी) संबंधी चिन्तारहे १८६

मातुल सुखाभाव योग ।

स्वधर्म पापदृष्टेभौमे मातुलभावः १८७

ज्ञात्यष्टे पापे मातुल सुखं १८८

टीका—नवमे किंवा दशमें भावमें मंगल पापग्रहसे दृष्टहो तो मामा का सुखनहीहोवे १८७

गुरुसे छठे भावमें पापग्रह गयेहोतो मामाका सुख नहीहोवे १८८

मातुल सुखयोग ।

पष्ठेशुभदृष्ट्याधिक्ये मातुल सुखम् १८९

पष्ठेशुभे मातुल सुखम् १९०

ज्ञेशुभयुते मातुल सुखम् १९१

इतिपञ्चविवेकः

टीका—छठे भावपर शुभग्रहोकि अधिक दृष्टिहो तो मामाका सुख भच्छा होवेगा १८९

छठेभाव में शुभग्रह गयेहोतो मामाका सुख होवे १९०

• अष्टमेश लग्नेश और दशमेश ये तीनों ग्रह केन्द्रकोण वा लाभ स्थान (११४७१०१९, ५१११) में गये हो तो दीर्घायु होवे ४

• शनि अपानि स्वराशि किंवा उच्चराशी में स्थित होकर उपचय स्थान (३६११०११) में गया हो १ अथवा अष्टमेश शनि पंचम भाव में गया हो तो दीर्घायु होवे ५

अष्टमेश और लग्नेश अष्टम भाव में गये हो १ अथवा अष्टमेश लग्नेश दोनों लाभ भावमें गये हो २ तो दीर्घायु होवे ६

षष्ठेश और व्यवेश ये दोनों लग्नमें गये हो १ अथवा दशमेश केन्द्र में गया हो २ किंवा लग्नेश केन्द्रमें गया हो ३ तो दीर्घायु होवे ७ इस सूत्रमें तीन योग कहे हैं ।

• दशमेश अथवा उच्चराशी में स्थित होकर पंचमभाव में गया हो १ अथवा अष्टमेश केन्द्र में गया हो २ किंवा केन्द्रस्थानमें शुभ ग्रह गये हो ३ तो दीर्घायु होवे ८ इस सूत्रमें भी तीन योग हैं ।

दशमेश लग्नेश और अष्टमेश ये तीनों ग्रह शनि से युक्त होकर केन्द्रस्थान में गये हो तो दीर्घायु होवे ९

सर्वपापग्रह तीसरे ग्यारवे तथा छठे भावमें और सर्व शुभग्रह केन्द्रकोण स्थानमें गये हो तो दीर्घायु होवे १०

• सर्वशुभग्रह छठे सातवें और आठवें भावमें और सर्व पापग्रह तीसरे छठे ग्यारवें भावमें गये हो तो दीर्घायु होवे ११

• लग्नमें गया हुआ अष्टमेश गुरुशुक्र से दृष्ट हो तो दीर्घायु होवे १२ सर्वशुभ ग्रह केन्द्रकोण (११४७१०१९, ५) स्थानमें गये हो और पापग्रह पारावतांश में गये हो तो दीर्घायु होवे १३

मध्याय योग ।

पापाः पणफरतुर्ध त्रिस्य मध्यायः १४

अङ्गेशोऽवले जीवेकेन्द्रकोणे त्रिकेपापे मध्यायः १५

शुभे केन्द्रकोणे मन्देयलिनि पण्टेष्टमे वा पापे मध्यायः १६

त्रिकोणे केन्द्रे वा मिमा मध्यायः १७

टीका—सर्वपापग्रह पणफर (२१११०११) स्थानमें अथवा तीसरे और चतुर्थ भाव में गये हो तो मध्याय होवे १४

लग्नेशनिर्वली होवे, गुरुकेन्द्र किंवा त्रिकोण स्थानमें होवे और पापग्रह ६।८।१२ में भावमें गये हो तो मध्यायु होवे १५

सर्वशुभग्रहकेन्द्र वा त्रिकोणस्थान में गये हो और शनि वरुण होकर छठे किंवा भाठ में भाव में गया हो १ अथवा पापग्रह वरुण होकर छठे वा भाठ में भाव में गये हो तो मध्यायु होवे १६

केन्द्र त्रिकोणस्थान (१।५।७।१०।१५) में शुभ और पाप (दोनों मिश्र) ग्रह गये हो तो मध्यायु होवे १७

अस्यायु-योग ।

सपापे रन्ध्रेशेन्त्ये षष्ठे वा अल्पायुः १८

पापाभापोक्विलमस्था अल्पायुः १९

लग्नाष्टमेशौव्यये रिगे वाऽल्पायुः २०

धनेशेके स्तेर्कजे लामे इज्याञ्चौ अल्पायुः २१

लग्नेर्कजारौ चन्द्रो रन्ध्रगः षष्ठे जीवेऽल्पायुः २२

लग्नेशेष्टमे ल्पायुः २३

त्रिकेपापेक्षेशे ऽष्टलेल्पायुः २४

क्रूरपष्ठयंशे मन्दरन्ध्रेशौ सपापौ पापदृष्टौवाल्पायुः २५

पापेकेन्द्रे शुभदृग्धीनेक्षेत्रेऽष्टलेल्पायुः २६

व्ययार्थगौपापौ शुभदृग्धीनौ अल्पायुः २७

टीका—अष्टमेश पापग्रहसे युतहोकर बारह भाव में किंवा छठे स्थान में गयाहो तो अल्पायु होवे १८

सर्व पापग्रह आपोक्विलम (३।६।९।१२) स्थानमें गयेहो तो अल्पायु होवे १९

लग्नेश और अष्टमेश ये दोनों ग्रह बारह भाव में अथवा छठे भावमें गये होतो अल्पायुहोवे २०

धनेश नयमें भाव में शनि सातमें भावमें और गुरु शुक्र लाभ (ग्यारह) भाव में गयेहो तो अल्पायुहोवे २१

लग्नमे शनि मंगल, भाठमें भाबमें चंद्रमा और छठेस्थान मे गुरु गयाहोतो अस्पायुहोवे २२

लग्नेश भष्टम भाबमे गयाहोतो अस्पायुहोवे २३

पापग्रह १।८।१२ में भाब में गयेहो और लग्नेश निर्बली होतो अस्पायुहोवे २४

शनि और भष्टमेश ये दोनो धूरषष्ठचंशमे गयेहो और पापग्रहो से युत किंवा दृष्टहोवेतो अस्पायु होवे २५

केंद्रस्थान (१।४।७।१०) में गयेहुवे सर्व पापग्रहोको शुभग्रह देखते नहींहो और लग्नेश बलहीन होतो अस्पायु होवे २६

घारवे और दूसरे भाब में पापग्रह गये हो और उनको शुभग्रह नहीं देखते होतो अस्पायु होवे २७

सद्यो मृत्यु योग ।

लग्नेराहुः पष्ठाष्टमे चन्द्रे सयामृत्युः २८

टीका-लग्नमे राहु और छठे किंवा भाठ में भाब मे चंद्रमा गयाहो तो तुरंत मृत्युहोवेगा २८

वर्षान्तरे मृत्युयोग.

मन्दार्काराः पष्ठेष्टमे वर्षान्तरे मृतिः २९

टीका-शनि, रवि, और मंगल छठे भाठमे भाब में गये होतो एक वर्षकी उमर होनेके पश्चात् मृत्यु होवे २९

अर्काग्ने मृत्यु योग.

सूर्यर्क्षमन्दे मन्दर्क्षेर्केर्काग्ने मृतिः ३०

टीका-सूर्यकी राशी (५) मे शनि और शनिकी राशी (१०।११) में रवि गया हो तो बार में वर्ष में मरण होवेगा ३०

एवं सर्वाथे चित्तमगीमें योगाणुके अन्य विशेष योग लिखे हे उन-काभी भाषुदायमें विचारकरना आवश्यक है अतएव उन योगोंको उभय करने में आते हैं ।

चंद्रमाकी राशीका स्वामि सूर्य पापग्रहसे युक्त होकर १।८ मे भाब में भाबे शुभग्रहोंकी दृष्टी से रहित हो और लग्नेश आपोविद्धमस्या-नमें १।१।५।१२ गया हो तो १६ वर्ष मे मृत्यु होवे ।

लग्नेशकी राशी में अष्टमेश और अष्टमेशकी राशीमें लग्नेश हो शुभ ग्रहसे युक्त न हो अथवा लग्नेश अष्टमेश ६।१२ भावमें पंचमे से युक्त होतो १८ में वर्ष मरण होवेगा २

केंद्रस्थान में पापग्रह शुभग्रहोंके दृष्टिसे रहित हो और चंद्रमा १० में भावमें गया होतो २० में वर्ष मरण होवे ३

गृहस्पातसे युक्त सूर्य ४ कर्क राशी के लग्नमें गया हो और अष्टमेश केंद्र में हो तो २२ में वर्ष मरण होवे ४

राहुसे युक्त चंद्रमा ७ में तथा ८ में भाव में गया हो और लग्न में गुरु हो तो २२ में वर्ष मरण होवे ५

हो पापग्रहोंके बीचमें गया हुआ लग्नेश शुभ ग्रहसे युक्त न हो और जिस लग्न में पिता का जन्म होवे उसी राशी के लग्न में जन्म हुआ हो तो २५ में वर्ष मरण होवे ६

अपनि शत्रु राशि में गया हुआ शनि लग्नमें गया हो और सर्व शुभ ग्रह ३।६।९।१२ भाव में हो तो २६ वा २७ में वर्ष मरण होवे ७

रवि और चंद्रमा शनिसे संबंधी होकर अष्टम भाव में गये हो तो २९ में वर्ष मरण होवे ८

पापग्रह १।८।७ में भावमें गये हो और शुभग्रह पणकर वा आपो-विहमस्थानमें हो तो २८ में वर्ष मरण होवे ९

लग्नेश और अष्टमेश के बीचमें चंद्रमा गया हो और गुरु वारहवे भावमें हो तो २७ वा ३० में वर्ष मरण होवे १०

अष्टमेश पापग्रह गुरुसे और पापग्रहों से दृष्ट होवे अथवा लग्नेश अष्टम में गया होतो २८ में वर्ष मरण होवे ११

अष्टमेश बलवान होकर केंद्र में अथवा लग्नमें गया होतो ३० अथवा ३२ में वर्ष मरण होवे १२

चंद्रमा सूर्य से युक्त हो अष्टमेश केंद्रमें हो, पापग्रह अष्टम भावमें हो, और पापग्रह से युक्त कोई भी निर्वली ग्रह लग्नमें गया होतो ३२ में वर्ष मरण होवे १३

ग्रह सहित चंद्रमा वारहवे भाव में हो और निर्वली अष्टमेश शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट होकर केंद्रस्थानमें गया हो तो ३० में वर्ष मरण होवे १४

अष्टमेश १।२।१ भावों में से किसी भाव में हो और लग्नेश अष्टम रयानमें पापयुत दृष्ट हो तो २४ में वर्ष मेंही मृत्यु होवे १५

अष्टमेश लग्नमें और लग्नेश बलरहित होवे तो ३० वर्षकी ही आयु होवे १६

चंद्रमा और लग्नेश पापग्रहोंसे दृष्ट तथा बलहीन होकर आपोविह्वल मस्थान में गये हो तो ३० वर्ष से अधिक नहीं जीवे १७

गुरुशुक्र केंद्र में हो पापयुत लग्नेश आपोविह्वल में हो और संध्या कालमें जन्म होवे तो ३६ वर्षकी परमायु होवे १८

पापग्रहोंके बीचमें गयाहुवा शुभराशी में स्थित निबली राशि लग्नमें गया हो और शुभग्रह उसको नहीं देखवे हो तो ३६ वर्षकी परमायु होवे १९

लग्न में चंद्रमंगलगयेहो केंद्र तथा अष्टम भावमें शुभग्रह नहो और लग्न में गलिक हो तो ३६ वर्षकी परमायु होवे २०

मंगलकी राशी (१।८) में गयाहुवा चंद्रमा लग्न में पापग्रहोंसे दृष्ट हो और शुभग्रह केंद्र में नहीं गये हो तो ३३ वर्षकी आयु होवे २१

अष्टमेश पापग्रह चंद्रमासे युत होकर केंद्र तथा त्रिकोणस्थानमें गया हो और वह दशमस्थान स्थितपापग्रहोंसे दृष्ट हो तो ३३ वर्षकी आयुहोवे २२

चंद्रमा सेयुक्त शनि लग्न में गया हो और शुभराशी में मंगल हो तो ३३ वर्षकी आयु होवे २३

पापग्रहोंके बीचमें लग्न गया हो और लग्नेश मिथुनराशीका होवे और गुरु चतुर्वेध में हो तो ३७ वर्षकी आयु होवे २४

मंगलसे युक्त अष्टमेश लग्न में गया हो यद्वास्विरराशी में गयाहुवा मंगल भाठवें वा चारह में भावमें स्थितहो तो ४२ में वर्ष मरण होवे २५

केंद्र में गुरु, दश में शनि, और लग्नचरराशीका हो तो ४४ वर्षकी आयु होवे २६

चरराशीका शनि लग्न में, गुरुसप्तमभावमें, और शनि दशमे, भावमें गया होतो ४४ वर्ष की आयुहोवे २७

लग्नेश पापग्रहसे युतहोकर अष्टम भावमें गयाहो और शुभग्रह केंद्र में नहींहोतो ४० वर्ष की आयुहोवे २८

पापग्रह से युनलग्नेश अष्टमभावमें और पापग्रहसे युव अष्टमेश छठे भाव में बलवान होवे वा शुभदृष्टि रहित होतो ४५ में वर्षमें मरण होवे २९

मेषराशी का पूर्ण चंद्रमा लग्नमें शुभग्रहसे दृष्टहोवेतो ४८ में वर्ष मृत्यु होवे ३०

किसीभी ग्रहसे युक्तहोकर शनिलग्न में गयाहो और चंद्रमा ८ किंवा १२ में भावमें होतो ५२ में वर्ष मरण होवे ३१

धनराशीकागुरु लग्नमें गयाहो और राहुसे युक्त मंगल भाठमें भावमें होतो ५७में वर्ष मृत्यु होवे ३२

अष्टमेश सप्तम भावमें और पापयुत चंद्रमा ६।८ में भावमें गयाहो तो ५८ में वर्ष मृत्यु होवे ३३

अष्टमेश से युक्त गुरुलग्नमें गयाहो अथवा कुंभराशीका गुरुपापग्रह सहित केंद्रमें होतो ६० में वर्ष मृत्युहोवे ३४

लग्नमें शनि, चतुर्थ में चंद्रमा, सप्तममें मंगल, दशममें सूर्य गयाहो और पुष गुरु शुक्र मेंसे किसीएक से भी युक्तहो तो राजाहोवे ६० वर्ष पर्यंत जीवितरहे ३५

लग्नमें गयाहुवा शुक्र, चंद्र बुध और गुरुसे दृष्टहोवे तथा पंचम भावमें गुरु गयाहोतो ६० वर्ष की आयुहोवे ३६

लग्नमें शुक्र केंद्रमें बुध शनि और ३।११ में भावमें परमोच्चराशी ग्राह गया, होतो ६० वर्ष की आयुहोवे ३७

लघोश तथा वाकाष्ट होरा लघोश ये दानो भाठमें भाव में हो और अष्टमेश केंद्रमें गय. होतो ६६ किंवा ६० वर्ष की आयुहोवे ३८

चंद्रमा सहित रवि दशम भावमें, शनि लग्नमें और गुरु चतुर्थ भाव में गयाहोतो ६८ वर्ष की आयुहोवे ३९

लग्नमें गुरु व मोन राशी में बुध सूर्य शनिकायोग किसी भी भाव में होवे और बारह भावमें चंद्रमा गया हो तो ६६ वर्षकी आयु होवे ४०

लग्न में चंद्रमा, कर्क राशीका नीचका शनि दशम, और लग्नमें भावमें सूर्य गया हो तो ६५ वर्षकी आयु होवे ४१

मीनराशीका शनि केंद्र वा त्रिकोणमें हो और शुभ ग्रह केंद्र में हो अथवा बुध सहित सूर्य केंद्रमें गया हो तो ७० वर्ष पर्यंत जीवितरहे ४२

बलवान् शुभग्रह केंद्र में गये हो और अष्टम में कोई शुभग्रह नहीं होवे तथा लग्नेश पापग्रहों से दृष्ट नहीं हो तो ७० वर्ष तक जीवित रहे ४३
पंचम भावमें मंगल नीचराशी में शनि और सप्तमभावमें सूर्य गया हो तो ७० वर्षकी आय होवे ४४

सर्व शुभाशुभ ग्रह लग्न से छठे भावपर्यंत हो अथवा सप्तम से नवम पर्यंत क्रम से गये हो तो ७० वय से ऊपर दीर्घायु होवे ४५

लग्नसे छठे भाव पर्यंत बलवान् सर्वशुभग्रह और सप्तम भाव से १२ भावमें पर्यंत बलवान् सर्व पापग्रह गये हो तो ८० वर्ष में मृत्यु होवे ४६
चंद्रमा से युत होकर गुरुकेंद्रमें शुभ ग्रहसे दृष्ट होवे और अन्य सर्व ग्रह दशम भाव से ऊपर के भाव (११।१२) में गये हो तो ८६ में वर्ष मृत्यु होवे ४७

केंद्र में शुभग्रह तथैव अष्टमभाव के बिना अन्यभावमें पापग्रह हो और लग्नसे छठे भावमें चंद्रमा गया हो तो ८६ में वर्ष मृत्यु होवे ४८

लग्नेशसे केंद्रस्थानमें गुरुगया हो और (३।६।११।१२) में भावमें पापग्रह स्थित हो तो १०० से वर्ष जीवित रहे ४९

केवल गुरु लग्नेशसे केंद्रमें गया हो तो ७० वर्ष की आयु होवे ५०
तीनग्रह अपनी उच्चराशीमें हो घृषम किंवा कर्क राशीके लग्नमें गुरु हो मकरका मंगल हो और अन्यसर्व ग्रहकेंद्र में गये हो तो परमा १२० वर्षकी होवे ५१ इत्यादि और भी अनेक योगदे वे विधांतरोंसे जानना ।

सिंहान्मृत्युयोग ।

चंद्रार्कपिठेवाष्टमे सिंहान्मृतिः ३१

तुषेर्मांसे खर्कजे सिंहान्मृतिः ३२

टीका-सूर्य चंद्रमाकायोग छठे किंवा आठमें भावमें हो तो सिंहसे मृत्यु होवेगा ३१

चतुर्थ भावमें मंगल और दशमें भावमें शनिगया हो तो सिंहसे मृत्यु होवेगा ३२

सर्पान्मृत्युयोग-

राहुछोखे सर्पान्मृतिः ३३

राहृर्कांशोपापेशितौ सर्पान्मृतिः ३४

स्वर्केसुखेभौमे मन्देष्टमे सर्पान्मृतिः ३५

यूनेशान्यर्कराहुपुसर्पपीडातो मृत्युः ३६

टीका-राहु और शुक्रका योग दशमें भावमें होतो सर्प दंश से मृत्यु होवे ३३

कारकांशलग्नमें गयाहुवासूर्य पापग्रहसे दृष्ट होतो सर्पदंशसे मृत्यु होवे ३४
दशमें रवि चतुर्थभावमें मंगल और भाठमें शनिगयाहोतो सर्पदंशसे मृत्यु होवे ३५

शनि रवि और राहुसातमें भावमें गयेहोतो सर्पदंशसे मृत्यु होवे ३६
शस्त्रान्मृतियोग ।

कुजार्कजावंगे चाष्टमेचंद्रशस्त्रान्मृतिः ३७

केतुसुखेशौषष्ठे शस्त्रेणमृत्युः ३८

पापयोर्मध्ये कुजर्क्षगेचंद्रे शस्त्रेणाग्निना वा मृत्युः ३९

रंध्रस्थौ यमारौ राहुयुतौ शस्त्रतोमृत्युः ४०

शुक्लेश्चन्द्रमन्दौ शस्त्रतोमृत्युः ४१

टीका-लग्नमें शनि मंगल और अष्टम भाव में चंद्रमा गया हो तो शस्त्र से मृत्यु होवे ३७

सुखेश और केतु छठे भाव में गये हो तो शस्त्र से (तलवार धंजक छुरी कटारी आदिके लगने से) मृत्यु होवे ३८

मंगलकी राशी (१८) में गया हुवा चंद्रमा पापग्रहों के बीचमें स्थितहो तो शस्त्र से अथवा अग्निमें जलजानेसे मृत्यु होवे ३९

भाठमेंभावमें शनिमंगल राहुसे युक्त हो तो शस्त्रसे मृत्यु होवे ४०

चन्द्रशनि, शुक्रकीराशी (२७) में गये हो तो शस्त्रसे मृत्यु होवे ४१

द्वयदंशान्मृति योग ।

जीवारौस्वर्केयूनेश्वदंशान्मृत्युः ४२

टीका-दशमें गुरुमंगल और सातमें भावमें रवि गया हो तो कुत्ते के काटने से मृत्यु होवे ४२

राजमेहे मृत्यु योग ।

द्वादशांशे सप्तमे सूर्ये राजमेहे मृत्युः ४३

टीका-द्वादशांश कुदली में दशमे तथा चतुर्थ भाव में सूर्य गया हो तो राजाके मकानमें मृत्यु होवे ४३

कुमृत्यु योग ।

कुजेन्त्ये मंदेष्टमे कुमृत्युः ४४

भौमेरिगेदुर्मृत्युः ४५

टीका-बारमें भाव में मंगल और भाठ में शनि गया हो तो खराबी से मरण होवे ४४

मंगल छटे गया हो तो दुर्मरण होवे ४५

तीर्थे वा पर्वते मरण योग ।

राहुसूर्ययोगे तीर्थे वा पर्वते मृत्युः ४६

जीवेद्दे तीर्थे मृत्युः ४७

ज्ञाञ्छौ धर्मे द्वारावत्यांमृत्युः ४८

ज्ञाकौधर्मे मार्गे वा शिवालये मृत्युः ४९

लग्नेधर्मे तीर्थे मृत्युः ५०

चंद्रधर्मे शावष्टमे सन्मृत्युः ५१

सौम्येर्ध्रे शुभदृष्टे वा धर्मे सौम्ये तीर्थे मृत्युः ५२

टीका-राहु और सूर्यका एक राशों में योग हो तो तीर्थमें वा पर्वत पर मरण होवे ४६

नवमें भावमें गुरु गया हो तो तीर्थमें मरण होवे ४७

बुध शुक्र नवमें भावमें गये हो तो द्वारावतीपुरी (दारिका) में मरण होवे ४८

बुध सूर्य नवमें भाव में गये हो तो मार्ग में किंवा शिवालपममें मरण होवे ४९

धर्मेश लग्ने गया हो तो तीर्थमें मरण होवे ५०

मंड और नवमेश ये दोनों भाठमे भाव में गये होतो सप्तरगहो
(बिनाकष्टपावे अच्छी तरह मरणहोवेगा) ५१

अष्टम भाव में गयाहुवा बुध शुभमह से दृष्ट हो भयवा नवमेश
मुपहोतो तीर्थमें मरण होवेगा ५२

कफादतिसाराद्वामृत्यु योग ।

भौमेरिगेर्कदृष्टे कफादतिसाराद्वामृत्युः ५३

टीका—छठे भाव में गयाहुवा मंगल रविसे दृष्ट हो तो कफसे किंवा
अतिसाररोग से मरण होवे ५३

शकटान्मरण योग ।

मन्देष्टमे शकटान्मृत्युः ५४

टीका—शनि भाठमें भावमें गया हो तो गाड़ी से मरण होवे ५४
यदि यह शनि पापग्रहसे युत दृष्ट हो तो यह योग बलवान् समझना
केवल शनिके < भाठमें होने से फल मिलना असंभव है ।

कारागारे वा शूलेनमृत्यु योग.

शार्कजावष्टमे कारागारे शूलेवा मृत्यु ५५

टीका—बुध शनि का अष्टम भावमें योग हो तो जहलखानेमें किंवा
शूल (शूलीपर चढ़नेसे) मृत्यु होवे ५५

वर्तमान समयमें शूलीपर चढ़ानेकी शिक्षाके बदले फासीकी सजा
आ करती है ।

शय्यायां वा अंतराले मरण योग

शुकजावष्टमे शय्यायां वान्तराले मृत्युः ५६

टीका—शुक और बुध भाठ में भाव में गये होतो पलंगपर बिछोनेमें
भयवा अंतराल में (मंजिलपर) मरणहोवे ५६

विभूतिरोगान्मरण योग ।

मन्दार्क योगे विभूति रोगान्मृत्युः ५७

टीका—शनि रवि का योग भाठमें भावमें होतो विभूति रोगसे मरण होवे ५७
उर्ध्वबंधनान्मरणयोग ।

मन्दारौ मृतिगौ उर्ध्वबंधनान्मृत्युः ५८

घनाङ्गपौत्रिके सराहु केतू उद्वंधनान्मृत्युः ५९

टीका—शनि मंगल भाट में भावमें गये हो तो ऊचा बंधनेसे मरण होवे ५८
धनेश और लग्नेश ये दोनों राहु किंवा केतुसे युत होकर ६।८।१२
भाव में गये हो तो उद्वंधन (फासीसे) मरण होवे ५९

विद्युत्पाततो मृत्यु योग ।

मन्दक्षेपेऽङ्गशयुते विद्युत्पातान्मृत्युः ६०

टीका—शनिकी राशी (१०।११) में गयाहुआ रवि लग्नेशसे युक्त
होतो विजली के गिरनेसे मरण होवे ६०

वाहनान्मरण योग ।

सुखेशोपष्टे मन्दयुते यानान्मृत्युः ६१

भौमेंबुगे खेर्के वाहनपाततो मृत्युः ६२

रंध्रांगपौ तुर्पयुतौ वाहनतो मृत्युः ६३

टीका—सुखेश छठे भावमें शनि से युक्त होतो वाहनपरसे पड़ने से
मरण होवे ६१

मंगल चतुर्थ भावमें और रवि दशमे भावमें गयाहो तो वाहनपर से
पड़ने से मरण होवे ६२

अष्टमेश और लग्नेश ये दोनों चतुर्थेश से युक्त होतो वाहन से मरण
होवे ६३

वाहन—हाथी, घोड़ा, गाड़ी, रेल, मोटर, साइकल, बंट, बगेरा वाहन
गिनेजाते हैं ।

स्वदेशे विदेशे वा मार्गे मरण योग ।

चरक्षेपे स्वदेशे द्विस्वभावेऽङ्गे विदेशे अन्यथा मार्गे मृत्युः ६४

टीका—जन्म लग्न चरराशीकाहोतो स्वदेशमें द्विस्वभाव राशी
३।६।१।१२ का होतो विदेश में और स्थिर राशी २।५।८।११ काहोतो
मार्गमें मरण होवेगा ६४

चौरान्मरण योग ।

राहुतुर्पेशोपष्टे चौरान्मृत्युः ६५

रन्धांगौषष्ठे सराहुकेतू चौरशस्त्रघाततोमृत्युः ६६

टीका-चतुर्थेश राहुसे युक्तहोकर छठे भावमे गयाहोतो चौरसे मर
होवेगा ६५

अष्टमेश और लग्नेश ये दोनो राहु किंवा केतुसे युक्तहोकर छठे भा
वमे गये होतो चौरके शस्त्रघातसे मरणहोवे ६६

शिलाप्रपातान्मरण योग.

अकारौखेवा सुखे शिलाप्रपातान्मृत्युः ६७

टीका-रवि मंगल दशमें किंवा चतुर्थ भाव में गये होवो शिलाले
पड़नेसे मरणहोवे ६७

कूपपातान्मरण योग ।

सौरिन्दारैः क्रमाद्वन्ध्वस्त्वर्कभैः कूपपातान्मृत्युः ६८

चंद्रार्का बुभयोदये जलनिमज्जानामृत्युः ६९

टीका-चतुर्थ भाव मे शनि, सातमें चन्द्रमा, दशमें मंगल क्रमसे
होतो कूप में गिरनेसे मरण होवेगा ६८

चन्द्रभारभूषकायोगमीनरशिमेहोतोजलमें डूबमानेसे मरणहोवेगा

स्वजनेन हनन योग ।

कन्यास्य चंद्रार्कौ पापदृष्टौ स्वजनेन हन्यते ७०

टीका-कन्याराशि में गये हूवे चंद्र रवि पापघटोसे दृष्टहोतो भा
कुटुम्ब के (सगोत्रके) मनुष्यके हात से मारनेके कारण मरणहोवेगा

जलोदरेण मरण योग ।

मृगेचंद्रेकर्कमन्दे जलोदरेण मृत्युः ७१

टीका-मकर राशीमें चंद्रमा और कर्कराशी में शनि गयाहो
जलोदर रोग से मरण होवे ७१

रक्तोत्पशोषरोगान्मरणयोग ।

कन्यागेचंद्रे पात्रयोर्मध्ये रक्तोत्पशोषान्मृत्युः ७२

टीका-कन्या राशी में गयाहुवा चंद्रमा पात्रघटोके बीच में हो वो
रूपिर मनुष्य शोषरोग से मरणहोवे ७२

रज्जु भग्नि पाताञ्जमरणम मोग.

सौरक्षेचंद्रेपापयोर्मध्येरज्ज्वग्निपातै मृत्युः ७३

टीका—शनि की राशी (१०।११) में गया हुआ चंद्रमा पापग्रहों के बीच में तो रस्सी से वा भग्नी से किंवा गिरजाने से मरण होवेगा ७३

स्त्री हेतुक मरण होगा ।

सपापे इन्दावस्ते मेपेगुके सूर्येङ्गे स्त्री हेतुक मृत्युः ७४

टीका—सप्तम भाव में पापग्रह से युक्त चंद्रमा, मेष राशी में शुक्र और मर्म सूर्य गया हो तो स्त्री के कारण मृत्यु होवेगा ७४

शूलरोगेण मृत्यु योग ।

सूर्यारौतुर्ये खेयमे शूलेन मृत्युः ७५

त्रिकोणायगैस्तक्षीणेन्दु पापैः शूलेन मृत्युः ७६

तुर्येङ्के खेकुजे क्षीणेन्दुदृष्टे शूलेन मृत्युः ७७

टीका—चतुर्थ भाव में रवि मंगल और दशमे भाव में शनि गया हो तो शूल रोग से मृत्यु होवेगा ७५

क्षीण चंद्रमा से युक्त होकर पापग्रह नवमें पांचमें किंवा लग्नमें गये तो शूलरोग से मृत्यु होवे ७६

चतुर्थ भाव में रवि और दशमे मंगल गया हो इनको क्षीण चंद्रमा कृता हो तो शूलरोग से मृत्यु होवे ७७

काष्ठादि घाततो मृत्युयोग ।

खेभौमे तुर्येङ्के मन्ददृष्टे काष्ठाभिघाततो मृत्युः ७८

रंधखाम्बुतनुगैः क्रमात्क्षीणेन्द्वारार्कजार्के र्छगुटघाततो मृत्युः ७९

क्षीणेन्द्वारार्कजार्केः साक्षायेपुगै धूमाग्निबन्धनकाष्ठादिप्र हारान्मृत्युः ८०

खास्तोम्बुगै मन्दाकारैरायुधाग्नि नृप कोपतो मृत्युः ८१

टीका—दशमे मंगल, व चतुर्थ भाव में रवि गया हो और इनको शनि दे

सत्ताहोतो लङ्घनीकी चोटलगने से मृत्युहोवे ७८

भाठमें भावमें क्षीणचंद्रमा, दशमे मंगल, चतुर्थ भावमें शनि, और लग्नमें रवि क्रम से गयेहोतो लङ्घनीकी लगने से मृत्युहोवेगा ७९

दशमे क्षीण चंद्रमा नवमे मंगल ग्यार में भाव में शनि और पंच भावमें रवि गयेहोतो धूर्से घबराजाने के कारण वा भग्नरी में मज्जा ने से वा यथन में पड़ने से किंवा काष्ठादिक के प्रहारसे (घावसे) मरण होवेगा ८०

दशमे शनि सात में रवि और मुखमें मंगल गयाहोतो शस्त्रसे भग्नरी से किंवाराजाके कोपसे मरणहोवेगा ८१

कमिपाततो मरण योग ।

मन्देन्द्वारै र्व्यङ्घ्रि दशमंग च्छिद्रे कमिपाततो मृत्युः ८२

टीका—धनमें शनि मुखमें क्षीणचंद्रमा दशमें मंगल गयाहोतो मृत्यु के छिद्रोंमें कीड़े पड़जानेसे मरणहोवे ८२

यंत्रपीडनान्मरण योग ।

द्युनेभौमे चंद्रार्कजावङ्गे यंत्रपीडनान्मृत्युः ८३

टीका—सातमें मंगल और लग्न में चंद्र शनि गये होतो किसी यंत्र दबजानेसे किंवा कटजानेसे मरण होवे ८३

विष्णमध्ये पतितस्य मरणयोग ।

भौमार्किचन्द्रैस्तुलाजयमर्क्षगैर्विष्णमध्येपतितस्यमृत्युः ८४

सप्तान्बुव्योमगैः सूर्यारक्षीणेन्दु भिविष्णमध्येपतितस्यमृत्युः ८५

टीका—तुलराक्षी में मंगल मेषराक्षीमेंशनि, शनिकीराक्षी (१०११) में चंद्रमा गये होतो विष्टामें पड़ेहुवे का मरण होवे (मरते समय विष्टामें पड़ारहे और मरण होवे) ८४

सातमें रवि चतुर्थ में मंगल और दशमे क्षीण चंद्रमा गयेहोतो विष्टा में पड़े हुवे का मरण होवेगा ८५

प्रेतः पक्षिभिर्भक्ष्यति योग ।

सूर्यारवस्ते मन्देष्टमे क्षीणेन्दौतुर्ये पक्षिभिर्भक्ष्यतेप्रेतः ८६

टीका—रवि मंगल सात में, शनि भाठ में, और क्षीण चंद्रमा चतुर्थ

भावमे गये होतो उस के देहको पक्षि भक्षण करेमे अर्थात् उसके शवका
अग्नि संस्कार नहीं होवेगा और जंगलमे पड़ेहुवे को पक्षीखावेगे ८६
शैल शिखरा शनि कुट्टचपाततो मरण योग ।

चन्द्रेनारयमेनवायात्मजाष्टमगैःशैलशिखराशनिकुट्टचपात-
तो मृत्युः ८७

रन्ध्रलग्नाधिषा वश्लौ भौमपट्टेशयुतौ शैल शिखराश-
निकुट्टचपाततो मृत्युः ८८

टीका-नवमेक्षीण चंद्रमा, लग्न में रवि, पांच में मंगल, और भाठ
में शनि गये हो तो पर्वतके शिखर गिरनेसे, बिजली वा बिजली के
संबंधी भूकानि लहका आदिके पड़ने से किंवा भीतके गिरनेसेनीचे
दबके मरण होवेगा ८७

भृष्टमेश और क्षरमेश ये दोनों निर्वली होकर मंगल और पट्टेश से
युक्त हो तो पर्वतके शिखर गिरनेसे वा बिजलीके पड़नेसे किंवा
दीवालके गिरनेसे दबके मरण होवेगा ८८

रणे तथा शत्रुकोपतः मृत्यु योग ।

रन्ध्रे शुभः पापारिविशितोरणे मृत्युः ८९

निद्रितः शयानो वा पापयुतोऽष्टमे शत्रुकोपतो मृत्यु ९०

टीका-भृष्टमभावमे गयाहुवा शुभग्रह पापग्रह से किंवा अपने शत्रु
ग्रहसे दृष्ट हो तो संग्राम मे मरण होवे ८९ सर्वांग मे लिखा है कि
पट्टेश भृष्टमेश किंवा मंगल पराक्रमेश से युक्त हो और शनि गुलिक
से युतहोकर कूरांशक में स्थित हो तो युद्धसे मरण होवे ।

शनि जिसके द्रष्टाण में गया है वहग्रह मंगल से युक्त वा दृष्ट हो
और मंगलकी राशीमें वा नवांशमेंही गयाहो तो युद्धसे मरण होवे २
निद्रा तथा शयनावस्था मे गयाहुवा पापग्रह भृष्टम भावमें गया हो
तो शत्रुके कोपसे मृत्यु होवे ९०

वृषभेण मृत्यु योग ।

भौमार्कटं लग्नं शुक्रेज्यावदष्टं चैतृषभेण मृत्युः ९१

टीका-मंगल और रवि से दृष्ट जन्म लग्न यदि गुरु शुक्रसे दृष्ट न हो तो मृत्युभ से मरण होवेगा ९१

वृक्षपाततो मृत्युयोग

मन्दार्कोलग्ने राहु दृष्टौ वृक्षपाततो मृत्युः ९२

टीका-लग्नमें गये हुवे शनि रवि राहुसे दृष्ट हो तो दक्षके गिरनेसे मरण होवेगा ९२

व्याघ्रतो मरण योग ।

जीवर्क्षज्ञे मंदर्क्षे कुजे व्याघ्रतो मृत्युः ९३

टीका-गुरुकी राशी १।१२ में बुध और शनिका राशी १०।११ में मंगल गयाहो तो सिंहकी जातिके छोटें बाघ से मरण होवे ९३

शरेण मरण योग ।

धर्मपापाः शुभादृष्टाः शरेण मृत्युः ९४

टीका-नवम भाव में गयेहुवे पापग्रह शुभग्रहसे अदृष्टहो तो शरसे (बाणसे) मरण होवेगा ९४

विषेण मरण योग ।

चंद्रज्ञौ पष्ठेष्टमे वा विषेण मृत्युः ९५

टीका-छठे किंवा आठ में भाव में चंद्र बुध गये हों तो विष (जहरखाने वा झिलाने) से मरण होवे ९५

गजतः मरण योग

पुष्पवंतौ पष्ठाष्टमे वा गजतो मृत्युः ९६

टीका-छठे अथवा आठमें भाव में रवि चंद्रकायोग होतो गजसे मरण होवेगा ९६

रंधगत मृददोष मशान्मरणयोग ।

रंधैरवौवन्हे श्वंद्रेजलयोगा न्मौमेशस्त्रतो बुधेज्वरतो गुरो

त्रिदोषतः शुके क्षुधया रानौ तृपया मृत्युः ९७

योषलवान्निधनं पश्यते चक्षातुकोपतो मृत्युः ९८

उक्तयोगाभावेष्टम भावा धिष्ठितत्र्यंशेरा स्योक्तान्यम्वादि
स्वगुण हेतुतोमृत्युः ९९

निधनग द्रेष्काणतोमृत्युः १००

टीका-भाठमें भावमें यदि रवि गयाहोतो अग्निमें जलनेसे, चंद्रगया
होतो जलमें डूबने से, वा जलके संचयसे, मंगल गयाहोतो शस्त्रसे, बुध
गयाहोतो ज्वर, की पीडासे, गुरु गयाहोतो सन्निपात दोषसे, शुक्र गयाहो
तो क्षुधाके दुःख से, शनि गयाहोतो तृषार्त होनेसे मरण होवेगा ९७

यदि कोई भी ग्रह भाठ में भावमें नहीं गयाहोतो तो फलवान ग्रह
अष्टम भावको देखताहो उसीकी उपरोक्त धातु के कोपसे मरण होवेगा
अर्थात् यदि फलवान् रवि अष्टम भावको देखता हो तो अग्नि से,
चंद्र देखताहो तो जल से, मंगल देखताहो तो शस्त्रसे, बुध देखता हो
तो ज्वर से गुरुदेखताहोतो सन्निपातरोगसे, शुक्र देखता हो तो क्षुधासे,
शनि देखता हो तो तृषासे मृत्यु होवेगा ९८

यदि अष्टम भावमें कोई भी ग्रह गया नहो वा कोई ग्रह अष्टम भावको
देखता भि नहो तो अष्टम भावमें जिसराशिका द्रेष्काण हो उसके स्वामी
के अग्नि जल शस्त्रादिदोषके अनुसार मरण हावेगा अर्थात् यदि
अष्टम भावके द्रेष्काण का स्वामी रवि होतो अग्निसे, चंद्र होतो जलसे,
मंगल होतो शस्त्रसे, बुधहोतो ज्वरसे गुरुहोतो सन्निपातसे, शुक्रहोतो
क्षुधासे शनि होतो तृषासे मरण होवेगा ९९

अथवा अष्टमभावमें जो द्रेष्काणहो उसके अनुसार मरण होवेगा १००

अष्टमभावमें ग्राह्ये प्रत्येक राशिके ३ तीन द्रेष्काणों काफल भिन्न
नीचे लिखाहै तदनुसार जानना ।

द्रेष्काण फल ।

भेषाद्यंशे प्लोहजो वा विपजो वा पिचजो मध्ये जल-
जो न्त्येकपादिपाततो मृत्युः १०१

वृषादिपंशे स्वराश्वदितो मध्ये पिताग्निचौरतो न्त्येउच्च
स्थलाश्वदितो मृत्युः १०२

गुग्माद्ये वातश्वासतो मध्येत्रिदोषा दन्त्येयानर्हत पाततो
वारण्ये मृत्युः १०३

कर्काद्येऽपेयपानात्कण्टकाद्वामध्ये विषातिसारतोन्त्ये महा-
भ्रमप्लीहा गुल्मादितो मृत्युः १०४

सिंहाद्ये विषांचुगेगेण मध्ये श्वसनाम्बुरोगेणान्त्येयानी-
हाविषशस्त्रेण मृत्युः १०५

कन्याद्ये वातमस्तकुरोगेण मध्येदुर्गाद्रिषातामृतकोशतोन्त्ये
खरोष्ट्र शस्त्राम्बुपाततो मृत्युः १०६

तुलाद्ये पतनात्स्त्रातिः पशुतो मध्येजठररोगेणान्त्येप्याळ
जठान्मृत्युः १०७

अल्याद्ये विषशस्त्रतो मध्ये भारश्रमाद्वा कटिवास्ति रोगतोन्त्ये
लोष्टकाष्ठ पापणतो मृत्युः १०८

चापाद्ये वातगुदामया न्मध्ये विषघाणाभ्यामन्त्ये जलजल
चार्युदरामयान्मृत्युः १०९

मृगाद्ये सिंहवराह वृश्चिकतो मध्ये भुजंगतोन्त्ये चौगतिं
शस्त्रज्वरतः मृत्युः ११०

कुम्भाद्ये रुपङ्गजोदर व्याधितो मध्येगुह्यरोगादन्त्येविषा-
न्मृत्युः १११

मीनाद्यग्रहिणी प्रभेहगुल्मजो मध्येजलोदरंगजघ्रादतो
नैप्रभेदा दन्त्ये कुरोगा न्मृत्युः ११२

टीका-मेषराशिके प्रथम द्रष्टव्येऽङ्गमे अष्टमभावहो तो ग्रीहसे (क्रिये
के रोगसे) या त्रिषसे अथवा पित्तके रोगसे मध्यद्रष्टव्येऽङ्गहो तो मठमे

दूबनेसे वा जलके संवेधसे अंत्यद्रेष्काणमें हो तो कुआ बाधही तालाब
आदी बौरामे गिरजानेसे मृत्यु होवेगा १०१

अष्टमभाव वृषभ राशीके प्रथम द्रेष्काणमें हो तो गधा घोड़ा आदि
चतुष्टय परसे पढ़नेसे वा इनके मारनेसे मध्यद्रेष्काणमें हो तो पित्तके
कोपसे अग्निमें जलनेसे चौरकी चपेटसे तीसरे द्रेष्काणमें हो तो ऊंची
तगहसे (पाहाड़ ऊंचे मकान आदि परसे गिरपड़ने से) वा कुत्ते
बिल्ली बन्दर सियाल वरगड़े आदि के काटनेसे मरण होवेगा १०२

अष्टम भाव मिथुनराशि के प्रथम द्रेष्काणमें हो तो ८४ प्रकारके वात
संवेधी वायुरोगसे वा इबाससे [इमेके रोगसे] मध्यद्रेष्काणमें हो तो
त्रिदोषके कोपसे [संहि गतसे] तीसरे द्रेष्काणमें हो तो गाड़ि घोड़ा हाथी
मोटर साइकल रेल आदि वाहनपरसे गिरजानेसे वा इनकी लगनेसे वा
पर्वतपरसे गिरपड़नेसे अथवा पर्वतका कोई भाग अपने ऊपर गिरपड़
ने से वा जंगलमें मरण होवेगा १०३

अष्टम भाव कर्क राशी के प्रथम द्रेष्काण में हो तो नही पीने योग्य
पीनेकी वस्तुको पानकरने से अथवा कांटे से विधजाने से मध्यद्रे-
ष्काण में हो तो विषसे वा अतिसाररोगसे अंत्यद्रेष्काण में हो तो
शक्र भानेके महारोगसे प्लीहरोगसे वा गोलके रोगसे वा विशुचिका
(हेजा) आदिरोगसे मरण होवेगा १०४

अष्टमभाव सिंहराशी के प्रथम द्रेष्काणमें हो तो विषसे वा जहरील्लि
इबाके महामारी (प्लेग) हेजा आदिरोगसे तथा जलोदर अथवा जल
संवेधी विकारके रोगसे मध्यद्रेष्काण हो तो इबासरोगसे वा जलसंवेधी
रोगसे तीसरा द्रेष्काण हो तो वाहनकी पीड़ासे वा विषसे वा शस्त्रा-
घात से मरण होवेगा १०५

अष्टमभाव कन्याराशि के प्रथम द्रेष्काण में हो तो ८४ प्रकारकी वायु
के रोग से वा मस्तक के रोग से अर्थात् मस्तकमें दर्द पीड़ा होने से वा
मस्तिष्कमें अन्मादादि कोई दुष्ट रोग उत्पन्न होने से मध्यद्रेष्काण
हो तो चिलेपरसे वा पर्वतपरसे गिरपड़ने से वा राजाके कोपसे, ती-
सरा द्रेष्काण हो तो गधे परसे वा ऊंट परसे पढ़ने से शस्त्राघातसे वा
जलमें पड़ने से मरण होवेगा १०६

अष्टम भावमें तुलाराशिका प्रथम द्रेष्काण हो तो गिरपड़ने से स्त्री
के सबब से (स्त्री स्वयं मारवाले वा स्त्री मरवावाले) अथवा गाय

भैरव भादि पशु के मारवेठने से दूसरा द्रेष्काण हो तो जलोदर बटोर मंदाग्नि भर्मीर्ण विशुनिका भादिपेटके ८ प्रकारके रोग होनेहे वनमें किसी भी पेटके रोगसे, तीसरा द्रेष्काण हो तो सांरके काटने से व जलमे गिरनेसे मरण होवेगा १०७

अष्टम भाव मे वृद्धिचक्राशिका प्रथम द्रेष्काण हो तो विष (जहर) से शस्त्र से दूसरा द्रेष्काण हो तो बोझा उठानेसे भयवा मिह्रनके कामसे या कमर पेडु भादि स्थानोंके रोगसे तीसरा द्रेष्काण हो तो मिट्टीके ढेलेकी या काष्ठकी या पाषाणकी खांट लगनेसे मरण होवेगा १०८

अष्टम भाव धनराशिके प्रथम द्रेष्काण में हो तो बाढ़ीके भर्मीर्ण गुदाके रोगसे, मध्य द्रेष्काण हो तो विषसे या बाणके (तीरके) लगनेसे तीसरा द्रेष्काण हो तो जलसे या जलचारी मगरमच्छ फलुभे भादिजीवों से या पेटकी पीड़ा भाठ प्रकारकी होती है वनसे कोईभी पेटके रोगसे मरण होवेगा १०९

अष्टमभाव मकरराशिके प्रथम द्रेष्काण में हो तो सिंहसे वा सुमार से वा विच्छुर्क काटने से मध्य द्रेष्काणमें हो तो सांपके काटने से तीसरे द्रेष्काणमें हो तो चौर अग्नि शस्त्र किंवा ज्वरके रोगसे मरण होवेगा ११०

अष्टम भाव कुंदराशी के प्रथम द्रेष्काण मे होतो स्त्री के वा पुत्र के र्ध बंधसे किंवा पेट के रोगसे मध्यद्रेष्काण में होतो गुप्त स्थान (जन नेद्रिय) में गरभी सुजाक प्रनेह भादि गुप्त रोगोंसे तीसरा द्रेष्काण होतो विष (जहर) से मरण होवेगा १११

अष्टम भाव मीन राशी के प्रथम द्रेष्काण मे होतो संग्रहणी रोगसे वा प्रमेह गुल्म रोगसे मध्यद्रेष्काणमे होतो जलोदर रोगसे वा गनछे वा मगरसे वा नाथ स्टीमर नहाज भादिमे से जलमें गिरजानेसे तीसरे द्रेष्काण में हो तो फ्लेग हुआ घगेरा जितने अनेक प्रकार दुष्ट रोग है वनमें से किसीभी दुष्टरोगसे मरण होवेगा ११२

पतिसहगामिनी योग ।

धर्मपारार्का धर्मगा लग्नास्वेयौमित्रे पत्नी सहगामिनी ११३

टीका—श्वमेश, मंगल और रवि ये तीनों नवमें भाव में गये हो और लग्नेश सप्तमेश मित्र होवे तो स्त्री सती होवेगा ११३

शुभलोकाप्ति योग ।

अंशादालनादन्धेशुभे शुभलोकाप्तिः ११४

टीका—कारकांश लग्नसे भयवा जन्म लग्नसे भाठ में भावमें शुभग्रह गया हो तो मरणानंतर शुभलोकाप्ति प्राप्ति होवेगा ११४

ग्रहा सायुज्ययोग ।

सिंहासनेचन्द्रेपारजातेगुरोपेरावतेशुकेब्रह्मसायुज्यं ११५

अन्तर्पेशात्केतौ ब्रह्मसायुज्यं ११६

अंशादन्त्ये मेघचापगशुभे ब्रह्मसायुज्यं ११७

एकस्थानगानां चतुर्णामधिष्ठितराशीशेकेन्द्रकोणे ब्रह्मसायुज्यं ११८

माने मीनेसौम्ये वा भौमे ब्रह्मसायुज्यं ११९

रन्ध्रेश्याने निद्रिते वा शुभयुतदृष्टे ब्रह्मसायुज्यं १२०

लग्नेशोङ्गन्धर्मे शोधर्मरन्ध्रेशोरन्ध्रपश्यतिचेद्ब्रह्मसायुज्यं १२१

नवमे केवलशुभदये ब्रह्मसायुज्यं १२२

टीका—सिंहासनांश में चंद्रमा, पारिजातांश में गुरु और ऐशवतांश में शुक्र गया हो तो ब्रह्मसायुज्य (मुक्ति) प्राप्ति होवेगा ११५

कारकांश लग्न से वारवे भावमें केतु गया हो तो ब्रह्मसायुज्यप्राप्ति होवेगा ११६

कारकांश लग्न से वारवे भावमें मेघ किंवा धनराशि में शुभग्रह गया हो तो ब्रह्मसायुज्य प्राप्ति होवेगा ११७

अथैकस्थानमें गये हुये चारग्रह जिस राशिमें गये हो उस राशीका नामि केन्द्र किंवा त्रिकोणस्थान में गया हो तो ब्रह्मसायुज्यप्राप्ति होवेगा ११८

मीन राशीका बुध दश में किंवा मीनराशीका मंगल दशमें गया हो तो ब्रह्मसायुज्य प्राप्ति होवेगा ११९

निदासस्या में गया हुआ भद्रनक्ष सुखभाव में गया हो अथवा नि-

द्रावस्या में गया हुआ अष्टमेश शुभ ग्रहों से युत दृष्ट हो तो ब्रह्मसा-
युज्यप्राप्त होवेगा १२०

लग्नेश लग्नको धर्मेश धर्मको अष्टमेश अष्टमको देखताहो तो ब्रह्म
सायुज्यप्राप्ति होवेगा १२१

✓ नवमें भावमें केवल दो शुभग्रह गये हो तो ब्रह्मसायुज्य (मुक्ति)
प्राप्त होवेगा १२२

विष, पापाण, भग्नि जलघात योगा ।

धष्टेष्टमे वा चंद्रज्ञौ विषघातः १२३

ज्ञार्काषष्टमे विषाग्निघातः १२४

लामेभौमार्कौ विषाग्निशस्त्रघातः १२५

स्वेकं सुखेकुजे पापाणघातः १२६

भौमार्कौ सुखे पापाणघातः १२७

सुखेश युतं दृष्टे स्वेशे पापाणघातः १२८

सुखपेतभोर्कि युते कुजेक्षिते पापाणघातः १२९

राहो मदे वा लामे काष्ठपापाणघातः १३०

कुजेष्टमेग्निघातः १३१

क्षीणेन्नावष्टमे जलघातः १३२

तुर्पशे जलक्षे नीचारि मूढहोन बले तुर्यारिगे जलघातः १३३

लग्नेशे बले सुखे पापे जलघातः १३४

सुखेगेऽबले सुखेपापे जलघातः १३५

सुखपे सपापे केन्द्रे जलघातः १३६

लग्नसुखेगो सुखे कर्मशदृष्टौ जलघातः १३७

सुखेगस्थेश्वरेण सुखपे युत दृष्टे जलघातः १३८

टीका-छठे किंवा भाठ में भाव में चंद्र बुध गये हो तो विषकी घात
यात जहर से मरणांत कष्ट होवेगा १२३

अष्टम भाव में बुध सूर्य गये हो तो जहरकिंवा अग्निकी घात हो-
गा (जहरसे वा अग्निसे मरते मरते बचेगा) १२४

रवि मंगल लाभ भावमें गये हों तो विष, अग्नि, वा शस्त्रकी घात
वेगा १२५

दशम रवि और सुखमें मंगल गया हो तो पाषाण (पत्थर) से घात होवे
मरते मरते बचेगा) १२६

रवि और मंगल दोनों सुखभावमें गये हो तो पाषाणकी घात होवे १२७

सुखेश से युक्त किंवा दृष्ट दशमेश हो तो पाषाणकी घात होवे १२८

सुखेश, शनि व राहुसे युक्त होवे और मंगलसे दृष्ट हो तो पाषाणकी
घात होवेगा १२९

सातमें किंवा ग्यारहमें भावमें राहु गया हो तो काष्ठ तथा पाषाणकी
घात होवेगा १३०

मंगल भाठमें भावमें गया हो तो अग्नि की घात अर्थात् अग्निसे जल
निका भय होवेगा १३१

क्षीण चंद्रमा अष्टम भावमें गया हो तो जलघात होवे (जलसे मरता
रता बचे) १३२

चतुर्थेश जलराशीमें अपनी नीच शत्रु किंवा भस्तराशी का हीन बली
कर चतुर्थे में अथवा छठे भावमें गया हो तो जलकी घात होवे १३३

लग्नेश निर्बली हो और सुखमें पापग्रह गया हो तो जलकी घात होवे १३४

सुखेश निर्बली हो और सुखमें पापग्रह गया हो तो जलघात होवे १३५

सुखेश पापग्रह से युक्त होकर केंद्रस्वान में जावे तो जलघात होवे १३६

लग्नेश और सुखेश ये दोनों सुखभावमें गये हो और दशमेश इनको
घात होता जलघात होवे १३७

सुखेश मिसराशी में गया हो उसके स्वामी से सुखेश युक्त किंवा दृष्ट
हो तो जलघात होवे १३८

नोट—घात उसको कहते हैं जिसको व्यवहारमें लोग " घातटो " अर्थात् मरते
रहे बचा या प्राणांत कष्ट हुआ कहते हैं ।

शुंगि, नस्ति, दंष्ट्री, घात वा वाहनात् तथा उच्चप्रदेश तोपतनघात योगः ।

राव्हारावष्टमे शुंगि नस्ति दंष्ट्री घातः १३९

चापांशो वाहना दुच्चप्रदेशतो वा पतनम् १४०

टीका—राहु और मंगल भाठमे भावमे गयेहोतो गायभंस मेंटा हरि
भादि सांगवाले पशुओंसे वा सिंह वाघ कुत्ता बिछी बन्दर रीछ भादि
नस्रवाले जानवरोंसे वा साप बिच्छु भ्रमर सूवर भादि काटने वाले
जानवरोंसे घातहोवे १३९

कारकांश लग्न धनराशी का होतो वाहनपर से गिरपड़नेसे भयवा
संवेमकानादिस्थान पर से गिरने की घात होवे १४०

वाहन भययोग ।

चंद्रारौकेन्द्रे बाष्टमे वाहन भयम् १४१

सुखे क्षीणेन्दौ वाहन भयम् १४२

टीका—चंद्र मंगल केन्द्रस्थानमें वा भाठ मे भाव में गये होतो वाहन
से भयहोवेगा १४१

सुखस्थान में क्षीणचंद्रमा गयाहोतो वाहन से भयहोवेगा १४२

भुज, कर, पाद, मस्तक, कर्ण, च्छेद योगाः ।

सपापे भौमार्कक्षे मन्दे भुजच्छेदः १४३

शत्रुमे मन्दे शुक्रयुत दृष्टे करच्छेदः १४४

चंद्रार्कतमोभौमा अष्टमे करपादच्छेदः १४५

मन्दर्क्षे राहौ सिंहेचंद्रेष्टमे मस्तकच्छेदः १४६

भौमार्को रंध्रे मस्तकच्छेदः १४७

मन्दारधनेशालग्ने कर्णच्छेदः १४८

पठार्थशौलग्ने मन्दारौषष्ठे कर्णच्छेदः १४९

टीका—मंगलकी (१४८) किंवा सूर्यकी राशी (५) में शनि पाप
सहित गया हो तो भुजच्छेद होवेगा १४३

अपने शत्रुकी राशी-मेगया-हुआ शनि शुक से युत किंवा दृष्ट हो तो हाय कटजावेगा १४४

चंद्र सूर्य राहु और मंगल ये चारो मद्र भाठ में भाव में गये हों तो हाय तथा पांव कट जावेगा १४५

शनि की राशी (१०।११) में राहु गया हो और सिंहराशीका चंद्र मा भाठमें भाव में हो तो मस्तक कटेगा १४६

मंगल और सूर्यका योग भाठमें भावमें हो तो मस्तक कटेगा १४७
केवल भेकड़े योग से पल्लमिलना असंभव है अतएव यदि ये मंगल रवि पापयुत दृष्ट हो तो ये योग मिलेगा ।

शनि मंगल और धनेश ये तीनों लग्नमें गये हो तो कान कटजावेगा १४८
षष्ठेश और धनेश लग्न में गये हो और शनि मंगल छठे भाव में हो तो कान कटजावेगा १४९

ग्रह हत्यादि योग ।

पापक्षेत्र चंद्रे भौमार्कदृष्टे ग्रहहत्या १५०

यमार्कारयोगे ग्रहहत्या १५१

जीवार्कारयोगे ग्रहहत्या १५२

पापक्षेत्र चंद्रे मन्दार्कार दृष्टे गोहत्या १५३

लग्नपारावेकारागौ क्रूरहत्या १५४

पापयुते गुरो नीचे वा रवौ बाढहत्या १५५

पापे क्षेत्रे रन्ध्रेभृगो पापदृष्टे गो मृगहत्या १५६

चन्द्रज्ञोस्ते पापदृष्टौ वा नीचांगौ शुभदृग्धीनौ नित्यं

पक्षिहत्या १५७

इत्यष्टम विवेकः ।

टीका-पापग्रहकी राशी में गया हुआ चंद्रमा मंगल और सूर्य से दृष्ट हो तो ग्रहहत्या करने वाला होवे १५०

शनि रवि और मंगल इन तीनोंका-योग एकराशी में हो तो मद्र हत्या करने वाला होवे १५१

गुरु रवि और मंगल इन तीनोंका योग एक राशी में हो तो मरणा-
त्याकरने वाला होता है १५२

पापराशि में गया हुआ चंद्रमा शनि रवि और मंगल इन तीनों ग्रहों
से दृष्ट हो तो गो हत्या करने वाला होता है १५३

लग्नेश और मंगल ये दोनों भेकराशी में भेकड़ी भंश में गये हो
अथवा लग्नेशकी और मंगलकी पूर्ण युति निसदिन हो उस दिनका
जन्म होतो दुष्ट हत्या करने वाला होता है १५४

पापग्रहसे युत गुरु नीच राशी में गया हो किंवा पापग्रहसे युत रवि
नीच राशी में गया हो तो बाल हत्या करने वाला होता है १५५

केद्रस्थानमें पापग्रह और भाठ में भाव में गया हुआ शुक्र पापग्रहसे
दृष्ट हो तो गो तथा मृगकी हत्या करने वाला होता है १५६

दशमं भाव में गये हुये चंद्र बुध पापग्रहसे दृष्ट हो अथवा नीच-
राशा के नवाशमें गये हो और शुभग्रहों से दृष्ट नहो तो नित्य पक्षियों
की हत्या करने वाला होता है १५७

इन के सिवाय भाईकी स्त्रीके मामाकी स्त्रीका, भाईके काकी सुसरका,
भाईके रोग वा शत्रुका, मामिके भाईका, मित्रके पुत्रका, पुत्रके सुसरका,
पुत्रके मित्रका, शत्रुके भाईका, स्त्रीके धन वामृत्युका, गुप्तेंद्रीका, दादाके
धनका, दादिकी मृत्युका, विचारभी इसी अष्टम भावमें करना ।

इति अष्टम विवेकस्य टीका समाप्ताः ।

अथ नवम विवेकः ।

पुण्यवान् योग ।

सुखे ज्ञाच्छौ पुण्यवान् १

सौम्यान्तरे सुखे पुण्यवान् २

गोपुरांशे सिते पुण्यवान् ३

मृदंशे जीवे पुण्यवान् ४

* नोट—एकराशीमें गयेहुये ग्रहोंके अंशोका अंतर ५ नीच अंशसे न्यूनहोतो योग
समाप्त होता है ।

भोजनेर्के पुण्ये पुण्यवान् ५

धर्मेनगे निद्रिते राहौ पुण्यक्षेत्रवासी पुण्यवांश्च ६

धर्मे शुभदृष्ट्याधिक्ये पुण्यवान् ७

टीका-बुध शुक्र सुख भाव में गये होतो पुण्यवान् होवे १

सुख भाव शुभग्रहों के बीचमें होतो पुण्यवान् होवे २

शुक्रगोपुरादि शुभ भेदोंमें गया होतो पुण्यवान् होवे ३

गुरु मृदु संज्ञक शुभग्रहचंशमें गया होतो पुण्यवान् होवे ४

भोजनावस्था में गया हुआ रवि नवमें भाव में गया होतो पुण्यवान् होवे ५

निद्रावस्था में गया हुआ राहु नवमें अथवा सातमें भाव में गया होतो उत्तम तीर्थोंमें रहनेवाला किया पुण्यवान् होवे ६

नवमें भावपर शुभग्रहोंकी अधिक दृष्टी होतो पुण्यवान् होवे ७

पातकी योग ।

चंद्रारावद्धे शनौयूनेपातकी ८

लग्नेशे सभौमे सपापेन्दौ पष्ठे पातकी ९

एकांशगौ पुष्पवन्तौ सपापौ महापातकी १०

अष्टमेशेके पातकी ११

मौमार्का षेकत्र पातकी १२

पापान्तरे पापदृष्ट युते तुर्येवा तदीशे पातकी १३

सुखगैः पापैः सुखेशे बले गुलिक युते पातकी १४

धर्मे पापे पातकी १५

धर्मपे पापयुते वा क्रूरपष्ठचंशे वा पापान्तरे पातकी १६

मन्दतमसी धर्मे गुलिक दृष्टेऽनिपापी १७

सराहुचंद्रे सपापगुरुदृष्टेति पातकी १८

यूने चंद्राको मन्ददृष्टो पातकी १९

कृशेद्वार योगेपातकी २०

सपापी गुलिक धनेशो पातकी २१

जीवेङ्गे मदेमन्दे पातकी २२

पष्ठेचंद्रे सपापे भौमे पातकी २३

व्यये मंदे गुप्तदोषी व्यसनीच २४

टीका-लग्नमें चंद्र मंगल और सातमे भावमे शनि गयाहोतो पात की (इत्या वा पाप करने वाला) होताहै ८

लग्नेश मंगलसे युतहो और पापग्रह से युतहो कर चंद्रमा छठे भाव मे गया होतो पात की होताहै ९

सूर्य चंद्रमा एक राशी मे एकही अंशमें (समान अंशमे) गये हो और पाप ग्रह से युक्त होतो महा पापी होताहै १०

भृमेश नवमे भावमे गायहो तो पापी होताहै ११

मंगल और सूर्य दोनों एक राशी मे युक्त होतो पापी होताहै १२

चतुर्थ भाव किंवा चतुर्थेश पापग्रहों के बीचमे होवे और पापग्रह से युतदृष्ट होतो पातकी होताहै १३

सुखस्थानमे पापग्रह गयेहो और सुखेश निर्बली होकर गुलिकसे युत होतो पातकी होताहै १४

नवमे भावमे पापग्रह गये होतो पातकी होताहै १५

नवमेश पापग्रहसे युतहो १ अथवा क्रूरपुष्ट्यशमेगयाहो २ अथवा नवमेश पापग्रहोंके बीचमे गयाहो ३ तो पातकी होताहै (इसमूलमे ३ योग कहें) १६

गुलिक से देखेहुवे शनिराहु नवमे भावमेगयेहो तो महापापीहोताहै १७

राहुसेयुत चंद्रमा पापग्रहसे और गुरुसेदृष्ट होतो महापापीहोताहै १८

सप्तभाव में गये हुवे चंद्रसूर्यको शनि देखता हो तो पापी होताहै १९

शीतचंद्र और मंगल इन दोनोंका योग किसीभी स्थानमें हो तो

१ होता है २०

गुलिक और धनेश ये दोनों एक राशी में पापग्रह से युक्त हो तो रातकी होता है २१

लग्नमें गुरु और सातमें भाष में शनि गया हो तो पातकी होता है २२
छठे भाव में चन्द्रमा गया हो और पापग्रहसे युक्त मंगल हो तो पा-
तकी होता है २३

चारवें भाव में शनि गया हो तो गुप्तपाप करनेवाला और कामजनित
तथा कोपजनित दोष वाला होता है २४

शंकर भक्तियोग ।

केतुर्कांशे शिवभक्तः २५

अंशकेतुर्वीज्यौ शिवभक्तः २६ ।

सुते सूर्य युषदृष्टे सूर्य शङ्करभक्तः २७

टीका—कारकांश लग्न में केतु और सूर्य गये हो तो शिवकी भक्ति
करने वाला होवे २५

कारकांश लग्नमें केतु और गुरु गये हो तो शिवकी भक्ति करने
वाला होवे २६

पंचम भाव सूर्य से युक्त वा दृष्ट हो तो सूर्य तथा शंकरकी भक्ति
करने वाला होवे २७

गौरी तथा लक्ष्मी आदि देवीभक्ति योग ।

अंशकेतु चन्द्रौ गौरीभक्तः २८

अंशे शिविशुक्रौ लक्ष्मी भक्तः २९

सुते गुरु सम्बन्धे शारदाभक्तः ३०

सुते शुक्र संबंधे चामुंडाभक्तः

पंचमे भृगुचंद्रसंबन्धे स्त्री देवभक्तः ३२

टीका—कारकांश लग्न में केतु और चन्द्रमा गये हो तो गौरी (पार्व-
ति) वा पार्वतीके देहसे उत्पन्न हुई महाकाली महासरस्वति आदि
शक्तियोंकी भक्ति करने वाला देवीभक्त होवे २८

कारकांश लग्न में केतु और शुक्र गये हो तो महालक्ष्मी तथा महा

लक्ष्मी संबंधी दशमहाविद्याओंकी भक्तिकरने वाला होवे २९

पंचमभाव शुकसे युत दृष्ट हो तो शारदा (सरस्वती) की भक्ति करने वाला होवे ३०

पंचमभाव शुकसे युत दृष्ट हो तो चामुंडा देवीकी भक्ति करने वाला होवे ३१

पंचमभाव में शुक चंद्रका संबंध (शुक तथा चंद्रसे युत दृष्ट पंच भाव) हो तो स्त्री देवता (जलियों) की भक्ति करने वाला होवे ३२

विष्णु तथा सात्विकदेव तथा स्कंद भैरवादि पुरुषदेव भक्ति योग।

अंशेज्ञार्कजौ विष्णु भक्तः ३३

तुष्येरो सुते विष्णु भक्तः ३४

व्यप्येरो धनाष्टमे सुतेरा संबंधे सात्विक देवभक्तः ३५

अंशे कैतवारौ स्कंद भक्तः ३६

पुत्रे भीम संबंधे स्कंद भैरवभक्तः ३७

सुतेरा संबंधे सर्वदेवभक्तः ३८

पुत्रे पुंयह सम्बन्धे पुन्देव भक्तः ३९

टीका—कारकांश लग्नमें शुभ जानि गये हो तो विष्णु की भक्ति करने वाला होवे ३३

चतुर्थेश पंचम भाव में गया हो तो विष्णु तथा विष्णु के दशावतार के देवताकी भक्ति करने वाला होवे ३४

व्यप्येरा धन तथा अष्टमभाव में गया हो और पंचमेश से सम्बन्ध करना हो तो सात्विक देवताकी भक्ति करने वाला होवे ३५

कारकांश लग्नमें केतु और मंगल गये हो तो कार्तिक स्वामिभक्त होवे ३६

पंचमभाव में मंगलका संबंध हो (मंगल युत दृष्ट हो) तो कार्तिक स्वामिका तथा भैरवका भक्त होवे ३७

पंचमभावमें बुधका संबंध (बुधसे पंचमभावयुत दृष्ट) हो तो श्री देवताओं की भक्ति करने वाला होवे ३८

पंचम भावमे पुरुष ग्रह का संबंधहो तो पुरुष देवताओं कि भक्ति करने वाला होवे ३९

गुरु भक्ति योग.

जीवेशश्यांशे गुरुशुक्रदृष्टे गुरुभक्तः ४०

नन्देशुभे गुरुयुतदृष्टे गुरु भक्तः ४१

धर्मपे मृदंशादौ गुरुभक्तः ४२

टीका-निसराशिमै गुरु गयाहो उसके स्वामिके नवांशका स्वामि गुरुभौर शुक्र से दृष्ट होतो गुरुकी भक्ती करनेवाला होवे ४०

नवमै शुभग्रह गयाहो और वह गुरुसे युतवा दृष्टहोता गुरुको भक्ती करनेवाला होवे ४१

नवमेश मृदु संज्ञक शुभपष्ठपंचमै गयाहोतो गुरु कि भक्ति करनेवाला होवे ४२

यक्षिणी तथा प्रेताशन्यादि भक्ति योग.

नन्दने चंद्र संबंधे यक्षिणी भक्तः ४३

सुते मन्द संबंधे प्रेताशन्यादिभक्तः ४४

टीका-पंचम भावमे चंद्रका संबंधहो (चंद्रसे युतदृष्ट पंचम भावहो) तो यक्षिणी की भक्ति करनेवाला होताहै ४३

पंचम भावमे शनिका संबंधहोतो प्रेत शाकिनी भादि क्षुद्रदेवियो किभक्ति करने वालाहोवे ४४

परपीडक देवभक्तियोग ।

तमःसंबंधेपुत्रे परपीडक देवताभक्तः ४५

टीका-पंचमभाव मे राहुका संबंध (राहुसे युतदृष्ट पंचम भाव) होते दूसरेको पीडा देनेवाले देवताओं कि भक्ति करने वाला होताहै ४५

धर्माध्यक्ष योग ।

गुरौ वा भृगौ स्वोच्चशुभवर्गे धर्मेशे सबले धर्माध्यक्षः ४६

ईज्याच्छौ शशे धर्माध्यक्षः ४७

धर्मपेशुभयुतदृष्टे धर्माध्यक्षः ४८

टीका—गुरु भयवा शुक्र भयनि उच्चराशी में और शुभग्रहोंके वर्गमें गया हो और नवमेश बलवान् हो तो धर्माध्यक्ष (धर्माचार्य वा अधिक धर्म करनेकराने वाला) होता है ४६

गुरु शुक्र ये दोनो सुधके नवांशमें गये हो तो धर्माचार्य वा अधिक धर्म करने कराने वाला होता है ४७

नवमेश शुभग्रहसे युत और दृष्ट हो तो धर्माचार्य वा धर्म करने कराने वाला होता है ४८

कूप तडाग तथा जीर्णोद्धार तथा सुस्थानादि कर्ता योग ।

स्वेषे गोपुरे कूपादिकर्ता ४९

भाग्यपे मृदंशे शुभदृष्टे कूपादिकर्ता ५०

कुंभारो तडागादिकर्ता ५१

स्वेषे सुस्वेषे जीर्णोद्धारादि कर्ता ५२

सजीवेशे गोपुरे वा सभौमे सुस्थानकर्ता ५३

टीका—दशमेश गोपुरांश में गया होतो कुवा, बाबड़ी आदि जलाशय करने वाला होवे ४९

नवमेश मृदु संज्ञक शुभ षष्ठ्यंश में गया हो और शुभ ग्रहसे दृष्ट होतो कुवा बाबड़ी आदि जलाशय करने वाला होवे ५०

कारकांश लग्नमें कुंभराशी होतो तलाव बाबड़ी कुवा आदि करने वाला होता है ५१

सुस्वेष दशमे भावमें गया होतो देवालय तथा जलाशयो का जीर्णोद्धार करने वाला होता है ५२

गुरुसे युक्त शुभ गोपुरांश में गया हो अथवा मंगलसे युक्त शुभ गोपुरांश में होतो उत्तम (सार्वजनिक लाभार्थ) स्थान करनेवाला होता है ५३

यज्ञ कर्ता योग ।

ज्ञेय्यकर्मणः सबला यज्ञकर्ता ५४

स्वेषे स्वपेक्षे शुभारो शुभ दृष्टे यज्ञकर्ता ५५

धर्म ज्ञे स्वोच्चे पापदुर्गतिने यज्ञकर्ता ५६

जेज्यस्वेषाः सबलाः शुभदृष्टा विशेषेण यज्ञकर्ता ५७

टीका—बुध गुरु और दशमेश ये तीनों ग्रह बलवान् होतो यज्ञ करने वाला होवे ५४

दशमे भावमें बुध गयाहो और शुभग्रह के नवांश में गयाहुवा शुभग्रह दृष्ट दशमेश नवमे भावमें स्थित होतो यज्ञकरने वाला होवे ५५

अपनी बुध राशी में (कन्या राशी के १५ अंशमें) गयाहुवा बुध स्वमे भावमें गयाहो और पाप ग्रह से दृष्ट नहो तो यज्ञ करने वाला होवे ५६

बुध गुरु और दशमेश ये तीनों ग्रह बलवान् होकर शुभग्रहसे दृष्ट हो तो अवश्य यज्ञादि शुभधर्म कार्य करने वाला होवे ५७

यज्ञे विघ्नयोग-

स्वप्ने स्वोच्चे सप्तापे नीचांशगे दुरूपे यज्ञारंभोत्तर विघ्नः ५८

टीका—अपनी बुधराशी में गयाहुवा दशमेश पापग्रहसे युक्त होकर नीचराशीके नवांशमें और ६।८।१२ भावमें गयाहो तो यज्ञका आरंभ होनेके पश्चात् यज्ञमें विघ्न उपस्थित होवेगा ५८

अयश योग ।

चन्द्राद्वा शुक्राद्धने मन्देऽयशः ५९

चन्द्राच्छौ लग्ने मन्ददृष्टेऽयशः ६०

टीका—चंद्रसे अथवा शुक्रसे धनभाव में शानि गयाहो तो यशहीन (अवयश वाला) होता है ५९

चंद्र और शुक्र लग्नमें गये हो और इनकी शानि देखता हो तो यशहीन (अवयशवाला) होता है ६०

भाग्यहीन योग ।

तुर्परोष्टमे भाग्यहीनः ६१

लग्नार्थदारपादुस्थाविवाहात्परतोऽभाग्यम् ६२

धर्मपेष्ठे शत्रुनीचदृष्टेऽभाग्यम् ६३

भाग्येशे शूरांशे नीचभांशेऽभाग्यम् ६४

भाग्यपेऽवले धर्मे पापा अभाग्यं ६५

१. लग्नपेऽवलेऽभाग्यम् ६६

केन्द्रेशनौ जीवचन्द्रान्यतरादृष्टेऽभाग्यं ६७

टीका—मुखेश भाठमें भावमें गया हो तो भाग्यहीन होवे ६१

लग्न धन और सप्तमभावका स्वामि ये तिनो ग्रह छठे भाठ में किंवा चारमें भावमें गये हो तो विवाह होनेके पश्चात् भाग्यहीन होवे ६२

नवमेश छठे भाव में गया हो और अपने शत्रुग्रहसे किंवा नीचराशिमें गये हुये ग्रह से दृष्ट हो तो भाग्यहीन होवे ६३

नवमेश क्रूरग्रहकेनवांशमें वा नीचराशिभंशमें गया हो तो भाग्यहीन होवे ६४

नवमेश बलरहित हो और धर्मभावमें पापग्रहगये हो तो भाग्यहीन होवे ६५

लग्नेश निर्बली हो तो भाग्यहीन होवे ६६

केन्द्र में गयाहुवाशनि, गुरु किंवा चंद्रमा से दृष्ट हो तो भाग्यहीन होवे ६७

भाग्यवान् योग ।

धनेशे लाभे कर्मपयुतदृष्टे भाग्यवान् ६८

लाभेशेऽङ्के कर्मपयुतदृष्टे भाग्यवान् ६९

धर्मपथे कर्मपयुतदृष्टे भाग्यवान् ७०

लाभपेक्षे धनपेलाभे धर्मेशेऽर्थे सपयुतदृष्टे महाभाग्यवान् ७१

भाग्येऽङ्क्याच्छयुतदृष्टे भाग्यवान् ७२

धर्मेशेऽङ्केऽपयुतदृष्टे भाग्यवान् ७३

लग्नार्थेशो पुत्रे भाग्यवान् ७४

लग्नेशेऽङ्केऽपयुतदृष्टे भाग्यवान् ७५

भाग्येशे लाभे भाग्यवान् ७६

भाग्यापयोगे भाग्यवान् ७७

भाग्येशोर्ध्वे भाग्यवान् ७८

सौत्थपुत्राङ्गः सवलग्रहे भाग्यवान् ७९

टीका—धनेश लाभ भावमें गया हो और दशमेश से युत वा दृष्ट हो तो भाग्यवान् होवे ६८

लाभेश नवम भावमें गया हो और दशमेश से युत वा दृष्ट हो तो भाग्यवान् होवे ६९

नवमेश धनभाव में गया हो और दशमेश से युत वा दृष्ट हो तो भाग्यवान् होवे ७०

लाभेश नवम भाव में, धनेश लाभभावमें, नवमेश धनभावमें गया हो और दशमेश से युत वा दृष्ट हो तो महाभाग्यवान् होवे ७१

नवम भाव गुरुशुक्र से युत वा दृष्ट हो तो भाग्यवान् होवे ७२

भाग्येश गुरुशुक्र से युत वा दृष्ट हो तो भाग्यवान् होवे ७३

लग्नेश और धनेश ये दोनों पंचम भावमें गये हो तो भाग्यवान् होवे ७४

लग्नेश नवम भावमें और नवमेश लग्नमें गया हो तो भाग्यवान् होवे ७५

भाग्येश लाभ भाव में गया हो तो भाग्यवान् होवे ७६

भाग्येश और लाभेश इन दोनोंका एकराशी में योग हो तो भाग्यवान् होवे ७७

भाग्येश धन भाव में गया हो तो भाग्यवान् होवे ७८

हीसरे पांचमें और लग्नमें बलवान् शुभग्रह गये हो तो भाग्यवान् होवे ७९
भाग्योदय योग ।

चरेङ्गे तदीशे चतथा चरखेट दृष्टे विदेशे भाग्योदयः ८०

स्थिरे लग्नाङ्गे शौस्थिरखेटदृष्टौ स्वदेशे भाग्योदयः ८१

अन्यथा सर्वत्र भाग्योदयः ८२

धर्म शुभदृष्ट्याधिक्ये सर्वदेशे भाग्योदयः ८३

शुके उपचये सप्तमेवाविवाहोत्तरं भाग्योदयः ८४

जायेशे सप्तमोपचये विवाहोत्तरं भाग्योदयः ८५

सौत्थाङ्गशौशुभयुतदृष्टौ वा शुभांशगौआतृधनतो भाग्योदयः ८६

पुत्राङ्केशयोगे शुभयुतदृष्टे सुततो भाग्योदयः ८७

त्रिकोणे भाग्यपयुतदृष्टे सुततो भाग्योदयः ८८

टीका—चरराशिका लग्न और लग्नेश हो और चरग्रह (चंद्र) से दृष्ट हो तो विदेशमें भाग्योदयहोवेगा ८०

स्थिर राशि का लग्न और लग्नेश हो और स्थिरग्रह (सूर्य) से दृष्ट हो तो स्वदेशमें ही भाग्योदय होवेगा ८१

द्विस्वभाव राशिका लग्न और लग्नेश हो और शुभग्रहसे युत दृष्टो तो सर्वदेशमें भाग्यो दयहोवेगा ८२

नवमभावपर शुभग्रहोकि अधिक दृष्ट होतो सर्वदेश में भाग्योदय होवेगा ८३

शुक्र उपचयस्थान [३।६।१०।११] में अथवा सप्तम भावमें गया होतो विवाह होनेके पश्चात् भाग्योदय होवेगा ८४

सप्तमेश सात मेंभावमें अथवा उपचय स्थान (३।६।१०।११) में गया होतो विवाह होनेके पश्चात् भाग्यो दय होवेगा ८५

तृतीयेश और नवमेश का योग हो और शुभग्रहसे युत वा दृष्टो अथवा तृतीयेश नवमेश शुभग्रहों के नवांश में गये हो और दोनों युत हो तो भाई के धनसे भाग्योदय होवेगा ८६

पंचमेश नवमेश का योग हो और वह शुभग्रह से युत वा दृष्ट होतो पुत्र से भाग्योदय होवेगा ८७

नवम पंचम भाव भाग्येश से युत और दृष्ट होतो पत्रसे भाग्योदय होवेगा ८८

भाग्योदयके वर्षका विचार बृहत्पाराशरीमें लिखा है कि भाग्यस्थान में गुरुगया हो और भाग्येश केंद्र में हो तो २० वर्षके बाद भाग्योदय होवेगा १

बुधपरमोच्चाशमें गया हो और भाग्येश भाग्यमें ही हो तो ३६ में वर्षके बाद भाग्योदय होवेगा २

भाग्येश धनभाव में गया हो और धनेश भाग्य में गय हो तो ३२ वर्षके पश्चात् भाग्योदय होवेगा ३

यदि अधिक बलवान् और पद्वर्ग शुद्ध होकर अपनी स्वराशी किंवा

उच्चराशि में गयाहुवा भाग्येश रवि होतो २२ में वषं चंद्रहोतो २४ में वषं मंगल हो तो २८ में, बुध हो तो ३२ में, गुरु होतो १६ में, शुक्र हो तो २५ में शनि हो तो ३६ में राहु होतो ४२ में वषं में भाग्यो दय होवेगा । इसी प्रकार अन्य भावोंके स्वामीभी जो अधिक बलवान होकर अपनी स्व या उच्चराशि में गयेहो उनकेवषमें भाग्योदय और उसभावके फलकी वृद्धि होवेगा ।

गंगास्नान योग ।

स्वराशे वा सूर्ये गंगास्नानम् ८९

स्व पूर्णेन्द्रीज्यौ गंगास्नानम् ९०

स्व जीवे गंगास्नानम् ९१

शुक्रेज्यौ केन्द्रे शुक्रौ गंगास्नानं ९२

धनेश शुक्रेज्यास्तुंगे गंगास्नानम् ९३

ज्ञे वा वदीशेऽन्ये गंगास्नानम् ९४

चंद्रे तोत्ये शुभदृष्टे जलर्क्षे गंगास्नानम् ९५

धर्मेशे जलर्क्षे केन्द्रे शुभदृष्टे गंगास्नानम् ९६

धर्मे जीवदृष्टे गंगास्नानम् ९७

रत्नगोशे शुभदृष्टेऽनेकतीर्थे दर्शनम् ९८

टीका-इसमें भ.व में राहु भयवा मृत्यु

येगा ८९ । गंगार्जिमें स्नान करनेका ।

इसमें भाव में पूर्णेन्द्रमा और

इसमें

जलराशी का चंद्रमा तीसरे भावमे गयाहो और शुभग्रह से दृष्ट होतो गंगास्नान होवेगा. ९५

जलराशी मे गयाहुवा नवमेश केन्द्रस्थान मे गयाहो और शुभग्रह दृष्टहोतो गंगास्नानहावेगा ९६

नवम भाव को गुहदेसता होतो गंगास्नान होवेगा ९७

भाठमें भाव मे गया हुवा कुछ शुभग्रह से दृष्टहोतो अनेक तीर्थस्थानों के दर्शन होवेगा ९८

महायात्रा योग ।

धर्म कर्मयोगे महायात्रा ९९

धर्मशुभदृष्ट्याधिक्ये धर्मके केन्द्रायकोणे महायात्रा १००

चंद्राद्धर्मेशे केन्द्रे महायात्रा १०१

चंद्राद्धर्मे शुभदृष्ट्याधिक्ये वा शुभयुते महायात्रा १०२

टीका—नवमेश दशमेश का एक राशीमेयोगहोतो महायात्रा होवेगा

नवम भावपर शुभग्रहों कि अधिक दृष्टि हो और नवमेश १४४

१०१११५ भावमे गयाहो तो महायात्रा होवेगा १००

चंद्रमासे नवमेभावका स्वामि केन्द्रमे गयाहोतो महायात्रा होवेगा १०१

चंद्रमा से नवमे भावपर शुभग्रहों कि अधिकदृष्टि हो अथवा अधिक शुभग्रहों से नवम भावयुत होतो महायात्रा होवेगा १०२

प्रव्रज्या योग ।

महचतुष्टयादि एकक्षगंप्रव्रज्या करम् १०३

यावन्तो बलिनस्तावन्तः स्व स्व प्रव्रज्या कराः १०४

तापसः कापालिकोरक्तपट आर्जीवी त्रिदंडी चक्रधरो

नग्नः सूर्योदितः १०५

अस्वगास्तु तदक्तिमात्रम् १०६

मन्द व्यंशे वा मंदारांशे चंद्रेमन्दमात्र दृष्टे संन्यासी १०७

एवं पदो चलहीनो संन्यासी १०८

चंद्रज्याह्नेयर्किदृष्टेधुधर्मेजीवेराजयोगजे। बलगुप्त काणादा
दिसपः १०९

टीका—एक राशी में चार पांच छ सात ग्रहों का योग होने से यह धर्म को त्याग करके संन्यासी होता है १०३

एक राशी में गये हुए चार से अधिक प्रसज्या योग करने वाले ग्रहों में नितने अधिक बलवान् ग्रह होवे उतने हि ग्रह अपने अपने भाधिय की प्रसज्या करते है १०४

यदि प्रसज्या करने वाले ग्रहों में रवि अधिक बलवान् हो तो तपस्वी भक्ति होय, वा गायत्री का उपासक किंवा सूर्य की भक्ति करने वा (वा नैष्ठिक ब्रह्मचारी) होता है ।

शुक्र बलवान् हो तो कापालिक (कपालको धारण करनेवाला वा नग्न त के धारणवाला वा शिवकी दीक्षावाले सर्वोपवासादि करनेवाला तपस्वी) होता है ।

मंगल बलवान् होतो लालवस्त्र धारण करनेवाला वा बुद्धिके आभयवसहो शोपासना करनेवाला नितोद्विषिषासूत्ररहित काषा पांवरधारी होता है ।

बुध बलवान् होतो भागीवी भर्वात् कपट करके जीविका करने वा वा वा गरुड धंसे से दीक्षित होता है ।

गुरुबलवान् हो तो भिर्दंड धारण करनेवाला काषापांवरधारी संन्यासी होता है ।

शुक्र बलवान् हो तो चक्रको धारण करनेवाला भववा बहुत सा- संन्यासियों कि अघातकामालिक ठाटपाटसे साधुओंकी मंडली (भजेवाला और पशुपतिदीक्षामें स्थित होता है ।

शनि बलवान् हो तो नगरहनेवाला नादिकठिनतपस्याके व्रतको पारण करनेवाला दिगंबर तपस्वी होता है १०५

यदि प्रसज्या योग करने वाले ग्रह अस्तेगत् हो तो केवल संन्यासियोंकी भक्ति करने वाला होवेगा (प्रसज्या नहीं होवेगा) १०६

चंद्रमा शनिके द्वेष्टकाणने गया हो किंवा शनि मंगलके नवांशमें गयाहुवा चंद्रमा केवलशर्मासेदीष्ट हो तो संन्यासी होता है १०७

रग्नेश और शनि बलवान् होवे वो संन्यासी होता है १०८

चंद्र, गुरु, और लग्न इन तीनोंको शनि देखता होवे और नवम भाव में गुरुगया हो तो राजयोगका भोगानुभव करनेवाला ब्रह्मगुप्त काणादादि मुनियोंके समान प्रतिष्ठावाला भयवा भाचार्य पदधारी तपस्वी होवेगा १०९

प्रव्रज्याभ्रष्ट योग ।

प्रव्रज्याकरे पराजिते प्रव्रज्याभ्रष्टः ११०

जन्मेशे मन्दमात्र दृष्टे प्रव्रज्या भ्रष्टः १११

चंद्रराहुयोगे कूरांशे सगुलिके संन्यासभ्रष्टः ११२

अंशेकेतौमन्दमात्रदृष्टे संन्यासभासः ११३

जीवेरिगेर्कम्बुगे तपोहीनसंन्यासी ११४

इति नवम विवेकः ।

टीका-संन्यासयोग करनेवालाग्रह पराजित (ग्रहयुद्धमें हारा हुआ) होतो प्रव्रज्या भ्रष्टहोवेगा ११०

जन्मराशी के स्वामी को केवलशनीही देखताहो और अन्य कोई भीग्रहदेखतेनहो तो प्रव्रज्या भ्रष्टहोवेगा १११

कूराग्रहोकेनवांशमें गयेहुवे चंद्र और राहुका एकराशीमेंयोगहो और वह गुलिकसे युतहो तो संन्यास सेभ्रष्ट [संन्यासग्राहण करके त्यागदेगा वा संन्यासके नियम पालननहीं करनेवाला नाममात्रवा संन्यासी] होवेगा । ११२

कारकांशलगतमें गयाहुवा केतू केवलशनीसेदृष्ट हो तो संन्यासिका केवल वेषधारण करनेवाला होवे अर्थात् स्त्रासंन्यासी नहींहोवे ११३

उठे भावमें गुरु और सुखभावमें राविगयाहो तो तपराहित (यम नियम रहित वा तपस्याहीन) संन्यासी होवेगा ११४

इत्यादिविचारोंके सिवाय गुरु, भाईकीस्त्री, भाईकेपुत्र केशालेकीसी, मामा कीमाता, माताकायामा, मित्रका मामा, मिनकीकाकी, पुत्रका पुत्र, पुत्रकीबिद्या, शत्रुकीमाता, शालक, नोकरकीस्त्री, उरस्थान, दादाका भाई, आदिवातोंकाविचारभी इसनवम भावसेही करना ।

इति नवमविवेकस्य टीकाः प्तः । ९

अथदशमविवेकः ।

व्यापारीयोग ।

राज्ये शुभदृष्ट्याधिक्ये व्यापारी १

स्वज्ञेव्यापारी २

स्वज्ञेशयोगे व्यापारी ३

स्वज्ञेशे व्यापारी ४

स्वज्ञेन्द्रायकोणे शुभदृष्टे व्यापारी ५

स्वज्ञे स्वज्ञे शुभयुते व्यापारी मानशीलः ६

टीका-दशमभाषपर शुभग्रहो कि अधिक दृष्टि हो तो व्यापारी मनुष्य होवे १

दशमें भाव में बुधगया हो तो व्यापारी होवे २

दशमेश और लग्नेशका एकराशी में योग हो तो व्यापारी होवेगा ३

लग्नेश दशमभावमें गयाहो तो व्यापारी होवेगा ४

दशमेश १।४।७।१०।११।१५ भाव में गयाहो और शुभग्रहसे दृष्ट हो तो व्यापारी होवेगा ५

दशमेश अपनी स्वराशी में गयाहो और शुभग्रहसे युक्त हो तो व्यापारी और अभिमानी होवेगा ६

मानीयोग ।

स्वज्ञे शुभसम्बन्धे मानी ७

स्वज्ञेशुभवर्गे वा स्वज्ञे दृढमानी ८

शुभांतरे माने मानी ९

स्वज्ञे वैशेषिकारो मानी १०

धर्मेशज्ञे गुरुदृष्टे राजमान्यः ११

जीवज्ञयोगे राजमान्यः १२

धर्मशेलाभे राजवन्धः १३

धर्मपेपारावतादौ राजवन्धः १४

लग्नेशे शुभवर्गे वा गोपुरादी राजवन्धः १५

टीका-दशमेश शुभग्रहसे सम्बंध करता हो तो मानवाला होवेगा ७
दशमेश शुभग्रहके वर्गमें गया हो अथवा भवनी चक्षराशी में गया
हो तो दृढग्रह और मानवाला होता है ८

दशमभाव शुभग्रहोंके मध्यमें गया हो तो मानवाला होता है ९
दशमेश वेशेषिकाश में गया हो तो मान (प्रतिष्ठा) वाला होता है १०
लग्नमें गया हुआ नवमेश गुरुसे दृष्ट हो तो राजमें मानवाला होता है ११
मुख गुरुका योग एकराशीमें हो तो राजमें मानप्रतिष्ठा वाला होता है १२
नवमेश लाभ भाषमें गया हो तो राजवन्ध (राजालोग) जिसकी मुक्ति
बेसा मान वाला होवे १३

नववर्ग भाषका स्वामि पारावतादि भंशमें गया हो तो राजवन्ध होवे १४
लग्नेश शुभग्रहों के वर्गमें किंवा गोपुरादि शुभांशों में गया हो तो
राजवन्ध होवेगा १५

मानहीन योग ।

स्वपे पापसंबंधे मानहीनः १६

स्वपे पापवर्गे क्रूरपष्ठघंशे वा मानहीनः १७

टीका-दशमेश पापग्रहोंसे संबंध (संज्ञातत्वमें संबंध ४ प्रकारका
कहा है तदनुसार) करता हो तो मानहीन होवेगा १६

दशमेश पापग्रहके दशवर्गमें गया हो अथवा पापपष्ठघंशमें गया
हो तो मानप्रतिष्ठा हीन होवेगा १७

कर्मादि वैकल्य योग ।

खेशेऽथलेसपापे कर्मादिवैकल्यम् १८

क्षेज्पशुक्रादुस्थाः पापदृष्टाः कर्मादिवैकल्यं १९

स्वपापदृष्ट्याधिक्ये कर्मादिवैकल्यं २०

कर्मपेदुरथे कर्मादिवैकल्यं २१

टीका-पापग्रहसे युत दशमेश बलहीन होतो जोकोई व्यापार धंधा या काम करेगा उसमे सफलता नहीगी और विकलता वा व्यग्रता होवेगा १८

बुध गुरु और शुक ये तीनों ६।८।१२ में भावमें गये हो और पापग्रहसे दृष्टहोतो प्रत्येक काम में सफलतानहीगी और उसमे विकलता विघ्न व्यग्रतादि होवेगा १९

दशमभावपर पापग्रहों कि अधिक दृष्टि हो तो प्रत्येक काम करनेमें विकलता होवेगा २०

दशमेश ६।८।१२ में भावमें गया होतो जो काम करेगा उसी में विकलता व्यग्रता वा हानि होगा और सफलता प्राप्त न होवेगा २१

सत्कीर्तियोग ।

कर्क चंद्रे पारावतांशे शुक्रेऽप्येक्षिते सत्कीर्तिः २२

खेरोपारावतादौ सत्कीर्तिः २३

शुभयुते खेरो सत्कीर्तिः २४

शुभांगरेखेशे शुभदृष्टे सत्कीर्तिः २५

स्वपेशुभांशे सत्कीर्तिः २६

लग्ने बलाढ्ये स्वपदेवलोके धर्मपे सिंहासने सत्कीर्तिः २७

टीका-कर्कराशीमें गयाहुश चंद्रमा पारावतांशमें हो और बुध शुक्र शुकसे दृष्ट हो तो सत्कीर्ति (वलमकीर्ति वाला) होवेगा २२

दशमेश पारावतादि शुभवर्ग में गयाहोतो सत्कीर्ति वाला होवे २३

दशमेश शुभग्रह से युत होतो सत्कीर्ति वाला होवे २४

दशमेश शुभमहोके मध्यमें गयाहो और शुभग्रहसे दृष्टहोतो सत्कीर्ति वाला होवे २५

दशमेश शुभग्रहोंकी राशी के नवांश में गयाहोतो सत्कीर्तिवालाहोवे २६

लग्नेश बलवान् हो दशमेश देवलोकांश में गयाहो और नवमेश सिंहासनांश में गयाहोतो सत्कीर्ति वाला होवे २७

भसत्कीर्ति योग ।

स्वपेशपसंबंधे सत्कीर्तिः २८

सप्ते पापवर्गे असत्कीर्तिः २९

स्वमंदार्को असत्कीर्तिः ३०

पातांतरे कर्मणी असत्कीर्तिः ३०

टीका—दशमेश पापग्रह से संबंध करताहो तो असत्कीर्ति वालाहोवे २९
दशमेश पापग्रहो के दशवर्गमें गयाहो तो असत्कीर्ति वाला होवे २९
शनि और रविका योग दशमें भावमें हो तो असत्कीर्ति वाला होवे ३०
दशम भावपापग्रहोके बीचमें गयाहो तो असत्कीर्ति वालाहोवे ३१

आज्ञाकर्ता तथा क्रूर सौम्याज्ञा कर्तायोगः ।

स्वशे शुभे शुभदृष्टयुते आज्ञाकर्ता ३२

स्वशे मृदुशे वा शुभांशे वा केन्द्रे बलाढ्ये आज्ञाकर्ता ३३

स्वर्के वा भौमे आज्ञाकर्ता ३४

स्वशे केन्द्रे शुभयुतदृष्टे क्रूरपष्ठयंशे सौम्याज्ञाकर्ता ३५

समन्देकर्मपे रन्ध्रयुते क्रूरांशे केन्द्रे क्रूराज्ञाकर्ता ३६

राहु-गुलिकौमाने क्रूराज्ञाकर्ता ३७

धने राहु-केतु क्रूराज्ञाकर्ता ३८

धर्मपत्नीचे क्रूराज्ञाकर्ता ३९

टीका—दशमेश शुभग्रह हो और शुभग्रहसे युत और दृष्ट होतो आज्ञा
(हुकुम) करने वाला होवे ३२

दशमेश मृदु संज्ञकशुभपष्ठयंशमें गयाहो १ अथवा दशमेश शुभग्रह
की राशिके नवांशमें गयाहो २ किंवा दशमेश बलवान होकर केन्द्र
(१।४।७।१०) स्थान में गया हो तो आज्ञाकरने वालाहोवे ३३ (इस
सूत्र में ३ योग है)

दशम भावमें रवि अथवा मंगल गयाहोतो आज्ञाकरने वालाहोवे ३४
दशमेश शुभग्रह से युतदृष्ट होकर केन्द्रमें गयाहो और क्रूर पष्ठयंश
में गयाहोतो सौम्य [शांतीकेसाथ] आज्ञा करने वाला होवे ३५

शनि और अष्टमेश से युन होकर दशमेश पापग्रहकी राशी के मर्वांश में हो और केन्द्रस्थान (११४।७।१०) में गया हो तो कुराजा करनेवा लाहोवे ३६

दशमे भावमे राहु और गुलिक गये होतो कुरआजा करनेवालाहोवे ३७

धनभावमें राहु किंवा केतु गया होतो कुर आजा करनेवाला होवे ३८

नवमेश नीचराशी में गया होतो कुर (कठोर) आजा करनेवालाहोवे ३९

राज कार्य कर्तायोग ।

साकेंशे राजकार्य कर्ता ४०

केन्द्रेके राजकार्य कर्ता ४१

केन्द्रे कोणे चंद्रे राजकार्य कर्ता ४२

राज्येशो लाभे केन्द्रे वा राजकार्य कर्ता ४३

छानांभुगे जीषे राजकार्य कर्ता ४४

टीका-कारकांश लग्नमें रवि गया होतो राजकार्य करनेवालाहोवे ४०

केन्द्रस्थान (११४।७।१०) में रवि गया होतो राज्यकार्य करने वाला होवे ४१

चंद्रमा केन्द्र वा त्रिकोण स्थानमें (११४।७।१०।१५) गया होतो रा ज में काम करने वाला होवे ४२

राज्येश लाभ भावमें गया हो अववा दशमेश केन्द्र में गया होतो राजका र्य करने वाला होवे ४३

लग्न किंवा चतुर्थ भावमें गुरु गया होतो राजकार्य करनेवालाहोवे ४४

कुल मुख्य कुल तुल्यादि योग ।

अंशे ग्रहद्वये कुल मुख्यः ४५

एकःस्वर्क्षे कुलतुल्यः ४६

दोस्वर्क्षे स्वकुश धिकः ४७

सोत्पेगुर्तो लाभेचंद्रे कुलदीपकः ४८

भोमेक्षेविदे सुनेचंद्रे व्यपेराहौ कुलदीपकः ४९

टीका—कारकांश लग्नमें शुभ किंवा पाप कोईभी दोग्रह गयेहोतो अपने कुलमें मुख्य मनुष्यहोवेगा ४५

कोईभी एकग्रह अपनी स्वराशी में गयाहोतो अपने कुलके बराबर प्रतिष्ठा वालाहोवेगा ४६

दोग्रह अपनी स्वराशी में गयेहोतो अपने कुलसे अधिकप्रतिष्ठावाला होवे ४७

तीसरेभावमें गुरु और लाभ भावमें चंद्रमा गयाहोतो कुल दीपक होवे ४८

लग्नमेंसिंह राशी का मंगल, पांचमें चंद्रमा और बारहमें भावमें राहु गयाहोतो कुलदीपक होवे ४९

प्रतारपीयोग ।

रन्ध्राशी वा अन्योन्यस्थानों वा केन्द्रों प्रतापी ५०

षष्ठेगुरौ लाभेचन्द्रे प्रतापी ५१

लाभे शुभभांशे प्रतापी ५२

टीका—अष्टमेश छठे भावमें और षष्ठेश आठमें भाव में गयाहो अथवा अष्टमेश और षष्ठेश ये दोनों केन्द्रस्थान (१४, ७, १०) में गये हो तो प्रतापी होवे ५०

छठे भावमें गुरु और लाभ भावमें चंद्रमा गयाहो तो प्रतापी होवे ५१
लाभेश शुभग्रहकी राशी और शुभग्रहकी नवांशमें हो तो प्रतापी होवे ५२

श्रीमान् योग ।

लाभेवलाढ्येशुभग्रहे शुभदृष्टे वा श्रीमान् ५३

धनगाध्वन्द्रेज्याच्छाः श्रीमान् ५४

टीका—चलवान् शुभग्रह लाभभाव में गयाहो अथवा शुभग्रह लाभ भावको देखता हो तो श्रीमान् होवे ५३

धनभाव में चंद्र गुरु और शुक गये हो तो श्रीमान् होवे ५४

पितृसुख योग ।

खेशे शुभे शुभयुतदृष्टे पितृसुखम् ५५

स्वेश पारावतादौ पितृसुखम् ५६

स्वेश शुभांतरे गुरु शुक्र युते वा पितृसुखम् ५७

गोपुरादौ पितृकारके पितृसुखम् ५८

टीका-दशमेश शुभग्रहद्वे और वह शुभग्रहसे युत और दृष्ट हो तो पिताका सुख उत्तम रहेगा (पिताकी दीर्घायु होगा) ५५

दशमेश पारावतादि शुभग्रहमें गया हो तो पिताका सुख उत्तम रहेगा ५६
दशमेश शुभग्रहोंके मध्यमें (बीचमें) गया हो अथवा दशमेश गुरु शुक्रसे युत हो तो पिताका सुख उत्तम रहेगा ५७

पितृकारक पद (राश) गोपुरादि शुभांशमें गया हो तो पिताका सुख अच्छा रहेगा ५८ बृहस्पतिराशरी में लिखा है कि भाग्येश परमोच्च। शनं गया हो भाग्यस्थानगतराशीके नवांशमें गुरुगया हो और जन्मलग्न में केन्द्रस्थानमें शुक्रगया हो तो पिताकी दीर्घायु होवे १

पिता परस्त्रीगामी योग ।

स्वारिषौ खगौ पितापरस्त्री गामी ५९

छानेशे सपापे धने वा धनारियूनेशाः सपापाः कोशगाः

पितासज्जन स्त्री गामी ६०

टीका-दशमेश और पण्डेश ये दोनों दशम भाव में गये हो तो पिता परस्त्री गामी होवे ५९

पापग्रहसे यु। होकर लग्नेश धन भाव में गया हो १ अथवा धनेश पण्डेश और सप्तमेश ये तीनों पापग्रहसे युक्त होकर धनभाव में गये हो तो पिता सज्जन परस्त्री से गमन करनेवाला होवे ६०

पिता, धूर्त योग ।

सुस्त्रीशावके जनको विटः ६१

भाग्याम्बुषौ सुस्त्रे जनको विटः ६२

टीका-सुस्त्रेश और पण्डेश ये दोनों नवमें भाव में गये हो तो पिता धूर्त किंवा ठगईका काम करने वाला होवे ६१

नवमेश और सुस्त्रेश ये दोनों सुखभाव में गये हो तो पिता धूर्त या ठगई करने वाला होवे ६२

पितृ दुःख योग ।

स्वशे पापसंबंधे पापान्तरे पितृ दुःखम् ६३

अर्कादशमेशे पापयुतदृष्टे पितादुःखी ६४

टीका-दशमेश पाप ग्रहसे संबंध करता हो पापग्रहोंके बीचमें गया होतो पिताका दुःख होगा या पिता दुःखी रहेगा ६३

रवि से दशम भावका स्वामि पापग्रहसे युक्त और दृष्टहोतो पिता दुःखी रहेगा ६४

पितृदुःखादि भस्म योग ।

सुखेरो चिके पितृसुखमल्पम् ६५

सूर्यारोखे धर्मे या शीघ्रं पितृमृतिः ६६

सपापसूर्ये घूने शीघ्रं पितृमृतिः ६७

साकारेस्वशे शीघ्रं पितृमृतिः ६८

घूनेर्के स्वभौमेन्त्येराहौ पितानजीवति ६९

स्व शत्रुभे भौमे पितानजीवति ७०

लग्नेजीवे धने ज्ञारयमा विवाहे पितृमृतिः ७१

चन्द्रार्कावद्धे पितुर्जलेमृतिः ७२

चन्द्रार्केशपे पापदृष्टौ पितुर्जलेमृतिः ७३

शुक्रार्कौ चरे भौमदृष्टयुतौ पितुर्न्यदेशे मृतिः ७४

टीका-सुखेश ६८, १२ में भाव में गया हो तो पिताका सुख भरा रहेगा ६५

सूर्य और मंगल दशमभाव में भयश नवमे भावमें गयेहोतो शीघ्र (अपनी छोटी उमरमेंही) पिताकी मृत्यु होवेगा ६६

पापग्रहसे युक्त सूर्य सातमे भाव में गया हो तो पिताकी शीघ्र मृत्यु होवेगा ६७

दशमेश रवि और मंगल से युक्त हो तो पिताकी शीघ्र मृत्यु होवेगा ६८

सात में सूर्य दशमें मंगल और बारहवें भावमें राहुगया होतो पिता जीवे नहीं ६९ (शीघ्र पिता कि मृत्यु होवेगा)

दशम भावमें शत्रुराशी में गयाहुवा मंगल होवे तो पिता जीवेनही (शीघ्रपिता का मृत्युहोवेगा) ७०

लग्नमेंगुरु धनभावमें घुघ, मंगल और शनि ये तीनों मह गयेहो तो विवाह के समय पिताकि मृत्यु होवेगा ७१

चंद्र और रवि येदोनो नवमें भावमें गयेहोतो पिताकी जलमें डूबने से मृत्युहोवेगा ७२

चंद्र और रवि मीनराशी में गये हो और पापग्रह से दृष्ट होतो पिता कि जलमें डूबने से मृत्यु होवेगा ७३

चरराशी में गयेहुवे शुक्र और रवि, मंगलसे युक्त किंवा दृष्ट होतो पिताकि अन्य देशमें मृत्यु होवेगा ७४

पितुर्दहनयोग ।

चरके केन्द्रे वा चन्द्रे पितरौ नदहेत् ७५

टीका—चरराशी का रवि केंद्रमें गयाहोतो पिताका और चरराशी का चंद्रमा केंद्रमें गयाहोतो माता का अग्नि संस्कार अपनेहातसे न ही करने पावेगा ७५

जन्मतः प्राक्पितृ मरणयोग.

भौमाकार्कवेजे स्वे जन्मतः प्राक् पितृमरणम् ७६

मन्दारौ स्वे जन्मतः प्राक् पितृमरणम् ७७

टीका—मेष राशी में गयेहुवे मंगल और रवि दशम भावमें गये होतो जन्महोनेके पहिले ही पिता का मरण कहना ७६

शनि मंगल दशम भावमें गयेहोतो जन्महोनेके पूर्व ही पिता का मरण कहना ७७

शुद्धपाराशरी में लिखाहै कि छठे भाठमें किंवा बारहवें भावमें रवि नवमभावमें अष्टमेश लग्नमें व्यपेश और छठेस्थानमें जिसराशी का नवांशहो वहराशी पंचमभावमें गई होतो जन्महोने के पहिले ही पिता कि मृत्यु होवेऐसाजानना १

भाठमें रवि और अष्टमेश नवम भावमें गयाहोतो पहिले वर्ष में पिता कि मृत्यु होवेगा २

व्ययेश नवमे भावमें और नवमेश नीचराश्यंश में गया होतो ३ तीसरे किंवा १६ में वर्ष में पिता कि मृत्यु होवेगा ३

लग्नेश भाठमे भावमें और अष्टमेश रविसँ युक्त होतो २ दूसरे अथवा चारवें वर्ष में पिता कि मृत्यु होवेगा ४

जन्म लग्नसे चतुर्थ भावमें राहु और पंचम भावमें रवि गया होतो सोलहमे अथवा अठारह में (१८) वर्ष में पिता कि मृत्यु कइता ५

राहुसे युक्त सूर्य होवे और चंद्रमासे नवमे भावमें शनि गया हो तो सातमे अथवा उन्नईस (१९) में वर्षमें पिताका मरण होवेगा ६

भाग्येश व्ययभावमें और व्ययेश भाग्यभाव में गया हो तो ४४ बुधमालीस में वर्ष में पिताका मरण होवेगा ७

सूर्यके नवांशमें चंद्रमा गया हो और लग्नेश अष्टम भावमें हो तो ३१ में तथा ४१ में वर्ष में पिताका मरण होवेगा ८

दशमस्थानका स्वामी सूर्य, चंद्र और मंगलसे युक्त हो तो ५० में वर्ष पिताकी मृत्यु होवेगा ९

तीसरे भावमें रवि और तीसरे तथा सातमे भाव में राहु गया होतो ६ छठे वर्ष में अथवा पचीस में वर्ष में पिताका मरण जानना १०

धनभाव में शनि और भाठमे भाव में रवि गया होतो ३० में तथा २१ में किंवा २६ में वर्ष पिताका मरण होवेगा. ११

भाग्येश नीचराशी में गया हो और उसनीचराशिका स्वामी नवमे भाव में गया होतो २६ में तथा ३३ में वर्ष पिताका मरण होवेगा १२

सिंहासनाप्तियोग ।

सुखार्थाङ्गेशाः स्वर्क्षे धर्मशेङ्गे सिंहासनाप्तिः ७८

धर्माङ्गसुखेशाः कर्मगाः बलिस्वेशयुताः सिंहा० ७९

धर्मचुपे शुकेज्यौ तुर्ये धर्मशे केन्द्रकोणे सिंहासनाप्तिः ८०

विचपे केन्द्रे स्वोच्चे शुभदृष्टे सिंहासनाप्तिः ८१

शुभाः केन्द्रे व्यरीशगाः पात्राः सिंहासनाप्तिः ८२

टीका—सुखेश धनेश और लग्नेश अपनि स्वराशीमें गये हो और नवमेश लग्नमें स्थित होतो सिंहासनकी प्राप्ती होवेगा अर्थात् किसीबड़े राजाकी गद्दीपर बैठनेका सौभाग्य प्राप्त होवेगा ७८

नवमेश लग्नेश और मुखेश ये तीनों दशमभागे गये हों और बल
वान् दशमेश से युक्त हों तो सिंहासन की प्राप्ति होवेगा ७९

मुखेश नवमे, गुरु शुक्र चतुर्थ भागमें और नवमेश केन्द्रको वा त्रिकोण
स्थानमें गया हो तो सिंहासन की प्राप्ति होवेगा ८०

अपनि चन्द्रराशि में गया हुआ धनेश केन्द्रमें गया हो और शुभग्रह
में दृष्ट हो तो सिंहासन की प्राप्ति होवेगा ८१

संपूर्ण शुभग्रह केन्द्रमें गये हों और संपूर्ण पापग्रह तीसरे छठे ग्यारह
भागमें स्थित हों तो सिंहासन की प्राप्ति होवेगा ८२

इन योगोंमें जन्माहुवा किसी राजाके यहां दसक जायगा वा अ-
पनी धीरतासे राज्य संपादन करेगा ।

नृपतुल्य योग ।

पदस्वर्क्षगाः वा शुभपष्ठपंचशेर्के नृपतुल्यः ८३

चंद्रज्यौसुते वोत्तमांशे नृपतुल्यः ८४

चन्द्रेक्षे गुरौसुते स्वशुके मन्देस्वर्क्षोच्चे नृपतुल्यः ८५

दशमादासोत्थगाः सौम्या नृपतुल्यः ८६

सौम्याः केन्द्रकोणे पापाख्यायारिगाले नेशसबले नृपतुल्यः ८७

नीचगभेशोच्चेः केन्द्रे नृपतुल्यः ८८

बलिनिचंद्रे लग्नेतर केन्द्रकोणे शुक्रजीवान्पतरदृष्टे नृप
तुल्यः ८९

नीचगाः स्वोच्चांशगाः नृपतुल्यः ९०

देहेजीवे क्षेकेन्द्रे भाग्यपदृष्टे नृपतुल्यः ९१

स्वोच्चेः मित्रांशे पारावतादौ नृपतुल्यः ९२

नीचे जीवेक्षे धर्मपेरन्ध्रे शुभांशे नृपतुल्यः ९३

जीवेन्त्ये लाभमंदे सोत्थपेर्के नृपतुल्यः ९४

टीका-छपट अपनी स्वराशी में गये हों ? अथवा रात्रि शुभपष्ठपंचश

में गया हो तो राजाके समान होने ८३

चंद्र और गुरु ये दोनो पंचम भावमें गये हो अथवा सप्तमांश में गये हो तो राजाके समान होवेगा ८४

लग्नमें चंद्रमा सुखमें गुरु दशमेशुक गया हो और शनि भवनि स्व-
तया उच्चराशीमें स्थित हो तो राजाके समान होवेगा ८५

दशम भावसे तीसरे भावपर्यंत (१०।११।१२।१३) के छ भागों में संपूर्ण शुभग्रह गये हो तो राजाके समान होवे ८६

संपूर्ण शुभग्रह केंद्र या त्रिकोणस्थान में और संपूर्ण पापग्रह ३।६।११ भावमें गये हो लग्नेश बलवान् होता राजाके समान होवेगा ८७

नीचराशीमें जो ग्रहगया हो उच्चराशी के स्वामीकी जो उच्चराशी हो उसका स्वामी यदि केंद्र (१।४।७।१०) में गया हो तो राजाके समान होवेगा ८८

बलवान् चंद्रमा लग्नके बिना अन्य केद्रकोणस्थानमें (४।७।१०।१३) गया हो और शुक्र किंवा गुरुसे दृष्ट हो तो राजाके समान होवे ८९

नीचराशीमें गये हुए भवनि उच्चराशीके नवांशमें गये हों तो राजाके समान होवेगा ९०

लग्नमें गुरु और केंद्रमें गया हुआ बुध भाग्येश से दृष्ट हो तो राजाके समान होवेगा ९१

दशमेश भवनी स्व, उच्च तथा मित्रराशीके नवांशमें और पारस-
तादि शुभांशमें गया हो तो राजाके समान होवेगा ९२

नीचराशीका गुरुलग्नमें और भाग्येश अष्टमभाव में शुभग्रहों की रा-
शीके नवांशमें गया हो तो राजाके समान होवेगा ९३

पारस भावमें गुरु व ग्यारहमें भावमें शनि गये हो और तीसरे भाग
स्वामी मृद हो तो राजाके समान होवेगा ९४

राजाधिराज योग ।

षट्प्रदाः स्वोच्चगाराजाधिराजः ९५

सप्तशतसुतेसुतेगेते कोणदृष्टे राजाधिराजः ९६

धर्मात्तदपोषूनो केन्द्रे लग्नपुत्री राजाधिराजः ९७

पंचात्सोत्थे मंशकोर्त्तुपक्षाच्चो लाभेर्जादे राजाधिराजः ९८

- गुरावङ्गे द्युनाम्बुगेसूर्ये वक्रगेशुकेसुते राजाधिराजः १९
जीवार्कावजे स्वेकुजे धर्मगात्रेन्द्रच्छाराजाधिराजः १००
कन्याङ्गेज्ञे ज्ञेपेर्जावे लाभमन्दे ह्येशुकेवक्रार्कावलो राजा
धिराजः १०१
धर्ममन्दे उच्चेकुजे ज्ञेज्याच्छाः सुते राजाधिराजः १०२
सकलाश्वरेषु राजाधिराजः १०३
सोत्पेशनौ पष्ठेभौमे स्वे शुक्रे धर्मस्वोच्चेर्क राजाधिराजः १०४
सुतेशे सबले स्वाङ्गेरायोगे केन्द्रे राजाधिराजः १०५
तेरोदेवलोके स्वाङ्गेशौभारावते लाभपेगोपुरे राजाधिराजः १०६
गो मीनालिकन्यासु सर्वे राजाधिराजः १०७
षट् सिंह युग्म धनुःषु सर्वे राजाधिराजः १०८
तुलाङ्गना हय मृग हरिषु सर्वे राजाधिराजः १०९
हाराकेज्यर्क्षेषु सषट्केषु सर्वे राजाधिराजः ११०
ज्ञेन्दु जीवभेषु सर्वे राजाधिराजः १११
टीका-छगड़ अपनी उच्चराशी में गयेहो तो राजाधिराज होताहै ९५
दशमश पंचममे सुक्लेश दशम भावमें गया हो और नवम पंचम
भावके स्वामियो से दृष्ट होतो राजाधिराज होवे ९६
नवम और पंचमभावके स्वामी लग्नेशते युग हीकर सप्तम स्थानके
बिना भयंकरद्वस्वान (१४।१०) में गये होतो राजाधिराज होवेगा ९७
चंद्रमासे तीसरे भावमें शनि रावि, चतुर्थभावमें बुधशुक्र और छान
भाव मे गुरु गया हो तो राजाधिराज (बढाराजा) होवेगा ९८
लग्नमेगुरु सप्तम किंवा चतुर्थभावमे रावि और वक्रगती का शुक
पंचमभाव में गयाहो तो राजाधिराज होवे ९९
मेषराशी मेगुरुऔर रावि, दशमेमंगल और नवम भावमे युध चंद्र
प शुक ये तीनोंमङ्गयेहो तो राजाधिराज होवे १००

कन्याराशि के लग्न में शुक्र, मीनराशि में गुरु, मकर भाव में शनी, धन राशि में शुक, मेष हो और मंगल व रवि वृश्चिक राशि में हो तो राजा धिराज होवेगा १०१

नवमे भाव में शनि हो भवति वच्चराशि में मंगल हो और गुरु गुरु शुक ये तीनों पंचम भाव में गये हो तो राजा धिराज होवे । ये योग यदि मृगश या वृश्चिक लग्न में हो तो अधिक दृढवान होवेगा १०२

शुभ और पाप संतुल्य ग्रह यदि चरराशि १४/७/१० में गये हो तो राजा धिराज होवे १०३

सीसरे भाव में शनि छठे मंगल दशमे शुक और नवमे भाव में भवति वच्चराशि में मश इबारहि गया हो तो राजा धिराज होवेगा । ये योग सिंह लग्न में जन्म होने पट्टिकी कुटली में होना संमार्ह १०४

कंदस्वान १४/७/१० में नवमेश और दशमेश का योग हो और पंचमेश दृढवान होवे तो राजा धिराज होवे १०५

दशमेश देवलोकांश में धनश व नवमेश ये दोनों चरराशियों में और लाभेश गोपुरांश में गया हो तो राजा धिराज होवे १०६

मृगश मीन वृश्चिक और कन्या इन चार राशियों में यदि शुभपाप सर्व ग्रह गये हो तो राजा धिराज होवेगा १०७

कुंभ, सिंह, मिथुन और धन इन चार राशियों में यदि संतुल्य शुभपाप गये हो तो राजा धिराज होवेगा १०८

सुल, कन्या, धन मकर और सिंह इन चार राशियों में संकल्य शुभ पाप ग्रह यदि गये हो तो राजा धिराज होवेगा १०९

शुभमंगल सूर्य और गुरु इन चारों ग्रहों की राशि में तथा कुंभ राशि में (३६/१८/१९/२०/२१/२२) सर्व शुभ पाप ग्रह यदि गये हो तो राजा धिराज होवेगा ११०

बुध चंद्र और गुरु की राशि (३६/१८/१९/२०) में सर्व शुभपाप ग्रह यदि गये हो तो राजा धिराज होवेगा । १११

भूपति योग ।

लग्नाद्वाचंद्रार्द्धमर्कमपांवन्योन्यगो भूपतिः ११२

स्वर्शगाः सप्त भूपतिः ११३

सप्तसुहृद्गमा भूपतिः ११४

व्यादिग्रहास्वोच्चगा भूपवंशजो भूपतिः ११५

क्रूरेषु स्वोच्चेषु क्रूरो भूपतिः ११६

स्वोच्चेषु शुभेषु शुभमतिर्भिन्नेषु मिश्रमतिः भूपतिः ११७

पञ्चादयो ग्रहाउच्चागा अन्यकुलजो भूपतिः ११८

चरेङ्गे मन्दार्कारेज्याः स्वोच्चगाभूपतिः ११९

मृगोनचरेङ्गे मन्दार्कज्याः स्वोच्चगा भूपतिः १२०

तुळोनचरेङ्गे भौषेज्यार्काः स्वोच्चगाभूपतिः १२१

कर्कौनचरेङ्गे मन्दारार्काः स्वोच्चगा भूपतिः १२२

मेषोनचरेङ्गे मन्दारेज्याः स्वोच्चगा भूपतिः १२३

टीका-लग्न से अथवा चंद्रमासे नवम और दशम भावके स्वामि परस्पर अन्योन्यस्थानमे [नवमेश दशम भावमे और दशमेश नवमे भावमे] गये होतो राजा होवे ११९

सातग्रह अपनि स्वराशिमे यदि गये हो तो राजाहोवे ११३

यदि सातग्रह अपने मिश्रग्रहकी राशिमे गयेहोतो राजाहोवे ११४

तीन से अधिक ग्रह अपनी उच्चराशि मे गयेहो तो राजाके वंशमे उत्पन्न हुए होनातो राजाहोवेगा ११५ अर्थात् अन्य वंशमे उत्पन्नहो तो राजाके समान वा प्रधान आदि होवेगा ।

क्रूरग्रह अपनि उच्चराशिमे गये होतो क्रूरस्वभावका राजा होवेगा ११६

शुभग्रह अपनि उच्चराशिमे गयेहो तो शुभ (शांत) स्वभावका तथा शुभ और पाप दोनों ग्रह (मिश्र ग्रह) अपनि उच्चराशि मे गये हो तो मिश्र स्वभावका राजा होवेगा ११७

पांचसे अधिक ग्रह (पांच छ सात) यदि अपनि उच्चराशि मे हो तो अन्यके कुलमे उत्पन्न हुआ प्रजप्यभी राजा होवेगा ११८

चरराशि १४।७।१० का लग्नहो और शनि रवि मंगल गुरु ये चारो ग्रह अपनि उच्चराशिमे गये हो तो राजा होवे ११९

मकराशिके बिना अन्य चर राशि (१४४७) का लग्न हो और शनि रवि गुरु ये तीनों ग्रह अपनी उच्चराशि में गये हों तो राता होवेगा १२०

तुलराशिके बिना अन्य चर राशि [१४४१०] का लग्न हो और मंगल गुरु रवि ये तीनों ग्रह अपनी उच्चराशि में गये हों तो राता होवे १२१

कर्कराशिके बिना अन्य चर राशि [१४४१०] का लग्न हो और शनि मंगल रवि ये तीनों ग्रह अपनी उच्चराशि में गये हों तो राता होवे १२२

मेषराशि के बिना अन्य चर राशि (४४७१०) का लग्न हो और शनि मंगल गुरु ये तीनों ग्रह अपनी उच्चराशि में गये हों तो राता होवे १२३

कर्कचंद्रे स्वोच्चग जीवार्कयोरन्यतरेक्षे भूतिः १२४

स्वर्क्षचंद्रे स्वोच्चग दमार्कयोरन्यतरेक्षे भूतिः १२५

कर्कचंद्रे स्वोच्चग सूर्यारयोरन्यतरेक्षे भूतिः १२६

कर्कचंद्रे स्वोच्चगयो र्यमेज्ययोरन्यतरेक्षे भूतिः १२७

कर्कचंद्रे स्वोच्चग जीवार्कयोरन्यतरेक्षे भूतिः १२८

कर्कचंद्रे स्वोच्चग यमार्कयोरन्यतरेक्षे भूतिः १२९

मेपेक्षेर्क कर्कचंद्रे भूतिः १३०

चन्द्रेज्यौ कर्कक्षे भूतिः १३१

तुलेक्षेर्कजे कर्कचंद्रे भूतिः १३२

मौमेमृगेक्षे कर्कचंद्रे भूतिः १३३

टीका-कर्क राशिका चंद्र हो और अपनी उच्चराशि में गयाहुवा गुरु तथा सूर्य लग्न में गया हो अर्थात् मेषकिंवा कर्कराशि का लग्न हो और रवि गुरु ये दोनों उच्चराशि के होचंद्र कर्क राशि का होतो राता होवेगा १२४

कर्क राशि का चंद्रमा हो और अपनी उच्चराशि में गया हुआ शनि तथा रवि लग्न में गया हो तो राजा होवे अर्थात् तुल किंवा मेष लग्न हो शनि रवि उच्च के और चन्द्रमा कर्क का हो तो राजा होवे १२५

कर्क राशि का चंद्रमा हो और अपनी उच्चराशि में गया हुआ रवि मंगल लग्न में गया हो अर्थात् मेष किंवा मकर राशि का लग्न हो रवि मंगल उच्च के हो और कर्क का चंद्रमा हो तो राजा होवेगा १२६

कर्क राशि का चंद्रमा हो और अपनी उच्चराशि में गया हुआ शनि तथा मंगल लग्न में गया हो अर्थात् तुल किंवा कर्क राशि का लग्न हो शनि व मंगल उच्च राशि के और चंद्रमा कर्क राशि का हो तो राजा होवेगा १२७

कर्क राशि का चंद्रमा हो और अपनी उच्चराशि में गया हुआ शनि तथा मंगल लग्न में गया हो अर्थात् कर्क किंवा मकर राशि के लग्न हो मंगल उच्च के और चंद्रमा कर्क का हो तो राजा होवेगा १२८

कर्क राशि का चंद्रमा हो और अपनी उच्चराशि में गया हुआ शनि तथा मंगल लग्न में गया हो अर्थात् तुल किंवा मकर लग्न हो शनि मंगल उच्च के और कर्क का चन्द्रमा हो तो राजा होवेगा १२९

मेष राशि के लग्न में रवि गया हो और कर्क राशि में चंद्रमा हो तो राजा होवेगा १३०

कर्क राशि के लग्न में चंद्रमा गया हो तो राजा होवे १३१

तुल लग्न में शनि गया हो और कर्क का चन्द्र हो तो राजा होवे १३२

मकर राशि के लग्न में मंगल हो तो राजा होवे १३३

लग्नेश गौतमे चन्द्रेऽग्रह चतुष्टयादिदृष्टे भूरातिः १३४

षर्गोत्तमे चन्द्रे ग्रहचतुष्टयादिदृष्टे भूरातिः १३५

कुम्भेर्कजे भेषेर्क वृषे चन्द्रे न्यतमेके युग्मसिंहालिगेषु ज्ञेया रेषु भूरातिः १३६

ज्ञार्कोषष्ठे यमेन्द्रन्यतरे उच्चगे लग्नेऽ जेकुजे तुलेशुके कर्केर्जावे भूरातिः १३७

लग्नेर्कजे भौमेभृगे चापे चन्द्रार्को भूरातिः १३८

चन्द्रारौ मृगश्रृङ्गे चापेर्के भूपतिः १३९

चन्द्रार्की यूने सूर्येङ्गे चापेजीवे भूपतिः १४०

तुङ्गेङ्गेचन्द्रे सिंहेर्के स्वयमे यूनेजीवे भूपतिः १४१

मृगश्रृङ्गमन्दसोत्थेचन्द्रे युग्मेभौमेधर्मज्ञेव्ययेजीवेपृथुयशो गुणी
भूपतिः १४२

चापेचन्द्रेज्यौ मृगमुखेभौमे तुङ्गगङ्गाच्छान्यतरेङ्गे भूपतिः १४३

जेतुङ्गेङ्गे यमारौसुते चन्द्रेज्य सित्रास्तुर्ये गुणी भूपतिः १४४

कुम्भेमेदे तुङ्गेभौमे स्वर्शेर्के मीनेङ्गे चन्द्रे भूपतिः १४५

टीका—यगौतमांशमे (जिसराशी का लग्नहो उसीराशी के नवांश
मे) गया हुआ लग्न, चंद्र के बिना अन्य चार पांचग्रहों से दृष्ट हो तो
भूपति होवे १३४

यगौतमांशमे गयाहुवा चंद्रमा चार पांच ग्रहों से दृष्ट हो तो राजा
होवे १३५

कुमरांशिका शनि मेषकारवि वृषभका चंद्रमा इन तीनों में से को-
ईभीएकलग्न में गया हो और मिथुनमें बुध, सिंहमेंगुरु और कर्क
राशि में मंगल हो तो राजा होवे १३६

छठे भावमें बुध सूर्य और अगनि उच्चराशिमें गयाहुवा शनि किंवा
चंद्रमा लग्नमें हो मेषराशि में मंगल तुल में शुक्र व कर्कराशि में गुरु
गयाहो तो राजा होवे १३७

लग्नमें शनि मकरराशिमें मंगल और धन राशि में चंद्र व रेवि गयेहो
तो राजा होवे १३८

मकर राशि के लग्न में चंद्रमंगल गये हो और धन राशिका रवि हो
तो राजा होवे १३९

सातमे भावमें चंद्र शनि लग्नमें सूर्य और धनराशिमें गुरु गयाहो तो
राजा होवे १४०

उच्चराशि (२) में गयाहुवा चंद्रमा लग्नमें गया हो और सिंहराशि
मेंसूर्य, दशमे शनि, सातमे भावमें गुरु, गया होतो राजा होवे १४१

मकरराशीके लग्नमे शनि, तीसरे भावमे चंद्रमा मिथुनराशीमे मंगल
नवमे बुध और चारमे भावमे गुरु गयाहो तो बड़ीकीर्तिवाला गुणवान्
राजा होवे १४२

घन राशीमे चंद्र गुरु व मकरराशी के पुर्वार्द्धमे मंगल गया हो और
भपनी उच्च राशीमें गया हुआ बुध किंवा शुक्र लग्नमे गया हो तो
राजाहोवे १४३

उच्चराशी (६) मे गयाहुवाबुध लग्नमेगयाहो शनिमंगल पंचम
भावमें (मकर राशी मे) और चंद्र गुरु व शुक्रये तीनों चतुर्थ भावमे
गयेहोतो गुणवान् राजाहोवे १४४

कुंभराशी का शनि मकरराशी १० का मंगल सिंहराशी ५ कारावि
हो और मीनराशी के लग्नमे चंद्रमा गयाहोतो राजा होवे १४५

तुङ्गेजीवे मपेभौमे तदन्यतरेके भूपतिः १४६

मपेर्के चन्द्राच्छेषे लाभेषु तुङ्गे जीवे भूपतिः १४७

मृगेर्कजेङ्गे चंद्रार्कैस्वर्क्षे भौमेजे ज्ञेयुग्मे तुलेशुके पृथुप-

शो भूपतिः १४८

ज्ञेतुङ्गे खशुके च ज्ञेयौयूने मन्दारौसुते भूपतिः १४९

आत्मकारकाब्देन तुर्पे सुते शुभे भूपतिः १५०

आत्मकारकाद्रिपु सोत्थगी पापौ भूपतिः १५१

कर्कजे तुर्पेर्कजारौ खे ज्ञेयार्कशुका भूपतिः १५२

कुंभेद्रेशुके चतुर्पुस्वोद्येषु भूपतिः १५३

बलाढ्याः स्वोच्चगाः पूर्वपे पूर्वदलेनृपो न्यथापरदले १५४

पूर्गेन्दु युक्तौ मन्दारौ भाग्ये भूपतिः १५५

टीका--उच्चराशीमे गुरु और मेषराशिमे मंगल गयाहो और इनदोनों
मे से भेक लग्नमे गयाहोतो राजाहोवेगा १४६

मेष राशी का रवि दशमे चंद्र शुक्र वबुध ये तीनों लाभ भावमें और
भपनी उच्चराशी ४ मे गया हुआ गुरु लग्नमे गयाहोतो राजा होवेगा १४७

मकर राशीके लग्नमे शनि, चंद्र और रवि ये दोनो मरनी मरनी
स्वराशी में (४ में चंद्र ५ में रवि) भेषराशि मे मंगल मिथुनराशिमे वृ
और तुलराशी मे शुक गया होतो बडे यत और कीर्ति बाटा राजा हो-
वेगा १४८

लग्नमे अपनी उच्चराशी (६) में गया हुआ बुध, दशम भावमे शु
सप्तमभावमे चंद्र वगुरु और पंचमभावमे शनि मंगल गये होतो राजा
होवेगा १४९

भारतकारक ग्रहसे दूसरे चोखे और पांच में भावमें शुभग्रह गये ह
तो राजा होवेगा १५०

आत्मकारक ग्रहसे छठे और तीसरे भावमे पापग्रह गये होतो राजा
होवे १५१

कर्कराशीका लग्नहो चतुर्थभाव मे शनि मंगलहो और दशमे भावमे
शुभ गुरु सूर्य व शुक ये चारो ग्रह गये होतो राजा होवे १५२

कंभराशिके लग्नमे शुक गया हो और कोईभी चार ग्रह अपनी रा
शिमे गये हो तो राजाहोवे १५३

लग्न से छठे भाव पर्यंत के पूर्वषट्क मे भवनि उच्चराशि मे गयेहुये
बलवान् ग्रहगये होतो भाव के पूर्व दशमे राजा होवेगा और सप्तम
भावसे दश पर्यंत के षष्ठषट्क मे यदि उच्चराशी मे गयेहुये बलवान् ग्रह
गये होतो भाव के उत्तरार्द्धमे राजाहोवेगा १५४

शनि और मंगल ये दोनो पूर्णचंद्रसे युक्तहोकर भाग्यभाव (नवम)
मे गये हो तो राजा होवेगा १५५

लग्नपसौम्या उपचये राजा १५६

रावहारचंद्राः पञ्चमे राजा १५७

उदयेचरे भाग्यपेतिहासने केंद्रे राजा १५८

स्थिराक्षेशेकेंद्रेजीवे राजा १५९

भाग्येरांशेशे सुखे पुत्रे राजा १६०

टीका-लग्नेश और शुभग्रह उपचय ३६१११ स्थानमे गये होतो
राजा होवे १५६

राहु मंगल और चंद्रमा ये तीनों पंचम भावमें गये होतो राजाहोवे १५७
चराशि १५४७१० का लग्न हो और सिद्धासनांश में गया हुआ
भाग्येश केंद्रस्थानमें गयाहोतो राजा होवे १५८

स्विराशी २५४८११ के लग्नका स्वामि दशम भावमें गयाहो और
गुरु केंद्रमें होतो राजा होवे १५९

भाग्येश के नवराश का स्वामि सुख में वा पंचम भावमें गयाहोतो रा
जा होवे १६०

भूपति तथा मंत्रीयोग ।

जीवर्क्षे तुलेर्केकेजे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १६१

सेवार्को राव्हारीपष्ठे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १६२

सोत्थेजीवेरन्ध्रेशुके भूपजोभू० १६३

सिंहेकुजे युगमे राहौ भूपजोभू० १६४

चंद्रारावर्क्षे वा दशमे भूपजोभू० १६५

शुभपष्ठपंरोर्के केद्रायकोणे भूपजो भूपान्यजो मंत्री १६६

सुवेशेके धर्मपेसुते भूपजोभू० १६७

कोणाभु रा३पेदिशा युक्ता भूपजोभू० १६८

चंद्रादशमेशे सषळे केन्द्रनवमार्थे भूपजोभू० १६९

एकोप्युच्चगो मित्रदृष्टो भूपजोभू० १७०

धर्मेशे जीवर्क्षे खेशुके पुत्रेशदृष्टे भूपजोभू० १७१

शुकेज्यौतुर्ये भूपजोभू० १७२

टीका-तुलराशी का जन्म लग्न हो और गुरुकी राशी १५१२ में शनि
गयाहोतो राजा के यहां जन्मपायाहोतो राजा और अन्यके यहां जन्म
पायाहोतो मंत्री होताहै १६१

दशमे भावमें बुध रवि और छठे भावमें राहु मंगल गये होतो राजाके
यहां जन्म पायाहोतो राजा और अन्यके घरजन्म पाया हुआ प्रधान
वामंत्री होताहै १६२

तीसरे भाव में गुरु और आठमें भावमें शुक्र गया हो तो राजाके यहां जन्म पाया होता राजा और अन्य के यहां जन्म पाया हो तो मंत्री होता है १६३

सिंह राशीमें मंगल और मिथुन राशी में राहु गया हो तो राजाके यहां जन्म पाया हो तो राजा और अन्यके यहां जन्म पाया हो तो मंत्री होता है १६४

पहले भाव कर्क वा सिंह राशी के लग्नमें जन्म होनेवाले के बलवान होता है चंद्र और मंगल ये दोनों लग्न में भयवा दशमें भावमें गये हो तो राजा के यहां जन्म पाया हो वह राजा और अन्यके यहां जन्म पाया हो तो मंत्री होता है १६५

शुभषष्ठ घंशमें गया हुआ रवि १४।७।१०।११।१५ भावों में से किसी भावमें गया हो तो राजाके यहां जन्म पाया हो तो राजा और अन्यके यहां जन्म पाया हो तो मंत्री होता है १६६

पंचमेश नवम भावमें और नवमेश पंचम भावमें गया हो तो राजाके यहां जन्म पाया हुआ राजा और अन्यके यहां जन्म पाया हो तो मंत्री होता है १६७

नवम पंचम चतुर्थ दशम और लग्न इन पांचों भावोंके स्थानों में एक राशिमें युक्त हो तो राजा के यहां जन्म हुआ हो तो राजा और अन्य के यहां जन्म पाया हो तो मंत्री होवेगा १६८

चंद्रमासे दशम भावमें ओ राशी हो उस का स्वामी बलवान होकर १४।७।१०।११।२ भावमें गया हो तो राजाके यहां जन्म पाया हो तो राजा और अन्य के यहां जन्म पाया हो तो मंत्री होता है १६९

वृश्च राशीमें गया हुआ एक भी ग्रह अपने मित्र ग्रहसे दृष्ट हो तो राजाके यहां जन्म पाया हो तो राजा व अन्यके यहां जन्म पाया हो तो मंत्री होता है १७०

नवमेश गुरु की राशी १।१२ में गया हो और दशम भावमें गया हुआ चतुर्थ पंचमेश से दृष्ट हो तो राजाके यहां जन्म पाया हो तो राजा व अन्यके यहां जन्म पाया हो तो मंत्री होता है १७१

गुरु और गुरु ये दोनों चतुर्थ भावमें गये हो तो राजा के यहां जन्म पाया हो तो राजा और अन्यके यहां जन्म पाया हो तो मंत्री होता है १७२

चंद्र ज्यो कर्क मूजो भूपा न्यजो मंत्री १७३

कन्याया चंद्र तो मूजो भूपा न्यजो मंत्री १७४

- तुङ्गके सचलमन्दयुते भूपजोभूपान्यजो मंत्री १७५
 शुक्रज्यौ तुङ्गौ केन्द्र कोणे भूपजो भूपान्यजो मंत्री १७६
 नगार्थाङ्गान्त्येषु सर्वेषु भूपजोभूपान्यजो मंत्री १७७
 यूनोन केंद्रकोणे सुखेरो भूपजोभूपान्यजो मंत्री १७८
 गुरावृचगे केन्द्रे स्वे शुक्रे भूपजो भूपान्यजो मंत्री १७९
 केन्द्रकोणार्थे स्वरो शुभदृष्टे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १८०
 सशुभे स्वरो सुते पुत्रपेचापे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १८१
 धनेरो धारावते शुभदृष्टे चन्द्रात्पुण्यपे देवलोके भूप० १८२
 लग्नेरोके स्वरोक्के भूपजो भूपान्यजो मंत्री १८३
 पुष्पवन्ताबद्धे स्वर्भौमे यमेआये धर्मेचापगे जीवे भू० १८४
 स्वर्क्षोशुक्रेतुर्धे धर्मेचन्द्रे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १८५
 धर्मेके तुर्धे जीवे पुष्पवन्तौ दशमे लाभेशाराच्छाभूप० १८६
 दशापोदयगार्ध्वार्धकिर्जीवा क्षारौधने शुक्रार्को तुर्धे भूप-
 जोभूपान्यजो मंत्री १८७
 गुरौगोपुरादौत्रलिनि सुतेश युते भूपजोभूपान्यजो मंत्री १८८
- टी.का—कर्कराशी में चंद्र और गुरुगये होतो राजाके यहा जन्मपायाहो
 । राजा और भन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १७३
 कन्याराशी में चंद्र वृषगये होतो राजाके यहा जन्मपायाहो वह राजा
 भन्य के यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १७४
 चत्वारशी में गयाहुवा रवि बलवान् शनिसे युतहो तो राजाके यहा
 जन्मपायाहो वह राजा व भन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १७५
 अपनी चत्वारशी में गये हुवे शुक्र गुरु [मीनमे शुक्र कर्कमे गुरु गया
 और ये दोनो] केन्द्र वा त्रिकोण स्थान में गये हो तो राजा के यहा
 जन्मपायाहो वह राजा व भन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १७६

सप्तम धन लग्न और व्यय ७२।१।१२ इन चारों भागों में सर्वशुभ पाप ग्रह गये हों तो राजाके यहां जन्मपायाहो वह राजा प अन्यके यहां जन्मपायाहो वह मंत्री होताहै १७७

सप्तमस्थान के बिना अन्य केंद्रत्रिकोणस्थान (१।४।१०।१।५) में सुदेश गया होतो राजा के यहां जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहां जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १७८

लघुराशी में गयाहुवा गुरु केंद्रमें और शुक्र दशमेंभावमें गयाहो तो राजा के यहां जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहां जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १७९

शुभग्रहसे देखाहुवा दशमेश केंद्रत्रिकोण में तथा धनभाव में गया हो तो राजाके यहां जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहां जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १८०

शुभग्रह से युक्त दशमेश पंचमभाव में गयाहो और पंचमेश धनराशी में होतो राजाके यहां जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहां जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १८१

पारावताशमें गयाहुवा धनेश शुभग्रहसे दृष्ट हो और चंद्रमा से नवमे स्थानका स्वामी देव लोकांश में गयाहो तो राजाके यहां जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहां जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १८२

लग्नेश नवमें भावमें हो और दशमेश लग्नमें गया होतो राजाके यहां जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहां जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १८३

रवि चंद्र लग्नमें हो, दशमें मंगल, ग्यारमें भावमें शनि, नवमें भावमें धनराशीमें गयाहुवा गुरु गयाहो तो राजाके यहां जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहां जन्मपायाहो वह मंत्री होताहै १८४ ये योग मेष राशीके लग्न में होवेगा ।

अपनी स्वराशी ७२ में गयाहुवा शुक्र चतुर्थभावमें और चंद्रमा नवमे भावमें गयाहो तो राजाके यहां जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहां जन्मपायाहो वह मंत्री होताहै १८५ यह योग कर्क या कुंभ लग्नमें होवेगा ।

लग्नमें शनि, चतुर्थभावमें गुरु, दशम भावमें सूर्य व चंद्रमा और (११) भावमें शुभ मंगल शुक्र ये तीनोग्रह गये हो तो राजाके यहां

जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होताहै १८६

दशमे चंद्रमा ग्यारमेशनि लग्नमेगुरु धनमेबुधमंगल और चतुर्थमाचमे रवि शुक्र गये हो तो राजाके यहां जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होताहै १८७

गोपुरादि शुभांश में गुरु गयाहो और बलवान् होकर पंचमेशसे युक्त हो तो राजाके यहां जन्मपाया हो तो राजाहोताहै और अन्यके यहां जन्महुवाहो वह मंत्री होता है १८८

राजयोगभंग योगाः ।

नवापस्वेशानीचगा व्यर्थाराजयोगाः १८९

भद्रायांव्यतीपाते कान्तिपाते जन्मनिव्यर्था राजयोगाः १९०

परमनीचांशे चंद्रे व्यर्थाराजयोगाः १९१

उरुचगाः खेदानीचांशगाव्यर्थाराजयोगाः १९२

उच्चैर्के नीचांशे राजपुत्रोपि नीचतांगच्छति १९३

परमनीचगेर्के व्यर्थाराजयोगाः १९४

नीचगेशुके सिंहांशे वा स्वांशे व्यर्थाराजयोगाः १९५

राज्यदानीचारात्पस्तगाव्यर्थाराजयोगाः १९६

उत्पातदिने जन्मनि व्यर्थाराजयोगाः १९७

दशमेनीचिखगे व्यर्थाराजयोगाः १९८

चतुर्थे स्वगे पुशत्रुभगेषु वा नीचांशभगेषु व्यर्थाराजयोगाः १९९

ग्रहमात्रादृष्टध्वंद्रो वा लग्नो व्यर्थाराजयोगाः २००

सिंहांशेर्के पापयुते क्षीणेन्दौ सौम्यादृष्टे व्यर्थाराजयोगाः २०१

परमनीचांशे जीवे वा शुके व्यर्थाराजयोगाः २०२

पापानीचगास्तर्वे कण्टकगाः सौम्यास्त्रिकगाव्यर्थाराजयोगाः २०३

सौम्याअस्तगा केन्द्रहीना लग्नेराहोचन्द्रदृष्टे पापाः ५८

ध्यायगाध्यर्था राजयोगाः २०४

इति दशम विवेकः ।

टीका—नवमेश दशमेश और लाभेश ये तीनों अपनी नीचराशी में गये होते। उपरोक्त राजयोग व्यर्थ होवेगा अर्थात् यद्यपि राजयोग उत्तम बना होगा तथापि राजयोगका भंगयोग बलवात् भाजायगा तो वह उपरोक्त सर्व राजयोग निष्फल होजावेगा । अतएव उभययोगों के बलाबलका विचार करके राजयोगका फलाफल कहना १८९

भद्रामें वृत्तीगतयोगमें क्रांतिगत (महापात) दोष में जन्म हो-
नेसे राज योग व्यर्थ होवेगा १९०

परमनीचाश में (शुभिकराशीके ३ भंशका) चंद्रमा होतो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९१

उच्चराशीमें गये हुए ग्रह यदि नीचराशीके नवांशमें गयेहोतो राज योग व्यर्थ होवेगा १९२

उच्चराशीमें गयाहुवा सूर्य नीचराशीके नवांशमें गयाहोतो राजा काभीपुत्रहोतो नीचताका प्राप्त होवेगा अर्थात् वह राज्यव्युत्त होजावेगा १९३

परमनीच राशी में (तुलराशीके १० भंशमें) रवि गयाहो तो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९४

नीचराशामें (६ राशी में) गयाहुवा शुक्र सिंहराशीके अथवा स्वे-
राशी ७१२ के नवांशमें गया होतो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९५

राजयोग करनेवाले ग्रह यदि नीच, क्षम्य राशी में गयेहो किंवा भ-
स्तंगतहो तो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९६

सत्पातके दिन अर्थात् जिसदिन भूकंप विद्युत्पात गंधर्वनगरदीर्घ
दिग्दाह परिवेषादिदिव्यभौमभांतरिक्षके अत्यातहो उसदिन यदि जन्म
होतो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९७

दशमभावमें नीचराशीका ग्रह गयाहोतो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९८

कोईभी चारग्रह अपने शत्रु ग्रहकी राशीमें गये हो अथवा चारग्रह
नीचराशी के नवांशमें गये हों तो राजयोग व्यर्थ होजावेगा १९९

• चंद्रमा अथवा लग्न किसीभी ग्रहसे दृष्ट न हो तो राजयोग व्यर्थ
होवेगा २००

सिंहराशिके नवांशमें गयाहुवारवि पापग्रहसे युत हो और क्षीग चंद्रमा किसी शुभग्रहसे दृष्ट नहो तो राजयोग व्यर्थ होवेगा २०१

गुरु भयवा शुक्र अपने परमनीचराशिके अंशमें (गुरु मकरके ५ अंशमें किंवा शुक्र कन्याके २७ अंशमें) गयाहोतो राजयोग व्यर्थ होगा २०२

मीचराशिमें गये हुवे सर्व पापग्रह केंद्रमें गये हो और सर्व शुभग्रह त्रैकस्थान ६।८।१२ में गये होतो राजयोग व्यर्थ होवेगा २०३

शुभग्रह अस्तंगत होवे और केंद्रमें नही गयेहो चंद्रसेदृष्टराहु लग्नमें हो सर्वपापग्रह ६।३।११ में भावमें स्थितहोतो सर्व राजयोग व्यर्थहोवेगा २०४

इत्यादि विचारों के सिवाय भीष्मीमृत्यु, श्रीकीमाता (सासु) मा-
लिक, जानिसंघान [पुतले] पुत्रकारोग शत्रु, दादाके मित्र, भद्र, वतु-
पदादि विषयोका विचारभी इसी दशमभावमें करना—

इति दशम विवेकस्य टीका समाप्ताः॥

अधैकादशविवेकः

बहु लाभयोग ।

लाभेशुभान्धायतोलाभोन्यथा न्यायतो मिश्राउभयथा १

लाभेशुभदृष्ट्याधिक्ये बहुलाभः २

लाभपेकेंद्रकोणे बहुलाभः ३

लाभपे शुभ संबंधे बहुलाभः ४

टीका—लाभ (ग्यारमें) भावमें शुभग्रहगये हो तो न्यायमार्ग से ध-
नका लाभ होवेगा । और पापग्रह लाभ भावमें गये होतो अन्यायमा-
र्गसे धनका लाभ होवेगा । तथा शुभ व पापदोनों (मिश्रग्रह) लाभ
भावमें गये होतो न्याय और अन्याय दोनों से अर्थात् मिश्रमार्ग से
धनका लाभ होवेगा १

लाभभावपर शुभग्रहो कि अधिक दृष्टि होती धनकालाभ बहुत होवेगा २

लाभेश केंद्रकिंवा त्रिकोणस्थान (११४७१०१५) में गया हो तो धनका बहुत लाभ होवेगा ३

लाभेश शुभग्रहसे संबंध (संबंधचारप्रकारका संज्ञातावकेमुत्र ६४ में कहा है) करता होतो धनका लाभ बहुत होवेगा ४

वाहनवाचयोग

चंद्राद्यूने शुक्रेयानवान् ५

चंद्रात्सिते सोत्थायेयानवान् ६

सुखेशेलाभे गुरुदृष्टे बहुयानवान् ७

गुरुदृष्टसुखेशेन सुखेदृष्टे यानवान् ८

जीवाच्छौ सुखेश युतौ केद्रकोणायगौ यानव्यूनाथः ९

इज्याच्छौ धर्मपयुतौ भाग्ये वा तुर्येयानव्यूहनाथः १०

धनपयुतेन्त्येते तुङ्गे भाग्यदृष्टे यानव्यूहनाथः ११

टीका—चंद्रमासे सप्तमस्थान में शुक गयाहो तो गाड़ी घोड़ा मोटर साइकल आदि वाहनवाला होवे ५

चंद्रमासे शुक तीसरे किंवा ग्यार में भावमें गयाहो तो वाहनका मालिक होवे अर्थात् वाहन अपने घर रखने वाला होवे ६

गुरुसे देसाहुआ सुख भावेश लाभभावमें गयाहो तो बहुत वाहनो वाला होवे ७

गुरुसे देखे हुवे सुखेशसे सुखभाव संदृष्ट होतो वाहनवाला होवे ८

गुरु व शुक से युक्त होकर सुखेश केंद्रत्रिकोण अथवा लाभ भाव में गयाहो तो वाहनोके समूह [झुंड] का मालिक होवे अर्थात् बहुत वाहनो वाला होवे ९

गुरु व शुक नवमेशसे युक्त होकर भाग्य (नवम) भाव में किंवा सुख भावमें गयाहो तो अनेक वाहनोका मालिक होवे १०

अपनी च्चचराशी में गयाहुआ व्ययेश धनेशसे युतहोकर नवम भावको देखता होतो बहुत वाहनोके झुंडका मालिक होवे ११

जिनके वाहनव्यूहनाथ योग होता है उनके घरमें बहुत वाहन हावि

ढागाढी मोटर आदि होवेगे किंवा इन वाहनोका धंधा करने वाला
गा ट्रामवे भयवा रेलवे कंपनीके भागीदार वा निजके वाहनके
का व्यापार करनेवाले लोगोकिभी येही योग बलवान् हुवे नजर आवेगे।

वाहन सुखयोग ।

धर्मिस्वशास्त्रुर्षे वाहनसुखम् १२

स्वैज्यगेश्चैते धर्मिगेश्चैते वाहनसुखम् १३

सिंहासनेषुर्गंगशौ लग्नेशश्चैते वाहनसुखम् १४

सुखेशे सचले शुभदृष्टयुते वाहनसुखम् १५

सुखेशे सशुके वाहनसुखम् १६

सुखेशे जीवयुते वाहनसुखम् १७

चंद्रज्यशुक्रास्तुर्गपयुता अङ्गे वाहनसुखम् १८

धर्मपयुतेभ्युपे सचले जीवदृष्टयुते वाहनसुखम् १९

भाग्येशाच्छाभेक्षेशे सुखेशोधर्मे वाहनसुखम् २०

सुखपे केंद्रे वक्षीशे वाहनसुखम् २१

क्षे लग्नेशे स्वैशे वाहनसुखम् २२

स्वैशे कर्मेशेर्षे तुंगेशे कस्मिन्निदमहे वाहनसुखं २३

सुखेशे ऐरावते गजवाहनसुखं २४

सुखेशे केन्द्रेवैशेपिकेवा लाभपेगोपुरे गजवाहनसुखं २५

इत्येकादशमविवेकः ११

११-नयमेश लाभेश और दशमेश ये तीनोंग्रह चतुर्थ भावमे गये-

। वाहनका सुख होवेगा १२

राशिमे गयाहुवा ग्रह दशमभावमे गयाहो और वद माग्येश व

न इन दोनोसे दृष्टहोती वाहनका सुख होवेगा १३

। न और दशमेश ये दोनो सिंहासनांशमेगयेहो और लग्नेश से

। वाहनका सुख होवे १४

सुक्लेशचक्रवाहकोर शुभग्रहसेयुत और दृष्टहोतो वाहनका सुखहोवे १५
 शुक्रसे युतहोकर सुक्लेश लग्नमे गयाहो तो वाहनका सुखहोवेगा १६
 गुरुसे युत होकर सुक्लेश लग्नमे गयाहोतो वाहनका सुखहोवेगा १७
 चंद्र गुरु शुक्र और चतुर्थभावका स्वामी ये चारोग्रह लग्नमे गयेहो
 तो वाहनका सुखहोगा १८

बलवान् सुक्लेश भाग्येश से युतहोकर गुरुसे युतदृष्ट होतो वाहन का
 सुखहोवेगा १९

भाग्येशसे लाभभावमे लग्नेश गयाहो और सुक्लेश भाग्यभावमे गया
 हो तो वाहनका सुखहोवेगा २०

सुक्लेश केंद्रस्थानमें जिसराशिमे गयाहो उसराशी का स्वामी लग्नमें
 गयाहोतो वाहनका सुखहोवेगा २१

लग्नेशदशमे औ दशमेश लग्नमे गयाहोतो वाहनका सुखहोवेगा २२
 लग्नमें धनेश व धनमे दशमेश गयाहो और कोईभी एक माह उच्च
 राशीमे होतो वाहनका सुखहोवेगा २३

सुक्लेश परावतांश मे गयाहोतो गजवाहन का सुखहोवेगा २४
 सुक्लेश केंद्रमेहो वैशेषिकांशमें गयाहो और लाभेश गोपुरांशमे गयाहो

तो गज (हाथी) की सवारी का सुखमिलेगा २५ जिनके निजके पर
 की सवारी नहोतेभी गाड़ी घोड़ा मोटर बगधी हाथी आदि सवारियोंमे
 बैठके फिरनेका वा उनपर अधिकार रखनेका अवसर मिलतारहता है
 उनकी जन्मकुंडलीमे वाहनसुख का योग बलवान् देखनेमे आवेगा ।

इत्यादि विचारोके सिवाय भाईकेभाईकीस्त्री, भाईके शाला शाली,
 भाईका भाग्य, माताकी मृत्यु, मित्रकी मृत्यु, पुत्रकीस्त्री, पुत्रके पुत्रकी
 शालेकी स्त्री, स्त्री कि विद्या, पंडित्ये (घुम्नेके नीचेकी पाँटलियो
 का स्थान) और दादाकी विद्या बुद्धि आदि बातोंका विचारभी
 लाभभायसे करना ।

इत्येकादशम विवेकस्यटीका समाप्ताः ।



अथ द्वादशमविवेकः ।

हानि योग ।

पष्ठेष्टमेचन्द्रेयूनेमन्दे सर्वहानिः १

व्ययेपापदृष्ट्याधिक्ये धनहानिः पदेपदे २

टीका—सुटे किंवा भाठमे भावमे चंद्रमागया हो और सप्तम भावमें शनिहो तो सर्वस्वकी हानि होवेगा १

चारमे भावपरपापग्रहों कि अधिक दृष्टिहो तो पदपद पर धनकी हानी होती रहेगा अर्थात् कोईभी काम लाभके लिये करेगा उसमे बारंबार हानि होती आवेगा २

त्यागी योग ।

मीनारो त्यागी ३

टीका—कारकांश लग्नमे मीनराशी हो तो त्यागी पुरुष होवेगा ३
दम्भाद्धर्म परिग्रह योग ।

शुभेष्टे धर्मपेपापांशे वा पापपष्ठचंशे दम्भाद्धर्मपरिग्रहः ४

टीका—नवमभावमे शुभग्रह गया हो और धर्मेशपापग्रहके नवांश मे हो अथवा नवमे शुभग्रह गयाहो और नवमेश पापपष्ठचंशमे होतो कपट से धर्माचरण करने वाला होवेगा ५४

दानशीलयोग ।

धर्मपे स्वोच्चे शुभदृष्टे दानशीलः ५

धर्म शुभदृष्टयुते दानशीलः ६

धर्मपे पारावतादौगुरुदृष्टे लग्नपेभृगुदृष्टे दानशीलः ७

लग्नेधर्मपदृष्टे लग्नपे केंद्रे महादानशीलः ८

दानेशे सिंहासने स्वाङ्गप दृष्टे माहादानशीलः ९

दानपेभृगे स्वपेकेन्द्रे व्यपेशे गुरुदृष्टे महादानशीलः १०

स्वोच्चगोत्रे धर्मपदृष्टे लाभे केंद्रे महादान शीलः ११

टीका—नवमेश अपनी उच्चराशी मे गया हो और वह शुभग्रह सेदृष्ट

हो तो दानकरने वाला (दानशील) होवे ५

नवम भाव शुभग्रहसे युत और दृष्टहोतो दानशीलहोवे ६

पारावतदि शुभांशमे गयाहुवा नवमेश गुरुसे दृष्टहो और लग्नेश गुरु से दृष्ट होतो दानशील होवे ७

धनेशसे लग्नदृष्टहो और लग्नेश केंद्र स्थान में गयाहोतो महादान शील (बड़ादान देनेवाला) होवे ८

नवमेश सिंहासनांश में गयाहो और वह लग्नेश व दशमेश से दृष्ट हो तो बड़ादानशील होवे ९

नवमेश सुखमे व दशमेश केंद्र में गया हो और व्ययेशको गुरु देखताहो तो महादानशील होवे १०

अपनी उच्चगती मे गयाहुवा बुध नवमेश से दृष्ट होकर लाभमे वा केंद्रमे गयाहोतो महादान शीलहोवे ११

दानप्राप्ति योग ।

सबलेहूपेलाभे धर्म कर्मपट्टे दानप्राप्तिः १२

सुतपेङ्के धर्मकर्मपयुते लग्नपट्टे दानप्राप्तिः १३

धर्मपेखपट्टे केंद्रकोणे परमोच्चांशेवा दानप्राप्तिः १४

टीका—बृहस्पति लग्नेश लाभभावमेगयाहो और नवमेश व दशमेश इनदोनो से दृष्टहोतो दानकी प्राप्ति होवेगा १२

नवमेश व दशमेशसे युतहो कर पंचमेश नवमे भावमे गयाहो और लग्नेश सेदृष्ट होतो दानकीप्राप्ति होवेगा १३

दशमेश से दृष्टहोकर नवमेश केंद्र किंवा त्रिकोण मे गयाहो भयन नवमेश अपने परमोच्चांश मे गयाहोतो दानकीप्राप्ति होवेगा १४

धर्मदृष्टादि योग ।

धर्मेश सशुभे शुभांशे धर्म दृढबुद्धिः १५

धर्मपे वैशेषिके धर्म दृढबुद्धिः १६

धर्मपे शुभपष्ठयंशे धर्म दृढबुद्धिः १७

टीका—नवमेश शुभ ग्रहसेयुत होकर शुभग्रह के नवांशमें गयाहो तो धर्म मे दृढबुद्धि बालाहोवे १५

धर्मेश वैशेषिकांशमे गयाहोतो धर्ममे दृढबुद्धि वाला होवे १६
नवमेश शुभपष्ठमंश मे गयाहोतो धर्म मे दृढ विश्वास वाला होवे १७
अन्नदाता योग ।

शुकेज्यौधने धनेशे वैशेषिकेऽन्नदाता १८

सचलेधनपे केंद्रोपचये बलिशुभैर्दृष्टेऽन्नदाता १९

टीका-शुक्रव गुरु धनभावमे गयेहो और धनेश वैशेषिकांशमे होतो
अन्नदान करनेवाला होताहे १८

बलवान् धनेश केंद्रभयवा उपचय ३६।१०।११ स्थानमे गयाहो और
बलापान शुभयहो से दृष्टहोतो अन्नदाता होताहे १९

सदऽसन्ध्ययोग ।

व्ययेशुभसंध्ययोऽशुभेऽसंध्ययो मिश्रमिश्रः २०

व्यये रवि राहुशुक्र योगे राजमूलोव्ययः २१

जीवेन्त्ये करव्याजेन व्ययः २२

क्षीणेन्दु सूर्यो व्यये राजद्राव्यं हरेत् २३

अन्त्ये मंदारो आतृहारा व्ययः २४

टीका-चारमे भावमेशुभयह गयेहोतो सन्मार्गमे धनका खर्चहोवेगा पाप
ग्रह गये होतो असन्मार्गमे और शुभपाप दोनो [मिश्र] ग्रह गयेहोतो
मिश्र मार्ग [अच्छे और बुरे-दोनो मार्ग] मे धनका खर्च होवेगा २०

रवि राहु और शुक्र इन तीनोंका योग चारमे भावमे होतो राज्यके
कार्य संबंधमे धनका खर्च होवेगा २१

चारमे भावमे गुरुगयाहोतो कर [महसूल] के बाहने से धनका खर्च
होवेगा २२

क्षिणचंद्र और रविपेदोनोचारमे भावमे गयेहोतो राजाधनछीनलेगा २३
चारमे भावमे शनि और मंगल ये दोनो गये होतो भाइके द्वारा धनका
खर्चहोवेगा २४

धन संचय फलयोग ।

व्यये शुभे धनसंचय संस्था २५

टीका-वारमे भावमे शुभग्रह गयेहोतो धनका संचय होता रहेगा २५
ऋण ग्रस्त पाग ।

धनेपापे व्ययेद्वेरो सेशलाभयुत दृष्टे ऋणग्रस्तः २६

सपापे धनेशे मूढे धनरंघ्रे ऋणग्रस्तः २७

नीचैर्धनेशे क्रूरपष्ठर्चशे तथा लाभेशे ऋणग्रस्तः २८

सपाप लग्नपात्रिकेश युतदृष्टे ऋणग्रस्तः २९

पुत्रपेद्वे शुभादृष्टे ऋणग्रस्तः ३०

लाभेशांशेशे शुभयुते क्रूरपष्ठर्चशे ऋणग्रस्तः ३१

लग्नपे मूढारिनीचत्रिके मारकेशयुते भाग्यपे शुभैरदृष्टे

नरेशोपि ऋणग्रस्तः ३२

टीका-पापग्रह धन भावमें व लग्नेश वारमेभावमें गयाहो और दशमेश लाभेशसे युतदृष्टहो तो ऋणग्रस्त होवेगा २६

पापग्रहसे युत धनेश अस्तंगत होकर धनभावमे किंवा भाठमें भावमे गयाहो तो ऋणग्रस्त [कर्ज से पीडित] होवेगा २७

नीचराशीमें गयाहुवा धनेश क्रूरपष्ठर्चशमे गयाहो और लाभेशभी नीचराशीमे स्थितहोकर क्रूरपष्ठर्चशमे स्थितहो तो ऋणग्रस्त होवेगा २८

पापग्रहसे युतलग्नेश छठे भाठमे किंवा वारमें भावके स्वामि से युत अभवा दृष्ट हो तो ऋणग्रस्त होवेगा २९

पंचमेश लग्नपे गयाहो और वह शुभग्रहो से दृष्टनहो तो ऋणग्रस्त होवेगा ३०

लाभेशके नवांशका स्वामि शुभग्रहसे युतहो और क्रूरपष्ठर्चशमे गयाहो तो ऋणग्रस्त होवे ३१

लग्नेश अस्तका वा अपनी शत्रु किंवा नीचराशीमे स्थितहोकर ६।८।१२ मे भावमे गयाहो और भाग्येश [नवमेश] मारकेशसे (धनेश वा सप्तमेशसे) युतहोवे और वह शुभग्रहोसे दृष्ट नहो तो यदि राजा वा राजा के समान मनुष्य हो तथापि ऋणग्रस्त होवेगा अर्थात् ये योग राजाके होतो वहभी अवश्य ऋणग्रस्त हुये बिना रहता नहीं तो साधारण मनुष्य की क्या क्या है ।

ऋणदाता योग ।

पनायेशयोदशेशस्यांशेशौवैशेषिकांशे केन्द्रकोणे ऋणदाता ३३

लग्नेशांशेशो मृदंशादौ जीवदृष्ट ऋणदाता ३४

टीका—धन और लाभ इन दोनों भावोंके स्वामियोंके द्रेष्काणके स्वा
मिके नवांशके स्वामि यदि वैशेषिकांश में स्थित होकर केन्द्र किंवा
त्रिकोणस्यानमें गये हो तो लोगोंको उधाररूपमें व्याजपर देने वाला
(ऋणा देने वाला) होता है ३३

लग्नेशके नवांशका स्वामि मृदुसंज्ञकादि शुभ षष्ठ्यंशमें गया हो और
मृदु उसको देकरता होतो ऋण देनेवाला (करना देनेवाला) होता है ३४
बंधन योग ।

व्ययत्रिकोणार्धगेषु पापेषु बन्धनम् ३५

स्वान्त्ययोः सुताङ्गयोः षष्ठान्त्ययोः सौत्याययोश्चतुर्थदश

मयोर्वाग्रहसाम्ये बंधनम् ३६

वृषाजहयो दये पापान्त्याङ्गसुतगारज्जुबंधनं ३७

वृश्चिकोदये द्वघन्त्याङ्ग सुतगाः पापाः भूग्रहे बंधनं ३८

शुभतुलाजकन्योदये द्वघन्त्याङ्गपुत्रगाः पापानिगदबंधनं ३९

शपकर्मृगोदये द्वघन्त्याङ्ग सुतगाःपापा दुर्गप्रवेशो नि-
गदरहितः ४०

लग्नारिंशौ समन्दौ केन्द्रकोणे बंधनं ४१

टीका—बारमें दूसरे नवमें और पांचवें इनचारों भावोंमें पापग्रह गये
होना बंधन होवेगा ३५

धन में और बारमें, या नवमें व पांच में, किंवा छठे व बारमें, भयवा
तीसरे व ग्यारहमें, या चौथे व दशमें, भावमें समान ग्रह भयोतु भेक
धनमें गया हो तो एक व्ययमें भी या दो ग्रहधन में गये हो तो दोही व्यय
में गये हो ऐसे जितने एक भाव में उतनेही दूसरे भावमें ग्रहगये होतो
बंधन होवेगा ।

इससूत्रमें बंधनके पांच योग कहे हैं इनमें से एकभी योग बनने से बंधन योग होता है किंतु जितने अधिक योग होंगे उतना ही योग अधिक बलवान समझा जावेगा ३६

वृषभ मेष वा धनराशीका लग्नहो और उसमें दूसरे बारमें और नवमे पांच में इनचारोंही भावमें पापग्रह गये होतो रस्सी से बंधन होगा ३७

वृश्चिकराशिका लग्नहो और २-१२-९-५ इन चारों स्थान में पाप-ग्रहगये होतो गुफा वा जमीन के नीचे के तलघरमें बंधनमें रहेगा ३८

मिथुन तुल मेष किंवा कन्याराशी का जन्म लग्नहो और २-१२-९-५ इनचारोंभावोंमें पाप ग्रहगये होतो भंजीर से बंधन होगा (पावमें बेड़ीपड़ेगा) ३९

मीन कर्क किंवा मकर राशी का लग्नहो और दूसरे बारमें नवमे पांचमें इनचारों भावोंमें पापग्रह गये हो तो किलेमें सोदि (साधारण) कैद होगा ४०

लग्नेश और पष्ठेश ये दोनो शनि से युक्त होकर केंद्र किंवा त्रिकोण स्थानमें गये होतो बंधन (कैद) होवेगा ४१

योगानां फलपरिपाकसमयः ।

योगकर्तृपु योधिकबलस्तदीयदशांतर्दशायां परिपाकः ४१

इति द्वादशमविवेकः ।

टीका-जितने योग कहेगये हैं उनयोगोंके योगकर्ताग्रहोंमेंसे जो अधिकबलवान् ग्रहहोता है उसग्रहकी दशा भंतर्दशामें उस योगके फलकी प्राप्ति होवेगा ४२

इसप्रकार योगोंके फल परिपाक का समय जानना ।

वृषभ भावमें सपरोक्त फलविचारोंके सिवाय भाईकीसामु भाईकी राज्यसुख मामी माताकाभाग्य मित्रके भाईकी स्त्री काका (पिताका भाई) मित्रकाभाग्य पुत्रकामृत्यु स्त्रीकामामा स्त्री की काकी मालिक का भाई, दूरकीमुसाफ़री, पाँच वनेत्रस्थान सुसरोंका भाग्य, दादाका रोग शत्रु भादि, सब बातोंका विशेषविचारभी इसी भावमें करना ।

अथमिश्रविवेकः

बन्दिजीवियोग ।

अंशेभौमे धातुवादिकोन्तिको बन्दिजीवीच १

टीका-काफ़ांश लग्नमे मंगलगयाहो तो धातुवपधातुका कामकरने वाला वा रसायनशास्त्रज्ञ भालारखनेवाला भयवा शस्त्रबनानेवाला किंवा अग्निके संबंधसे कामकरनेवाले लुहार सुनार आदिके कामकरके उप-जीविकाकरनेवाला होता है १

वाग्बिद्याहीन योग ।

सुतपत्रिके वाग्धीनो विद्याहीनश्च २

सुतेशो ज्ञेयपुत्रिके वाग्बिद्या प्रबंधहीनः ३
टीका-पंचमेशत्रिकस्थान ६।८।१२ मे गयाहोतो बाफ़ और विद्याहीन पुरुषहोता है २

पंचमेश, बुध और गुरुसेयतहोकर त्रिकस्थान ६।८।१२ में गयाहोतो बाग्बिद्या और प्रबंधहीन मनुष्यहोता है ३

विरजयोग ।

यूनेक्लेयो भार्यानजीवति वाविरक्तः ४

छानेपापे शुभादृष्टयुते संन्यासीस्त्रीनाशोवा ५

टीका-सप्तमेशलग्नमे गयाहोतो भार्या (स्त्री) जीवेनही किंवाविरक्त (संन्यासी) होता है ४

लग्नमें गयाहुवा पापघट शुभघटसे इन किंवादृष्ट नहोतो संन्यासी होवे भयवा स्त्रीकानाशहोवे भार्यान् स्त्री जीवित नहींरहेगा ५

लग्नेशभावेशयोः संबंधफलं ।

लग्नेशेक्षे भाग्यवान् वेष्णवःपटुरच ६

धनेशेक्षेक्षेक्षेधने धर्मापानागुणादानीच ७

सौत्येशेक्षेक्षेक्षे सौत्येऽप्यर्षिः कुलसुखदः ८

सुत्येक्षेक्षेक्षे सुत्येक्षमावान् सद्युद्धिमनस्तोषितृभाक्तिमांभ ९

भोगनेवाला और विद्याके संबंध से (पढ़ने पढ़ाने से) जीविका करने वाला होता है २४

कारकांश लग्नमे गुरुगयाहोतो मीमांसा शास्त्र जाननेवाला कर्मज्ञानी वेदविद्या जाननेवाला और दातापुरुष होता है २५

नवमेश शुभग्रहसेयुत और दृष्टहोकर केंद्र किंवा त्रिकोण १/५ स्थान मे गयाहोतो धन विद्या और भाग्य से युनहोता है २६

नीचराशीमे गयाहवारवि छूर ग्रहसेदृष्टहोकर छठे तथा भाठने भार मे गयाहोतो राजाके कोपसे पिताका मरण और धनकानाश होता है २७

बलवान नवमेश पारावतादिशुभांशमे गयाहोतो मानी गृहीधर्मशील और धनवान पुरुषहोता है २८

जपध्यान समाधिमात्र तथा धर्मनिरत योग ।

स्येशेङ्केशेसबले शुकेज्ययुतदृष्टे जपध्यान समाधिमात्र २९

स्येशस्यांशेशांशेशेसबले स्येशेङ्के जपध्यान समाधिमात्र ३०

अंशाद्धमे शुभदृष्टयुते धर्मनिरतः सत्यवादी गुरुभक्त आत्म

थातुषापदृष्टयुते ३१

व्यपेशेङ्के यात्रावाग्धारिर्कोषनी ३२

टीका-दशमेश नवमे हो और नवमेश बलवानहोकर शुक्र और बुध से युत किंवा दृष्टहोतो जपध्यान वा समाधि साधन करनेवाला होता है २९

दशमेश के नवांशका स्वामी तिसराशीके नवांशमे गयाहो दशमेशाभि बलवानहो और दशमेश नवमे भावमगयाहो तो जपध्यान ३०

कारकांशलग्नसे नवम स्थान शुभग्रहसेयुत और दृष्टहोतो धर्मनिरत वादी और गुरुभक्त होता है पापग्रहसेयुत दृष्टहोतो दृष्टशत्रु भावात् यदि कारकांशलग्नसे नवमभावे पापग्रहमे युत और दृष्टहोतो पापग्रह असत्यवादी और गुरुद्वेषी होता है ३१

दशमेश नवमे भावमे गयाहोतो यात्रा (यात्रायात्रा वादिकां यात्रायात्रा)

— जपध्यान (धार्मिक) और धनवान् मनुष्य होता है ३२

दशमेशलग्नमे और लग्नेश दशमे मे गयाहोतो राजा, प्रख्यात गुण-
वाला, सुंदररूप और सत्कीर्तिवाला होताहै १५

दशमेशलग्नमे और लग्नेश लग्नमे गयाहोतो सत्कर्म करनेवाला दीर्घायु
राजा और विद्वान होताहै १६

लग्नेश चारमे और व्ययेश लग्नमे गयाहोतो सर्वका शत्रु बुद्धिहीन
और कृपण मनुष्य होताहै १७

लग्नेश सौत्येपष्ठे विक्रमी मानीदयावांश्च १८

राशुगेहेशे कापीसुस्त्रीच १९

अन्त्येर्धशे मानीधनहीनश्च २०

समीपेसौत्येपधीरः शास्त्रविशारदश्च २१

सारिसौत्यपे जडःप्रचण्डःकोपीच २२

सगुलिके सौत्यपेदृढो जडोधीरश्च २३

अंशपूर्णन्दुशुक्रौ भोगीविद्याजीवीच २४

अंशजीवे कर्मज्ञानी वेदविदाताच २५

भाग्यपेकेंद्रकोणे शुभयुतदृष्टे धनविद्याभाग्ययुतः २६

मीषेर्केपष्ठेष्टमे क्रूरदृष्टे नृपकोपात्पितृभरणंवित्तनाशश्च २७

सषष्ठेभाग्यपे पारावतादौ मानीगुणी धर्मशीलो धनीच २८

टीका-लग्नेश तीसरे किंवा छठे भावमे गयाहो तो पराक्रमी मानी
और दयावान होताहै १८

लग्नेशदशमे किंवा अन्त्येर्धभावमे गयाहोतो कामी और सुखी होताहै १९

पनेश चारमे भावमे गयाहोतो मानी और धनहीन होता है २०

नृपवेश शुद्धसे युतहोतो धीर [धैर्यवान्] और शास्त्रविशारद होताहै २१

नृपवेश मीगदसे युतहोतो जड बटामर्बट और कोपी मनुष्य होताहै २२

नृपवेश गुलिकसे युतहोतो दृढ़, अदुष्टबुद्धि वा मनकृन और धीर पुरुष
होताहै २३

चारकोश लग्नमे पूर्ण चन्द्रमा और शुक्र गयेहोतो २४ ; भोग

भोगनेवाला और विद्याके संबंध से (पढ़ने पढ़ाने से) जीविका करने वाला होताहै २४

कारकांश लग्नमे गुरुगयाहोतो मीमांसा शास्त्र जाननेवाला कर्मज्ञानी वेदविद्या जाननेवाला और दातापुरुष होताहै २५

नवमेश शुभग्रहसेयुत और दृष्टहोकर केंद्र किंवा त्रिकोण ९।९ स्थान मे गयाहोतो धन विद्या और भाग्य से युतहोताहै २६

नीचराशांमे गयाहूवारवि क्रूर ग्रहसेदृष्टहोकर छठे तथा आठमे भाग मे गयाहोतो राजाके कोपसे पिताका मरण और धनकानाश होताहै २७

बलवान नवमेश पारावतादिशुभांशमे गयाहोतो मानी गुणीधर्मशील और धनवान पुरुषहोताहै २८

जपध्यान समाधिमान् तथा धर्मनिरत योग ।

स्वशेङ्खेशेसबले शुकेज्ययुतदृष्टे जपध्यान समाधिमान् २९

स्वशस्यांशेशांशेशेसबले स्वशेङ्खे जपध्यान समाधिमान् ३०

अंशाद्धर्मे शुभदृष्टयुते धर्मनिरतः सत्यवादी गुरुभक्तध्यान्य
थातुपापदृष्टयुते ३१

व्यपेशेङ्खे यात्रावान्धार्मिकोधनी ३२

'टीका-दशमेश नवमे हो और नवमेश बलवानहोकर शुक्र और गुरु से युत किंवा दृष्टहोतो जपध्यान वा समाधि साधन करनेवाला होताहै २९

दशमेश के नवांशका स्वामी नितराशीके नवांशमे गयाहो उसका स्वामी बलवानहो और दशमेश नवमे भावमेगयाहो तो गवध्यान समाधिवालाहोताहै ३०

कारकांशललग्नसे नवम स्थान शुभग्रहसेयुत और दृष्टहोतो धर्मनिरत होताहै और गुरुनल होताहै पापग्रहसेयुत दृष्टहोतो बलदा फल-विगा भर्थात यदि कारकांशललग्नसे नवमभाव पापग्रहसे युत और

दृष्टहोतो पापराज असत्यवादी और गुरुद्वेषी होताहै ३१

व्यपेश नवमे भावमे गयाहोतो यात्रा (तीर्थयात्रा वादेशां तत्तमत्र) करनेवाला धर्म करनेवाला (धार्मिक) और धनवान् मनु

धनी कृपण तथा प्रतापी योग ।

स्वर्शेन्त्येशे धनी कृपणो बहुपशुमांश्च ३१

कर्माक्षेशावन्योन्यभगौ ख्यातःप्रतापीच ३४

टीका-बारमेभावका स्वामी अपनी स्वराशिमें गयाहोती धनवान् कृपण (कंजूस) और बहुत गाय भेस आदि पशुभोवाला होताहै ३३

दशमेश और लग्नेश परस्पर अन्योन्यराशी में भयात् दशमेशकी राशी में लग्नेश और लग्नेशकी राशीमें दशमेश गयाहोती प्रख्याति-वाला और प्रतापी मनुष्य होताहै ३४

कुलघ्न बहुस्त्रीरत योग ।

दारे कुजे बहुस्त्रीरतः कुलघ्नश्च ३५

अंशादस्तेर्के पतिव्रता विकलाङ्गी स्त्री ३६

पापालग्नान्त्यास्तगा सुत स्त्री नाराकाः ३७

मदेर्के कुटुम्बी बहुस्त्रीरतः ३८

धर्मेन्त्येन्त्येशेर्थे सौत्थे पापेकुभोजीदुष्कर्मान्यगामी ३९

नीचभांशे जीवेजीवांशेर्केऽतिदुःखी सुतदारहीनः ४०

टीका-सप्तमभावमें मंगलगयाहो तो बहुतस्त्रियो से सहवास करने वाला और कुलघ्न मनुष्य होता है ३५

कारकांशलग्न से सप्तमभावमें सूर्य गयाहो तो पतिव्रताकीहोवेगा किंतु वह विकलदेह वाली होवे ३६

लग्न में बारवे और सातमे भावमें पापग्रहगये होतो पुत्रका और स्त्रीका नाश करते हैं ३७

सप्तमभावमें सूर्य गयाहोतो बड़े कुटुम्ब वाला और बहुतस्त्रियोसे सहवास करनेवाला होता है ३८

नवमेश धारमें व्ययेशधनभावमें और पापग्रह तीसरे भावमें गये होतो दुष्टात्म भोजनकरनेवाला दुष्टकर्म करनेवाला परस्त्रीगामी नर होता है ३९

नीचराशी तथा नीचराशीके नवांशमें गुरुगयाहो और गुरुकी राशी

के नवांशमे रवि होतो महादुःखी पुत्र तथा स्त्री हीनमनुष्य होता है ४०
द्विषद योग ।

चन्द्रार्कयोगे यन्त्राश्मकर्ता ४१

ज्ञार्कयोगे क्रियापटुर्धीकीर्तिसौख्यान्वितः ४२

जीवार्कयोगे कुरोन्यकार्य निरतः ४३

शुक्रार्कयोगे ज्ञायुर्धैर्यस्वः ४४

मन्दार्कयोगे धातुनैपुण्यं ४५

चंद्रारयोगे लुब्धकश्चलचितः ४६

चंद्रज्ञयोगे प्रियंवागर्थमदुः सौभाग्यकीर्त्यन्वितः ४७

चंद्रेज्ययोगे शत्रुजेता कुलमुख्यश्चपलो धनी ४८

चंद्राच्छयोगे ब्रह्मादिक्रियापटुः ४९

चंद्रमंदयोगे परुषवाक्कपटी ५०

समन्देजे परवचनदत्तो गुरुवचनातिक्रामी च ५१

शुकेज्ययोगे साद्विया धनदारगुणयुक्तः ५२

ज्ञाच्छयोगे वाग्मी विद्वान्भूषणपः ५३

ज्ञेज्ययोगे गीतप्रियो नृत्यविन्मल्लः ५४

मन्दारयोगे दुःखतृप्तभाषी निन्दितश्च ५५

यमाच्छयोगे लपटाष्टिर्लिपिपुस्तचित्रवेत्ता ५६

शुक्रारयोगे गोपालकमल्लदक्षपराङ्मना गायी ५७

आरेज्ययोगे पुराध्यक्षो नृपः प्राप्तविद्योद्विजः ५८

टीका-रविचंद्रका एकराशी में योगहोतो यन्त्र (कलीकं
काकाम और परवरका कामकरने वालाहोता है ४१

सुध रविकायोगहोतो काम करने में कुशलवृद्धिवात् सत्कीर्ति और सुखसे युत होता है ४२

गुरु रविका योगहो तो क्रूरस्वभावका और दूसरेका काम करने वाला होता है ४३

शुक्र रविका योगहोतो अपने शरीरके बलसे और शस्त्रादिकसेवन प्राप्त होता है ४४

अनिरविका योग होतो रसायनशास्त्रके काममें निपुणता अपवाधात् उपधानभोसे बननेवाले कार्योंको करनेमें निपुण होता है ४५

चंद्र मंगलका योगहोतो लोभी और बलचित्तवाला होता है (स्थिर चित्त रहता नहीं) ४६

चंद्र बुधका योगहोतो प्रियवचन बोलनेवाला द्रव्योपाजनके काममें चतुर भाग्यवान् और सत्कीर्तिवाला होता है ४७

चंद्र गुरुका योगहोतो शत्रुको मारनेवाला अपने कुलमें मुख्यपुरुष बलवृद्धिवाला और बड़ा धनवान् होता है ४८

चंद्र शुक्रका योगहोतो घनसीबनापुनना नपायनाना इत्यादि वस्त्रनिर्माणके काममें कुशल होता है ४९

चंद्र शनिका योग होतो कठोरवचन बोलने वाला और कपटी स्वभावका पुरुष होता है ५०

शनि बुधका एक राशीमें योग होतो दूसरे को ठगनेमें चतुर और गुरुके वचन को उल्लंघन करनेवाला होता है ५१

शुक्र गुरु का एक राशीमें योगहोतो सद्बिद्यान्वित धन, की, और गुण युक्त मनुष्य होता है ५२

बुध शुक्र का योगहोतो अच्छा बोलनेवाला (वक्ता) विद्वान् और राजाओंके समूहका अधिपति होता है ५३

बुध गुरुका योगहोतो गायनमें प्रीतिरसनेवाला नृत्यकलाको जानने वाला और मद्य [कुस्ती करनेवाला] होता है ५४

शनि मंगलका योगहोतो दुःखी झूठबोलनेवाला और निन्दित मनुष्य होता है ५५

शनि शुक्रका योगहोतो अल्पदंष्ट्रि अर्थात् अदूर दंष्ट्रि वा अंधेरी में जिसको शोर्टसाईड कहते हैं ऐसी दृष्टीवाला होता है दृष्टि रत्नके पामको

या लीपनेपोतने रंगईकरनेके कामको और चित्र-कलाको जाननेवाला होताहै ५६

शुक्रमंगल का योगहोतो गोभोपालनेवाला, मल्ल, चतुर और परांग-नागामी मनुष्य होताहै ५६

गुरुमंगलका योगहोतो किसी गाम वा शहरका मालिक वा बडेस्वतंत्र अधिकारवाला राजा और विद्वान् ब्राह्मणहोताहै ५८

परग्रहवासी, मातृपितृघाती, निर्धनी, लोभीयोग ।

राहर्कान्यतर युतेपष्ठेयन्त्ये परग्रहवासी नीचवृत्तिश्च ५९

लग्नेन्त्येके चन्द्रेपष्ठेभौमेस्ते मातापितृघाती ६०

मेपेचन्द्रेमन्दहृष्टे निर्धनोलोभी ६१

टीका-पष्ठेशराहु तथा रविसे युतहोकर वारमेभावमे गयाहोतो पर ग्रहमेरहनेवाला और नीचवृत्तिका मनुष्यहोताहै ५९

लग्नमे तथा वारमे भावमे रविगयाहो और चंद्रमा छडे व मंग सातमे भावमे गयाहोतो मातापिताका घात [नाश] करनेवालाहोवे।

मेघराशीमे गयाहुवाचंद्रमा शनिसे दृष्टहोतो निर्धन और लोभीहोताहै।
जन्मावसरे पितुर्मातुर्वा मरणयोग ।

कर्मांशुपौत्रिकेऽवलौसबलेऽप्येजन्मावसरेपितुर्मातु र्वा मरणम् ६१

टीका-दशमेश और सुक्लेश ये दोनो निर्बलीहोकर त्रिकस्थान ३।८।१२ में गयेहो और लग्नेशबलवान होतो जन्मके समय पिताका वा माताका मरणहोदिगा ६२

यहयोगहोवे उसके जन्मकालमे मातृपितृ के सद्योमरणयोग भी हुवे होतो अवश्य इस योगका फलमिलेगा ।

भ्रातृधनक्षेत्रादिलाभ तथा भाग्यवान् तथा मानीयोग ।

सुक्लेशांशपेकेन्द्रेमित्रदृष्टेवाभौमदृष्टयुतेभ्रातृधनक्षेत्रंचमामोति ६३

धर्मांशुपौ कर्मगौ सर्वार्थवाहनयुतो भाग्यवान् ६४

स्वर्जीवे इष्टिज्ञोमानीच ६५

टीका- सुक्लेश के नवांशका स्वामि केंद्रमे गयाहो भौ

मित्रप्रदसे दृष्टहो भयवा मंगलसे युत तथा दृष्टहोतो भाईकाधन और
जमीन आदि संपत्तिका लाभहोताहै ६३.

नवमेश और सुप्तेश ये दोनो दशमभावमे गयेहोतो सर्व संपत्ति और
साधन सेयुत भाग्यवान् मनुष्यहोताहै ६४

दशमभावमे गुरु गयाहोतो इसारेपरसे मनकी बात जाननेवाला और
मानी (भंडकारी) मनुष्यहोताहै ६५

कपटेन विषभक्षण कर्तायोग ।

धनेशे पापदृष्टे कपटादिनाविष भोजनम् ६६

टीका—धनेश पापग्रहसे दृष्टहोतो कपटादिक से विषस्वाधेगा (कोई
जहरसिलादेवेगा) ६६

धैर्यान्वित युद्धपटु सत्यवादी कटुप्रियावियोग ।

शुभर्क्षभानूकारके शौर्यधैर्यान्वितः ६७

सोत्येशांशेश्वरांशोस्वर्क्षादिवर्गे मानीयुद्ध पटुः कलहप्रियः ६८

लग्नेर्धेजीवे मधुरप्रिय मधुरवाक् सत्यवादी ६९

लग्नेरोक्ते कुजार्कदृष्टे क्रोधीव्यसनी कटुप्रियः ७०

कोशगौज्ञाकौ सेवारतो स्थिरधनी ७१

सोत्येराहुमन्दौ कुनखीक्षकरेघाती वायुरोगी ७२

सोत्येर्क ॥ भौमेस्थिभंगो विषभयं बन्धिजं चिन्हम् ७३

सप्तमृतिगा सव्रणचिन्हं गुप्तं भगंधरादिरोगी च ७४

सेचंद्रे सुतांगेजीवे दानीतपस्वी जितेंद्रियश्च ७५

ज्ञेन्द्रर्कजाः केन्द्रव्ययधर्मगा ऐश्वर्यज्ञानहीनः ७६

सर्वेग्रहानीचारीभागगा उच्चस्थाअग्नि सत्कर्षहीनो भिक्षारी ७७

टीका—भानूकारकमह [मंगल] शुभग्रहभी राशीमे गयाहोती श्रुता
युत और धैर्यान्वित होताहै ६७

तृतीयेशके नवांशका स्वामि मिसराशी के नवांशमे गयाहो उसका

स्वामि स्वउच्च मित्र राशीके शुभवर्गमे गयाहोतो मानी युद्धकलाप्रवीण और कलहप्रिय मनुष्यहोताहै ६८

लग्नमे तथा धनभावमे गुरुगयाहोतो मीठीवस्तुस्नानेपर प्रेमगस्तनेवाला मधुरवाणीसे भाषणकरनेवाला और सत्यवादी मनुष्यहोताहै ६९

लग्नेश लग्नमे गयाहो और रवि तथा मंगलसे दृष्टहोतो क्रोधी विपत्ती भोगनेवाला और कटुरस [चरपरासारांपदार्थ] परप्रेमरसनेवालाहोताहै ७०

युध और रवि धनभावमें गयेहो तो सेवाकरनेमे तत्पर रहनेवाला और स्थिरधनवाला होता है ७१

तीसरेभाव में राहु और शनिगयेहोतो खराब नस्बवाला दक्षिणायनमें घात (चोट वा शस्त्रसे घावहोनेका भय), बाला और वायुरोगसे युक्त होता है ७२

तीसरे भाव में रवि अथवा मंगलगया होतो किसी भगकी इहो दु-
टेगी तथा विपकाभय वा अग्निसे जलजानेका शरीरपर चिन्ह होवेगा ७३
पापघट अष्टमभाव में गयेहोतो गुप्तस्थानमें किसी जलमका चिन्ह
होवे और भगदरवाशिर आदिरोग वाला होता है ७४

दशमें भावमें बुधवा और पंचमभावमें अथवा लग्नमें गुरुगयाहोतो
दानी तपस्वी और भित्तेन्दी होता है ७५

युधकेंद्रमें, चंद्रमावारमें भावमें और शनि नवमें भावमें, गयेहोतो
ऐश्वर्य और शानहीन मनुष्य होताहै ७६

उच्चराशिमे गये हुवेभीसर्वमद यदि नीच किंवा शमुराशीके नवा-
शमें गयेहोतो सन्धर्महीन और भिक्षामांगके पेटभरनेवालाहोताहै ७७

दृष्ट कंडुपीडा, मंदगति भ्रान्हीन कलहशीलादि योग ।

लग्नेशरन्ध्रे क्रूरयुतदृष्टेनिमान्पददृक्कण्डुपीडाभिप्री ०८

भोमेङ्गे नेत्रपाणो भुजङ्गदन्तक्षतपात्रकांक्षु भयम् ७९

चंद्राच्छोपष्टेष्टमे वा मन्दाम्युदररोगी ८०

केतिदूभोरथे भ्रान्हीनो धनोच ८१

कृत्वात्पशादिप्रपमाभोगामुमन्दा मार्यानिर्जोषति.

राहिदूसपापौरिके उन्मादीकलहशीलः ८३

अंशराहो धानुष्कश्चोरोवा ८४

अंशेशुके राजसेवीकामीच ८५

धातुपेशशुके कामीकलही ८६

सलपुतदृष्टे कुजेस्ते मूत्रकृच्छ्री कर्त्तव्यः ८७

शुभांशहीनौजचंद्रौकेन्द्रे विस्मयालुर्धनयुक्तः ८८

छाभांकेधेशो उद्यमी धनी गुणी ८९

छानेशोन्त्ये स्वपापे भौर्धुतचंद्रे परदेशी भिक्षाशीदुःखी ९०

जीवाप्येशो पृष्ठान्त्यगो क्लेशमाग्न्यहीनः ९१

टीका-लग्नेश अष्टमभावमें गयाहो और कुर्यहोसे युत व दृष्टहो तो मंदग्निरोग, दग् [दादकी] पीडा बुजलकी पीडा और सफेद दाग के कुष्ठरोगका भय होता है ७८

नेत्रपाणि अष्टम्यामे गयाहुआ मंगल लग्नमे गयाहोतो सर्पकेदांनका जलम (सांपकेकाटनेकादुःख) और अग्निका तथा जलकाभयहोवेगा ७९

चंद्र और शुक्र येदोनो छे अथवा भाठमे भावमें गयेहोतो मंदगनी रोगवाला तथा बंदरके रोगवालाहोताहै ८०

केतु और चंद्रमा का योग तीसरे भावमें होतो भ्रातृहीन और धन-यात्र होताहै ८१

छेभंगल सातमेभावमेराहु भाठमेशानि क्रमसेगयेहोतो श्री जीवित नहीरहे और भ्रातृहीनहोवेगा ८२

राहु और चंद्रमापापग्रहसे युतहोकर बारमे भावमें गयेहोतो उन्माद (पागलपनके) रोगवाला और कलहशील [झगडाळू] होताहै ८३

कारकांशललग्नमेराहुगयाहोतो घनुष्यरखनेवाला अथवा चौरहोताहै ८४

कारकांशललग्नमेशुक्रमयाहोतो राजसेवी (राजमेनोकरी करनेवाला) और कामीहोताहै ८५

तृतीयांश शुक्रसे युतहोतो कामी और कलहकरनेवाला होताहै ८६

सप्तमभावमे गयाहुवा मंगल पापग्रहसे युतदृष्टहोतो मूषकचूरीग-
बाला तथा नपुंसकहोताहै ८७

पापग्रहोके नवशमे मयेहुये शुभचंद्र चंद्रमे गयेहोतो विस्मयशील,
दयालु, और भ्रनयुक्त होताहै ८८

धनेश लाभमे भयवा नवमभावमे गदाहोतो दखोगी धनशत्रु और
गुगी होताहै ८९

लग्नेश बारमेभावमे पापग्रह दशमेभावमे और चंद्रमा मंगलसे
युतहोकर कोईभीभावमे गयाहोतो परदेशमे रहनेवाला भीखमांगके
खानेवाला दुखी मनप्यहोताहै ९०

गुरु और धनेश ये दोनो छठे तथा बारमे भावमे गयेहोतो वनेश
भोगनेवाला और द्रव्यहीन मनुष्यहोताहै ९१

अधियोग ।

पंचातमोभ्याः षष्ठादित्रयगाभमूष सचित्रभूषलतातम्यात् ९२

टीका—चंद्रमासे छठे सातमे आठमे भावमे शुभग्रहगयेहोतो ग्रहोके
बलकेनारतम्येग्रहसे सेनापति, मंत्री और राजाहोताहै अर्थात् चंद्रमासे
छठेस्थानमे सर्वशुभग्रह गयेहोतो सेनापति और सप्तमस्थानमे सर्व
शुभ ग्रहगयेहोतो मंत्री तथा अष्टमभावमे सर्वशुभग्रह गये होतो राजा
होताहै । इनग्रहोके अधिक बलवाह होनेसे बलवान् और हीनबली होनेसे
निर्बल योगममज्ञता ९३

मैत्रे चंद्रमे यह अधियोग कहाहै बैसाहि जन्मखानेसेभी छुड़ सातमे
आठमे भावमे सर्व शुभग्रहोके जाननेसे अधियोगहोताहै और वसुधा
षष्ठमी दशमीक वृत्तिके अन्तगारही होताहै ।

अथका कुतः। दुर्धरा तथा केमद्रुम योगजज्ञान ।

षष्ठ्याद्विषयो ह्येयंनुका धनेमनुका उभयत्र दुर्धरा-
म्यथा केमद्रुमः ९३

टीका—इसमें शनिके बिना अथ कोईग्रह अथवाय मि लगेहोतो
। नवमभावमे मयेहुये मनुष्य और बारमे और दशमे वृत्तिके भा-
गयेहुये दुर्धरा और बारमे तथा दशमे वृत्तिके भागयेहुये केमद्रुम
मनुष्य के केमद्रुम केमद्रुम होताहै ९३

सनुफा योग फल ।

नुफायां राजातत्समो वा धीधनस्यातिर्मांश्च ९४

॥-सनुफा योगमें जन्म होतो राजा वा राजाके समान भाग्यशाली
न धनवान और सत्कीर्तिवाला प्रसिद्ध पुरुष होता है ९४

भनुफा योग फल ।

नुफायां प्रभुः शीलवान् ख्यातो निरोगी ९५

॥-भनुफा योगमें जन्म होतो राजा वा राजाके समान भाग्यवान्
गणसम्पन्न प्रसिद्ध और निरोगी पुरुष होता है ९५

दुरुधरायोग फल ।

रुधरायां धन वाहनान्योत्पन्नभोगसुखभुक् ९६

॥-दुरुधरा योगमें जन्म होतो धन और वाहनके सुखसे युक्त और
देकरी प्राप्तिसे अनेक सुखभोग भोगनेवाला होता है ९६

केमद्रुमयोग फल ।

मद्रुमे मलिन दुःस्वितनीचनिष्ठो नृपजोपि ९७

॥-केमद्रुम योगमें जन्म होतो राजाके यहाँ जन्म पाया हुआ मनुष्य
मलिन स्वभावका वा मैलारहने वाला दुखी नीचप्रकृतिवाला नीचे
और निर्धन मनुष्य होता है अर्थात् साधारण मनुष्य के भोग
यह योग होता वह दरिद्री हुये बिना रहता नहीं ७७

केमद्रुमभंग योग-जातकपारिजातमेलिखा है ।

नेशाकरेकेंद्रगत भगौवा जीवेक्षिते नैव दरिद्रयोगः शुभान्विते वा शुभ
पश्येदौ जीवेक्षिते नैव दरिद्रयोगः ३६

इति मित्र निजतुंगगृहांशकस्थे जीवेक्षिते यदि दरिद्रतया विहीनः
ततो नैव शुभपुत्रे विदितुंगजति जीवेक्षिते हिमकरेन भवेदरिद्रः ३७

हरवाराराशे = प्रालेयाशुः सुतिकाले यदा वा सूर्यः भेटे वा क्षयमाणः भवतीति
विषाणुष्य राजयोगं मनुष्यं सत्कोशादचं इति केमद्रुमं च ५७

अर्थात् जिसके जन्म समय में

(१) चंद्रमा अथवा शुक्र केन्द्रस्थानमें स्थित हो और गुरुसे दृष्ट
हो तो केमद्रुमयोगका भंग (दरिद्रयोग नहीं) करता है ।

(२) चंद्रमा शुभग्रहसे युक्त हो अथवा शुभग्रहोंके मध्यमें गाय हो

सप्तमभावमे गयाहुवा मंगल पापग्रहसे युतदृष्टं
बाला तथा नपुंसकहोताहै ८७

पापग्रहोके नवांशमे गयेहुवे शुभचंद्र चंद्रमें गयेहं
दयालु, और भ्रमयुक्त होताहै ८८

धनेश लाभमे भयवा नवमभावमे गयाहोतो द
गुणी होताहै ८९

लग्नेश वारमेभावमे पापग्रह दशमेभावमे
युतहोकर कोईभीभावमे गयाहोनो परदेशमे र
खानेवाला दुखी मनप्यहोताहै ९०

गुरु और धनेश ये दोनो छठे तथा वार
भोगनेवाला और द्रव्यहीन मनुष्यहोताहै ९
अधियोग ।

चंद्रारत्नौम्याः पृष्ठादित्रयगाभ्वमू१सं

टीका—चंद्रमासे छठे सातमे आठमे
बलकेतारतम्यभेदसे सेनापति, मंत्री ३
छठेस्थानमे सर्वशुभग्रह गयेहोतो से
शुभ ग्रहगयेहोतो मंत्री तथैव भट्ट
होताहै । इनग्रहोके अधिक बलवान्
निर्बल योगसमक्षना ९२

जैसे चंद्रसे यह अधियोग क
आठमे भावमेसर्व
फलभी उपरोक्त

अनफा

टीका-इसीप्रकार फलका विचार विवाहसमयमें और प्रश्नसमयमें भी जानना ।

इनके सिवाय पंचांगफल ग्रहोकाभावफल राजयोगादिकफलका विशेषविचारजानना हो तो श्री जातकमे देखना ।

इति श्री गणकचर्य श्रीमन्महादेवकृत जातकतत्त्वाख्य जातकग्रंथे तत्सूनु श्रीनिवास रचितवत्त्वप्रदर्शिनी भाषाटीकायां खोजनाततत्त्वं चतुर्थम ४

अथ दशातत्त्वारम्भः ।

दशाविचार ।

ग्रहोभावरशिङ्गयोगजीविकादिफलं स्वदशांतर्दशायांददाति १

टीका-भाषजनित राक्षिजनित दृष्टिजनित योग तथा सम्बंधजनित तथा जीविकादि जितने शुभाशुभ फल ग्रहों के कहेगये हैं वे सर्वफल ग्रह अपनीदशा अंतर्दशामें देते हैं १

संपूर्णा दशाफलं

अतिबलस्य परमोच्चगस्य वा दशासंपूर्णाभिधाधनारोग्य विवर्धिनी २

टीका-जो ग्रह अतिबलवानहो अववा परम उच्चराशीमें गयाहो उसकी दशा संपूर्णानामकी होती है यह दशा धन आरोग्यको बढ़ानेवाली जानना २ पूर्णादशाफल ।

किंचिदलोपेतस्योच्चगस्य पूर्णाधनदा ३

टीका-जो ग्रह किंचिद्वलवानहो और अपनी उच्चराशीमें गयाहो उसको दशा पूर्णानाम की होती है यह धनलाभ करने वाली जानना ३ रिक्ता दशाफल ।

विबलस्य वा नीचगस्य रिक्ता धनहानिदा ४

टीका-जो ग्रह निर्बल हो किंवा अपनी नीचराशीमें गयाहो उसकी दशा रिक्तानाम की होती है यह धनहानी देनेवाली जानना ४

और गुरुसे दृष्टहोतो केमद्रुम योग नहीं होताहै ।

(३) चंद्रमा अधिमित्रराशी का किंवा अपनी वच्चराशीका हो
अथवा अधिमित्र तथा अपनी वच्चराशीके नवांशमे गया
हो और गुरुसे दृष्टहोतो केमद्रुम योग नहीं होताहै ।

(४) पूर्णचंद्रमा शुभग्रहसे युतहोकर बुधकी वच्चराशीमे गयाहो
और गुरुसे दृष्टहोतो केमद्रुम योग नहीं होताहै ।

(५) चंद्रमा सर्वग्रहसे दृष्टहोतो केमद्रुम योग का भंग कर-
ता है ।

इन पांच योगोंमे से भेक भी योग जिसके जन्मसमय मे नहीं हो
सके केमद्रुम योग का फल अवश्यहोवेगा ।

एकस्मिन्नप्युच्चगे समित्रे प्रचुरधनः सिद्धः ९८

सषलेखेशेकेन्द्रकोणयज्ञकूपायतनकर्तादेवतातिथिपूजकः ९९

शुभावक्रगाराज्यार्थदाः पापाव्यसनघनहानिदाः १००

सर्वसौम्यास्त्र्यायारिगा बाल्येसुखी तत्रैवपापावयस्रोन्त्ये १०१

इति महादेवकृत जातकतत्त्वे प्रकीर्णतत्त्वं तृतीयम् ३ ।

टीका-यदि भेकभी ग्रह अपनी वच्चराशीमे गयाहो और अपने मि-
ग्रहसे युत होतो बहुतधनवाला तथा सिद्धपुरुष होता है ९८

बलवान् दशमेश केन्द्रविकोणस्थाने [१४।७।१०।१५] मे गया।

दशा पूर्वाद्धमे [भाधी] शुभ और उतराद्धमे मध्यम फल देनेवाली होवेगा ८

शुभदशा ।

॥ मित्रोच्चात्पस्वत्रिकोण वर्गोत्तम स्ववर्गस्यशुभा ९

टीका-जो ग्रह अपने मित्रग्रह की राशी में तथा उच्चराशीमें, स्वराशी में या मूलत्रिकोण राशीमें भयवा वर्गोत्तमांशमें (जन्मकालमें जिस राशीका ग्रह हो उसी राशीका नवांश में भाँदो) भयवा अपनी स्वराशीके दशवर्गमें गया हो उसग्रह की दशा शुभफल देनेवाली जानना ९

कष्टा दशा

॥ अस्तारि नीच भांशमस्य कष्टा १०

टीका-जो ग्रह अस्तका हो अपने शत्रु ग्रह की राशी और नवांश में गया हो भयवा नीचराशी और नीचराशीके नवांश में गया हो उसकी दशा कष्ट देनेवाली अशुभजानना १०

॥ अवरोहिण्यधमाचेत्कष्टा ११

॥ आरोहिणी मध्याचेत्संपूर्णा १२

सदृष्टयुतस्याधिकरश्मेः केंद्रकोणमस्य शुभान्यथा कष्टा १३

टीका-जिसग्रहकी भयम संज्ञक अवरोहिणी दशा अर्थात् (जो ग्रह अपनी उच्चराशीको उल्लंघन करके नीच राशी के समुख जानेवाली उराशी में स्थित होकर (नीचाभी लापी होकर) अपनी नीच या शत्रु राशीके नवांश में गया हो उसकी दशा नेष्ट [कष्ट देने वाली समझना]

जिसग्रहकी आरोहिणी दशा मध्यासंज्ञक अर्थात् जो ग्रह अपनी नीच राशीको उल्लंघन करके उच्चराशीके समुख जानेवाली उराशीमें स्थित होकर (उचाभी लापी होकर) अपने मित्र ग्रहकी राशी के या उच्च राशीके या अपनी स्वराशीके नवांशमें गया हो उसकी दशा संपूर्ण उत्तम भेष्टफल देनेवाली समझना १२

जो ग्रह शुभग्रहसे दृष्ट और युत हो अधिक बलवान् हो जिसकी उच्च राशिमें अधिक भाँदो जो केंद्र या त्रिकोण स्थान (१४, ७, १०, १५) में गया हो उसकी दशा शुभफल देनेवाली जानना और इससे विपरी

त स्थितिमें गयाहुवा होतो उसकी दशा कष्टदेनेवाली नेष्टजानना ।
 अर्थात् जो ग्रह पापग्रहसे युत और दृष्टहो नबली, अस्तंगत, नीच,
 वा शत्रुराशी गत किंवा राशिसंधिमें अथवा भावर्मथीमें गयाहो कूर-
 पट्टचंजमें वा पापांशमें गयाहो २।३।६।८।११।१२ इनछभावोंमेंसे किसी
 भी भावमें गयाहो उसग्रहकी दशा कष्टदेनेवाली होवेगा १३

लग्नदशाफल.

लग्नदशा चरभेगे द्रेष्काणक्रमाच्छ्रेष्ठामध्याधमा द्विस्व-
 भावेव्यत्ययेन स्थिरेनेष्टेष्टसमा १४

टीका-लग्नकी महादशा यदि चरराशी का लग्नहोतो द्रेष्काणके
 क्रमसे अर्थात् चरराशीका लग्न प्रथम द्रेष्काणमें होतो उसकीदशा
 श्रेष्ठ दूसरे द्रेष्काणमें होतो मध्यम और तीसरे द्रेष्काणमें होतो अध-
 म फल देनेवाली, एवं द्विस्वभावराशी का लग्न यदि प्रथम द्रेष्काणमें
 होतो अधम दूसरेमें मध्यम तीसरे द्रेष्काणमें होतो श्रेष्ठ फलदेनेवाली
 और स्थिरराशीका लग्नहोतो यदि वह प्रथम द्रेष्काणमेंहोतो नेष्ट
 दूसरे द्रेष्काणमें होतो श्रेष्ठ तीसरे द्रेष्काणमें होतो मध्यमफल देनेवाली
 दशा जानना १४

वक्रगतिस्वग्रहदशाफलं ।

वक्रगत्यपाके स्थानमान सौख्यावपचयः १५

टीका-जोग्रह वक्रगतीका हो उसकी दशामे स्थानमान सुखादिक
 का हास होवेगा एसानानना १५

त्रिकेतरगत्यपाके भीष्टसिद्धिः १६

भाङ्गेशरिपुपाके बुद्धिअंशो राजभयंच १७

राहुयुतस्य दशारिष्टदा १८

रन्ध्रगाङ्गेशस्यपाके तिपीडा १९

दृष्टाधिकस्यश्रेष्ठा कष्टाधिकस्यनेष्टा समस्यसमा २०

दिग्वलोपेवस्य पाके महाप्रतिष्ठास्वदिग्मागे २१

टीका-त्रिकस्थान ६।८।१२ के विना अन्यस्थान में १।२।३।४।५।७-९।१०।११ गयेहुवे ग्रहकी दशामे अभीष्टकार्य की सिद्धिहोतीहै १६

जन्मराशी और लग्नके स्वामीका जोग्रह शत्रुहो उसकी दशामें शुद्धिभ्रंश और राजभय होताहै १७

जोशुभ राहुसे युतहो उसकी दशा कष्टदेनेवाली होतीहै १८

अष्टम स्थानमें गयेहुवे लग्नेश की दशा शरीरमें अतिपीड़ादायक होतीहै १९

जिसग्रहका इष्ट (केशवीपद्धतीके अनुसार ग्रहों का जो इष्ट फल फल लायाजाता है वह इष्ट) यदि अधिकहोतो उसकी दशा श्रेष्ठ और कष्ट फल अधिक होतो उसकी दशा नेष्ट और यदि मध्यम [दोनो इष्टकष्टबलसमान] होतो सामान्य मध्यमफलदेनेवालीहोतीहै २०

जोशुभ दिग्बल से युक्तहोताहै उसकी दशामें महा प्रतिष्ठा और भाग्यकीवृद्धि जिसदिशाका वहग्रह स्वामिहो उसदिशामें होतीहै २१
दिशाके स्वामि धृज्ज्जातकर्मलिखेहै 'प्रागाद्या रविशुक लोहित तमः शौरिदु बिस्मुरयः अर्थात् पूर्ण कास्वामी रवि, अग्नि कोणका शुक्र, दक्षिणका मंगल, नैऋतकाराहु, पश्चिमका शनि, वायुकोणका चंद्र, उत्तर का बुध, और ईशान कोणका गुरु, स्वामिहै तदनुसार जानना ।

भावेष्ट दशा फल.

लग्नेश दशाफल धनदा २२

धनेशदशा कष्टार्थदा २३

सौत्यपपाके प्रायेण नेष्टफलम् २४

सुखेश पाके गृहादिसुखं २५

सुतेशदशा विद्यार्थदा २६

पुत्रेशदशा रिपु भयदा २७

जायेशदशाशोकदा २८

मृत्युपदशायां मृत्यु २९

धर्मेश दशायां धर्मक्रिया ३०

स्वैशदशा नृपाभ्यर्थदा ३१

लभेशदशा लाभदा ३२

व्ययेश दशार्थ हानि कष्टदा ३३

टीका-लग्नेश की दशा चल और धनके देनेवाली भेटहोतीहै ३१
दशामे स्त्री कोपीड़ा भी होतीहै २२

धनेशकी दशा कष्ट (शरीर में पीड़ा तथा मरण) और धनका
देनेवाली तथा स्त्री को पीड़ा करने वाली होतीहै २३

तृतीयेश की दशा बहुधानेष्टफल देनेवाला ही निकलतीहै तथा भ-
ई की स्त्रीकोभी पीड़ादेतीहै २४

सुभेशकी दशामे घर वाहन चतुष्टय माता मित्रा धिक का तथादेह
का सुखहोताहै और प्रायः वित्तके शरीरमें कष्टभीहोताहै २५

पंचमेशकी दशामे भिक्षाप्राप्ती और धनकालाभ तथा सम्मान वृद्धि
सुखद्विगृह माताका मृत्यु या माताको पीड़ाहोतीहै २६ ।

षष्ठेशकी दशामे शत्रुकाभय और रोगवृद्धि तथा पुत्रकोपीड़ा होतीहै २७

सप्तमेश की दशा कोकदेन वाली तथा शरीरमें पीड़ाकरनेवाली
होतीहै २८

अष्टमेश की दशामे मृत्युभयहोताहै तथा स्त्री कीमृत्यु या विनाशभी
होताहै २९

नवमेश की दशामे तीर्थ यात्रा देव दर्शन व्रत तथा कर्मादानादि
धर्म कार्य और नाश्यादय होताहै ३०

दशमेश की दशामे रात्र्या भय की प्राप्ती और धनकाञ्चन तथा मा-
न मर्त्य सुखोदय होताहै तथा माता के देहमें पीड़ा भी होतीहै ३१

काशिककी दशा धनलाभदेनेवाली और विनाकीमृत्यु कारक होतीहै ३२
व्ययेश [चारमें भावके स्वामि] की दशा धनहानी और कष्टदायक
होतीहै ३३

अंतरदशाष्टक ।

पातदशायां पातान्तरे शत्रुतोष्यहानि भक्षभयम् ३४ .

अन्वोन्दवशादभयतो रन्तरे मक्षभयम् ३५ .

पाकेशात्रिकगस्य भुक्तौ स्थानच्युतिर्हानिश्च ३६

पापपाकेशुभांतरे आदौकष्टंततः सुखम् ३७

शुभपाके शुभांतरे सुखम् ३८

शुभपाके पापांतरे आदौसुखंततोभयम् ३९

रिपुयक्पापस्य पापदशांतरे विषत् ४०

टीका-पापग्रहकी महादशामे पापग्रहकी अंतर्दशा जबभातीहै तबशत्रु के सबपक्षे धनकी हानि और महाभय होताहै ३४

पूर्वचन्द्रमा शुभयुत बुध और गुरु शुक्र ये शुभग्रह औरक्षीणचन्द्रमा पापयुतबुध व शनि भंगक राहु केतु ये पापग्रह यद्यपी माने गयेहैं तथापि ग्रहोका शुभाशुभ निर्णय उद्बुदायप्रदीपानुसार उक्तपापग्रहभी केंद्रका स्वामिहोतोशुभ औरशुभपाप सर्वग्रह त्रिकोणके (९।५ के) स्वामिहो तो शुभग्रह मानेजातेहैं और तीसरे, छठे, ग्यारवें, तथा भाठ मे स्थानके स्वामि पापग्रह तथा दूसरे द्वारवें स्थानकेस्वामि शुभहोकर पापसंबंधी होतो पाप और पाप होकर भी शुभका संबंधी होतो शुभफल दाता स्थान तथा संबंध से होता है तदनुसार विचार करनेसे जो शुभ पाप ग्रह हो वह शुभ और पाप जानना ।

जो ग्रह परस्पर एकदूसरेसे छठे भाठमे स्थानमे गयेहो उसकी अर्थात् जिसग्रहकी महादशाहो उससे छठे किंवा भाठमे स्थानमे गयेहुये ग्रहकी अंतर्दशा मे महाभय कष्टरोग स्थानच्युति आदिनेष्टफल होताहै ३५

जिसग्रहकी महादशाहो उससे त्रिकस्थान ६।८।१२ मे गयेहुये ग्रह की अंतर्दशा मे स्थानच्युति (स्थान छुटजाना) और धनकी हानि होतीहै ३६

पापग्रहकी महादशामे शुभग्रहकी अंतर्दशा होतो वह अंतर्दशा पहिले आधी कष्टदेनेवाली और उतरती हुई आधी सुखदायक होतीहै ३७

शुभग्रहकी महादशामे शुभग्रहकी अंतर्दशा होतो उसमे सुख वृद्धि भनागम होताहै ३८

शुभग्रहकी महादशामे पापग्रह की अंतर्दशाहोतो वह अंतर्दशा पहिले (पूर्वाद्ध मे पेटती हुई) आधी सुखादि शुभफल और उतरती हुई [उत्तरार्द्धमे] आधीभय देनेवाली होतीहै ३९ ।

पापग्रह की महादशा में अपने शुचुग्रह से युक्त पापग्रहकी भंतर्दशा होती उसमें विपत्ती प्राप्त होतीहै ४०

दशांतर्दशा प्रवेश समय वसात्शुभाशुभ फल विचार ।

दशांतर्दशाप्रवेशोत्तलानाः खेटाःस्पुटाःकार्याः ४१

तत्रपाकेशो वा शुभेलग्नोपचयगे दशाभेदा ४२

अंगेषाकषामित्रवर्गे वा शुभवर्गेदशाशुभा ४३

प्रवेशोस्वर्गगेचंद्रे मानार्थसुखं सिंहेन्नसुखं भौमभेकलहर्णं

ज्ञानेविद्यार्थाति जीवभेकपिमानार्थसुखं शुक्रभेकद्वार मान

यशोर्थाति भन्दभेसेवा ४४

त्रिकेतरस्थे सत्रलेचंद्रेदशाभेदा ४५

मुख्यदशेशोच्च मित्रस्वभस्थः सन्देशेशाधिष्ठित राशि

त उपचय त्रिकोणास्तगध्वेचन्द्रः शुभफलदोन्यथानेष्टः ४६

चंद्राधिष्ठितो राशिर्जन्मनियन्ताव गस्तद्भाषोत्थंशुभंशुभं

वाज्ञेयम् ४७

विपत्कर्तृदशारम्भे सर्वाधिकबलः कोपितहर्गगः शुभमित्रदृष्ट

ध्वेन्नविपत् ४८

टीका—महादशा तथा भंतर्दशाके प्रवेश समयमें अर्थात् दशाभंतर्दशा जिससमय प्रवेश हो उस समयके स्पष्टग्रह लग्न और भाव, चलितादि करना और उसपरसे दशान्तर्दशा का शुभाशुभ फल ज्ञान करना ४१ दशाप्रवेश समयके लग्न कुंडलीमें दशेश (जिस ग्रहकी दशांतर्दशा प्रवेशहो वह) अथवा शुभग्रह लग्नमें तथा उपचय ३६।१०।११ स्थान में गयाहो तो वहदशा श्रेष्ठफल देनेवाली होतीहै ४२

दशाप्रवेश समयके लग्नमें यदि जिसग्रहकी दशाप्रवेशहूई हो उस ग्रहका और उसके मित्रग्रह का वर्गहो अथवा शुभग्रहोकावर्ग होतो वह प्रवेशहूईदशा शुभफल देनेवाली समझना ४३

जिसदिन जिससमय दशाप्रवेश हो उस समयका चंद्रमा यदि स्वराशी (४) का होतो मान धन और सुखका लाभ होवेगा, यदि सिंह राशीका होतो भद्रका सुख होगा, मंगल की राशी १।८ का होतो कलह [लड़ाई] और क्रुण [कर्ज] बढ़ेगा, बुधकी राशीका ३।६ का होतो विद्या की और धनकी प्राप्ती होगा, गुरुकी राशी ९।१२ का होतो कृषि [खेत] मान, धन, और सुख, की वृद्धि होगा । शुककी राशी २।७ का होतो पुदारा [खराबकी] से संग और मान यश धना १६ की प्राप्ती होगा । शनि की राशी १०।११ का होतो सेवाका सुख होगा [सेवाकरने करानेका सुख मिलेगा] ४४

दशाप्रवेश समयका चंद्रमा बलवानहोकर यदि प्रवेशसमय की लग्न कुंडलीमें त्रिकस्थान ३।८।१२ के बिना अन्यस्थान १।२।३।४।५-७।९।१०।११ में गयाहोतो वह दशा भद्रफल देनेवाली जानना ४५

जिसग्रह की दशा प्रवेशहो वह मुख्यदशाका स्वामी यदि दशाप्रवेश समयमें अपनी उच्चराशी मित्र तथा स्वराशी में स्थित होकर दशाप्रवेश लग्न कुंडलीमें जिसभावमें गयाहो उसभावस्थित राशीसे उपचय ३।६।१०।११ तथा त्रिकोण ९।५ स्थानमें तथा सप्तम भावमें चंद्रमा गयाहो तो वह चंद्रमा दशाका फल [जिस ग्राहीदशातर्दशा प्रवेशहो उसका फल] शुभदेवेगा और इससे विपरीत [१।२।४।५।६।९।१२ स्थानमें गया] हो तो नेष्टफल होवेगा ४६

दशाप्रवेश समयका चंद्रमा जिसराशीमें गयाहो वहराशी जन्म कुंडलीमें जिसभावमें गईहो उसभावजनित जो शुभ भयवा अशुभफल चंद्रमाहै उसीकेसमान शुभाशुभफल जानना । उदाहरणार्थ कल्पनाकरो वह चंद्रमा धनभावमें गयाहो और धनभावमें चंद्रमा शुभफलदाताहो तो दशाप्रवेशसमय में भी वह चंद्रमा शुभफलदाता होवेगा । एवं वह चंद्रमा अशुभफलदाताहो तो दशाप्रवेशमेंभी अशुभफलदेगा ।

विपत्ति करनेवाली [अशुभफलदेनेवाली] दशाप्रवेशहो उससमय यदि कोई ग्रह सर्वग्रहोंसे अधिक बलवान होकर शुभग्रहोंके वर्गमें गयाहो और शुभ तथा अपने मित्रग्रहसे दृष्ट हो तो विपत्ति नहीहोगा (अशुभफलनहीदेगा) एवं तपरोकबक्षणवाला सर्वाधिकबलीयह अशुभफलदायक दशाके स्वामिको देखताहोतो अवश्य अशुभफल नहीहोगा ४८

ग्रहचारवशेन भष्टवर्गज शुभाशुभफलविचार ।

जन्माङ्गचन्द्रान्यतरतश्चारवशेनोपचयगोग्रहक्षे निम्नोच्च

मूलत्रिकोणाभितो ष्वर्गजं शुभं पूर्णमशुभं स्वल्प दिशति अन्य

थानेष्टं पूर्णशुभं स्वल्पं तत्रापितारतम्यात्कथनीयम् ४९

टीका—जन्मलग्नसे अथवा जन्मके चंद्रमासे जो ग्रह राशीके भ्रमण वशान् उपचयस्थान ३६।१०।११ में गया हो और अपने मित्रग्रहकी राशीमें तथा उच्च अथवा मूलत्रिकोण राशीमें गया हो वह ग्रह यदि भष्ट वर्गमें भी शुभफल देनेवाला (अधिकरेक्षेययुत) होतो शुभफलपूर्ण देवेगा और अशुभफल स्वरूप देवेगा और विपरीत होतो अर्थात् जन्मलग्नसे अथवा चंद्रमासे अनुपचयस्थान १।२।४।५।७।८।९।१२ में गया हो और शत्रु तथा नीच राशीमें गया हो अथवा भस्तका हो पापयुत ग्रह हो और भष्टवर्गमें अशुभफल देनेवाला (स्वरूपरेक्षेययुत) होतो नेष्टफलपूर्ण और शुभफलस्वरूप देवेगा इनमें शुभाशुभफलके तारतम्यभेदसे विचार करके शुभाशुभफलप्रदोका गोनर विचारसे कहना ४९

इसपद्धतीसेही ग्रहोका राशीभ्रमणद्वारागोचर से शुभाशुभफल विचार जन्मलग्न और जन्मस्थचंद्रसे पाश्चात्य विज्ञान गण भी वर्ष मास दिन घटीपर्यंत का करते हैं और वास्तव में इसप्रकार विचार करना दशाफलविद्याकी अपेक्षा अधिकसुगम और सरल व युक्तियुक्त प्रतीत होता है मेने स्वयं अनुभवकरके देखा है कि उपरोक्त सूत्रानुसार ग्रहोका फल विचार करनेसे बराबर शुभाशुभफल मिलते जाते हैं ।

अनुभूतिप्रदं नाम ज्योतिषं शास्त्रमुत्तमम् ।

निगमान्निर्गतं लोकस्य विजयते तसाम् १

जैमिन्यायुक्तिः सारं न वनीत पिबोद्धृतं ॥

महादेवेन विदुषा स्वाद्यन्तु सुपुत्रयः २

टीका—वेदोक्तिकटाक्षवा (वेदांग का वेदवाचकप्रमाण) और ज्योतिषोक्तो वेदिन (संन्यासिन) प्रत्यक्ष अनुभवको प्रदर्शित करनेवाला

ज्योतिषनामका जो उत्तम शास्त्र है वह विनय (विशेषजय) को प्राप्त होतारहो १

ग्रंथकर्ता महादेवजी विद्वद्वर्ग्य लिखतेहैं कि जेमिनी भादि मुनिवर्ग्यो नेजोफलविचारकेलिये अनेकग्रंथलिखेहैं उनकासार ग्रहण करके जैसेदहोमेसे मवसन निकालतेहैं वैसेही अनेकग्रंथोमेसे नवनीत रूपग्रह ग्रंथनिकालाहै इसकास्वाद सुबुद्धिवाले विद्वानगण सेवेरहै ॥ २

इतिमहादेवकृतजातकतत्वे दशातत्वं पञ्चमम् ५

इतिश्री गणकवर्ग्य श्रीमन्महादेवकृत जातकतत्त्वरूप जातकग्रंथे तामूनु श्रीनियासरचित तत्त्वप्रदर्शनि भाषाटीकायां दशातत्वं पञ्चमं ५ समाप्तः ।

ग्रंथकर्ताकानिवास स्थान और ग्रंथसमाप्ति

का समय वर्णन ।

गद्यम् ।

श्रीमदवन्तिकापरनामधेयाया उज्जयिन्याः पश्चिमतः पद्म-
योजनमिते भूपदेशे रत्नललाटं नाम पुटभेदनं प्रचण्डकोद-
ण्डपण्डितद्वेषणकठिनकण्ठनिकर्तनकुठारकठोर राठोडवंशा-
वतंस श्रीमद्वरुवर्त्तिहपुत्रभरैवसिंहतनुजेन सुकुमारेणापि कुमा-
रविक्रमेणां धीरेणाप्यान्तररिपुविजयधीरेण रणजीवसिंहेन गुप्त
नृपकार्यपुरीणस्य धीरातिगम्भीरस्यापि चपलचक्षुषः शहा-
मंतअलेः सहायकमुपेयुषा नानादेशानीतवीचित्रचित्रितवरु-
लताराजिविराजितसुधासौधभोजुष्टोषवनराजिविराजमानं वि-
विधविद्यागौरव गर्वशालिनापि जनसोजन्यजनननैपुण्यशा-
लिना विबुधयुधवृन्देन विलसितयानर्घपाठशालया कृतभूषणं
नक्तंच प्रचुरघण्टापथस्यापितसरलविस्तृतोज्ज्वलितदीपाव-

ल्या जनितशीषोत्सवसुखं चन्द्रचुम्बिना प्रसादिना प्रसादेन
जनितजननयनानन्द प्रतिकूलवद्भूलेन निरस्तप्रावृषिज
वृजिनौघं वर्षत्यत्र वसता पराशरवंश्यपाठक रेवाशङ्करसुनुनो
दुग्धरेण महादेवेन विष्णुसहायेनाष्टाविंशदधिकैकोनविंशतिश-
ततमेविक्रमवत्सरे (१९२८) फाल्गुनशुक्लपञ्चम्यां जातकतत्वं
नाम ग्रन्थोनीतः पूर्णताम् ।

तात्पर्य-भवंतिकापुरी जिसकी उन्नयन कहते हैं उससे पश्चिममें छयोजन
[२४ कोश] परराठोडकुलभूषण श्रीमद्रत्नवंतसिंहजी महाराजाके पुत्र
भैरवसिंहजीके पुत्र श्रीमद्रत्नजीतसिंहजी महाराजासाहबकी राजधानी
का रतलाम शहरहै जिसका साशन उक्त महाराजाकीसुकुमारावस्था
होनेकेकारण उनकी औरसे सहायकरूपसे अतीधीर गंभीरस्वभावके
सुदूरदर्शीविचारवान । भी० सहामतभलीजी [सुप्रिन्टेन्डेन्ट] साहब
घड़ीचतुरतासे सुंदरगीचा तथा उत्तमपाठशाला (संस्कृतकालेन)
अतिविशाल राजभवन (महल) और बड़ी बड़ी अनेक सड़के पुल तथा
उत्तम रोशनीका प्रबंधादि अनेक दर्शनीय शहरको शोभा देनेवाले मनो
रंजक कार्यकी योजनाकरकेन्यायानुसारकार्यचला रहे हैं ऐसे सुन्दर नगर
में निवास करनेवाले सुंदर ज्ञातिय पराशर गोत्रमें उत्पन्न पाठकोपनाम
वाले रेवाशंकरजी के पुत्र महादेव शर्माने विष्णुशास्त्रीजी की सहा
यतासे विक्रम संवत् १९२८ के फाल्गुन शुक्ल पंचमीके दिन यह
जातक तत्वं नाम ग्रंथ संपूर्ण किया ।

श्लोक-भासीद्व्रतपुरे पराशर कुलोत्पन्नो द्विजोदुग्धरः । कपातःपाठक
नामतो गुणनिधिः श्रीनन्दरामाभिधः ॥ तत्सूनुर्गणितागमज्ञातिलकः
श्रीमोतीरामाक्षयो । रेवाशङ्कर भाग्येपुनिपुणस्तस्मादभूद्भार्मिकः ।
तदारमजउदारधी गणकमोलि चूडामणि । रभूद्धरणिमंडले गुणनिधि-
महादेवयित् ॥ तदङ्गजनपा मधो नगगुणाष्टचंद्रैर्मिते शकेपिनिरमादिदं
निवरणं सतांप्रीतये २

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
१	१७	काट	कटि	१०	१	चंद्रार्कज्या	चंद्रार्कज्या
२	१०	राय	रवि	११	७	सूर्य द्वे	सूर्यद्वे
२	१४	चरस्थि	चरास्थि	१२	१२	दर्शनीयवपु	दर्शनीयवपु
२	१९	तल	तुल	१२	२३	४७	४८
३	९	झावाः	झावाः	१३	४	सुहृद	सुहृदः
३	१९	चर	चर	१३	१७	भौमशत्रु	भौम]शत्रु
४	२	हारा	होरा	१४	३	मैत्रिसाधन	मैत्रिसाधन
४	१४	होइ	भद्राई	१५	१६	योजनर्ष	योजनै
५	३	द्विस्व	द्विस्व			लघुतो	पलैयुतो
५	१४	टीक	टीका	१७	११	२ रा० जान	२ रामान
५	२५	रह	रहे	१८	१८	७२	७१
६	१७	पृथंशे	पृथचंशे	१९	१२	इसकरण	इसकारण
६	१९	प्तात	त्पात	१९	१५	अवस्थानि	अवस्थामे
७	२	पृथचंशेष	पृथचं- कमसेधोर	१९	१७	स्वोच्च-	स्वोच्चगो
७	५	गिननेस	गिननेसे			नोदिप्त	दिप्तः
७	५	पृथचंशेवे	पृथचंशेश होवेगा	१९	२५	विदित	वीदित
७	६	पृथचं शेष	पृथचंशेश			सज्ञक	सज्ञक
७	१९	दष्टा	दंष्टा	२०	२३	वेष्टितो	वेष्टितो
८	१८	कहतदे	कहतदे	२१	३	प्रसंगधे	प्रसंगानुसार
८	२०	२९ भेश	२९मा भेश	२१	८	होवे	होवे
८	२३	तल	तुल	२१	१०	सिह	सिंह
८	२३	अधिक	वृधिक	२१	१०	होता	होतो
९	१६	यथापमह	यथापमह	२१	१६	मकर-	मकरका
९	१९	मुष-गुरु	मुषभौ-गुरु			पूर्वादे	पूर्वादे
९	२१	सज्ञक	सज्ञक	२२	२	हावादे	होवादे
				२२	४	उत्ते पूर्णे	उत्तेपूर्ण
				२२	४	जन्म	जन्मः
				२२	६	आम्बुस्थेनलासत्रेनन्मः	

पृष्ठ	पंक्ति	भगुदं	शुद्धं	पृष्ठ	पंक्ति	भगुदं	शुद्धं
२२	२१	रेताकी	रेतीकी	३१	२७	भर्वा	भर्वा
२२	२३	जन्म	जन्मः	३१	३०	बलक	बाल
२२	२६	देखता हावता	देखता होवेतो	३२	४	शीव	शीम
२३	४	गोकुला	गोकुला	३२	१३	से होवे	सेदष्ट
२३	५	शि पालये	शिल्पालये	३२	१९	तुश्य	तुश्य
२३	८	हावता	होवेतो	३२	२१	सोम्पा	सौम्पा
२३	२२	होवे	होवे	३३	५	भार	भौर
२४	१	ग्रहमेसे	ग्रहमेसे	३४	८	लग्न- द्रेष्का	लग्नके द्रेष्का
२४	७	सूर्यपिता	सूर्यपिता	३४	२६	९०	९१
२४	१४	योगः	योगः	"	२७	९१	९२
२४	१५	सर्वे	सर्वे	३५	५	शराशि	राशी
२४	२०	दृष्ट	दृष्टे	३५	१७	गुरुस	गुरुसे
२४	२२	मार्गमे जान	मार्गमे जन्मजान	३८	८	सयले	सयले
२५	१६	शीर्षा	शीर्षा	३८	२३	दपापय हसेदष्ट	पापग्रह सेदष्ट
२५	२४	चन्द्रमासे	चन्द्रमासे	३९	१४	शुक्र	शुक्र
२६	१०	माघह	माघह	३९	२८	हावे	होवे
२६	२७	शिर	शिर	३९	३०	सर्वादिष्ट	सर्वादिष्ट
२८	१७	प्रसयदुवा	प्रसयदुवा	४१	११	स्वामि	स्वामि
२८	१७	सप्तम- उनस्या	सप्तम उनस्या	४१	१६	भार	भौर
२९	१	छडे	छडे	४४	६	यक	यक
३०	१३	यक	यक	४४	९	नन्दाशय	नन्दाशय
३१	८	होवेता	होवेतो	४४	१७	पृक्तो	प्रहृती
३१	९	पापग्रह	पापग्रह	४६	२३	भयम्भ	भीयम्भ
				४७	१०	नवाशय	नवाशये
				४८	६	ता (दुर्बला)	तादुर्बल
						वेदमन्त्र	वेदमन्त्र

पृष्ठ	पंक्ति	भगुदं	गुदं	पृष्ठ	पंक्ति	भगुदं	गुदं
५०	१८	सूय	सूर्य	६८	९	पागदृष्टय	पागदृष्टय
५०	२२	हस्वे	हस्व	६९	१७	छटे	छटे
५१	१	तुय	तुर्ये	७०	१०	म्लेञ्छो	म्लेञ्छो
५१	१६	वेशि	वेशि	७२	८	लगनेसे	लगनेसे
५३	२४	होताहे	होताहे	७३	७	धारव-	धारवे- स्थानमे
५४	१६	इन्द्रको	इन्द्रको			स्थानम	
५६	४	कारकांसश	कारकांसश	७४	१६	लग्नश	लग्नश
५६	११	व्ययीयं	व्ययीयं	७५	३	सूर्य	सूर्य
५६	१९	होवेना	होवेना	७५	१७	कुमंग	कुमंग
५८	१८	होवेते	होवेते	७६	१४	सेक नेसे	सेकनेसे
५९	२२	सः सर्वध	सर्वध	७७	९	शीन	शीन
६०	२२	होतोह	होताहे	"	११	वा में	वारमें
६३	१९	लगनेशना	लगनेशनौ	"	१४	स्थानम	स्थानमें
६३	२७	चंद्राको	चंद्राको	७८	८	मंगळ	मंगळ
६४	१५	सूर्य	सूर्य	"	२२	दयाहे	दयाहे जावेगे
६४	२३	विन्दल	विन्दल			जावे	
६४	२६	शीध	शीध	७९	७	दस्तते	देखते
६४	२७	शीध	शीध	"	२४	येनेत्र	येनेत्र
६५	१	गुरु	गुरु	"	२८	गंधकार	गंधकारने नेत्र
६५	६	होताहे	दिसनेवा- लाहोताहे	"		ननेत्र	
६५	१५	विशेष	विशेष	८०	१	होताहे	होताहे
६५	२२	चामि	चामि	"	१	भनएवएसे	भनएवदेसे
६६	२८	चर	चाराशि	"	५	पत्र	पुत्र
६७	८	दस्तते	देखते	"	६	पुनकपुत्र	पुनकापुत्र
"	२५	होव	होवे	"	१८	पुगेहु	पुगेहु
"	२७	शभपद	शुभपद	८१	२७	वाधेर	वाधेर
"	१	होताहे	धरहोताहे	८२	९	ताथ	तथा
"	६	गुनयोग	विगुनयोग	८३	२०	दिताप	दिनीप
				८४	१२	दुमुष	दुमुष

[illegible]

पृष्ठ पंक्ति भगुदं	शुदं	पृष्ठ पंक्ति भगुदं	शुदं
१२४ ९ दरिद्री	दरिद्री	१४२ २२ कर्मकांडा	कर्मकांडा
" ११ होवेतो	होवेतो	१४४ ८ धवनेवाला	धवनेवाला
" १३ होवे	होवे	" १७ हरके	हरके
" १६ संपत्तिमान	संपत्तिमान	" २८ राशिका	राशिका
१२५ ९ यतहोवे	युतहोवे	" २९ करके	करके
" १७ चनर्थ	चनर्थ	१४५ १४ राशिम	राशिम
१२६ २३ पनेवाला	पानेवाला	" २४ विवेक	विवेकस्य
१२९ १४ मभी	मेभी	१४७ १९ होवेतो	होवेतो
१२९ २८ बदलाता	बदलातो	१४८ १९ पधगो	पधयोग
१२९ ३१ तरेसे	तरहसे	१४९ ३ होवेतो	होवेतो
पृष्ठांक २२९-२३०	१२९-१३०	" १४ शुभेक्षित	शुभेक्षित
२३१-२३२	१३१-१३२	" २२ मतायोग	मातायोग
१३१ ७ विवेक	विवेकस्य	" २६ चतु पद	चतुष्पद
टीका	टीका-	१५० २५ त्रिशद्वै	त्रिशद्वै
१३२ १ दृष्ट	दृष्टे	१५१ ९ जन्मकरने	जन्मकरनेसे
" २ लाभे	लाभो	" १२ कद्र	केंद्र
" २९ भार	भौर	१५२ ४ केंद्र	केंद्र
पृष्ठांक २३३	१३३	" ९ वयसी:	वयसी
१३४ ४ बधुचो	बधुचो	" १५ भार	भौर
पृष्ठांक २३६	१३६	१५३ १९ सुखेश	सुखेश
१३६ २२ दजेके	दजेकेतया	" २२ गरु	गरु
१३७ ४ स्थानमें	स्थानमें	१५४ २ स्तयें	स्तुयें
१३८ १९ मेगवेद	मेगवेदे	" १७ गरु	गरु
" २५ होवेतो	होवेतो	१५५ ५ स्थानमे	स्थानमे
१४० ११ वृत्ति	वृत्ति	१५५ ११ श्वावद्यो	श्वावद्यो
" १४ दर्नि	दर्नि	" १३ कुंडलीम	कुंडलीमे
१४१ ४ वृत्ति:	वृत्ति:	" २७ लग्नस	लग्नसे
६ वृत्ति:	वृत्ति:	१५६ १९ शानिस	शानिसे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
१५८	२०	अनुभवार्थ	अनुभवार्थ	"	११	पुत्रसे	पुत्रेशे
१५९	१८	लग्नम	लग्नमे	"	१२	सूर्ये	सूर्ये
"	२३	इनतीभाव	इनतीनोभाव	"	१७	सूर्ये	सूर्ये
१६०	२१	हावतो	होवतो	"	२८	नीचगे	नीचगे
१६१	८	चतुर्थेश	चतुर्थेश	१८१	९	चतुर्थ	चतुर्थ
१६२	१६	जावेता	जावेतो	"	११	भाषम	भाषमे
१६४	३	स्वराशिमे	स्वराशिमे	"	२३	शानि	शानि
"	१२	काशमे	काशमे	१८२	४	छटे	छटे
१६५	॥	चतुर्थ	चतुर्थ	१८२	१८	ये सूर्ये	ये सूर्ये
१६५	८	टीका चतुर्थ	टीका-चतुर्थ	१८२	२३	कुक्षे	कुक्षे
१६६	६	पषका	पुषको	१८३	२९	राशा	राशी
१६६	८	व्यापार	व्यापार	१८६	१२	भार	भार
१६६	२३	गुरु	गुरु	"	२१	मुखदोषे	मुखदोषे
१६७	७	पक्षित	पक्षित	"	२८	पञ्च	पुत्र
"	१८	हृष्टो	हृष्टो	१८९	१४	सूक्ष्म	सूक्ष्मी
१६८	५३	सदृष्ट	सदृष्टदोषे	"	१६	पंचम	पंचम
१६८	२४	पंचमेश	पंचमेश	नोटमे-५०१	मे	माप्ति	माप्ति
१६८	"	मुष्टि	मुष्टि	१९०	२४	गय	गया
१६९	८	मुष्टि	मुष्टि	१९१	१२	पमाप्ति	पुमाप्ति
१७०	२	दानो	दानो	"	२०	शुभमद	शुभमद
१७०	२०	गयदाव	गयेदोवे	१९२	६	हुवा	हुवा
नोटमे-५१	मे६-१८-३	६-१८-३०		"	८	समापस्ता	समापस्था
१७१	१	कारकाश	कारकाश	"	२९	नीदका	नीचका
"	१७	होव	होवे	१९३	१८	गद	गद
"	२	धनस्था	धनस्थ	१९४	१	केनगया	केन
"	१२	त्रिकाग	त्रिकोग	"	२२	शुक्र	शुक्र
१८०	१०	मन्दो	मन्दो	१९५	२८	भोर	भोर
				१९७	१९	माईदेया	माई

पृष्ठ	पंक्ति	भगुदं	शुदं	पृष्ठ	पंक्ति	भगुदं	शुदं
२००	१	पिठिका	पीठिका	२३५	२३	सन्धो	सन्धौ
२०१	५	फेडा	फोडा	२३६	११	व्ययेकने	व्ययेकने
	६	केतु	केतु	२३७	६	िवाह	बिवाह
	१६	जस्र	जस्रम	२३७	११	संयं	सूर्य
	१७	गल	मंगल	२३८	१३	स्थल	स्थल
	२७	वष्टेश	वष्टेश	२४१	२६	मद	मदे
२०३	२४	लग्नेश	लग्नेश	२४३	१४	व्यापर	व्यापार
२०५	१६	छटे	छठे	२४४	९	केन्द्रेवा	केन्द्रेवा
	१३	नाभिगेमी	नाभिरोमी.	२४५	१३	दीर्घाय	दीर्घायु
२०७	७	भठमे	भाठमे	२४५	२५	जीवेकेद्र	जीवेकेद्र
२०८	६	पाग्युत	पापयुत	२४८	२१	गरुसे	गुरुसे
	९	और	और	२४९	१३	गलिक	गुलिक
	२०	सोत्ये	सोत्ये	२५१	१	केंद्रम	केंद्रमे
२०९	५	नयपाये	नयेपये	२५१	४	भाय	भायु
	२२	राशिमें	राशिमेंतया	२५१	६	वष	वर्ष
	२३	राशीक	राशीके	२५१	८	१२भाषमें	१२मेंभाषमें
१४	११	केंद्र	केंद्र	२५१	२६	मृत्य	मृत्यु
१६	७	दुद्र	दुद्रु	२५१	२९	राव्हडो	राव्हडो
२१	२०	षष्ठ्यंशे	षष्ठ्यंशमे	२५४	२४	विभूति	विभूति
२२	२१	होवे	होवे	२५४	२६	योग	योग
	२४	व्यपि- चारी	व्यभिचारी	२५५	५	मृत्य	मृत्यु
२४	६	व्यपि- चारी	व्यभिचारी	२५५	६	मृत्युः	मृत्युः
२८	२२	शुक्रमे	शुक्रसे	२५५	२७	चौर मृत्युः	चौरामृत्युः
३१	२	दाराशा	दारेशा	२६०	९	दस	दस
११	२७	स्वामी	स्वामी	२६०	११	शनिका	शनिकी
३१	२१	स्वामीसे	स्वामीसे	२६४	२२	मय	मयम

पृष्ठ पंक्ति	भगुद	शुद्ध	पृष्ठ पंक्ति	भगुद	शुद्ध
" ३३	मेघपदे०	मघपदे०	३२०	१ पांन	पांन
" ३३	जलादर	जलोदर	३२३	८ साम्बुगेक्षे	साम्बुगेक्षे
२६५	२६ भद्रमश	भद्रमेश	३२५	२४ बला	बाला
२६६	१५ मदे वा	मदे वा	३२६	२० भारेज्य	भोज्य
२७४	२६ गनहृष्ट	गुनहृष्ट		गोग	योगे
२७५	१ पुरुष	पुरुष	३२८	१७ सवलेङ्गवे	सवलेङ्गवे
२७९	३ धनेश	धनेश	" २६	इक्षित	इक्षित
२८०	२७ गयहोतो	गयाहोतो	३३०	४ भार	भार
२८४	२८ स प्तः	समाप्तः	३३२	१ यन	युत
२८८	१० शुभांशेषा	शुभांशे वा	" ९	मनध्य	मनध्य
२८९	२४ द्वौस्वर्षे	द्वौस्वर्षे	३३५	५ स्त्री स्त्री	स्त्री स्त्री
२९९	९ चरेङ्गे	चरेङ्गे	" ६	दृष्टे	दृष्टे
३००	१३ तरेङ्गे	तरेङ्गे	" २७	साध्वीक	साध्वीकवे
३०२	४ मृगङ्गे	मृगङ्गे	३३७	१० वधके	पुधके
३०३	१२ तरेङ्गे	तरेङ्गे	३३८	२२ कुबारी	कुबारी
३०३	२१ पूर्वपङ्के	पूर्वपङ्के	" "	सप्तमेश	सप्तमेश
१०४	१८ पटक	पटक	३३९	२१ सदू	सदू
३०५	१६ राज्या	राज्याक्षेसा	" २८	चन्द्रशी	चन्द्रशी
	क्षेसा		३४०	१९ नवग	नवांग
३०७	२ शुक्रज्यौ	शुक्रज्यौ	३४२	१६ भाषवे	भाषमे
३०७	३ नगार्पाङ्गा	नगार्पाङ्गा	३४५	६ जाततत्वे	जातकतरं
३१३	१४ तदीशेङ्गे	तदीशेङ्गे	३४८	२ निर्बली	निर्बली
३१३	१६ धनेशेङ्गे	धनेशेङ्गे	जहांजहां	दृष्ट	दृष्ट
३१५	७ वारमेः	वारमे	जहांजहां	भष्ट	भष्ट
३१७	१३ व्याजन	व्यामेन	जहांजहां	षष्ट	षष्ट
३१८	२ योग	योग	जहांजहां	षष्ट्यंग	षष्ट्यंग
३१९	१५ द्यन्ताङ्क	द्यन्ताङ्क	जहांजहां	निष्ट	निष्ट
				इतिगुदपत्रम् ।	

छपने योग्य नवीन तय्यार होगये
और छपना शुरूहोगया.

चौधडिया विचार

चौधडिया जिसको मारवाडी लोग दुधडिया कहतेहै वास्तव में यह चौधडियांइहै या दुधडिये है वा पोनेचारघडियेहै अथवा कोई औरहा चीजइ इनका शास्त्रीय पद्धतीसे कैसे विचार करना और किस काम में येदेखना इसका विवेचन इस पुस्तकमें भलिभांति हिन्दी भाषामें वर्णन किया गयाहै कीमत १/- मात्र

शनिविचार.

इसपुस्तक में किसराशी में शनी किसको कैसा कय शुभा शुभ फल अपनी साठेसाती (पनोती) कादेता है वगैरा २ विषयोका शास्त्रीय पद्धती के अनुसार सोपपत्तक विवेचन हिन्दी भाषामें कियागया है कीमत १/- मात्र है ।

संतति समयविचार.

संतान किस समयमें होगा इस प्रश्नका उत्तर शास्त्रानुसार जानके गर्भ रहनेका समय निश्चय बनाना चाहते हो तो इस पुस्तकमें सोक्षिये विचार सरल हिन्दीमें नामें लिखतागया है कीमत २/- मात्र

दात्रिशयोगावली जातिरु.

यह खान खाना नव्याय भी धनाई हुई वर्षफल देखने की उत्तम पुस्तकहै इन्में वन नव्यायसाइवने भरने अनुभव कियेहुने चमत्कारीक ३२ योग वर्षफल विचारके क्रियेहै यही भाषा टीकासहित प्रकाशित कियेहै मूल्य सिर्फ १/- आने मात्रहै.

उड्डीस तंत्रशास्त्र.

यहूत उड्डीस उग्रचुके है परऐसा उड्डीत अभीतक कहीभि छपानही है इसमें जितने तंत्रमंत्र लिखेहै वे सत्यचमत्कार बनानेवाछेहै पुस्तक देखने योग है मूल्य १२/- मात्र

ॐ विजया कन्य भाष्यटीका ६३

यह वैशेषिक तथै भगवते पाशोके बहीही जान ही सुपयोगी पुस्तक है इसमें भगवती उतपत्ति गुण कल्याणमयी शक्ति बही उत्तमनरूपी भोगी है मूल्य १।)

ॐ अकार महाभाषकार ॐ

यह बही अकार की पुस्तक है जिसकी भारत के मनस्वतमानाचार पत्रों में तथागता महागता धर्माचार्यनि मुक्त कंठमें प्रशंसा की है इसमें १००० ८ टुकड़े को उलट पुलट जोड़ने से हिंदी भोजपूरी गुजराती ब्रज की वर्ण माला बालक सहज में सीखसकें देवने योग्य विविध पुस्तक है मूल्य १।) मात्र।

दशाफलदर्पण टिप्पणिसमेत ।

जातकमें दशाफल विचार का कोई भी ग्रंथ स्वतंत्र ऐसा नहीं है कि जिसके द्वारा स्वतंत्र रूपसे दशाका फलविचार उत्तम रीतिसे कर सकें। इस छुटी के कारणही जोतिषी लोग जन्मपत्री तो बड़ी २ बनाते हैं पर दशाका फलविचार जैसा चाहिये ऐसा लिख ही नहीं सके अतएव इसक्षेत्रों मिटाने के लिये ही यह ग्रंथ समस्त फलित ग्रंथोंसे संशुद्ध करके दशाफल देखनेका परमोपयोगी बनाया गया है। इसमें क्रमसेक्रम दशाहजार शोक की संख्या दश विभागोंमें विभक्त की गई है। जिसमें १ प्रथम विभाग में दशा प्रयोजन वैपालीस प्रकार की दशाका भेद और उनके साधन करनेकी दशहरण सहित रीति और उन दशाओंके चक्र तथा उनमेंसे कौनसी दशामुख्य है उसका निर्णय कह कर आगे संपूर्णदि अनेक प्रकार की दशाफलका भेद विस्तार पूर्वक वर्णित है। तथा दशाफलबोधक ग्रह और शुभा शुभ मध्या निकट दशा का निश्चय तथा उच्च नीच मूल चिकीत्सस्वस्वभूमिमेव मित्रादि पांचोभेद सहित दशाकाविचार तथा भस्त उदित चक्रमार्ग मांस्वनकाफल एवं मूल स्वनवांशवलोपेत रज्जुवादि ग्रहोका विशेष २ दशाफलका विचार और देहमुख, धन भ्रातृ, मातृ, गृह, ग्राम, मित्र, शत्रु, पुत्र, पौत्र, रोग शत्रु, भार्या, मरण, निधिलाभ, भाग्य, धर्म, लाभ व्यय, मुसाफरी, आदि बारीकीभावजनित फलफलि २

